لَبَّيْكَ اللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ

हज व उ़म्रे का त़रीक़ा और दुआएं

Rafiqul Haramain (Hindi)

रफ़ीकुल ह़-रमैन

मअ़ तख़्रीज व जदीद तरतीब

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج۱ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

(रफ़ीक़ुल ह़-रमैन)

येह किताब **(रफ़ीक़ुल ह़-रमैन)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी **دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ** ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाई है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ा-लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

لَبَّيْكَ اللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ

हृज व उ़म्रे का मुफ़स्सल त़रीक़ा

रफ़ीकुल ह़-रमैन

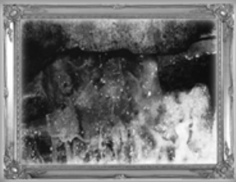

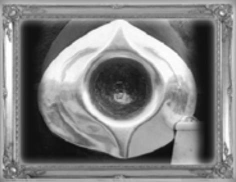

मुअल्लिफ़

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना, अह़मदआबाद

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

नाम किताब : रफ़ीकुल ह़-रमैन

मुअल्लिफ़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دامت برکاتھم العالیہ

साले इशाअ़त : शव्वालुल मुकर्रम 1433 सि.हि.

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना, अह़मदआबाद

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19,20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपुर : मस्जिद ग़रीब नवाज़ के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नाग पूर – फ़ोन : 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19 / 216 फ़लाहे़ दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, अजमेर

ह़ैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, ह़ैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक फ़ोन : 08363244860

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है।

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा
ह़ज व उ़म्रे वाले के लिये 56 निय्यतें	11
आप को अ़ज़्मे मदीना मुबारक हो	24
मदीने के मुसाफ़िर और इमदादे मुस्त़फ़ा	27
ह़ाजियों के लिये कारआमद 16 म-दनी फूल	28
इन में से ह़स्बे ज़रूरत चीज़ें अपने साथ ले जाइये	31
सामान के बेगेज के लिये 5 म-दनी फूल	32
हेल्थ सर्टीफ़िकेट के म-दनी फूल	33
हवाई जहाज़ वाले कब एह़राम बांधें ?	34
जहाज़ का ख़ुश्बूदार टिशू पेपर	35
जद्दा शरीफ़ ता मक्कए मुअ़ज़्ज़मा	36
मदीने की परवाज़ वालों का एह़राम	37
मुअ़ल्लिम की त़रफ़ से सुवारी	37
सफ़र के 26 म-दनी फूल	37
हवाई जहाज़ के गिरने और जलने से अम्न में रहने की दुआ़	40
सफ़र में नमाज़ के 6 म-दनी फूल	43
3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	46
हर क़दम पर सात करोड़ नेकियां	46
पैदल ह़ाजी से फ़िरिश्ते गले मिलते हैं	47
दौराने ह़ज के लिये क़ुरआनी हुक्म	47
ह़ाजी के लिये सरमायए इ़श्क़ ज़रूरी है	48
किसी आ़शिक़े रसूल से निस्बत क़ाइम कर लीजिये	49
पुर असरार ह़ाजी	50
ज़ब्ह़ होने वाला ह़ाजी	50
अपने नाम के साथ ह़ाजी लगाना कैसा ?	51
चुटकुला	52
ह़ज मुबारक का बोर्ड लगाना कैसा......?	53
बसरा से पैदल ह़ज !	53
मैं त़वाफ़ के क़ाबिल नहीं	54
ह़ाजी पर हुब्बे जाह व रिया के सख़्त ह़म्ले	55
ह़ाजियों की रियाकारी की दो मिसालें	57
याद रखने की 55 इस्त़िलाह़ात	58
का'बए मुशर्रफ़ा के चार कोनों के नाम	60
मीक़ात पांच हैं	63
दुआ़ क़बूल होने के 29 मक़ामात	66
ह़ज की क़िस्में	69
﴾1﴿ क़िरान	69
﴾2﴿ तमत्तोअ़	70
﴾3﴿ इफ़्राद	70
एह़राम बांधने का त़रीक़ा	70
इस्लामी बहनों का एह़राम	71
एह़राम के नफ़्ल	72
उ़म्रे की निय्यत	72
ह़ज की निय्यत	73
ह़ज्जे क़िरान की निय्यत	73
लब्बैक	74
मा'ना पर नज़र रखते हुए लब्बैक पढ़िये	75
लब्बैक कहने के बा'द की एक सुन्नत	76

उ़न्वान	सफ़हा
لَبَّيْكَ के 9 म-दनी फूल	76
निय्यत के मु-तअ़ल्लिक़ ज़रूरी हिदायत	78
एह़राम के मा'ना	79
एह़राम में येह बातें ह़राम हैं	79
एह़राम में येह बातें मक्रूह हैं	80
येह बातें एह़राम में जाइज़ हैं	82
मर्द व औ़रत के एह़राम में फ़र्क़	84
एह़राम की 9 मुफ़ीद एह़तियातें	85
एह़राम के बारे में ज़रूरी तम्बीह	88
ह़रम की वज़ाह़त	89
मक्कए मुकर्रमा की ह़ाज़िरी	90
ए'तिकाफ़ की निय्यत कर लीजिये	91
का'बए मुशर्रफ़ा पर पहली नज़र	91
सब से अफ़्ज़ल दुआ़	92
त़वाफ़ में दुआ़ के लिये रुकना मन्अ़ है	93
उ़म्रे का त़रीक़ा	93
त़वाफ़ का त़रीक़ा	93
पहले चक्कर की दुआ़	98
दूसरे चक्कर की दुआ़	101
तीसरे चक्कर की दुआ़	103
चौथे चक्कर की दुआ़	105
पांचवें चक्कर की दुआ़	107
छटे चक्कर की दुआ़	110
सातवें चक्कर की दुआ़	112
मक़ामे इब्राहीम	114
नमाज़े त़वाफ़	114
मक़ामे इब्राहीम की दुआ़	115
मक़ामे इब्राहीम पर नमाज़ के चार म-दनी फूल	116
अब मुल्तज़म पर आइये......!	117
मक़ामे मुल्तज़म पर पढ़ने की दुआ़	118
एक अहम मस्अला	120
अब ज़मज़म पर आइये !	120
आबे ज़मज़म पी कर येह दुआ़ पढ़िये	121
आबे ज़मज़म पीते वक़्त दुआ़ मांगने का त़रीक़ा	122
ज़ियादा ठन्डा न पियें	122
नज़र तेज़ होती है	123
सफ़ा व मर्वह की सअ़्य	123
सफ़ा पर अ़वाम के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़	125
कोहे सफ़ा की दुआ़	126
सअ़्य की निय्यत	132
सफ़ा व मर्वह से उतरने की दुआ़	133
सब्ज़ मीलों के दरमियान पढ़ने की दुआ़	134
दौराने सअ़्य एक ज़रूरी एह़तियात़	136
नमाज़े सअ़्य मुस्तह़ब है	136
त़वाफ़े क़ुदूम	137
ह़ल्क़ या तक़्सीर	137
तक़्सीर की ता'रीफ़	137
इस्लामी बहनों की तक़्सीर	138
त़वाफ़े क़ुदूम वालों के लिये हिदायत	138
मु-तमत्तेअ़ के लिये हिदायत	138
तमाम ह़ाजियों के लिये म-दनी फूल	139

उ़न्वान	सफ़्हा
जब तक मक्कए मुकर्रमा में रहें क्या करें ?	141
चप्पलों के बारे में ज़रूरी मस्अला	142
जिस ने दूसरों के जूते ना जाइज़ इस्ति'माल कर लिये अब क्या करें ?	143
इस्लामी बहनों के लिये म-दनी फूल	143
त़वाफ़ में सात बातें ह़राम हैं	144
त़वाफ़ के ग्यारह मक्रूहात	145
त़वाफ़ व सअ्य में येह सात काम जाइज़ हैं	146
सअ्य के 10 मक्रूहात	146
सअ्य के चार मु-तफ़र्रिक़ म-दनी फूल	147
इस्लामी बहनों के लिये ख़ास ताकीद	147
बारिश और मीज़ाबे रह़मत	148
ह़ज का एह़राम बांध लीजिये	148
एक मुफ़ीद मश्वरा	149
मिना को रवानगी	149
मिना शरीफ़ में पहले दिन जगह के लिये लड़ाइयां	151
दुआ़ए शबे अ़-रफ़ा	152
नवीं रात मिना में गुज़ारना सुन्नते मुअक्कदा है	153
अ़-रफ़ात शरीफ़ को रवानगी	154
राहे अ़-रफ़ात की दुआ़	155
अ़-रफ़ात शरीफ़ में दाख़िला	156
यौमे अ़-रफ़ा के दो अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ाइल	157
किसी ने जब औ़रतों को देखा	157
अ़-रफ़ात में कंकरों को गवाह करने की ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत	158
खुश नसीब ह़ाजियो और ह़ज्जनो !	159
वुक़ूफ़े अ़-रफ़ात शरीफ़ के 9 म-दनी फूल	159
इमामे अहले सुन्नत की ख़ास नसीह़त	161
अ़-रफ़ात शरीफ़ की दुआ़एं (अ़-रबी)	162
मैदाने अ़-रफ़ात में दुआ़ खड़े	
खड़े मांगना सुन्नत है	169
दुआ़ए अ़-रफ़ात (उर्दू)	171
ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द तक दुआ़ जारी रखिये !	180
गुनाहों से पाक हो गए	181
मुज़्दलिफ़ा को रवानगी	482
मग़रिब व इशा मिला कर पढ़ने का त़रीक़ा	182
कंकरियां चुन लीजिये	183
एक ज़रूरी एह़तियात़	183
वुक़ूफ़े मुज़्दलिफ़ा	184
मुज़्दलिफ़ा से मिना जाते हुए रास्ते में पढ़ने की दुआ़	185
मिना नज़र आए तो येह दुआ़ पढ़िये	186
दसवीं ज़ुल ह़िज्जह का पहला काम रम्य	186
रम्य के वक़्त एह़तियात़ के 5 म-दनी फूल	187
रम्य के 8 म-दनी फूल	189
इस्लामी बहनों की रम्य	190

उ़न्वान	सफ़्हा
मरीज़ों की रम्य	191
मरीज़ की त़रफ़ से रम्य का त़रीक़ा	191
ह़ज की क़ुरबानी के 7 म-दनी फूल	192
ह़ाजी और ब-क़रह ईद की क़ुरबानी	194
क़ुरबानी के टोकन	195
ह़ल्क़ और तक़्सीर के 17 म-दनी फूल	196
त़वाफ़े ज़ियारत के 10 म-दनी फूल	199
ग्यारह और बारह की रमी के 18 म-दनी फूल	201
रम्य के 12 मक्रूहात	204
त़वाफ़े रुख़्सत के 19 म-दनी फूल	205
ह़ज्जे बदल	208
ह़ज्जे बदल के 17 शराइत़	209
ह़ज्जे बदल के 9 मु-तफ़र्रिक़ म-दनी फूल	212
मदीने की ह़ाज़िरी	215
ज़ौक़ बढ़ाने का त़रीक़ा	215
मदीना कितनी देर में आएगा !	215

उ़न्वान	सफ़्हा
नंगे पाउं रहने की क़ुरआनी दलील	217
ह़ाज़िरी की तय्यारी	218
ऐ लीजिये ! सब्ज़ गुम्बद आ गया	218
हो सके तो बाबुल बक़ीअ़ से ह़ाज़िर हों	220
नमाज़े शुक्राना	221
सुनहरी जालियों के रू बरू	221
मुवा-जहा शरीफ़ पर ह़ाज़िरी	222
बारगाहे रिसालत में सलाम अ़र्ज़ कीजिये	223
सिद्दीक़े अक्बर की ख़िदमत में सलाम	225
फ़ारूक़े आ'ज़म की ख़िदमत में सलाम	226
दोबारा एक साथ शैख़ैन की ख़िदमतों में सलाम	226
येह दुआ़एं मांगिये	227
बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी के 12 म-दनी फूल	228
जाली मुबारक के रू बरू पढ़ने का विर्द	230
दुआ़ के लिये जाली मुबारक को पीठ मत कीजिये	230

उ़न्वान	सफ़्हा
पचास हज़ार ए'तिकाफ़ का सवाब	231
रोज़ाना पांच ह़ज का सवाब	232
सलाम ज़बानी ही अ़र्ज़ कीजिये	231
बुढ़िया को दीदार हो गया	233
अल इन्तिज़ार.....! अल इन्तिज़ार.....!	234
एक मेमन ह़ाजी को दीदार हो गया	234
गलियों में न थूकिये !	235
जन्नतुल बक़ीअ़	235
अहले बक़ीअ़ को सलाम अ़र्ज़ कीजिये	236
दिलों पर ख़न्जर फिर जाता	237
अल वदाई ह़ाज़िरी	237
अल वदाअ़ ताजदारे मदीना	239
मक्कए मुकर्रमा की ज़ियारतें	242
विलादत गाहे सरवरे आ़लम	242
ज-बले अबू क़ुबैस	242
ख़दी-जतुल कुब्रा का मकान	244
ग़ारे ज-बले सौर	245
ग़ारे ह़िरा	245

उ़न्वान	सफ़्ह़ा
दारे अरक़म	246
मह़ल्लए मस्फ़ला	247
जन्नतुल मअ़ला	247
मस्जिदे जिन्न	248
मस्जिदुर्रायह	248
मस्जिदे ख़ैफ़	249
मस्जिदे जिइ़र्राना	249
मज़ारे मैमूना	251
मस्जिदुल ह़राम में नमाज़े मुस्त़फ़ा के 11 मक़ामात	252
मदीनए मुनव्वरह की ज़ियारतें	253
रौ-ज़तुल जन्नह	253
मस्जिदे क़ुबा	254
उ़म्रे का सवाब	255
मज़ारे सय्यिदुना ह़म्ज़ा	255
शु-हदाए उहुद को सलाम करने की फ़ज़ीलत	256

उ़न्वान	सफ़्ह़ा
सय्यिदुना ह़म्ज़ा की ख़िदमत में सलाम	256
शु-हदाए उहुद को मज्मूई सलाम	258
ज़ियारतों पर ह़ाज़िरी के दो त़रीक़े	259
सुवाल व जवाब	
जराइम और इन के कफ़्फ़ारे	260
दम वग़ैरा की ता'रीफ़	260
दम वग़ैरा में रिआ़यत	260
दम, स-दक़े और रोज़े के ज़रूरी मसाइल	261
ह़ज की क़ुरबानी और दम के गोश्त के अह़काम	262
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरिये	262
क़ारिन के लिये डबल कफ़्फ़ारा होता है	263
क़ारिन के लिये कहां दुगना कफ़्फ़ारा है और कहां नहीं	263
त़वाफ़े ज़ियारत के बारे में सुवाल व जवाब	266
ह़ाएज़ा की सीट बुक हो तो	

उ़न्वान	सफ़्ह़ा
त़वाफ़े ज़ियारत का क्या करे ?	270
त़वाफ़ की निय्यत का अहम तरीन म-दनी फूल	271
त़वाफ़े रुख़्सत के बारे में सुवाल व जवाब	273
त़वाफ़े रुख़्सत का अहम मस्अला	273
त़वाफ़ के बारे में मु-तफ़र्रिक़ सुवाल व जवाब	275
इस्तिलामे ह़जर में हाथ कहां तक उठाएं ?	275
त़वाफ़ में फेरों की गिनती याद न रही तो ?	276
दौराने त़वाफ़ वुज़ू टूट जाए तो क्या करे ?	276
क़त़रे के मरीज़ के त़वाफ़ का अहम मस्अला	277
औरत ने बारी के दिनों में नफ़्ली त़वाफ़ कर लिया तो ?	278
मस्जिदुल ह़राम की पहली या दूसरी मन्ज़िल से त़वाफ़ का मस्अला	279
दौराने त़वाफ़ बुलन्द आवाज़ से मुनाजात पढ़ना कैसा ?	280

उ़न्वान	सफ़्ह़ा
इज़्तिबाअ़ और रमल के बारे में सुवाल व जवाब	281
सअ़्य के बारे में सुवाल व जवाब	281
बोस व कनार के बारे में सुवाल व जवाब	283
एह़राम में अम्रद से मुसा-फ़ह़ा किया और..?	285
मियां बीवी का हाथ में हाथ डाल कर चलना	285
हम बिस्तरी के बारे में सुवाल व जवाब	286
नाख़ुन तराश्ने के बारे में सुवाल व जवाब	288
बाल दूर करने के बारे में सुवाल व जवाब	289
ख़ुश्बू के बारे में सुवाल व जवाब	292
एह़राम में ख़ुश्बूदार साबुन का इस्ति'माल	299
मोह़रिम और गुलाब के फूलों के गजरे	300
सिले हुए कपड़े वग़ैरा के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल व जवाब	305

उ़न्वान	सफ़्ह़ा
एह़राम में टिशू पेपर का इस्ति'माल	306
वुक़ूफ़े अ़-रफ़ात के बारे में सुवाल व जवाब	311
मुज़्दलिफ़ा के बारे में अहम सुवाल	311
रम्य के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल व जवाब	312
क़ुरबानी से मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल व जवाब	312
ह़ल्क़ व तक़्सीर के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल व जवाब	313
मु-तफ़र्रिक़ सुवाल व जवाब	315
13 को ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द एह़राम बांध सकते हैं	319
ह़ज्जे अक्बर (अक्बरी ह़ज)	323
अ़रब शरीफ़ में काम करने वालों के लिये	324
एह़राम न बांधना हो तो ह़ीला	325
उ़म्रह या ह़ज के लिये सुवाल करना कैसा ?	326
उ़म्रे के वीज़े पर ह़ज के लिये रुकना कैसा ?	327
ग़ैर क़ानूनी रुकने वाले की नमाज़ का अहम मस्अला	329

उ़न्वान	सफ़्ह़ा
ह़रम में कबूतरों, टिड्डियों को उड़ाना, सताना	330
ह़रम के पेड़ वग़ैरा काटना	334
मीक़ात से बिग़ैर एह़राम गुज़रने के बारे में सुवाल जवाब	336
बच्चों का ह़ज (सुवालन जवाबन)	337
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	337
ना समझ बच्चे के ह़ज का त़रीक़ा	340
ना समझ बच्चे की त़रफ़ से निय्यत और लब्बैक का त़रीक़ा	342
ना समझ की त़रफ़ से त़वाफ़ की निय्यत और इस्तिलाम का त़रीक़ा	343
बच्चे के उ़म्रे का त़रीक़ा	345
बच्चा और नफ़्ली त़वाफ़	346
बच्चा और रौज़ए अन्वर की ह़ाज़िरी	349
माख़ज़ व मराजेअ़	351

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

ह़ज व उ़म्रे वाले के लिये 56 निय्यतें

(मअ़ रिवायात, ह़िकायात व म-दनी फूल)

(हुज्जाज व **मु'तमिरीन** इन में से मौक़अ़ की मुना-सबत से वोह निय्यतें कर लें जिन पर अ़मल करने का वाक़ेई ज़ेह्न हो)

《1》 सिर्फ़ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने के लिये **ह़ज** करूंगा। (क़बूलिय्यत के लिये इख़्लास शर्त़ है और इख़्लास ह़ासिल करने में येह बात बहुत मुआ़विन है कि रियाकारी और शोहरत के तमाम अस्बाब तर्क कर दिये जाएं। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : लोगों पर ऐसा ज़माना आएगा कि मेरी उम्मत के **अग़्निया** (या'नी मालदार) सैरो तफ़्रीह़ के लिये और दरमियाने द-रजे के लोग तिजारत के लिये और क़ुर्रा (या'नी क़ारी) दिखाने और सुनाने के लिये और फ़ु-क़रा मांगने के लिये **ह़ज** करेंगे। (تاریخ بغداد ج١٠ص٢٩٥)) 《2》 इस आयते मुबा-रका पर अ़मल करूंगा : (پ٢، البقرة:١٩٦) وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ؕ तर-ज-मए **कन्ज़ुल ईमान :** ह़ज और उ़म्रह **अल्लाह** के लिये पूरा करो। 《3》 (येह निय्यत सिर्फ़ फ़र्ज़ ह़ज करने वाला करे) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त की निय्यत से इस हुक्मे क़ुरआनी وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ؕ तर-ज-मए **कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** के लिये लोगों पर इस घर का ह़ज करना है जो इस तक चल सके। (پ٤، ال عمران:٩٧) पर अ़मल करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगा 《4》 हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी में **ह़ज** करूंगा 《5》 मां बाप की रिज़ा मन्दी ले लूंगा।

(बीवी शोहर को रिज़ा मन्द करे, मक़रूज़ जो अभी क़र्ज़ अदा नहीं कर सकता तो उस (क़र्ज़ ख़्वाह) से भी इजाज़त ले, अगर ह़ज **फ़र्ज़** हो चुका है तो इजाज़त न भी हो तब भी जाना होगा, (मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1051) हां **उ़म्रह** या **नफ़्ली ह़ज** के लिये वालिदैन से इजाज़त लिये बिग़ैर सफ़र न करे। येह बात **ग़लत़ मश्हूर है** कि जब तक वालिदैन ने ह़ज नहीं किया औलाद भी ह़ज नहीं कर सकती) **《6》** माले ह़लाल से **ह़ज** करूंगा। (वरना ह़ज क़बूल होने की उम्मीद नहीं अगर्चे फ़र्ज़ उतर जाएगा। अगर अपने माल में कुछ शुबा हो तो क़र्ज़ ले कर ह़ज को जाए और वोह क़र्ज़ अपने (उसी मश्कूक) माल से अदा कर दे। (ऐज़न) ह़दीस शरीफ़ में है : जो माले ह़राम ले कर ह़ज को जाता है जब **लब्बैक** कहता है, हातिफ़ ग़ैब से जवाब देता है : न तेरी **लब्बैक** क़बूल, न ख़िदमत पज़ीर (या'नी मन्ज़ूर) और तेरा ह़ज तेरे मुंह पर मरदूद है, यहां तक कि तू येह माले ह़राम कि तेरे क़ब्ज़े में है उस के मुस्तह़िक़ों को वापस दे। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 541)) **《7》** सफ़रे ह़ज की ख़रीदारियों में भाव कम करवाने से बचूंगा। (मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن फ़रमाते हैं : भाव (में कमी) के लिये **हुज्जत** (या'नी बह़सो तक्रार) करना बेहतर है बल्कि सुन्नत, सिवा उस चीज़ के जो **सफ़रे ह़ज** के लिये ख़रीदी जाए, इस (या'नी सफ़रे ह़ज की ख़रीदारियों) में बेहतर येह है कि जो मांगे दे दे। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 17, स. 128)) **《8》** चलते वक़्त घर वालों, रिश्तेदारों और दोस्तों से क़ुसूर मुआ़फ़ करवाऊंगा, इन से दुआ़ करवाऊंगा। (दूसरों से दुआ़ करवाने से ब-र-कत ह़ासिल होती है, अपने ह़क़ में दूसरे की दुआ़ क़बूल होने की ज़ियादा

उम्मीद होती है। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 326 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''फ़ज़ाइले दुआ़'' **सफ़ह़ा** 111 पर मन्क़ूल है, ह़ज़रते मूसा عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ख़ित़ाब हुवा : ऐ मूसा ! मुझ से उस मुंह के साथ दुआ़ मांग जिस से तू ने गुनाह न किया। अ़र्ज़ की : इलाही ! वोह मुंह कहां से लाऊं ? (यहां अम्बिया عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तवाज़ोअ़ है वरना वोह यक़ीनन हर गुनाह से मा'सूम हैं) फ़रमाया : औरों से दुआ़ करा कि उन के मुंह से तू ने गुनाह न किया। (مُلَخَّص اَز مثنوی مولانا روم دفتر سوم ص۳۱) ﴾9﴿ ह़ाजत से ज़ाइद तोशा (अख़राजात) रख कर रु-फ़क़ा पर ख़र्च और फ़ु-क़रा पर तसद्दुक़ (या'नी ख़ैरात) कर के सवाब कमाऊंगा। (ऐसा करना ह़ज्जे मबरूर की निशानी है,) **मबरूर** उस ह़ज और उ़म्रे को कहते हैं कि जिस में ख़ैर और भलाई हो, कोई गुनाह न हो, दिखावा, सुनाना न हो, लोगों के साथ एह़सान करना, खाना खिलाना, नर्म कलाम करना, सलाम फैलाना, ख़ुश ख़ुल्क़ी से पेश आना, येह सब चीज़ें हैं जो ह़ज को **मबरूर** बनाती हैं। जब कि खाना खिलाना भी **ह़ज्जे मबरूर** में दाख़िल है तो ह़ाजत से ज़ियादा तोशा साथ लो ताकि रफ़ीक़ों की मदद और फ़क़ीरों पर तसद्दुक़ भी करते चलो। अस्ल में मबरूर ''**बिर**'' से बना है जिस के मा'ना उस इत़ाअ़त और एह़सान के हैं जिस से **ख़ुदा** का तक़र्रुब ह़ासिल किया जाता है। (کتاب الحج ص ۹۸) ﴾10﴿ ज़बान और आंख वग़ैरा की ह़िफ़ाज़त करूंगा। (''नसीह़तों के म-दनी फूल'' **सफ़ह़ा** 29 और 30 पर है : (1) (ह़दीसे पाक है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है) **ऐ इब्ने आदम !** तेरा दीन उस वक़्त

तक दुरुस्त नहीं हो सकता जब तक तेरी ज़बान सीधी न हो और तेरी ज़बान तब तक सीधी नहीं हो सकती जब तक तू अपने रब عَزَّوَجَلَّ से ह़या न करे। (2) जिस ने मेरी ह़राम कर्दा चीज़ों से अपनी आंखों को झुका लिया (या'नी उन्हें देखने से बचा) मैं उसे जहन्नम से अमान (या'नी पनाह) अ़ता कर दूंगा) ﴾11﴿ दौराने सफ़र ज़िक्रो दुरूद से दिल बहलाऊंगा। (इस से फ़िरिश्ता साथ रहेगा गाने बाजे और लग़्विय्यात का सिल्सिला रखा तो शैत़ान साथ रहेगा) ﴾12﴿ अपने लिये और तमाम मुसल्मानों के लिये दुआ़ करता रहूंगा। (मुसाफ़िर की दुआ़ क़बूल होती है। नीज़ "फ़ज़ाइले दुआ़" **सफ़ह़ा** 220 पर है : मुसल्मान, कि मुसल्मान के लिये उस की **ग़ैबत** (या'नी ग़ैर मौजू–दगी) में (जो) दुआ़ मांगे (वोह क़बूल होती है) ह़दीस शरीफ़ में है : येह (या'नी ग़ैर मौजू–दगी वाली) दुआ़ निहायत जल्द क़बूल होती है। फ़िरिश्ते कहते हैं : उस के ह़क़ में तेरी दुआ़ क़बूल और तुझे भी इसी त़रह़ की ने'मत ह़ुसूल) ﴾13﴿ सब के साथ अच्छी गुफ़्त–गू करूंगा और ह़स्बे ह़ैसिय्यत मुसल्मानों को खाना खिलाऊंगा। (**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : **मबरूर ह़ज** का बदला जन्नत है। अ़र्ज़ की गई : **या रसुलल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! ह़ज की मबरूरिय्यत किस चीज़ के साथ है ? फ़रमाया : अच्छी गुफ़्त–गू और खाना खिलाना। (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۴۷۹ حدیث۴۱۱۹)) ﴾14﴿ परेशानियां आएंगी तो **सब्र** करूंगा। (**ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : माल या बदन में कोई नुक़्सान या मुसीबत पहुंचे तो उसे ख़ुशदिली से क़बूल करे क्यूं कि येह इस के

ह़ज्जे मबरूर की अ़लामत है। (احیاء العلوم ج۱ ص ۳۰٤)) ﴿15﴾ अपने रु-फ़क़ा के साथ ह़ुस्ने अख़्लाक़ का मुज़ा-हरा करते हुए उन के आराम वग़ैरा का ख़याल रखूंगा, ग़ुस्से से बचूंगा, बेकार बातों में नहीं पड़ूंगा, लोगों की (ना ख़ुश गवार) बातें बरदाश्त करूंगा ﴿16﴾ तमाम ख़ुश अ़क़ीदा मुसल्मान अ़-रबों से (वोह चाहे कितनी ही सख़्ती करें, मैं) नरमी के साथ पेश आऊंगा। (बहारे शरीअ़त जिल्द 1 ह़िस्सा 6 **सफ़ह़ा** 1060 पर है : बद्दूओं और सब अ़-रबिय्यों से बहुत नरमी के साथ पेश आए, अगर वोह सख़्ती करें (भी तो) अदब से **तह़म्मुल** (या'नी बरदाश्त) करे इस पर **शफ़ाअ़त** नसीब होने का वा'दा फ़रमाया है। ख़ुसूसन अहले ह़-रमैन, ख़ुसूसन अहले मदीना। अहले अ़रब के अफ़्आ़ल पर ए'तिराज़ न करे, न दिल में कदूरत (या'नी मैल) लाए, इस में दोनों[2] जहां की सआ़दत है) ﴿17﴾ भीड़ के मौक़अ़ पर भी लोगों को अज़िय्यत न पहुंचे इस का ख़याल रखूंगा और अगर ख़ुद को किसी से तक्लीफ़ पहुंची तो **सब्र** करते हुए मुआ़फ़ करूंगा। (ह़दीसे पाक में है : जो शख़्स अपने **ग़ुस्से** को रोकेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के रोज़ उस से अपना अ़ज़ाब रोक देगा। (شُعَبُ الْاِیمان ج٦ ص٣١٥ حدیث ٨٣١١)) ﴿18﴾ मुसल्मानों पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए "नेकी की दा'वत" दे कर सवाब कमाऊंगा ﴿19﴾ सफ़र की सुन्नतों और आदाब का ह़त्तल इम्कान ख़याल रखूंगा ﴿20﴾ एह़राम में **लब्बैक** की ख़ूब कसरत करूंगा। (इस्लामी भाई बुलन्द आवाज़ से कहे और इस्लामी बहन पस्त आवाज़ से)

﴿21﴾ **मस्जिदैने करीमैन** (बल्कि हर जगह हर मस्जिद) में दाखि़ल होते वक़्त पहले सीधा पाउं अन्दर रखूंगा और मस्जिद में दाखि़ले की दुआ़ पढूंगा। इसी त़रह़ निकलते वक़्त उलटा पाउं पहले निकालूंगा और बाहर निकलने की दुआ़ पढूंगा ﴿22﴾ जब जब किसी मस्जिद खु़सूसन **मस्जिदैने करीमैन** में दाखि़ला नसीब हुवा, नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत कर के सवाब कमाऊंगा। (याद रहे ! मस्जिद में खाना पीना, आबे ज़मज़म पीना, स-ह़री व इफ़्त़ार करना और सोना जाइज़ नहीं, ए'तिकाफ़ की निय्यत की होगी तो ज़िम्नन येह सब काम जाइज़ हो जाएंगे) ﴿23﴾ का'बए मुशर्रफ़ा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا पर **पहली नज़र** पड़ते ही दुरूदे पाक पढ़ कर दुआ़ मांगूंगा ﴿24﴾ दौराने त़वाफ़ "मुस्तजाब" पर (जहां सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते दुआ़ पर आमीन कहने के लिये मुक़र्रर हैं वहां) अपनी और सारी उम्मत की मग़्फ़िरत के लिये दुआ़ करूंगा ﴿25﴾ जब जब आबे ज़मज़म पियूंगा, अदाए सुन्नत की निय्यत से क़िब्ला रू, खड़े हो कर, **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर, चूस चूस कर तीन3 सांस में, पेट भर कर पियूंगा, फिर दुआ़ मांगूंगा कि वक़्ते क़बूल है। (फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : हम में और मुनाफ़िक़ों में येह फ़र्क़ है कि वोह ज़मज़म कूख (या'नी पेट) भर नहीं पीते। (ابن ماجہ ج ۳ ص ۴۸۹ حدیث ۳۰۶۱)) ﴿26﴾ **मुल्तज़म** से लिपटते वक़्त येह निय्यत कीजिये कि **मह़ब्बत** व शौक़ के साथ का'बा और रब्बे का'बा عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल कर रहा हूं और इस के तअ़ल्लुक़ से ब-र-कत पा रहा हूं। (उस वक़्त येह उम्मीद रखिये कि बदन का हर वोह ह़िस्सा जो का'बए मुशर्रफ़ा से मस (TOUCH)

हुवा है اِنْ شَآءَاللّٰه जहन्नम से आज़ाद होगा) ﴿27﴾ **गि़लाफ़े का'बा** से चिमटते वक़्त येह निय्यत कीजिये कि मग़्फ़िरत व आ़फ़िय्यत के सुवाल में इस्रार कर रहा हूं, जैसे कोई ख़त़ाकार उस शख़्स के कपड़ों से लिपट कर गिड़–गिड़ाता है जिस का वोह मुजरिम है और ख़ूब आ़जिज़ी करता है कि जब तक अपने जुर्म की मुआ़फ़ी और आयन्दा के अम्न व सलामती की ज़मानत नहीं मिलेगी दामन नहीं छोड़ूंगा। (**गि़लाफ़े का'बा** वग़ैरा पर लोग काफ़ी ख़ुश्बू लगाते हैं लिहाज़ा एह़राम की ह़ालत में एह़तियात़ कीजिये) ﴿28﴾ रम्ये जमरात में **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मुशा–बहत (या'नी मुवा–फ़क़त) और **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत पर अ़मल, शैत़ान को रुस्वा कर के मार भगाने और ख़्वाहिशाते नफ़्सानी को रज्म (या'नी संगसार) करने की निय्यत कीजिये। (**ह़िकायत :** ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैदे बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی ने एक ह़ाजी से पूछा कि तूने **रम्य** के वक़्त नफ़्सानी ख़्वाहिशात को कंकरियां मारीं या नहीं ? उस ने जवाब दिया : नहीं। फ़रमाया : तो फिर तूने **रम्य** ही नहीं की। (या'नी रम्य का पूरा ह़क़ अदा नहीं किया) (مُلَخّص از کشف المحجوب ص ۳۶۳)) ﴿29﴾ सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बिल ख़ुसूस छ[6] मक़ामात या'नी सफ़ा, मर्वह, अ़–रफ़ात, मुज़्दलिफ़ा, जम्रए ऊला, जम्रए वुस्त़ा पर दुआ़ के लिये ठहरे, मैं भी **अदाए मुस्त़फ़ा** की अदा की निय्यत से इन जगहों में जहां जहां मुम्किन हुवा वहां रुक कर दुआ़ मांगूंगा ﴿30﴾ त़वाफ़ व सअ़्य में लोगों को धक्के देने से बचता रहूंगा। (जान बूझ कर किसी को इस त़रह़ धक्के

देना कि ईज़ा पहुंचे बन्दे की ह़क़ त–लफ़ी और गुनाह है, तौबा भी करनी होगी और जिस को ईज़ा पहुंचाई उस से मुआ़फ़ भी कराना होगा। बुज़ुर्गों से मन्क़ूल है : एक दांग की (या'नी मा'मूली सी) मिक़्दार **अल्लाह तआ़ला** के किसी ना पसन्दीदा फ़े'ल को तर्क कर देना मुझे **पांच सो नफ़्ली ह़ज** करने से ज़ियादा पसन्दीदा है। (جامع العلوم والحکم لابن رجب ص ۱۲۵) ﴾31﴿ उ़–लमा व मशाइख़े अहले सुन्नत की ज़ियारत व सोह़बत से ब–र–कत ह़ासिल करूंगा, इन से अपने लिये बे ह़िसाब मग़्फ़िरत की दुआ़ करवाऊंगा ﴾32﴿ इ़बादात की कसरत करूंगा बिल ख़ुसूस नमाज़े पन्जगाना पाबन्दी से अदा करूंगा ﴾33﴿ गुनाहों से हमेशा के लिये तौबा करता हूं और सिर्फ़ अच्छी सोह़बत में रहा करूंगा। (एह़याउल उ़लूम में है : ह़ज की **मबरूरिय्यत** की एक अ़लामत येह है कि जो गुनाह करता था उन्हें छोड़ दे, बुरे दोस्तों से कनारा कश हो कर नेक बन्दों से दोस्ती करे, खेलकूद और ग़फ़्लत भरी बैठकों को तर्क कर के ज़िक्र और बेदारी की मजालिस इख़्तियार करे। इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی एक और जगह फ़रमाते हैं : **ह़ज्जे मबरूर** की अ़लामत येह है कि दुन्या से बे रग़्बत और आख़िरत की जानिब मु–तवज्जेह हो और बैतुल्लाह शरीफ़ की मुलाक़ात के बा'द अपने रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात के लिये तय्यारी करे। (اِحیاءُ العلوم ج ۱ ص ۳۴۹، ۳۵۴) ﴾34﴿ वापसी के बा'द गुनाहों के क़रीब भी न जाऊंगा, नेकियों में ख़ूब इज़ाफ़ा करूंगा और सुन्नतों पर मज़ीद अ़मल बढ़ाऊंगा (आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : (ह़ज से पहले के ह़ुक़ूक़ुल्लाह और ह़ुक़ूक़ुल इ़बाद जिस के ज़िम्मे थे) अगर बा'दे ह़ज बा वस्फ़े क़ुदरत उन

उमूर (म-सलन क़ज़ा नमाज़ व रोज़ा, बाक़ी मांदा ज़कात वग़ैरा और तलफ़ कर्दा बक़िय्या हुक़ूक़ुल इबाद की अदाएगी) में क़ासिर रहा तो येह सब गुनाह अज़ सरे नौ उस के सर होंगे कि हुक़ूक़ तो ख़ुद बाक़ी ही थे उन की अदा में फिर ताख़ीर व तक़्सीर से गुनाह ताज़ा हुए और वोह ह़ज उन के इज़ाले को काफ़ी न होगा कि ह़ज गुज़रे (या'नी पिछले) गुनाहों को धोता है आयन्दा के लिये परवानए बे क़ैदी (या'नी गुनाह करने का इजाज़त नामा) नहीं होता बल्कि **ह़ज्जे मबरूर** की निशानी ही येह है कि पहले से अच्छा हो कर पलटे। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 466)) ﴾35﴿ **मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरह** زَادَھُمَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا के यादगार मुबारक मक़ामात की ज़ियारत करूंगा ﴾36﴿ सआ़दत समझते हुए ब निय्यते सवाब **मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتعۡظِیۡمًا की ज़ियारत करूंगा ﴾37﴿ सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे गुहर बार की पहली ह़ाज़िरी से क़ब्ल ग़ुस्ल करूंगा, नया सफ़ेद लिबास, सर पर नया सरबन्द नई टोपी और उस पर नया इमामा शरीफ़ बांधूंगा, सुरमा और उ़म्दा ख़ुश्बू लगाऊंगा ﴾38﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान :

وَلَوۡ اَنَّھُمۡ اِذۡ ظَّلَمُوۡۤا اَنۡفُسَھُمۡ جَآءُوۡكَ فَاسۡتَغۡفَرُوا اللّٰہَ وَاسۡتَغۡفَرَ لَھُمُ الرَّسُوۡلُ لَوَجَدُوا اللّٰہَ تَوَّابًا رَّحِیۡمًا ﴿۶۴﴾

(پ۵،النساء:۶۴) (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ मह़बूब ! तुम्हारे ह़ुज़ूर ह़ाज़िर हों और फिर **अल्लाह** से मुआ़फ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए तो

ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं) पर अ़मल करते हुए मदीने के शहन्शाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िरी दूंगा ﴾39﴿ अगर बस में हुवा तो अपने मोह़सिन व ग़म गुसार आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में इस त़रह़ ह़ाज़िर होउंगा जिस त़रह़ एक भागा हुवा गुलाम अपने आक़ा की बारगाह में लरज़ता कांपता, आंसू बहाता ह़ाज़िर होता है। (**ह़िकायत :** सय्यिदुना **इमामे मालिक** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق जब सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र करते रंग उन का बदल जाता और झुक जाते। **ह़िकायत :** ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق से किसी ने ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब **सख़्तियानी** قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی के बारे में पूछा तो फ़रमाया : मैं जिन ह़ज़रात से रिवायत करता हूं वोह उन सब में अफ़्ज़ल हैं, मैं ने उन्हें दो[2] मर्तबा सफ़रे ह़ज में देखा कि जब उन के सामने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم का ज़िक्रे अन्वर होता तो वोह इतना रोते कि मुझे उन पर रह़्म आने लगता। मैं ने उन में जब ता'ज़ीमे मुस्त़फ़ा व इ़श्क़े ह़बीबे ख़ुदा का येह आ़लम देखा तो **मु-तअस्सिर** हो कर उन से अह़ादीसे मुबा-रका रिवायत करनी शुरूअ़ कीं। (الشفاء ج۲ ص ٤١، ٤٢)) ﴾40﴿ सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शाही दरबार में अ-दबो एह़तिराम और ज़ौक़ो शौक़ के साथ दर्द भरी मो'तदिल (या'नी दरमियानी) आवाज़ में सलाम अ़र्ज़ करूंगा ﴾41﴿ हुक्मे क़ुरआनी :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَ لَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَ اَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝۲

(پ۲۶،الحجرات:۲) (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! अपनी आवाजे़ं ऊंची न करो उस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से और उन के हु़ज़ूर बात चिल्ला कर न कहो जैसे आपस में एक दूसरे के सामने चिल्लाते हो कि कहीं तुम्हारे अ़मल अकारत न हो जाएं और तुम्हें ख़बर न हो) पर अ़मल करते हुए अपनी आवाज़ को पस्त और क़दरे धीमी रखूंगा **《42》** اَسْئَلُكَ الشَّفَاعَةَ يَارَسُوْلَ الله (या'नी **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं आप की शफ़ाअ़त का सुवाली हूं) की तक्रार कर के शफ़ाअ़त की भीक मांगूंगा **《43》** शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की अ़-ज़मत वाली बारगाहों में भी सलाम अ़र्ज़ करूंगा **《44》** ह़ाज़िरी के वक़्त इधर उधर देखने और सुनहरी जालियों के अन्दर झांकने से बचूंगा **《45》** जिन लोगों ने सलाम पेश करने का कहा था उन का सलाम बारगाहे शाहे अनाम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ करूंगा **《46》** सुनहरी जालियों की त़रफ़ पीठ नहीं करूंगा **《47》** **जन्नतुल बक़ीअ़** के मदफ़ूनीन की ख़िदमतों में सलाम अ़र्ज़ करूंगा **《48》** ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और शु-हदाए उह़ुद के मज़ारात की ज़ियारत करूंगा, दुआ़ व ईसाले सवाब करूंगा, ज-बले उह़ुद का दीदार करूंगा **《49》** मस्जिदे क़ुबा शरीफ़ में ह़ाज़िरी दूंगा **《50》** **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا के दरो दीवार, बर्गो बार, गुलो ख़ार और पथ्थर व गुबार और वहां की हर शै का ख़ूब अ-दबो एह़तिराम करूंगा। (**ह़िकायत :** ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق

ने ता'ज़ीमे ख़ाके मदीना की ख़ातिर मदीनए त़य्यिबा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में कभी भी क़ज़ाए ह़ाजत नहीं की बल्कि हमेशा ह़रम से बाहर तशरीफ़ ले जाते थे, अलबत्ता ह़ालते मरज़ में मजबूरी की वजह से मा'ज़ूर थे। (بستان المحدثين ص١٩)) 《51》 **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की किसी भी शै पर ऐ़ब नहीं लगाऊंगा। (**ह़िकायत : मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में एक शख़्स हर वक़्त रोता और मुआ़फ़ी मांगता रहता था, जब इस का सबब पूछा गया तो बोला : मैं ने एक दिन **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की **दही शरीफ़** को खट्टा और ख़राब कह दिया, येह कहते ही मेरी निस्बत सल्ब हो गई और मुझ पर इ़ताब हुवा (या'नी डांट पड़ी) कि "ओ दियारे मह़बूब की **दही** को ख़राब कहने वाले ! निगाहे **मह़ब्बत** से देख ! मह़बूब की गली की हर हर शै उ़म्दा है।" (माख़ूज़ अज़ बहारे मस्नवी, स. 128) **ह़िकायत :** ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق के सामने किसी ने येह कह दिया कि "मदीने की मिट्टी ख़राब है" येह सुन कर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़तवा दिया कि इस गुस्ताख़ को तीस30 दुर्रे लगाए जाएं और क़ैद में डाल दिया जाए। (الشفاء ج٢ص٥٧)) 《52》 अ़ज़ीज़ों और इस्लामी भाइयों को तोह़फ़ा देने के लिये आबे ज़मज़म, **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की खजूरें और सादा **तस्बीहें** वग़ैरा लाऊंगा। (बारगाहे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه में **सुवाल** हुवा : तस्बीह़ किस चीज़ की होनी चाहिये ? आया लकड़ी की या पथ्थर वग़ैरा की ? **अल जवाब :** तस्बीह़ लकड़ी की हो या पथ्थर की मगर बेश क़ीमत (या'नी क़ीमती) होना मकरूह है और सोने चांदी की ह़राम। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 597))

﴾53﴿ जब तक **मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में रहूंगा दुरूदो सलाम की कसरत करूंगा ﴾54﴿ **मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में क़ियाम के दौरान जब जब सब्ज़ गुम्बद की त़रफ़ गुज़र होगा, फ़ौरन उस त़रफ़ रुख़ कर के खड़े खड़े हाथ बांध कर सलाम अ़र्ज़ करूंगा । (**ह़िकायत : मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर एक साह़िब ने बताया : मुझे ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई, फ़रमाया : अबू ह़ाज़िम से कह दो, “तुम मेरे पास से यूं ही गुज़र जाते हो, रुक कर सलाम भी नहीं करते !” इस के बा’द सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपना मा’मूल बना लिया कि जब भी रौज़ए अन्वर की त़रफ़ गुज़र होता, अ-दबो एह़तिराम के साथ खड़े हो कर सलाम अ़र्ज़ करते, फिर आगे बढ़ते । (المنامات مع موسوعة ابن اَبِی الدُّنیا ج۳ص۱۵۳حدیث۳۲۳)) ﴾55﴿ अगर जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न नसीब न हुवा, और **मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا से रुख़्सत की जां सोज़ घड़ी आ गई तो बारगाहे रिसालत में अल वदाई ह़ाज़िरी दूंगा और गिड़गिड़ा कर बल्कि मुम्किन हुवा तो रो रो कर बार बार ह़ाज़िरी की इल्तिजा करूंगा ﴾56﴿ अगर बस में हुवा तो मां की मामता भरी गोद से जुदा होने वाले बच्चे की त़रह़ बिलक बिलक कर रोते हुए दरबारे रसूल को बार बार ह़सरत भरी निगाहों से देखते हुए रुख़्सत होउंगा ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

आप को अ़ज़्मे मदीना मुबारक हो

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : ''इ़ल्म का ह़ासिल करना हर मुसल्मान पर **फ़र्ज़** है।'' (اِبن ماجه ج۱ ص١٤٦ حديث ٢٢٤) इस की शर्ह़ में येह भी है कि **ह़ज** अदा करने वाले पर फ़र्ज़ है कि **ह़ज** के ज़रूरी मसाइल जानता हो। उ़मूमन हुज्जाजे किराम त़वाफ़ व सअ़्य वग़ैरा में पढ़ी जाने वाली **अ़-रबी दुआ़ओं** में ज़ियादा दिल चस्पी लेते हैं अगर्चे येह भी बहुत अच्छा है जब कि दुरुस्त पढ़ सकते हों, अगर कोई येह दुआ़एं न भी पढ़े तो गुनहगार नहीं मगर **ह़ज** के ज़रूरी मसाइल न जानना गुनाह है। **रफ़ीक़ुल ह़-रमैन** اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप को बहुत सारे गुनाहों से बचा लेगी। बा'ज़ मुफ़्त दी जाने वाली ह़ज की उर्दू किताबों में शर-ई़ मसाइल में सख़्त बे एह़तियात़ी से काम लिया गया है, इस से तश्वीश होती है कि इन कुतुब से रहनुमाई लेने वाले ह़ाजियों का क्या बनेगा, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **रफ़ीक़ुल ह़-रमैन** बरसों से लाखों की ता'दाद में छप रही है। इस में ज़ियादा तर मसाइल **फ़तावा र-ज़विय्या** शरीफ़ और **बहारे शरीअ़त** जैसी मुस्तनद किताबों में मुन्दरज

मसाइल आसान कर के लिखने की कोशिश की गई है, अब इस में मज़ीद तरमीम व इज़ाफ़ा किया गया है और इस पर **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने नज़रे सानी की है और **दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत** ने अव्वल ता आख़िर एक एक मस्अला देख कर रहनुमाई फ़रमाई है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ख़ूब अच्छी अच्छी निय्यतें कर के **रफ़ीकुल ह़-रमैन** की तरकीब की गई है। **वल्लाह ! रफ़ीकुल ह़-रमैन** से मदीने के मुसाफ़िरों की रहनुमाई कर के सिर्फ़ व सिर्फ़ हुसूले रिज़ाए इलाही मक़्सूद है, ज़ाती आमदनी का तसव्वुर नहीं। शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए **रफ़ीकुल ह़-रमैन** मेहरबानी फ़रमा कर अव्वल ता आख़िर पूरी पढ़ लीजिये।

बयान कर्दा मसाइल पर ग़ौर कीजिये, कोई बात समझ में न आए तो उ़-लमाए अहले सुन्नत से पूछिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! "**रफ़ीकुल ह़-रमैन**" के अन्दर **ह़ज व उ़म्रे** के मसाइल के साथ साथ कसीर ता'दाद में **अ़-रबी दुआ़एं** भी मअ़ तरजमा शामिल हैं। अगर सफ़रे मदीना में **रफ़ीकुल ह़-रमैन** आप के साथ हुई तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **ह़ज** की किसी और किताब की कम ही ह़ाजत होगी। हां, जो इस से भी

ज़ियादा मसाइल सीखना चाहे और सीखना भी चाहिये तो **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा 6 का मुत़ा-लआ़ करे।

म-दनी इल्तिजा : हो सके तो 12 अ़दद **रफ़ीक़ुल ह़-रमैन**, 12 अ़दद जेबी साइज़ के कोई से भी रसाइल और 12 अ़दद सुन्नतों भरे बयानात की V.C.Ds **मक-त-बतुल मदीना** से हदिय्यतन ले कर साथ ले लीजिये और हुसूले सवाब के लिये वहां तक़्सीम फ़रमा दीजिये नीज़ फ़राग़त के बा'द अपनी **रफ़ीक़ुल ह़-रमैन** भी ह़-रमैने त़य्यिबैन ही में किसी **इस्लामी भाई** को पेश कर दीजिये।

बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا और सय्यिदुना ह़म्ज़ा, शु-हदाए उहुद, अहले बक़ीअ़ व मअ़ला के मदफ़ूनीन की बारगाहों में मेरा सलाम अ़र्ज़ कीजियेगा। दौराने सफ़र बिल ख़ुसूस ह़-रमैने त़य्यिबैन में मुझ गुनहगार की बे ह़िसाब बख़्शिश और तमाम उम्मत की मग़्फ़िरत की दुआ़ के लिये म-दनी इल्तिजा है। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ आप के ह़ज व ज़ियारत को आसान करे और क़बूल फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

एक चुप सो100 सुख

त़ालिबे ग़मे मदीना व
बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व
बे ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
का पड़ोस

6 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1433 सि. हि.
27-06-2012

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

मदीने के मुसाफ़िर और इमदादे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** **एक** नौ जवान **त़वाफ़े का'बा** करते हुए फ़क़त़ **दुरूद शरीफ़** ही पढ़ रहा था किसी ने उस से कहा : क्या तुझे कोई और **दुआ़ए त़वाफ़** नहीं आती या कोई और बात है ? उस ने कहा : दुआ़एं तो आती हैं मगर बात येह है कि मैं और मेरे वालिद दोनों **ह़ज** के लिये निकले थे, वालिद साहि़ब रास्ते में बीमार हो कर फ़ौत हो गए, उन का **चेहरा सियाह** पड़ गया, आंखें उलट गईं और पेट फूल गया ! मैं बहुत रोया और कहा : اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْہِ رٰجِعُوْن जब रात की तारीकी छा गई तो मेरी आंख लग गई, मैं सो गया तो मैं ने **ख़्वाब** में एक सफ़ेद लिबास में मल्बूस मुअ़त्त़र मुअ़त्त़र **ह़सीनो जमील हस्ती** की ज़ियारत की । उन्हों ने मेरे वालिदे मर्हूम की मय्यित के क़रीब तशरीफ़ ला कर अपना **नूरानी हाथ** उन के चेहरे और पेट पर फेरा, देखते ही देखते मेरे मर्हूम बाप का चेहरा **दूध से ज़ियादा सफ़ेद** और **रोशन** हो गया और पेट भी अस्ली ह़ालत पर आ गया । जब वोह बुज़ुर्ग वापस जाने लगे तो मैं ने उन का दामने अक़्दस थाम लिया और अ़र्ज़ की : या सय्यिदी ! (या'नी ऐ मेरे सरदार !)

आप को उस की क़सम जिस ने आप को इस जंगल में मेरे **वालिदे मर्हूम** के लिये रह़मत बना कर भेजा है आप कौन हैं ? फ़रमाया : तू हमें नहीं पहचानता ? हम तो **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) हैं, तेरा येह बाप बहुत गुनहगार था मगर हम पर ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़ता था, जब इस पर येह मुसीबत नाज़िल हुई तो इस ने हम से फ़रियाद की लिहाज़ा हम ने इस की **फ़रियाद रसी** की है और हम हर उस शख़्स की **फ़रियाद रसी** करते हैं जो इस दुन्या में हम पर ज़ियादा **दुरूद** भेजता है।

(رَوضُ الرَّیاحین ص۱۲۵)

फ़रियाद उम्मती जो करे ह़ाले ज़ार में
मुम्किन नहीं कि ख़ैरे बशर को ख़बर न हो

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"ख़ुदा आप का ह़ज क़बूल करे" के सोलह ह़ुरूफ़ की निस्बत से ह़ाजियों के लिये कारआमद 16 म-दनी फूल

۞ **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की रिज़ा के त़लब गार **प्यारे प्यारे ह़ाजियो !** आप को **सफ़रे ह़ज** व **ज़ियारते मदीना** बहुत बहुत मुबारक हो। ज़रूरिय्याते सफ़र का रवानगी से तीन[3] चार[4] दिन पहले ही इन्तिज़ाम कर लीजिये, नीज़ किसी तजरिबा कार ह़ाजी से मश्वरा भी फ़रमा लीजिये ۞ अपने वत़न से फल या पके हुए खाने के डब्बे, मिठाई

वगै़रा गिज़ाई अश्या साथ ले जाने की ह़ाजियों को गवर्नमेन्ट की त़रफ़ से मुमा-न-अ़त है ۞ **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की रिहाइश गाह से मस्जिदुल ह़राम पैदल जाना होगा इस में और त़वाफ़ व सअ़्य में सब मिला कर तक़्रीबन 7 किलो मीटर बनते हैं, नीज़ मिना, अ़-रफ़ात और मुज़्दलिफ़ा में भी काफ़ी चलना होगा, लिहाज़ा **ह़ज** के बहुत दिन पहले से रोज़ाना **पौन घन्टा** पैदल चलने की तरकीब रखिये (इस की मुस्तक़िल आ़दत बना ली जाए तो सिह़ह़त के लिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ बेह़द मुफ़ीद है) वरना एक दम से बहुत ज़ियादा पैदल चलने के सबब **ह़ज** में आप आज़्माइश में पड़ सकते हैं ! ۞ कम खाने की आ़दत डालिये, फ़ाएदा न हो तो कहना ! खुसूसन **5 अय्यामे ह़ज** में हलकी फुलकी गिज़ा पर क़नाअ़त कीजिये ताकि बार बार इस्तिन्जा की "ह़ाजत" न हो, खुसूसन मिना, मुज़्दलिफ़ा और अ़-रफ़ात के इस्तिन्जा ख़ानों पर लम्बी लम्बी क़ितारें लगती हैं ! ۞ इस्लामी बहनें कांच की चूड़ियां पहन कर त़वाफ़ न करें, भीड़ में टूटने से खुद अपने और दूसरे के ज़ख़्मी होने का अन्देशा है ۞ इस्लामी बहनें ऊंची एड़ी की चप्पलें न पहनें कि रास्ते में पैदल चलने में परेशानी होगी ۞ ह़-रमैने त़य्यिबैन की रिहाइश गाहों के वॉशरूम में "इंग्लिश कमोड" होते हैं, वत़न से इन का इस्ति'माल सीख लीजिये वरना कपड़े पाक रखना निहायत दुश्वार होगा ۞ किसी का दिया हुवा "पेकिट" खोल कर चेक किये बिगै़र हरगिज़ साथ मत लीजिये अगर कोई मम्नूआ़ चीज़ निकल आई तो मत़ार (AIRPORT) पर मुसीबत में पड़ सकते हैं

۞ हवाई जहाज़ में अपनी ज़रूरत की अदवियात मअ़ डॉक्टरी सनद अपने गले के बेग में रखिये ताकि एमरजन्सी में आसानी रहे ۞ **ज़बान** और **आंखों का क़ुफ़्ले मदीना** लगाइये, अगर बिला ज़रूरत बोलते रहने की आ़दत हुई तो ग़ीबतों, तोह्मतों और दिल आज़ारियों वग़ैरा गुनाहों से बचना दुश्वार रहेगा, इसी त़रह़ आंखों की ह़िफ़ाज़त और अक्सर निगाहें नीची रखने की तरकीब न हुई तो बद निगाही से मह़फ़ूज़ रहना निहायत मुश्किल होगा। ह़रम में एक नेकी लाख नेकी और एक गुनाह लाख गुना है। ह़रम से मुराद सिर्फ़ मस्जिदुल ह़राम नहीं तमाम ह़ुदूदे ह़रम है ۞ नमाज़ में अक्सर मोह़रिम के सीने या पेट का कुछ ह़िस्सा खुल जाता है इस में किसी क़िस्म की कराहत नहीं क्यूं कि एह़राम में येह ख़िलाफ़े मो'ताद (या'नी खिलाफ़े आ़दत) नहीं और इस का ख़याल रखना भी बहुत दुश्वार है ۞ **कफ़न** को आबे ज़मज़म में भिगो कर लाना अच्छा है कि इस त़रह़ मक्के मदीने की हवाएं भी इसे चूम लेंगी। निचोड़ने में येह एह़तियात़ करनी मुनासिब है कि इस मुक़द्दस पानी का एक क़त़रा भी गिर कर नाली वग़ैरा में न जाए, किसी पौदे वग़ैरा में डाल देना चाहिये। (आबे ज़मज़म शरीफ़ अपने वत़न में भी छिड़क सकते हैं) ۞ त़वाफ़ व सअ़्य करते हुए बा'ज़ अवक़ात **ह़ज** की किताबों के अवराक़ गिरे पड़े नज़र आते हैं, मुम्किना सूरत में उन को उठा लीजिये मगर त़वाफ़ में का'बा शरीफ़ को पीठ या सीना न हो इस का ख़याल रखिये। अलबत्ता किसी की गिरी पड़ी रक़म या बटवा वग़ैरा न उठाइये (चन्द बरस पहले एक पाकिस्तानी ह़ाजी ने दौराने

त़वाफ़ हमदर्दी में किसी की गिरी हुई रक़म उठाई, रक़म वाले को ग़लत़ फ़हमी हुई और उस ने पोलीस के ह़वाले किया और बेचारा अ़र्से के लिये जेल में डाल दिया गया !) ۞ ह़िजाज़े मुक़द्दस में नंगे पाउं रहना अच्छा है मगर घर और मस्जिद के ह़म्माम और रास्ते की कीचड़ वग़ैरा में चप्पल पहन लीजिये। नीज़ गर्द आलूद और मैले कुचैले पाउं ले कर मस्जिदैने करीमैन बल्कि किसी मस्जिद में भी दाख़िल न हों, अगर सफ़ाई नहीं रख पाए तो बिग़ैर चप्पल मत रहिये ۞ मुस्ता'मल (या'नी इस्ति'माली) चप्पल पहन कर बेसन पर वुज़ू करने से एह़तियात़ कीजिये कि अक्सर नीचे पानी बिखरा होता है अगर चप्पल नापाक हुए तो अन्देशा है कि छींटे उड़ कर आप के लिबास वग़ैरा पर पड़ें। (येह ज़ेह्न में रहे कि जब तक चप्पल या पानी या किसी भी चीज़ के बारे में यक़ीनी त़ौर पर नजिस या'नी नापाक होने का इ़ल्म न हो वोह पाक है) ۞ मिना शरीफ़ के इस्तिन्जा ख़ानों के नल में आ़म त़ौर पर पानी का बहाव काफ़ी तेज़ होता है, लिहाज़ा बहुत थोड़ा थोड़ा खोलिये ताकि आप छींटों से मह़फ़ूज़ रह सकें।

इन में से ह़स्बे ज़रूरत चीज़ें अपने साथ ले जाइये :

۞ म-दनी पन्जसूरह ۞ अपने पीरो मुर्शिद का श-जरह ۞ बहारे शरीअ़त का छटा ह़िस्सा और 12 अ़दद **रफ़ीक़ुल ह़-रमैन** ख़ुद भी पढ़िये और ह़ाजियों को बांट कर ख़ूब सवाब कमाइये ۞ क़लम और पेड ۞ डायरी ۞ क़िब्ला नुमा (येह ह़िजाज़े मुक़द्दस ही में ख़रीदिये, मिना, अ़-रफ़ात

वग़ैरा में क़िब्ले की सम्त मा'लूम करने में मदद देगा) ۞ कुतुब, पासपोर्ट, टिकट, ट्रेवल चेक, हेल्थ सर्टीफ़िकेट वग़ैरा रखने के लिये गले में लटकाने वाला छोटा सा बेग ۞ एह़राम ۞ एह़राम के तहबन्द पर बांधने के लिये जेब वाला नाएलोन या चमड़े का बेल्ट ۞ इत्र ۞ जा नमाज़ ۞ तस्बीह़ ۞ चार जोड़े कपड़े, बनियान, स्वेटर, वग़ैरा मल्बूसात (मौसिम के मुत़ाबिक़) ۞ ओढ़ने के लिये कम्बल या चादर ۞ हवा भरने वाला तक्या ۞ इमामा शरीफ़ मअ़ सरबन्द व टोपी ۞ बिछाने के लिये चटाई या चादर ۞ आईना, तेल, कंघा, मिस्वाक, सुरमा, सूई धागा, क़ैंची सफ़र में साथ लेना सुन्नत है ۞ नाख़ुन तराश ۞ सामान पर नाम, पता लिखने के लिये मोटा मार्कर पेन ۞ तोलिया ۞ रुमाल ۞ इस्ति'माल करते हों तो नज़र के चश्मे दो अ़दद ۞ साबुन ۞ मन्जन ۞ सेफ़्टी रेज़र ۞ लोटा ۞ गिलास ۞ प्लेट ۞ पियाला ۞ दस्तर ख़्वान ۞ गले में लटकाने वाली पानी की बोतल ۞ चम्मच ۞ छुरी ۞ दर्दे सर और नज़्ला वग़ैरा के लिये टिक्यां नीज़ अपनी ज़रूरत की दवाएं ۞ गरमी में अपने ऊपर पानी छिड़क्ने के लिये स्प्रेयर (मिना व अ़-रफ़ात शरीफ़ में इस की क़द्र होगी) ۞ ह़स्बे ज़रूरत खाने पकाने के बरतन।

"मदीना" के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से सामान के बेगेज के लिये 5 म-दनी फूल

﴾1﴿ दस्ती सामान के लिये मज़्बूत़ हेंड बेग ﴾2﴿ **लगेज** करवाने के लिये **बड़ा बेग** लीजिये (इस पर बड़े मार्कर पेन से नाम व पता

और फ़ोन नम्बर वग़ैरा लिख लीजिये नीज़ कोई निशान लगा लीजिये म-सलन ★ मज़ीद अपने बेगेज के लोहे के ह़ल्क़े वग़ैरा में रंगीन कपड़े की धज्जी या लेस (lace) की छोटी सी पट्टी नुमायां कर के बांध दीजिये) ﴾3﴿ बेग पर ताला लगा लीजिये मगर एक चाबी एह़राम के बेल्ट की जेब में और एक दस्ती बेग में रख लीजिये वरना चाबी गुम हो जाने की सूरत में जद्दा कस्टम में "बड़े बड़े क़ैंचों" के ज़रीए काट कर बेग खोलते हैं, आप टेन्शन में आ जाएंगे ﴾4﴿ अटाची केस (दस्ती बेग) के अन्दर भी नाम पते और फ़ोन नम्बर की चिट डाल दीजिये ﴾5﴿ दोनों "ट्रॉली बेग" (या'नी पहिय्ये वाले) हों तो सहूलत रहेगी। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

हेल्थ सर्टीफ़िकेट के म-दनी फूल : क़ानून के मुत़ाबिक़ तमाम सफ़री कागज़ात बहुत पहले से तय्यार करवा लीजिये, म-सलन "हेल्थ सर्टीफ़िकेट" येह आप को ह़ाजी केम्प में **गरदन तोड़ बुख़ार** का टीका लगवाने और "पोलियो वेक्सिन" के क़त़रे पिलाए जाने के बा'द मिलेगा अगर इस में किसी क़िस्म की कमी हुई तो आप को जहाज़ पर सुवार होने से रोका जा सकता है या जद्दा शरीफ़ के मत़ार पर भी रुकावट पेश आ सकती है ۞ ह़िफ़ाज़ती टीका रवानगी से सिर्फ़ दो चार रोज़ क़ब्ल लगवाना ख़ास फ़ाएदा मन्द नहीं, 15 दिन क़ब्ल लगवा लेना बेह़द मुफ़ीद रहेगा वरना मुबारक सफ़र की गहमा गहमी में ख़त़रनाक बल्कि जान लेवा

बीमारी का ख़त़रा रहेगा, नीज़ ۞ क़ानूनन लाज़िमी न सही मगर फ़्लू और हेपाटाइटिस के टीके भी लगवा लेना आप के लिये बहुत बेहतर है इन तिब्बी कारवाइयों को बोझ मत समझिये इस में आप का अपना भला है ۞ अक्सर ट्रेवल एजन्ट या कारवान वाले बिग़ैर किसी तिब्बी कारवाई के घर बैठे ही हेल्थ सर्टीफ़िकेट फ़राहम कर देते हैं, जो कि आप की सिह़ह़त के लिये नुक़्सान देह होने के साथ साथ धोका ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। ट्रेवल एजन्ट, क़स्दन दस्त-ख़त़ करने वाला डॉक्टर और जान बूझ कर ग़लत़ सर्टीफ़िकेट ले कर इस्ति'माल करने वाला ह़ाजी (या मो'तमिर) सभी गुनहगार और अ़ज़ाबे नार के ह़क़दार हैं, जिन्हों ने इस त़रह़ के काम किये हों वोह सब सच्ची तौबा करें।

हवाई जहाज़ वाले कब एह़राम बांधें ? : हवाई जहाज़ से बाबुल मदीना कराची ता **जद्दा शरीफ़** तक़रीबन चार[4] घन्टे का सफ़र है (दुन्या में से कहीं से भी सफ़र करें) दौराने परवाज़ **मीक़ात** का पता नहीं चलता, लिहाज़ा अपने घर से तय्यारी कर के चलिये, अगर वक़्ते मकरूह न हो तो **एह़राम** के नफ़्ल भी घर पर ही पढ़ लीजिये और **एह़राम की चादरें** भी घर ही से पहन लीजिये, अलबत्ता घर से एह़राम की निय्यत न कीजिये, त़य्यारे में निय्यत कर लीजियेगा क्यूं कि निय्यत करने के बा'द **लब्बैक** पढ़ने से आप "मोह़रिम" हो जाएंगे और पाबन्दियां शुरूअ़ हो जाएंगी और हो सकता है

कि किसी वजह से परवाज़ में ताख़ीर हो जाए। "मोह़रिम" **एरपोर्ट** पर **ख़ुश्बूदार** फूलों के गजरे भी नहीं पहन सकता।[1] इस लिये पाकिस्तान से सफ़र करने वाले यूं भी कर सकते हैं कि **एह़राम** की चादरों में मल्बूस या रोज़ मर्रा के लिबास ही में तशरीफ़ लाएं। हवाई अड्डे पर भी ह़म्माम, वुज़ूख़ाना और जाए नमाज़ का एहतिमाम होता है, यहीं एह़राम की तरकीब फ़रमा लीजिये मगर आसानी इस में है कि जब त़य्यारा फ़ज़ा में हमवार हो जाए उस वक़्त निय्यत व **लब्बैक** की तरकीब कीजिये। हां जो इ़ल्म रखते और एह़राम की पाबन्दियां निभा सकते हों वोह जितनी जल्दी "मोह़रिम" हो जाएंगे उन्हें एह़राम का सवाब मिलना शुरूअ़ हो जाएगा (निय्यत और मीक़ात वग़ैरा की तफ़्सील आगे आ रही है)

जहाज़ का ख़ुश्बूदार टिशू पेपर : ख़बरदार ! त़य्यारों में अक्सर सेंट से तर बतर टिशू पेपर का छोटा सा पेकिट दिया जाता है, एह़राम वाला उसे हरगिज़ न खोले, अगर हाथ पर ख़ुश्बू की ज़ियादा तरी लग गई तो **दम** वाजिब हो जाएगा, कम लगी तो **स-दक़ा**, अगर तरी न लगी हाथ सिर्फ़ ख़ुश्बूदार हो गए तो कुछ नहीं।

مدینہ

1 : एह़राम की ह़ालत में ख़ुश्बू के इस्ति'माल के अह़काम की तफ़्सील सुवालन जवाबन आगे आ रही है। हां एह़राम की चादरें अगर पहन ली हैं मगर अभी तक निय्यत कर के लब्बैक नहीं कही तो ख़ुश्बू लगाना, ख़ुश्बूदार फूलों के गजरे पहनना सब जाइज़ है।

जद्दा शरीफ़ ता मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا **:**
जद्दा शरीफ़ के हवाई अड्डे पर पहुंच कर अपना दस्ती सामान लिये **लब्बैक** पढ़ते हुए धड़क्ते दिल से जहाज़ से उतरिये और कस्टम शेड से मुत्तसिल काउन्टर पर अपना पासपोर्ट और हेल्थ सर्टीफ़िकेट चेक करवा कर शेड में जम्अ़ शुदा सामान में से अपना सामान शनाख़्त कर के अ़ला-ह़दा कर लीजिये, कस्टम वग़ैरा से फ़राग़त और बस की रवानगी की कारवाई में तक़्रीबन 6 ता 8 घन्टे सर्फ़ हो सकते हैं। ख़ूब सब्र व हिम्मत से काम लीजिये। जद्दा शरीफ़ के **ह़ज टर्मीनल** से **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا का फ़ासिला तक़्रीबन एक या डेढ़ घन्ट में तै़ हो सकता है मगर गाड़ियों के रश और क़ानूनी कारवाइयों के सबब कई क़िस्म की परेशानियां दरपेश आ सकती हैं, बस वग़ैरा का भी इन्तिज़ार करना पड़ता है, हर मौक़अ़ पर सब्रो रिज़ा के पैकर बन कर **लब्बैक** पढ़ते रहिये। ग़ुस्से में आ कर **मुन्तज़िमीन** के मु-तअ़ल्लिक़ बड़बड़ और शोरो ग़ुल करने से मसाइल ह़ल होने के बजाए मज़ीद उलझने, सब्र का सवाब बरबाद होने और مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ईज़ाए मुस्लिम, ग़ीबतों, इल्ज़ाम तराशियों और बद गुमानियों वग़ैरा गुनाहों में फंसने की सूरतें पैदा हो सकती हैं। **एक चुप सो100 सुख**। रवानगी की तरकीब बन जाने पर मअ़ सामान अपने मुअ़ल्लिम की बस में **लब्बैक** पढ़ते हुए मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की त़रफ़ रवाना हो जाइये।

मदीने की परवाज़ वालों का एह़राम : जिन की वत़न से बराहे रास्त **मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की परवाज़ हो उन को येह सफ़र **बिग़ैर एह़राम** करना है, मदीना शरीफ़ से जब **मक्कए मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की त़रफ़ आने लगें उस वक़्त **मस्जिदुन्-बविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से या **ज़ुल हुलैफ़ा** (अब्यारे अ़ली) से एह़राम की निय्यत कीजिये।

मुअ़ल्लिम की त़रफ़ से सुवारी : जद्दा शरीफ़ से मक्कए मुकर्रमा, मदीनए मुनव्वरह, मिना, अ़-रफ़ात, मुज़्दलिफ़ा और वापसी में फिर मक्का शरीफ़ से जद्दा शरीफ़ तक पहुंचाना नीज़ अपने वत़न से बराहे रास्त **मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की परवाज़ वालों को भी येही सहूलतें देना मुअ़ल्लिम के ज़िम्मे है और इस की फ़ीस आप से पहले ही वुसूल की जा चुकी है। जब आप पहली बार **मक्का शरीफ़** मुअ़ल्लिम के दफ़्तर पर उतरेंगे उस वक़्त का खाना और **अ़-रफ़ात शरीफ़** में दो पहर का खाना भी मुअ़ल्लिम के ज़िम्मे है।

सफ़र के 26 म-दनी फूल

۞ चलते वक़्त अ़ज़ीज़ों, दोस्तों से क़ुसूर मुआ़फ़ करवाइये और जिन से मुआ़फ़ी त़लब की जाए उन पर लाज़िम है कि दिल से मुआ़फ़ कर दें। ह़दीसे मुबारक में है कि जिस के पास उस का (इस्लामी) भाई मा'ज़िरत लाए, वाजिब है कि क़बूल कर ले (या'नी मुआ़फ़ कर दे) वरना ह़ौज़े कौसर पर आना

न मिलेगा। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 627) ۞ किसी की **अमानत** पास हो या **क़र्ज़ा** हो तो लौटा दीजिये, जिन के माल नाह़क़ लिये हों वापस कर दीजिये या मुआ़फ़ करवा लीजिये, पता न चले तो उतना माल **फु-क़रा** को दे दीजिये ۞ नमाज़, रोज़ा, ज़कात, जितनी इ़बादात ज़िम्मे हों अदा कर लीजिये और ताख़ीर के गुनाह की तौबा भी कीजिये। इस सफ़रे मुबारक का मक़्सद सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी हो। रियाकारी और तकब्बुर से जुदा रहिये ۞ औ़रत के साथ जब तक शोहर या मह़रम बालिग़ क़ाबिले इत़्मीनान न हो जिस से निकाह़ हमेशा को ह़राम है सफ़र ह़राम है, अगर करेगी **ह़ज** हो जाएगा मगर हर क़दम पर गुनाह लिखा जाएगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1051) (येह हुक्म सिर्फ़ सफ़रे ह़ज के लिये ही नहीं, हर सफ़र के लिये है) ۞ किराए की गाड़ी पर जो कुछ सामान बार (LOAD) करना हो, पहले से दिखा दीजिये और इस से ज़ाइद बिग़ैर इजाज़ते मालिक गाड़ी में न रखिये। **ह़िकायत :** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुबारक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को सफ़र पर रवाना होते वक़्त किसी ने दूसरे को पहुंचाने के लिये ख़त़ पेश किया, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : ऊंट किराए पर लिया है, सुवारी वाले से इजाज़त लेनी होगी क्यूं कि मैं ने उस को सारा सामान दिखा दिया है और येह ख़त़ ज़ाइद शै है। (ماخوذاً احیاءُ العلوم ج ۱ ص ۳۵۳) ۞ ह़दीसे पाक में है कि : ''जब तीन[3] आदमी सफ़र को जाएं तो अपने में से एक को अमीर बना लें।''

इस से कामों में इन्तिज़ाम रहता है (ابو داؤد ج ۳ ص ۵۱ حدیث ۲۶۰۸) ۞ अमीर उसे बनाएं जो ख़ुश अख़्लाक़, समझदार, दीनदार और सुन्नतों का पाबन्द हो ۞ अमीर को चाहिये कि हम-सफ़र इस्लामी भाइयों की ख़िदमत करे और उन के आराम का पूरा ख़याल रखे ۞ जब सफ़र पर जाने लगें तो इस त़रह़ रुख़्सत हों जैसे दुन्या से रुख़्सत होते हों। चलते वक़्त येह दुआ पढ़िये :

اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَّعْثَآءِ السَّفَرِ وَكَاٰبَةِ الْمُنْقَلَبِ وَسُوْٓءِ الْمَنْظَرِ فِى الْمَالِ وَالْاَھْلِ وَالْوَلَدِ ؕ

वापसी तक माल व अहलो इयाल मह़फ़ूज़ रहेंगे ۞ लिबासे सफ़र पहन कर अगर वक़्ते मक्रूह न हो तो घर में चार रक्अ़त नफ़्ल अल ह़म्द व क़ुल से पढ़ कर बाहर निकलें। वोह रक्अ़तें वापसी तक अह्ल व माल की निगह्बानी करेंगी ۞ घर से निकलते वक़्त **आ-यतुल कुर्सी** और قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ से قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ तक **तब्बत** के सिवा **पांच सूरतें**, सब **बिस्मिल्लाह** के साथ पढ़िये, आख़िर में भी **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ पढ़िये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ रास्ते भर आराम रहेगा। नीज़ उस वक़्त

﴿اِنَّ الَّذِیْ فَرَضَ عَلَیْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰى مَعَادٍ ؕ﴾ (پ۲۰، القصص ۸۵)

(**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक जिस ने तुम पर क़ुरआन फ़र्ज़ किया वोह तुम्हें फेर ले जाएगा जहां फिरना चाहते हो)

एक बार पढ़ ले, बिलख़ैर वापस आएगा ۞ मकरूह वक़्त न हो तो अपनी मस्जिद में दो रक्अ़त नफ़्ल अदा कीजिये ।

हवाई जहाज़ के गिरने और जलने से अम्न में रहने की दुआ़ : ۞ हवाई जहाज़ में सुवार हो कर अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ येह **दुआ़ए मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़िये :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْھَدْمِ وَاَعُوْذُ بِکَ

तरजमा : या अल्लाह ! मैं तेरी पनाह चाहता हूं, इमारत गिरने से और तेरी पनाह चाहता हूं

مِنَ التَّرَدِّیْ ط وَاَعُوْذُبِکَ مِنَ الْغَرَقِ وَالْحَرَقِ

बुलन्दी से गिरने और तेरी पनाह चाहता हूं डूबने जलने

وَالْھَرَمِ وَاَعُوْذُبِکَ اَنْ یَّتَخَبَّطَنِی الشَّیْطٰنُ

और बुढ़ापे[1] से और तेरी पनाह त़लब करता हूं इस से कि शैत़ान

عِنْدَ الْمَوْتِ ط وَاَعُوْذُبِکَ اَنْ اَمُوْتَ فِیْ سَبِیْلِکَ

मुझे मौत के वक़्त वस्वसे दे और तेरी पनाह चाहता हूं इस से कि तेरी राह में मैं पीठ

مُدْبِرًا وَاَعُوْذُبِکَ اَنْ اَمُوْتَ لَدِیْغًا ط

फेरता मर जाऊं और तेरी पनाह चाहता हूं इस से कि सांप के डसने से इन्तिक़ाल करूं ।

مــــدینــــہ

1 : या'नी ऐसे बुढ़ापे से जिस से ज़िन्दगी का अस्ल मक़्सूद फ़ौत हो जाए या'नी इ़ल्म व अ़मल जाते रहें । (मिरआत, जि. 4, स. 3)

बुलन्द मक़ाम से गिरने को **तरद्दी** और जलने को **ह़रक़** कहते हैं। हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह दुआ मांगा करते थे। येह दुआ त़य्यारे के लिये मख़्सूस नहीं, चूंकि इस दुआ में ''बुलन्दी से गिरने'' और ''जलने'' से भी पनाह मांगी गई है और हवाई सफ़र में येह दोनों ख़त़रात मौजूद होते हैं लिहाज़ा उम्मीद है कि इसे पढ़ने की ब-र-कत से **हवाई जहाज़** ह़ादिसे से मह़फ़ूज़ रहे ۞ रेल या बस या कार वग़ैरा में بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ और سُبْحٰنَ اللّٰهِ सब तीन तीन बार, لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ एक बार, फिर येह **कुरआनी दुआ** पढ़िये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ सुवारी हर क़िस्म के ह़ादिसे से मह़फ़ूज़ रहेगी। दुआ येह है :

سُبْحٰنَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ ﴿۱۳﴾ وَاِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ﴿۱۴﴾

(پ۲۵زخرف۱۳۔۱۴) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** पाकी है उसे जिस ने इस सुवारी को हमारे बस में कर दिया और येह हमारे बूते (या'नी त़ाक़त) की न थी और बेशक हमें अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ पलटना है ۞ जब किसी मन्ज़िल पर उतरें तो दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़ें कि (अगर वक़्ते मक्रूह न हो तो) सुन्नत है ۞ जब किसी मन्ज़िल पर उतरें येह दुआ पढ़िये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस मन्ज़िल में कूच करते वक़्त कोई चीज़ नुक़्सान न देगी। दुआ येह है :

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कामिल कलिमात के वासित़े से सारी मख़्लूक़ के शर से पनाह मांगता हूं।

۞ "**يَاصَمَدُ**" 134 बार रोज़ाना पढ़िये भूक और प्यास से अम्न रहेगा ۞ जब दुश्मन या रहज़न (या'नी डाकू) का ख़ौफ़ हो सूरए **लि ईलाफ़** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हर बला से अमान (या'नी पनाह) मिलेगी ۞ **दुश्मन के ख़ौफ़ के वक़्त येह दुआ़ पढ़ना बहुत मुफ़ीद है :**

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِيْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ को उन के सीनों के मुक़ाबिल करता हूं और उन की बुराइयों से तेरी पनाह मांगता हूं।

۞ **अगर कोई चीज़ गुम हो जाए तो येह कहे :**

يَاجَامِعَ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّارَيْبَ فِيْهِ ط اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝ اِجْمَعْ بَيْنِيْ وَبَيْنَ ضَالَّتِيْ

(तरजमा : ऐ लोगों को उस दिन जम्अ़ करने वाले जिस में शक नहीं, बेशक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) वा'दे का ख़िलाफ़ नहीं करता, (मुझे) मेरे और मेरी गुमी चीज़ के दरमियान जम्अ़ कर दे) اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मिल जाएगी।

۞ हर बुलन्दी पर चढ़ते اَللّٰهُ اَكْبَر कहिये और ढाल (या'नी ढलवान) में उतरते سُبْحٰنَ اللّٰه ۞ सोते वक़्त एक बार **आ-यतुल कुर्सी** हमेशा पढ़िये कि चोर और शैतान से अमान (या'नी पनाह) है ۞ जब किसी मुश्किल में मदद की ज़रूरत पड़े तो ह़दीसे पाक में है कि इस त़रह़ तीन[3] बार पुकारिये : "يَاعِبَادَاللّٰهِ اَعِيْنُوْنِيْ"

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! मेरी मदद करो। (حِصْنِ حَصِین ص٨٢) ۞ सफ़र से वापसी में भी बयान कर्दा गुज़श्ता **आदाबे सफ़र** को मल्हूज़ रखिये ۞ लोगों को चाहिये कि ह़ाजी का इस्तिक़्बाल करें और उस के घर पहुंचने से क़ब्ल दुआ़ कराएं कि ह़ाजी जब तक अपने घर में क़दम नहीं रखता उस की दुआ़ क़बूल है ۞ वत़न पहुंच कर सब से पहले अपनी मस्जिद में मक्रूह वक़्त न हो तो दो रक्अ़त नफ़्ल अदा कीजिये ۞ दो रक्अ़त घर आ कर भी (मक्रूह वक़्त न हो तो) अदा कीजिये ۞ फिर सब से पुर तपाक त़रीक़े से **मुलाक़ात** कीजिये। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये बहारे शरीअ़त जिल्द **1** ह़िस्सा **6** सफ़ह़ा **1051** ता **1066**, फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द **10** सफ़ह़ा **726** ता **731** से मुत़ा-लआ़ फ़रमा लीजिये)

"या अल्लाह" के छ हुरूफ़ की निस्बत से सफ़र में नमाज़ के 6 म-दनी फूल

《**1**》 **शरअ़न** मुसाफ़िर वोह शख़्स है जो तीन[3] दिन के फ़ासिले तक जाने के इरादे से अपने मक़ामे इक़ामत म-सलन शहर या गाउं से बाहर हो गया। ख़ुश्की में सफ़र पर तीन[3] दिन की मसाफ़त से मुराद साढ़े सत्तावन मील (तक़रीबन 92 किलो मीटर) का फ़ासिला है। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 243, 270, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 740, 741) 《**2**》 जहां सफ़र कर के पहुंचें और पन्दरह या ज़ियादा दिन क़ियाम की निय्यत है तो अब मुसाफ़िर न रहे बल्कि मुक़ीम हो गए, ऐसी सूरत में नमाज़ में क़स्र नहीं करेंगे। जब पन्दरह दिन से कम रहने की निय्यत हो तो अब नमाज़ों में क़स्र करेंगे या'नी ज़ोहर, अ़स्र और इशा की फ़र्ज़ रक्अ़तों में चार चार

फ़र्ज़ों की जगह दो दो रक्अ़त फ़र्ज़ अदा करेंगे। फ़ज्र और मग़रिब में क़स्र नहीं, बाक़ी तमाम सुन्नतें, वित्र वग़ैरा सब पूरी अदा करें ﴾3﴿ बे शुमार हुज्जाजे किराम शव्वालुल मुकर्रम या ज़ी क़ा'दतुल ह़राम में **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا पहुंच जाते हैं। चूंकि अय्यामे ह़ज आने में काफ़ी वक़्त बाक़ी होता है लिहाज़ा चन्द ही दिनों के बा'द उन्हें तक़रीबन 9 दिन के लिये **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا भेज दिया जाता है, इस सूरत में वोह मदीना शरीफ़ में मुसाफ़िर ही रहते हैं बल्कि इस से क़ब्ल मक्के शरीफ़ में 15 दिन से कम वक़्फ़ा मिलने की सूरत में वहां भी मुसाफ़िर ही होते हैं। हां मक्के या मदीने में या'नी एक ही शह्र के अन्दर 15 या ज़ियादा दिन रहने का यक़ीनी मौक़अ़ मिलने की सूरत में इक़ामत की निय्यत दुरुस्त होगी ﴾4﴿ **जिस** ने इक़ामत की निय्यत की मगर उस की ह़ालत बताती है कि पन्दरह दिन न ठहरेगा तो निय्यत सह़ीह़ नहीं म-सलन **ह़ज** करने गया और **ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम** का महीना शुरूअ़ हो जाने के बा वुजूद पन्दरह दिन **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में ठहरने की निय्यत की तो येह निय्यत बेकार है कि जब ह़ज का इरादा किया है तो (15 दिन इस को मिलेंगे ही नहीं कि 8 **ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम**) **मिना शरीफ़** (और 9 को) **अ़-रफ़ात शरीफ़** को ज़रूर जाएगा फिर इतने दिनों तक (या'नी 15 दिन मुसल्सल) **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में क्यूंकर ठहर सकता है ? **मिना शरीफ़** से वापस हो कर निय्यत करे तो सह़ीह़ है। जब कि वाक़ेई 15 या ज़ियादा दिन **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में ठहर सकता हो, अगर ज़न्ने ग़ालिब हो कि 15

दिन के अन्दर अन्दर **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا या वत़न के लिये रवाना हो जाएगा तो अब भी मुसाफ़िर है ﴾5﴿ ता दमे तह़रीर जद्दा शरीफ़ आबादी के ख़ातिमे से **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की आबादी के आग़ाज़ तक का फ़ासिला ब ज़रीअ़ए सड़क 53 किलो मीटर और ब ज़रीअ़ए हवाई जहाज़ 47 किलो मीटर है। और जद्दा शरीफ़ की आबादी के ख़ातिमे से ले कर अ़-रफ़ात शरीफ़ तक एक सड़क से सफ़र 78 किलो मीटर और दीगर दो[2] सड़कों से 80 किलो मीटर का सफ़र है। जब कि मत़ार (AIRPORT) से हवाई फ़ासिला 67 किलो मीटर है। लिहाज़ा जद्दा शरीफ़ से **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا जाएं तब भी और बराहे रास्त अ़-रफ़ात शरीफ़ पहुंचें तब भी वोह पूरी नमाज़ें पढ़ेंगे ﴾6﴿ **हवाई जहाज़** में फ़र्ज़, वित्र, सुन्नतें और नवाफ़िल वग़ैरा तमाम नमाज़ें दौराने परवाज़ पढ़ सकते हैं, इआ़दा (या'नी दोबारा पढ़ने) की ह़ाजत नहीं। फ़र्ज़, वित्र और सुन्नते फ़ज्र क़िब्ला रू खड़े हो कर क़ाइदे के मुत़ाबिक़ अदा कीजिये। त़य्यारे की दुम, ह़म्माम व किचन वग़ैरा के पास खड़े खड़े नमाज़ पढ़ना मुम्किन होता है। बाक़ी सुन्नतें और नवाफ़िल दौराने परवाज़ अपनी निशस्त पर बैठे बैठे भी पढ़ सकते हैं। इस ह़ालत में क़िब्ला रू होना शर्त़ नहीं।

(मज़ीद मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब "नमाज़ के अह़काम" में शामिल रिसाला "मुसाफ़िर की नमाज़" का मुत़ा-लआ़ कीजिये)

रुके हैबत से जब मुजरिम तो रह़मत ने कहा बढ़ कर
चले आओ चले आओ येह घर रह़मान का घर है

(ज़ौक़े ना'त)

“*करम*” के तीन हुरूफ़ की निस्बत से 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :

﴿1﴾ ह़ाजी अपने घर वालों में से चार सो की शफ़ाअ़त करेगा और गुनाहों से ऐसा निकल जाएगा जैसे उस दिन कि मां के पेट से पैदा हुवा । (مُسْنَدُ الْبَزّار ج٨ص١٦٩حديث٣١٩٦) ﴿2﴾ ह़ाजी की मग़्फ़िरत हो जाती है और ह़ाजी जिस के लिये इस्तिग़्फ़ार करे उस के लिये भी मग़्फ़िरत है । (مَجْمَعُ الزَّوائِد ج٣ص٤٨٣حديث٥٢٨٧) ﴿3﴾ जो ह़ज या उ़म्रह के लिये निकला और रास्ते में मर गया उस की पेशी नहीं होगी, न ह़िसाब होगा और उस से कहा जाएगा : اُدْخُلِ الْجَنَّةَ या'नी तू जन्नत में दाख़िल हो जा । (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج ٤ ص ١١١ حديث ٨٨٣٥)

हर क़दम पर सात करोड़ नेकियां : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن रिसालए मुबा-रका ‘‘अन्वारुल बिशारह’’ में पैदल चलने की रग़्बत दिलाते हुए फ़रमाते हैं : ‘‘हो सके तो पियादा (पैदल **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا से मिना, अ़-रफ़ात वग़ैरा) जाओ कि जब तक **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** पलट कर आओगे हर क़दम पर **सात करोड़ नेकियां** लिखी जाएंगी । येह नेकियां **तख़्मीनन** (या'नी अन्दाज़न) **अठत्तर खरब चालीस अरब** आती हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल उस के नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े में इस उम्मत पर बे शुमार है ।’’ (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 10, स. 746)

सगे मदीना عُفِیَ عَنۡہُ अ़र्ज़ करता है कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने पुराने त़वील रास्ते का ह़िसाब लगाया है। अब चूंकि **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا से **मिना शरीफ़** के लिये पहाड़ों में सुरंगें (TUNNELS) निकाली गई हैं और पैदल चलने वालों के लिये रास्ता मुख़्तसर और आसान हो गया है इस ह़िसाब से नेकियों की ता'दाद में भी फ़र्क़ वाक़ेअ़ होगा। وَاللّٰہُ وَرَسُوۡلُہٗ اَعۡلَم عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

पैदल ह़ाजी से फ़िरिश्ते गले मिलते हैं : फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : जब ह़ाजी सुवार हो कर आते हैं तो फ़िरिश्ते उन से मुसा-फ़ह़ा करते (या'नी हाथ मिलाते) हैं और जो पैदल चल कर आते हैं फ़िरिश्ते उन से मुआ़-नक़ा करते (या'नी गले मिलते) हैं। **(اِتحافُ السّادۃ للزّبیدی ج٤ ص٤٦٥)**

दौराने ह़ज के लिये हुक्मे क़ुरआनी : पारह 2 **सू-रतुल ब-क़रह** आयत नम्बर 197 में इर्शादे रब्बानी है : **فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوۡقَ ۙ وَلَا جِدَالَ فِی الۡحَجِّ ؕ** **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो न औ़रतों के सामने सोह़बत का तज़्किरा हो, न कोई गुनाह, न किसी से झगड़ा ह़ज के वक़्त तक।

इस आयते मुबा-रका के तह़्त **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : (ह़ज में) तो इन बातों

से निहायत ही दूर रहना चाहिये, जब गुस्सा आए या झगड़ा हो या किसी मा'सियत (या'नी ना फ़रमानी) का ख़याल हो फ़ौरन सर झुका कर क़ल्ब की त़रफ़ **मु-तवज्जेह** हो कर इस आयत की तिलावत करे और दो एक बार लाह़ौल शरीफ़ पढ़े, येह बात जाती रहेगी। येही नहीं कि (ख़ुद) इसी (या'नी ह़ाजी) की त़रफ़ से इब्तिदा हो या इस के रु-फ़क़ा (साथियों) ही के साथ जिदाल (या'नी झगड़ा) हो जाए बल्कि बा'ज़ अवक़ात इम्तिह़ानन राह चलतों को पेश कर दिया जाता है कि बे सबब उलझते बल्कि सब्बो शत्म (या'नी गाली गलोच) व ला'न त़ा'न को तय्यार होते हैं, इसे (या'नी ह़ाजी को) हर वक़्त होशियार रहना चाहिये, मबादा (या'नी ऐसा न हो। ख़ुदा न करे) एक दो कलिमे (या'नी जुम्लों) में सारी मेह़नत और रुपिया बरबाद हो जाए।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1061)

संभल कर पाउं रखना ह़ाजियो ! राहे मदीना में
कहीं ऐसा न हो सारा सफ़र बेकार हो जाए

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالیٰ علیٰ محمّد

ह़ाजी के लिये सरमायए इश्क़ ज़रूरी है : ख़ुश नसीब ह़ाजियो ! ह़ज के लिये जिस त़रह़ सरमायए ज़ाहिरी की ज़रूरत है उसी त़रह़ सरमायए बात़िनी या'नी **सरमायए इश्क़ो मह़ब्बत** की भी सख़्त ह़ाजत है और येह सरमाया आ़शिक़ाने रसूल के यहां मिलता है। **ह़िकायत :** सरकारे बग़दाद, **हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की बारगाहे

मुअ़ज़्ज़म में एक साहि़ब ह़ाज़िर हुए, ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने ह़ाज़िरीन से फ़रमाया : **येह** अभी अभी **बैतुल मुक़द्दस** से एक क़दम में आए हैं ताकि मुझ से **आदाबे इ़श्क़** सीखें । (اخبارالاخیار ص ٤ ابتصرّف) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

किसी आ़शिक़े रसूल से निस्बत क़ाइम कर लीजिये......! : سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ! एक बा करामत वली भी सरमायए इ़श्क़ के ह़ुसूल की ख़ात़िर अपने से बड़े वली की बारगाह में ह़ाज़िरी देता है फिर **हम** तो किस शुमारो क़ित़ार में हैं ! लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि किसी आ़शिक़े रसूल से निस्बत क़ाइम कर के उस से आदाबे इ़श्क़ सीखें और फिर सफ़रे मदीना इख़्तियार करें ।

पहले हम सीखें क़रीना फिर मिले मुर्शिद से सीना
चल पड़े अपना सफ़ीना और पहुंच जाएं मदीना

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

प्यारे ह़ाजियो ! अब आ़शिक़ाने रसूल ह़ाजियों की जज़्बो मस्ती भरी दो अ़जीबो ग़रीब ह़िकायात पढ़िये और झूमिये :

﴾1﴿ **पुर असरार ह़ाजी : ह़ज़रते** सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैदाने **अ़-रफ़ात** में हुज्जाज मशग़ूले दुआ़ थे, मेरी नज़र एक नौ जवान पर पड़ी जो सर झुकाए शर्म-सार खड़ा था, मैं ने कहा : ऐ नौ जवान ! तू भी दुआ़ कर। वोह बोला : मुझे तो इस बात का डर लग रहा है कि जो वक़्त मुझे मिला था शायद वोह जाता रहा, अब किस मुंह से दुआ़ करूं ! मैं ने कहा : तू भी दुआ़ कर ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे भी इन दुआ़ मांगने वालों की ब-र-कत से काम्याब फ़रमाए। ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : उस ने दुआ़ के लिये हाथ उठाने की कोशिश की, कि एक दम उस पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और एक चीख़ उस के मुंह से निकली, तड़प कर गिरा और उस की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। (کَشْفُ الْمَحْجُوب ص۳٦٣) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

﴾2﴿ **ज़ब्ह़ होने वाला ह़ाजी : ह़ज़रते** सय्यिदुना ज़ुन्नून मिसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं ने **मिना** शरीफ़ में एक नौ जवान को आराम से बैठा देखा जब कि लोग **क़ुरबानियों** में मशग़ूल थे। इतने में वोह पुकारा : ऐ मेरे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !

तेरे सारे बन्दे कुरबानियों में मश्गूल हैं, मैं भी तेरी बारगाह में अपनी जान कुरबान करना चाहता हूं, मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ ! मुझे क़बूल फ़रमा। येह कह कर अपनी उंगली गले पर फेरी और तड़प कर गिर पड़ा, मैं ने क़रीब जा कर देखा तो वोह जान दे चुका था। (كَشْفُ الْمَحْجُوب ص۳٦٤) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰلهٖ وسلَّم

येह इक जान क्या है अगर हों करोड़ों
तेरे नाम पर सब को वारा करूं मैं

(सामाने बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالىٰ علىٰ محمَّد

अपने नाम के साथ ह़ाजी लगाना कैसा ? : मोह़तरम ह़ाजियो ! देखा आप ने ! ह़ज हो तो ऐसा ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन दोनों बा ब-र-कत ह़ाजियों के तुफ़ैल हमें भी रिक़्क़ते क़ल्बी नसीब फ़रमाए। याद रखिये ! हर इबादत की क़बूलिय्यत के लिये इख़्लास शर्त़ है। आह ! अब इ़ल्मे दीन और अच्छी सोह़बत से दूरी की बिना पर अक्सर इबादात **रियाकारी** की नज़्र हो जाती हैं। जिस त़रह़ अब उ़मूमन हर काम में नुमूदो नुमाइश का अ़मल दख़्ल ज़रूरी समझा जाने लगा है इसी त़रह़ **ह़ज** जैसी अ़ज़ीम सआ़दत भी दिखावे की **भेंट** चढ़ती जा रही है, म-सलन बे शुमार अफ़्राद **ह़ज** अदा करने के बा'द अपने आप को अपने

मुंह से बिला किसी मस्लहत व ज़रूरत के **हाजी** कहते और अपने क़लम से लिखते हैं। आप शायद चौंक पड़े होंगे कि इस में आख़िर क्या ह़रज है ? हां ! वाक़ेई इस सूरत में कोई ह़रज भी नहीं कि लोग आप को अपनी मरज़ी से **ह़ाजी साह़िब** कह कर पुकारें मगर **प्यारे ह़ाजियो !** अपनी ज़बान से अपने आप को ह़ाजी कहना अपनी इबादत का ख़ुद ए'लान करना नहीं तो और क्या है ? इस को इस चुटकुले से समझने की कोशिश कीजिये :

चुटकुला : ट्रेन छुक छुक करती अपनी मन्ज़िल की त़रफ़ रवां दवां थी, दो[2] शख़्स क़रीब क़रीब बैठे थे एक ने सिल्सिलए गुफ़्त-गू का आग़ाज़ करते हुए पूछा : जनाब का इस्मे शरीफ़ ? जवाब मिला : "**ह़ाजी शफ़ीक़**" और आप का मुबारक नाम ? अब दूसरे ने सुवाल किया, पहले ने जवाब दिया : "**नमाज़ी रफ़ीक़**" ह़ाजी साह़िब को बड़ी ह़ैरत हुई, पूछ डाला : अजी **नमाज़ी रफ़ीक़ !** येह तो बड़ा अ़जीब सा नाम लगता है। नमाज़ी साह़िब ने पूछा : बताइये आप ने कितनी बार ह़ज का शरफ़ ह़ासिल किया है ? ह़ाजी साह़िब ने कहा : اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! पिछले साल ही तो ह़ज पर गया था। नमाज़ी साह़िब कहने लगे : आप ने ज़िन्दगी में सिर्फ़ एक बार **ह़ज्जे बैतुल्लाह** की सआ़दत ह़ासिल की तो, बबांगे दुहुल अपने नाम के साथ "**ह़ाजी**" कहने कहलवाने लगे, जब कि बन्दा तो बरसहा बरस से रोज़ाना पांच[5] वक़्त नमाज़ अदा करता है, तो फिर अपने नाम के साथ अगर लफ़्ज़ "**नमाज़ी**" कह दे तो इस में आख़िर **तअ़ज्जुब** की कौन सी बात है !

ह़ज मुबारक का बोर्ड लगाना कैसा......? : समझ गए ना ! आज कल अ़जीब तमाशा है ! नुमूदो नुमाइश की इन्तिहा हो गई, ह़ाजी साह़िब **ह़ज** को जाते और जब लौट कर आते हैं तो बिग़ैर किसी अच्छी निय्यत के पूरी इ़मारत बर्क़ी क़ुमक़ुमों से सजाते और घर पर "**ह़ज मुबारक**" का बोर्ड लगाते हैं, बल्कि तौबा ! तौबा ! कई ह़ाजी तो एह़राम के साथ ख़ूब तसावीर बनाते हैं । आख़िर येह क्या है ? क्या भागे हुए मुजरिम का अपने रह़मत वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में इस त़रह़ धूमधाम से जाना मुनासिब है ? नहीं हरगिज़ नहीं बल्कि रोते हुए और आहें भरते हुए, लरज़ते, कांपते हुए जाना चाहिये ।

आंसूओं की लड़ी बन रही हो और आहों से फटता हो सीना
विर्दे लब हो "मदीना मदीना" जब चले सूए त़यबा सफ़ीना
जब मदीने में हो अपनी आमद जब मैं देखूं तेरा सब्ज़ गुम्बद
हिचकियां बांध कर रोऊं बेह़द काश ! आ जाए ऐसा क़रीना

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बसरा से पैदल ह़ज ! : बिग़ैर अच्छी निय्यत **मह़ज़** लज़्ज़ते नफ़्स व हुब्बे जाह के सबब अपने मकान पर **ह़ज मुबारक** का बोर्ड लगाने वालों और अपने ह़ज का ख़ूब चरचा करने वालों के लिये एक कमाल द–रजे की आ़जिज़ी

पर मुश्तमिल **ह़िकायत** पेशे ख़िदमत है, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی **ह़ज** के लिये बसरा से पैदल निकले। किसी ने अ़र्ज़ की : आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ सुवार क्यूं नहीं होते ? फ़रमाया : क्या भागे हुए ग़ुलाम को अपने मौला عَزَّوَجَلَّ के दरबार में सुल्ह़ के लिये सुवारी पर जाना चाहिये ? मैं इस मुक़द्दस सर ज़मीन में जाते हुए बहुत ज़ियादा शर्म मह़सूस करता हूं। (تَنۡبِیۡہُ الۡمُغۡتَرِّیۡن ص۲٦۷) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الۡاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

अरे ज़ाइरे मदीना ! तू ख़ुशी से हंस रहा है
दिले ग़मज़दा जो पाता तो कुछ और बात होती !

मैं त़वाफ़ के क़ाबिल नहीं : हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَالِی नक़्ल करते हैं : एक बुज़ुर्ग رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से सुवाल हुवा : क्या आप कभी का'बए मुशर्रफ़ा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا के अन्दर दाख़िल हुए हैं ? (उन्हों ने बत़ौरे इन्किसारी) फ़रमाया : कहां **बैतुल्लाह** शरीफ़ और कहां मेरे गन्दे क़दम ! मैं तो अपने क़दमों को **बैतुल्लाह** शरीफ़ के त़वाफ़ के भी क़ाबिल नहीं समझता, क्यूं कि येह तो मैं ही जानता हूं कि येह क़दम

कहां कहां और कैसी कैसी जगहों पर चले फिरे हैं ! (احیاءُ العُلوم ج۱ ص ۳۴۵) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

उन के दियार में तू कैसे चले फिरेगा ?
अ़त्तार तेरी जुरअत ! तू जाएगा मदीना !!

(वसाइले बख़्शिश, स. 320)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ह़ाजी पर हुब्बे जाह व रिया के सख़्त ह़म्ले : प्यारे ह़ाजियो ! मीठे मदीने के मुसाफ़िरो ! ग़ालिबन नमाज़ रोज़ा वग़ैरा के मुक़ाबले में ह़ज में बहुत ज़ियादा बल्कि क़दम क़दम पर "रियाकारी" के ख़त़रात पेश आते हैं, **ह़ज** एक ऐसी इ़बादत है जो एक तो अ़लल ए'लान की जाती है और दूसरे हर एक को नसीब नहीं होती, इस लिये लोग ह़ाजी से आ़जिज़ी से मिलते, ख़ूब एह़तिराम बजा लाते, हाथ चूमते, गजरे पहनाते और दुआ़ओं की दर-ख़्वास्तें करते हैं। ऐसे मौक़अ़ पर ह़ाजी सख़्त इम्तिह़ान में पड़ जाता है क्यूं कि लोगों के अ़क़ीदत मन्दाना सुलूक में कुछ ऐसी "लज़्ज़त" होती है कि इस की वजह से इ़बादत की बड़ी से बड़ी मशक़्क़त भी फूल मा'लूम होती और बसा अवक़ात बन्दा **हुब्बे जाह** और **रियाकारी** की तबाह कारी की गहराई

में गिर चुका होता है मगर उसे कानों कान इस की ख़बर तक नहीं होती ! उस का जी चाहता है कि सब लोगों को मेरे **ह़ज** पर जाने की इत्तिलाअ़ हो जाए, ताकि मुझ से आ आ कर मिलें, मुबारक बादियां पेश करें, तोह़फ़े दें, मेरे गले में फूलों के हार डालें, मुझ से दुआ़ओं के लिये अ़र्ज़ करें, मदीने में सलाम अ़र्ज़ करने की गिड़गिड़ा कर दर-ख़्वास्त करें और मुझे रुख़्सत करने एरपोर्ट तक आएं वग़ैरा वग़ैरा ख़्वाहिशात के हुजूम और इल्मे दीन की कमी के सबब **ह़ाजी** बा'ज़ अवक़ात "शैत़ान का खिलोना" बन कर रह जाता है लिहाज़ा शैत़ान के वार से ख़बरदार रहते हुए, अपने दिल के अन्दर ख़ूब आ़जिज़ी पैदा कीजिये, नुमाइशी अन्दाज़ से ख़ुद को बचाइये । ख़ुदा की क़सम ! रियाकारी का अ़ज़ाब किसी से भी बरदाश्त नहीं हो सकेगा । **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 616 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**नेकी की दा'वत** (ह़िस्सए अव्वल)" **सफ़ह़ा** 79 पर **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "बेशक जहन्नम में एक वादी है जिस से जहन्नम रोज़ाना चार सो मर्तबा पनाह मांगता है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह वादी उम्मते मुह़म्मदिय्यह عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के उन **रियाकारों** के लिये तय्यार की है जो क़ुरआने पाक के **ह़ाफ़िज़**, **ग़ैरुल्लाह** के लिये **स-दक़ा** करने वाले, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के घर के **ह़ाजी** और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में **निकलने** वाले होंगे ।" **(اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير ج١٢ ص١٣٦ حديث ١٢٨٠٣)**

ह़ाजियों की रियाकारी की दो मिसालें : **नेकी** की दा'वत ह़िस्सए अव्वल सफ़ह़ा 76 पर है : ﴾1﴿ अपने ह़ज व उ़म्रे की ता'दाद, तिलावते कुरआन की यौमिय्या मिक़्दार, **र-जबुल मुरज्जब व शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** के मुकम्मल और दीगर नफ़्ली रोज़ों, नवाफ़िल, दुरूद शरीफ़ की कसरत वग़ैरा का इस लिये इज़्हार करना कि वाह वाह हो और लोगों के दिलों में एह़तिराम पैदा हो ﴾2﴿ इस लिये **ह़ज** करना या अपने **ह़ज** का इज़्हार करना कि लोग **ह़ाजी** कहें, मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर हों, गिड़गिड़ा कर दुआ़ओं की इल्तिजाएं करें, गजरे पहनाएं, तह़ाइफ़ वग़ैरा पेश करें। (अगर अपनी इ़ज़्ज़त करवाना या तोह़फ़े वग़ैरा ह़ासिल करना मक़्सूद न हो बल्कि तह़दीसे ने'मत वग़ैरा अच्छी अच्छी निय्यतें हों तो ह़ज व उ़म्रे का इज़्हार करने, अ़ज़ीज़ों और रिश्तेदारों को जम्अ़ करने और ''मह़फ़िले मदीना'' सजाने की मुमा-न-अ़त नहीं बल्कि कारे सवाबे आख़िरत है) (रियाकारी के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ ''नेकी की दा'वत'' ह़िस्सए अव्वल सफ़ह़ा 63 ता 106 का मुत़ा-लआ़ कीजिये)

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो
कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

याद रखने की 55 इस्तिलाहात : हाजी साहिबान मुन्द-र-जए ज़ैल इस्तिलाहात और अस्माए मक़ामात वग़ैरा ज़ेहन नशीन फ़रमा लेंगे तो इस तरह आगे मुता-लआ करते हुए اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आसानी पाएंगे ﴾1﴿ **अश्हुरे हज :** हज के महीने या'नी **शव्वालुल मुकर्रम** व **ज़ुल क़ा'दह** दोनों मुकम्मल और **ज़ुल हिज्जह** के इब्तिदाई दस दिन।

﴾2﴿ **एहराम :** जब हज या उम्रह या दोनों की निय्यत कर के **तल्बिया** पढ़ते हैं तो बा'ज़ हलाल चीजें भी हराम हो जाती हैं, इस को "**एहराम**" कहते हैं और मजाज़न उन बिग़ैर सिली चादरों को भी एहराम कहा जाता है जिन्हें मोहरिम इस्ति'माल करता है।

﴾3﴿ **तल्बिया :** या'नी لَبَّیْکَ ط اَللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ.....اِلَخ पढ़ना।

﴾4﴿ **इज़्तिबाअ :** एहराम की ऊपर वाली चादर को सीधी बग़ल से निकाल कर इस तरह उलटे कन्धे पर डालना कि सीधा कन्धा खुला रहे।

﴾5﴿ **रमल :** अकड़ कर शाने (कन्धे) हिलाते हुए छोटे छोटे क़दम उठाते हुए क़दरे (या'नी थोड़ा) तेज़ी से चलना।

﴾6﴿ **तवाफ़ :** ख़ानए का'बा के गिर्द सात चक्कर लगाना, एक चक्कर को "**शौत**" कहते हैं, जम्अ "**अश्वात**"।

﴾7﴿ **मत़ाफ़ :** जिस जगह में त़वाफ़ किया जाता है।

﴾8﴿ **त़वाफ़े क़ुदूम : मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में दाख़िल होने पर किया जाने वाला वोह पहला त़वाफ़ जो कि "इफ़्राद" या "क़िरान" की निय्यत से ह़ज करने वालों के लिये **सुन्नते मुअक्कदा** है।

﴾9﴿ **त़वाफ़े ज़ियारत :** इसे त़वाफ़े इफ़ाज़ा भी कहते हैं, येह **ह़ज का रुक्न** है, इस का वक़्त 10 **ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम** की सुब्ह़े सादिक़ से 12 **ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम** के ग़ुरूबे आफ़्ताब तक है मगर 10 **ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम** को करना अफ़्ज़ल है।

﴾10﴿ **त़वाफ़े वदाअ़ :** इसे "त़वाफ़े रुख़्सत" और "त़वाफ़े सद्र" भी कहते हैं। येह ह़ज के बा'द **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا से रुख़्सत होते वक़्त हर आफ़ाक़ी ह़ाजी पर वाजिब है।

﴾11﴿ **त़वाफ़े उ़म्रह :** येह उ़म्रह करने वालों पर फ़र्ज़ है।

﴾12﴿ **इस्तिलाम :** ह़-जरे अस्वद को बोसा देना या हाथ या लकड़ी से छू कर हाथ या लकड़ी को चूम लेना या हाथों से उस की त़रफ़ इशारा कर के उन्हें चूम लेना।

﴾13﴿ **सअ़्य :** "सफ़ा" और "मर्वह" के माबैन (या'नी दरमियान) सात फेरे लगाना (सफ़ा से मर्वह तक एक फेरा होता है यूं मर्वह पर सात चक्कर पूरे होंगे)

﴾14﴿ **रम्य :** जमरात (या'नी शैत़ानों) पर कंकरियां मारना ।

﴾15﴿ **ह़ल्क़ :** एह़राम से बाहर होने के लिये ह़ुदूदे ह़रम ही में पूरा सर मुंडवाना ।

﴾16﴿ **क़स्र :** चौथाई (1/4) सर का हर बाल कम अज़ कम उंगली के एक पोरे के बराबर कतरवाना ।

﴾17﴿ **मस्जिदुल ह़राम : मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की वोह मस्जिद जिस में का'बए मुशर्रफ़ा वाक़ेअ़ है ।

﴾18﴿ **बाबुस्सलाम :** मस्जिदुल ह़राम का वोह दरवाज़ए मुबा–रका जिस से पहली बार दाख़िल होना अफ़्ज़ल है और येह जानिबे मशरिक़ वाक़ेअ़ है । (अब येह उ़मूमन बन्द रहता है)

﴾19﴿ **का'बा :** इसे "**बैतुल्लाह**" भी कहते हैं या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का घर । येह पूरी दुन्या के वस्त़ (या'नी बीच) में वाक़ेअ़ है और **सारी दुन्या के लोग** इसी की त़रफ़ रुख़ कर के नमाज़ अदा करते हैं और मुसल्मान परवाना वार इस का त़वाफ़ करते हैं ।

का'बए मुशर्रफ़ा के चार कोनों के नाम : ﴾20﴿ **रुक्ने अस्वद :** जुनूब व मशरिक़ (SOUTH-EAST) के कोने में वाक़ेअ़ है, इसी में जन्नती पथ्थर "**ह़–जरे अस्वद**" नस्ब है । ﴾21﴿ **रुक्ने इ़राक़ी :** येह इ़राक़ की सम्त शिमाल मशरिक़ी (NORTH-EASTERN) कोना है । ﴾22﴿ **रुक्ने शामी :** येह मुल्के शाम की सम्त शिमाल मग़रिबी (NORTH-WESTERN) कोना है ।

ह़-जरे अस्वद
मुल्तज़म
ह़तीम

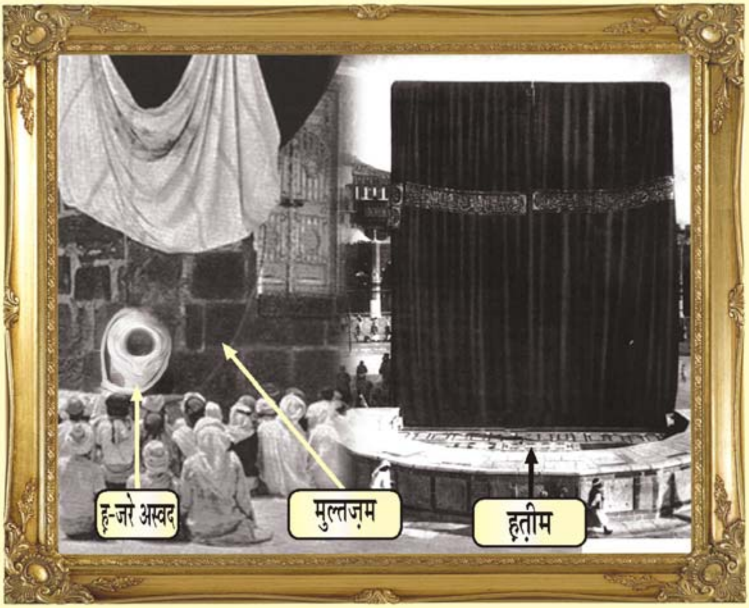
ह़-जरे अस्वद
मुल्तज़म
ह़तीम

बाबे का'बा

बाबे का'बा

﴾23﴿ **रुक्ने यमानी :** येह यमन की जानिब मग़्रिबी (WESTERN) कोना है।

﴾24﴿ **बाबुल का'बा :** रुक्ने अस्वद और रुक्ने इ़राक़ी के बीच की मशरिक़ी दीवार में ज़मीन से काफ़ी बुलन्द **सोने का दरवाज़ा** है।

﴾25﴿ **मुल्तज़म :** रुक्ने अस्वद और बाबुल का'बा की दरमियानी दीवार।

﴾26﴿ **मुस्तजार :** रुक्ने यमानी और शामी के बीच में मग़्रिबी दीवार का वोह ह़िस्सा जो "**मुल्तज़म**" के मुक़ाबिल या'नी ऐ़न पीछे की सीध में वाक़ेअ़ है।

﴾27﴿ **मुस्तजाब :** रुक्ने यमानी और रुक्ने अस्वद के बीच की जुनूबी दीवार यहां **सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते** दुआ़ पर **आमीन** कहने के लिये मुक़र्रर हैं। इसी लिये सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने इस मक़ाम का नाम "**मुस्तजाब**" (या'नी दुआ़ की मक़्बूलिय्यत की जगह) रखा है।

﴾28﴿ **ह़त़ीम : का'बए मुअ़ज़्ज़मा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की शिमाली दीवार के पास निस्फ़ (या'नी आधे) दाएरे (HALF CIRCLE) की शक्ल में फ़सील (या'नी बाउन्ड्री) के अन्दर का ह़िस्सा। "**ह़त़ीम**" **का'बा शरीफ़** का ही ह़िस्सा है और उस में दाख़िल होना **ऐ़न का'बतुल्लाह शरीफ़** में दाख़िल होना है।

﴾29﴿ **मीज़ाबे रह़मत :** सोने का परनाला येह रुक्ने इ़राक़ी व शामी की शिमाली दीवार की छत पर नस्ब है इस से बारिश का

पानी "**ह़त़ीम**" में निछावर होता है।

《30》 **मक़ामे इब्राहीम :** दरवाज़ए का'बा के सामने एक कुब्बे (या'नी गुम्बद) में वोह जन्नती पथ्थर जिस पर खड़े हो कर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने का'बा शरीफ़ की इमारत ता'मीर की और येह ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का ज़िन्दा मो'जिज़ा है कि आज भी इस मुबारक पथ्थर पर आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के क़-दमैने शरीफ़ैन के नक़्श मौजूद हैं।

《31》 **बीरे ज़मज़म : मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا का वोह मुक़द्दस कूंआं जो ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के आ़लमे तुफ़ूलिय्यत (या'नी बचपन शरीफ़) में आप के नन्हे नन्हे मुबारक क़दमों की रगड़ से जारी हुवा था। (तफ़्सीरे नईमी, जि. 1, स. 694) इस का पानी देखना, पीना और बदन पर डालना सवाब और बीमारियों के लिये शिफ़ा है। येह मुबारक कूंआं मक़ामे इब्राहीम से जुनूब में वाक़ेअ़ है। (अब कूंएं की ज़ियारत नहीं हो सकती)

《32》 **बाबुस्सफ़ा :** मस्जिदुल ह़राम के जुनूबी दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा है जिस के नज़्दीक "कोहे सफ़ा" है।

《33》 **कोहे सफ़ा : का'बए मुअ़ज़्ज़मा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا के जुनूब में वाक़ेअ़ है।

《34》 **कोहे मर्वह :** कोहे सफ़ा के सामने वाक़ेअ़ है।

﴾35﴿ **मीलैने अख़्ज़रैन :** या'नी "दो सब्ज़ निशान" । सफ़ा से जानिबे मर्वह कुछ दूर चलने के बा'द थोड़े थोड़े फ़ासिले पर दोनों त़रफ़ की दीवारों और छत में सब्ज़ लाइटें लगी हुई हैं । इन दोनों सब्ज़ निशानों के दरमियान दौराने **सअ़्य** मर्दों को दौड़ना होता है ।

﴾36﴿ **मस्आ़ : मीलैने अख़्ज़रैन** का दरमियानी फ़ासिला जहां दौराने सअ़्य मर्द को दौड़ना सुन्नत है ।

﴾37﴿ **मीक़ात :** उस जगह को कहते हैं कि **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا जाने वाले आफ़ाक़ी को बिग़ैर एह़राम वहां से आगे जाना जाइज़ नहीं, चाहे तिजारत या किसी भी ग़रज़ से जाता हो, यहां तक कि **मक्कए मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا के रहने वाले भी अगर मीक़ात की हुदूद से बाहर (म-सलन त़ाइफ़ या मदीनए मुनव्वरह) जाएं तो उन्हें भी अब बिग़ैर एह़राम मक्कए पाक زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا आना **ना जाइज़** है ।

मीक़ात पांच हैं

﴾38﴿ **ज़ुल हुलैफ़ा :** मदीना शरीफ़ से मक्कए पाक की त़रफ़ तक़रीबन 10 किलो मीटर पर है जो **मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की त़रफ़ से आने वालों के लिये "**मीक़ात**" है । अब इस जगह का नाम "**अब्यारे अ़ली**" كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم है ।

﴾39﴿ **ज़ाते इर्क़ :** इ़राक़ की जानिब से आने वालों के लिये **मीक़ात** है ।

《40》 **यलम-लम :** येह अहले यमन की मीक़ात है और पाक व हिन्द वालों के लिये मीक़ात **यलम-लम** की महाज़ात है।

《41》 **जुह़फ़ा :** मुल्के शाम की त़रफ़ से आने वालों के लिये मीक़ात है।

《42》 **क़र्नुल मनाज़िल :** नज्द (मौजूदा रियाज़) की त़रफ़ से आने वालों के लिये मीक़ात है। येह जगह त़ाइफ़ के क़रीब है।

《43》 **ह़रम : मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا के चारों[4] त़रफ़ मीलों तक इस की हुदूद हैं और येह ज़मीन हुरमत व तक़द्दुस की वजह से ''ह़रम'' कहलाती है। हर जानिब इस की हुदूद पर निशान लगे हैं। ह़रम के जंगल का शिकार करना नीज़ ख़ुदरौ दरख़्त और तर घास काटना, ह़ाजी, ग़ैरे ह़ाजी सब के लिये ह़राम है। जो शख़्स हुदूदे ह़रम में रहता हो उसे ''ह़-रमी'' या ''अहले ह़रम'' कहते हैं।

《44》 **ह़िल :** हुदूदे ह़रम के बाहर से मीक़ात तक की ज़मीन को ''ह़िल'' कहते हैं। इस जगह वोह चीज़ें ह़लाल हैं जो ह़रम की वजह से हुदूदे ह़रम में ह़राम हैं। ज़मीने ह़िल का रहने वाला ''ह़िल्ली'' कहलाता है।

《45》 **आफ़ाक़ी :** वोह शख़्स जो ''मीक़ात'' की हुदूद से बाहर रहता हो।

《46》 **तन्ईम :** हुदूदे ह़रम से ख़ारिज वोह जगह जहां से **मक्कए मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में क़ियाम के दौरान उ़म्रे के लिये

एह़राम बांधते हैं और येह मक़ाम **मस्जिदुल ह़राम** से तक़्रीबन 7 किलो मीटर जानिबे मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا है, अब यहां **मस्जिदे आ़इशा** बनी हुई है। इस जगह को अ़वाम "**छोटा उ़म्रह**" कहते हैं।

《47》 **जिइ़र्राना :** हुदूदे ह़रम से ख़ारिज **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا से तक़्रीबन 26 किलो मीटर दूर त़ाइफ़ के रास्ते पर वाक़ेअ़ है। यहां से भी दौराने क़ियामे मक्का शरीफ़ **उ़म्रे का एह़राम** बांधा जाता है। इस मक़ाम को अ़वाम "**बड़ा उ़म्रह**" कहते हैं।

《48》 **मिना : मस्जिदुल ह़राम** से पांच[5] किलो मीटर पर वोह वादी जहां ह़ाजी साह़िबान अय्यामे ह़ज में क़ियाम करते हैं। "मिना" ह़रम में शामिल है।

《49》 **जमरात :** मिना में वाक़ेअ़ तीन[3] मक़ामात जहां कंकरियां मारी जाती हैं। पहले का नाम **जम्रतुल उख़रा** या **जम्रतुल अ़-क़बह** है। इसे **बड़ा शैत़ान** भी बोलते हैं। दूसरे को **जम्रतुल वुस्त़ा** (मंझला शैत़ान) और तीसरे को **जम्रतुल ऊला** (छोटा शैत़ान) कहते हैं।

《50》 **अ़-रफ़ात :** मिना से तक़्रीबन ग्यारह किलो मीटर दूर मैदान जहां 9 **ज़ुल ह़िज्जह** को तमाम ह़ाजी साह़िबान जम्अ़ होते हैं। अ़-रफ़ात शरीफ़ हुदूदे ह़रम से ख़ारिज है।

《51》 **ज-बले रह़मत :** अ़-रफ़ात शरीफ़ का वोह मुक़द्दस पहाड़

जिस के क़रीब वुक़ूफ़ करना अफ़्ज़ल है ।

《52》 **मुज़्दलिफ़ा :** "मिना" से अ़-रफ़ात की त़रफ़ तक़्रीबन 5 किलो मीटर पर वाक़ेअ़ मैदान जहां अ़-रफ़ात से वापसी पर रात बसर करना **सुन्नते मुअक्कदा** और सुब्हे सादिक़ और तुलूए आफ़्ताब के दरमियान कम अज़ कम एक लम्ह़ा वुक़ूफ़ वाजिब है ।

《53》 **मुह़स्सिर :** मुज़्दलिफ़ा से मिला हुवा मैदान, यहीं अस्ह़ाबे फ़ील पर अ़ज़ाब नाज़िल हुवा था । लिहाज़ा यहां से गुज़रते वक़्त तेज़ी से गुज़रना और अ़ज़ाब से पनाह मांगनी चाहिये ।

《54》 **बत़्ने उ़-रनह :** अ़-रफ़ात के क़रीब एक जंगल जहां ह़ाजी का वुक़ूफ़ दुरुस्त नहीं ।

《55》 **मद्अ़ा :** मस्जिदे ह़राम और **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا के क़ब्रिस्तान "जन्नतुल मअ़्ला" के माबैन (की दरमियानी) जगह जहां दुआ़ मांगना मुस्तह़ब है ।

बड़े दरबार में पहुंचाया मुझ को मेरी क़िस्मत ने
मैं सदक़े जाऊं क्या कहना मेरे अच्छे मुक़द्दर का

(सामाने बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दुआ़ क़बूल होने के 29 मक़ामात : मोह़तरम ह़ाजियो ! यूं तो **ह़-रमैने शरीफ़ैन** में हर जगह अन्वारो तजल्लियात की छमाछम बरसात बरस रही है ताहम "**अह़्सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़अ**"

से बा'ज़ दुआ क़बूल होने के मख़्सूस मक़ामात का ज़िक्र किया जाता है । ताकि आप उन मक़ामात पर मज़ीद दिल जम्ई और तवज्जोह के साथ दुआ कर सकें ।

मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا **के मक़ामात येह हैं :** 《1》 मताफ़ 《2》 **मुल्तज़म** 《3》 मुस्तजार 《4》 **बैतुल्लाह** के अन्दर 《5》 मीज़ाबे रह़मत के नीचे 《6》 ह़तीम 《7》 ह़-जरे अस्वद 《8》 रुक्ने यमानी ख़ुसूसन जब दौराने त़वाफ़ वहां से गुज़र हो 《9》 मक़ामे इब्राहीम के पीछे 《10》 ज़मज़म के कूंएं के क़रीब 《11》 सफ़ा 《12》 मर्वह 《13》 मस्आ ख़ुसूसन सब्ज़ मीलों के दरमियान 《14》 अ़-रफ़ात ख़ुसूसन मौक़िफ़े नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नज़्दीक 《15》 मुज़्दलिफ़ा ख़ुसूसन मश्अ़रुल ह़राम 《16》 मिना 《17》 तीनों[3] जमरात के क़रीब 《18》 जब जब का'बए मुशर्रफ़ा पर नज़र पड़े । **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا **के मक़ामात येह हैं :** 《19》 मस्जिदे न-बवी शरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام 《20》 मुवा-जहा शरीफ़, इमाम इब्नुल जज़्री رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : दुआ यहां क़बूल न होगी तो कहां क़बूल होगी (حصن حصین ص۳۱) 《21》 मिम्बरे अत़्हर के पास 《22》 मस्जिदे न-बवी शरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सुतूनों के नज़्दीक 《23》 मस्जिदे क़ुबा शरीफ़ 《24》 मस्जिदुल फ़त्ह़ में ख़ुसूसन बुध को ज़ोहर व अ़स्र के

दरमियान ﴾25﴿ बाक़ी **मसाजिदे त़य्यिबा** जिन को सरकारे मदीना, सुकूने क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत है (म-सलन मस्जिदे ग़मामा, मस्जिदे क़िब्लतैन वग़ैरा वग़ैरा) ﴾26﴿ वोह मुबारक कूंएं जिन्हें सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत है ﴾27﴿ ज-बले उहुद शरीफ़ ﴾28﴿ मशा-हदे मुबा-रका[1] ﴾29﴿ मज़ाराते बक़ीअ़ । तारीख़ी रिवायात के मुत़ाबिक़ जन्नतुल बक़ीअ़ में तक़रीबन दस हज़ार सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان आराम फ़रमा हैं ।

अफ़्सोस ! 1926 सि.ई. में जन्नतुल बक़ीअ़ के मज़ारात को शहीद कर दिया गया अब जगह जगह मुबारक क़ब्रें मिस्मार कर के वहां रास्ते निकाल दिये गए हैं लिहाज़ा आज तक सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ को जन्नतुल बक़ीअ़ के अन्दर दाख़िले की **जुरअत** नहीं हुई मबादा (या'नी कहीं ऐसा न हो) किसी मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार पर पाउं पड़ जाए और मस्अला भी येही है कि क़ब्रे मुस्लिम पर पाउं रखना, बैठना वग़ैरा सब ह़राम है । **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का मत़्बूआ़ 48 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल रिसाला, **"क़ब्र वालों की 25 ह़िकायात"** **सफ़ह़ा** 34 पर है : (क़ब्रिस्तान में क़ब्रें मिटा कर) जो नया रास्ता निकाला गया हो उस पर चलना ह़राम है । (رَدُّالْمُحتَار ج ۱ ص ۶۱۲)

مدینہ

1 : मशाहद जम्अ़ है मश्हद की और मश्हद का मा'ना है : "ह़ाज़िर होने की जगह" यहां मुराद येह है कि जिस जिस मक़ाम पर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए वहां दुआ़ क़बूल होती है और ख़ुसूसन मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरह زَادَھُمَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا में बे शुमार मक़ामात पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हुए म-सलन ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मुक़द्दस बाग़ वग़ैरा ।

बल्कि नए रास्ते का सिर्फ़ **गुमान** हो तब भी उस पर चलना **ना जाइज़** व **गुनाह** है । (دُرِّمُختار ج٣ص١٨٣) लिहाज़ा आ़शिक़ाने रसूल से दर-ख़्वास्त है कि वोह बाहर ही से सलाम अ़र्ज़ करें । बक़ीअ़ शरीफ़ के सद्र दरवाज़े से सलाम अ़र्ज़ करना ज़रूरी नहीं, सह़ीह़ त़रीक़ा येह है कि क़ब्रिस्तान के बाहर ऐसी जगह खड़े हों जहां आप की क़िब्ले को पीठ हो कि इस त़रह़ मदफ़ूनीने बक़ीअ़ के चेहरों की त़रफ़ आप का रुख़ हो जाएगा ।

हैं मआ़सी ह़द से बाहर फिर भी ज़ाहिद ग़म नहीं
रह़मते आ़लम की उम्मत, बन्दा हूं ग़फ़्फ़ार का

(सामाने बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ज की क़िस्में

ह़ज की तीन क़िस्में हैं : ﴾1﴿ **क़िरान** ﴾2﴿ **तमत्तोअ़** ﴾3﴿ **इफ़राद**

1 क़िरान : येह सब से अफ़्ज़ल है, क़िरान करने वाला "क़ारिन" कहलाता है, इस में उ़म्रह और ह़ज का **एह़राम** एक साथ बांधा जाता है मगर उ़म्रह करने के बा'द "क़ारिन" ह़ल्क़ या "क़स्र" नहीं करवा सकता इसे ब दस्तूर एह़राम में रहना होगा, दसवीं[10], ग्यारहवीं[11] या बारहवीं[12] **ज़ुल ह़िज्जह** को क़ुरबानी करने के बा'द ह़ल्क़ या क़स्र करवा के एह़राम खोल दे ।

2 तमत्तोअ़ : येह ह़ज अदा करने वाला "**मु-तमत्तेअ़**" कहलाता है। येह अश्हुरे ह़ज में "मीक़ात" के बाहर से आने वाले अदा कर सकते हैं। म-सलन पाक व हिन्द से आने वाले उ़मूमन **तमत्तोअ़** ही किया करते हैं कि आसानी येह है कि इस में उ़म्रह तो होता ही है लेकिन उ़म्रह अदा करने के बा'द "ह़ल्क़ या क़स्र" करवा के एह़राम खोल दिया जाता है और फिर 8 **ज़ुल ह़िज्जह** या इस से क़ब्ल ह़ज का एह़राम बांधा जाता है।

3 इफ़राद : इफ़राद करने वाले ह़ाजी को "मुफ़्रिद" कहते हैं। इस ह़ज में "उ़म्रह" शामिल नहीं है इस में सिर्फ़ ह़ज का "एह़राम" बांधा जाता है। अहले मक्का और "ह़िल्ली" या'नी मीक़ात और हुदूदे ह़रम के दरमियान में रहने वाले बाशिन्दे (म-सलन अह्लियाने जद्दा शरीफ़) "ह़ज्जे इफ़राद" करते हैं। क़िरान या तमत्तोअ़ करेंगे तो दम वाजिब होगा, आफ़ाक़ी चाहे तो "इफ़राद" कर सकता है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एह़राम बांधने का त़रीक़ा : ह़ज हो या **उ़म्रह** एह़राम बांधने का त़रीक़ा दोनों का एक ही है। हां निय्यत और उस के अल्फ़ाज़ में थोड़ा सा फ़र्क़ है। निय्यत का बयान اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आगे आ रहा है। पहले **एह़राम बांधने का**

त़रीक़ा मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : ﴾1﴿ नाख़ुन तराशिये ﴾2﴿ बग़ल और नाफ़ के नीचे के बाल दूर कीजिये बल्कि पीछे के बाल भी साफ़ कर लीजिये ﴾3﴿ मिस्वाक कीजिये ﴾4﴿ वुज़ू कीजिये ﴾5﴿ ख़ूब अच्छी त़रह़ मल कर ग़ुस्ल कीजिये ﴾6﴿ जिस्म और एह़राम की चादरों पर ख़ुश्बू लगाइये कि येह सुन्नत है, कपड़ों पर ऐसी ख़ुश्बू (म-सलन ख़ुश्क अम्बर वग़ैरा) न लगाइये जिस का जिर्म (या'नी तह) जम जाए ﴾7﴿ इस्लामी भाई सिले हुए कपड़े उतार कर एक नई या धुली हुई सफ़ेद चादर ओढ़ें और ऐसी ही चादर का तहबन्द बांधें। (तहबन्द के लिये लठ्ठा और ओढ़ने के लिये तोलिया हो तो सहूलत रहती है, तहबन्द का कपड़ा मोटा लीजिये ताकि बदन की रंगत न चमके और तोलिया भी क़दरे बड़ी साइज़ का हो तो अच्छा) ﴾8﴿ पासपोर्ट या रक़म वग़ैरा रखने के लिये जेब वाला बेल्ट चाहें तो बांध सकते हैं। रेग्ज़ीन का बेल्ट अक्सर फट जाता है, आगे की त़रफ़ ज़िप (zip) वाला बटवा लगा हुवा नाईलोन (nylon) या चमड़े का बेल्ट काफ़ी मज़्बूत़ होता और बरसों काम दे सकता है।

इस्लामी बहनों का एह़राम : इस्लामी बहनें ह़स्बे मा'मूल सिले हुए कपड़े पहनें, दस्ताने और मोज़े भी पहन सकती हैं, वोह सर भी ढांपें मगर चेहरे पर चादर नहीं ओढ़ सकतीं, ग़ैर मर्दों से चेहरा छुपाने के लिये हाथ का पंखा या

कोई किताब वग़ैरा से ज़रूरतन आड़ कर लें । एह़राम में औ़रतों को किसी ऐसी चीज़ से मुंह छुपाना जो चेहरे से चिपटी हो ह़राम है ।

एह़राम के नफ़्ल : अगर मक्रूह वक़्त न हो तो दो[2] रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल ब निय्यते एह़राम (मर्द भी सर ढांप कर) पढ़ें, बेहतर येह है कि पहली रक्अ़त में अल ह़म्द शरीफ़ के बा'द قُلْ يَآيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ और दूसरी रक्अ़त में قُلْ هُوَ اللّٰه शरीफ़ पढ़ें ।

उ़म्रे की निय्यत : अब इस्लामी भाई सर नंगा कर दें और इस्लामी बहनें सर पर ब दस्तूर चादर ओढ़े रहें अगर (आ़म दिनों का) उ़म्रह है तब भी और अगर ह़ज्जे **तमत्तोअ़** कर रहे हैं जब भी उ़म्रे की इस त़रह़ निय्यत करें :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اُرِیْدُ الْعُمْرَةَ فَیَسِّرْهَا لِیْ وَتَقَبَّلْهَا

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं उ़म्रे का इरादा करता हूं मेरे लिये इसे आसान और इसे मेरी त़रफ़

مِنِّیْ وَاَعِنِّیْ عَلَیْهَا وَبَارِكْ لِیْ فِیْهَا ؕ نَوَیْتُ

से क़बूल फ़रमा और इसे (अदा करने में) मेरी मदद फ़रमा और इसे मेरे लिये बा ब-र-कत फ़रमा । मैं

الْعُمْرَةَ وَاَحْرَمْتُ بِهَا لِلّٰهِ تَعَالٰی ؕ

ने उ़म्रे की निय्यत की और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये इस का एह़राम बांधा ।

ह़ज की निय्यत : मुफ़्रिद भी इस त़रह़ निय्यत करे और **मु-तमत्तेअ़** भी जब **8 ज़ुल ह़िज्जह** या इस से क़ब्ल **ह़ज का एह़राम** बांधे मुन्दरिजए ज़ैल अल्फ़ाज़ में निय्यत करे :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْۤ اُرِیْدُ الْحَجَّ فَیَسِّرْہُ لِیْ وَتَقَبَّلْہُ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं **ह़ज** का इरादा करता हूं इस को तू मेरे लिये आसान कर दे और इसे

مِنِّیْ وَاَعِنِّیْ عَلَیْہِ وَبَارِکْ لِیْ فِیْہِ ط نَوَیْتُ

मुझ से क़बूल फ़रमा और इस में मेरी मदद फ़रमा और इसे मेरे लिये बा ब-र-कत फ़रमा। मैं

الْحَجَّ وَاَحْرَمْتُ بِہٖ لِلّٰہِ تَعَالٰی ط

ने **ह़ज** की निय्यत की और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये इस का **एह़राम** बांधा।

ह़ज्जे क़िरान की निय्यत

क़ारिन ‘‘उ़म्रह और ह़ज’’ दोनों की एक साथ निय्यत करेगा, चुनान्चे वोह इस त़रह़ निय्यत करे :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْۤ اُرِیْدُ الْعُمْرَۃَ وَالْحَجَّ فَیَسِّرْھُمَا

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं उ़म्रह और ह़ज दोनों का इरादा करता हूं, तू इन्हें मेरे लिये आसान कर दे

لِیْ وَتَقَبَّلْ هُمَا مِنِّیْ ط نَوَیْتُ الْعُمْرَةَ وَالْحَجَّ

और इन्हें मेरी त़रफ़ से क़बूल फ़रमा। मैं ने उ़म्रह और ह़ज दोनों की निय्यत की

وَاَحْرَمْتُ بِهِمَا مُخْلِصًا لِلّٰهِ تَعَالٰی ط

और ख़ालि-सतन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये इन दोनों का **एह़राम** बांधा।

लब्बैक : ख़्वाह **उ़म्रे** की निय्यत करें या **ह़ज** की या **ह़ज्जे क़िरान** की तीनों सूरतों में निय्यत के बा'द कम अज़् कम एक बार **लब्बैक** कहना लाज़िमी है और तीन3 बार कहना अफ़्ज़ल। **लब्बैक** येह है :

لَبَّیْکَ ط اَللّٰهُمَّ لَبَّیْکَ ط لَبَّیْکَ لَاشَرِیْکَ لَکَ لَبَّیْکَ ط

मैं ह़ाज़िर हूं, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ! मैं ह़ाज़िर हूं, (हां) मैं ह़ाज़िर हूं तेरा कोई शरीक नहीं मैं ह़ाज़िर हूं,

اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَکَ وَالْمُلْکَ ط لَاشَرِیْکَ لَکَ ط

बेशक तमाम ख़ूबियां और ने'मतें तेरे लिये हैं और तेरा ही मुल्क भी, तेरा कोई शरीक नहीं।

ऐ मदीने के मुसाफ़िरो ! आप का **एह़राम** शुरूअ़ हो गया, अब येह **लब्बैक** ही आप का वज़ीफ़ा और विर्द है, उठते बैठते, चलते फिरते इस का ख़ूब विर्द कीजिये।

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** ﴿1﴾ जब **लब्बैक** कहने

वाला **लब्बैक** कहता है तो उसे **ख़ुश ख़बरी** दी जाती है । अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या जन्नत की ख़ुश ख़बरी दी जाती है ? इर्शाद फ़रमाया : ‘‘हां ’’ (مُعْجَم اَوْسَط ج٥ ص٤١٠ حديث ٧٧٧٩) ﴾2﴿ जब मुसलमान ‘‘**लब्बैक**’’ कहता है तो उस के दाएं और बाएं ज़मीन के आख़िरी सिरे तक जो भी पथ्थर, दरख़्त और ढेला है वोह सब **लब्बैक** कहते हैं ।

(تِرمذی ج٢ ص٢٢٦ حديث٨٢٩)

मा'ना पर नज़र रखते हुए लब्बैक पढ़िये : इधर उधर देखते हुए बे दिली से पढ़ने के बजाए निहायत ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ के साथ मा'ना पर नज़र रखते हुए **लब्बैक** पढ़ना मुनासिब है । एह़राम बांधने वाला **लब्बैक** कहते वक़्त अपने प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुख़ात़िब होता है और अ़र्ज़ करता है : ‘‘**लब्बैक**’’ या'नी मैं ह़ाज़िर हूं, अपने मां बाप को अगर कोई येही अल्फ़ाज़ कहे तो यक़ीनन तवज्जोह से कहेगा, फिर अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से अ़र्ज़ो मा'रूज़ में कितनी तवज्जोह होनी चाहिये येह हर ज़ी शुऊ़र समझ सकता है । इसी बिना पर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : एक फ़र्द **लब्बैक** के अल्फ़ाज़ पढ़ाए और दूसरे उस के पीछे पीछे पढ़ें येह **मुस्तह़ब** नहीं बल्कि हर फ़र्द ख़ुद **तल्बिया** पढ़े । (اَلْمَسْلَكُ الْمُتَقَسِّط لِلقاری ص١٠٣)

लब्बैक कहने के बा'द की एक सुन्नत : लब्बैक से फ़ारिग़ होने के बा'द **दुआ मांगना सुन्नत है,** जैसा कि ह़दीसे मुबारक में है कि ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब **लब्बैक** से फ़ारिग़ होते तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस की ख़ुशनूदी और जन्नत का सुवाल करते और जहन्नम से पनाह मांगते। (مُسنَد اِمام شافعی ص۱۲۳) यक़ीनन हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ुश है, बिला शुबा आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم क़त़ई जन्नती बल्कि ब अ़त़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ मालिके जन्नत हैं मगर येह सब दुआ़एं दीगर बहुत सारी ह़िक्मतों के साथ साथ उम्मत की ता'लीम के लिये भी हैं कि हम भी सुन्नत समझ कर दुआ़ मांग लिया करें।

"اَللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ" के नव ह़ुरूफ़ की निस्बत से लब्बैक के 9 म-दनी फूल

﴾1﴿ उठते बैठते, चलते फिरते, वुज़ू बे वुज़ू हर ह़ाल में **लब्बैक** कहिये ﴾2﴿ ख़ुसूसन चढ़ाई पर चढ़ते, ढलवान उतरते (सीढ़ियों पर चढ़ते उतरते), दो[2] क़ाफ़िलों के मिलते, सुब्ह़ व शाम, पिछली रात, और पांचों[5] वक़्त की नमाज़ों के बा'द, ग़रज़ कि हर ह़ालत के बदलने पर **लब्बैक** कहिये ﴾3﴿ जब भी **लब्बैक** शुरूअ़ करें कम अज़ कम तीन[3] बार कहें ﴾4﴿ "**मो'तमिर**" या'नी उ़म्रह करने वाला और "**मु-तमत्तेअ़**" भी उ़म्रह करते वक़्त जब का'बए

मुशर्रफ़ा का त़वाफ़ शुरूअ़ करे उस वक़्त **ह़-जरे अस्वद** का पहला इस्तिलाम करते ही "**लब्बैक**" कहना छोड़ दे ﴾5﴿ "**मुफ़्रिद**" और "**क़ारिन**" **लब्बैक** कहते हुए **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا में ठहरें कि इन की **लब्बैक** और **मु-तमत्तेअ़** जब ह़ज का एह़राम बांधे उस की **लब्बैक** 10 **ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम** शरीफ़ को **जम्रतुल अ़-क़बा** (या'नी बड़े शैत़ान) को पहली कंकरी मारते वक़्त **ख़त्म** होगी ﴾6﴿ **इस्लामी भाई** ब आवाज़े बुलन्द **लब्बैक** कहा करें मगर आवाज़ इतनी भी बुलन्द न करें कि इस से ख़ुद को या किसी दूसरे को तक्लीफ़ हो ﴾7﴿ इस्लामी बहनें जब भी **लब्बैक** कहें धीमी आवाज़ से कहें और येह सभी याद रखें कि इ़लावा ह़ज के भी जब कभी जो कुछ पढ़ें उस तलफ़्फ़ुज़ की अदाएगी में इतनी आवाज़ लाज़िमी है कि अगर बहरा पन या शोरो गुल न हो तो ख़ुद सुन सकें ﴾8﴿ **एह़राम के लिये** निय्यत शर्त़ है अगर बिग़ैर निय्यत **लब्बैक** कही **एह़राम** न हुवा, इसी त़रह़ तन्हा निय्यत भी काफ़ी नहीं जब तक **लब्बैक** या इस के क़ाइम मक़ाम कोई और चीज़ न हो **(عالمگیری ج۱ ص ۲۲۲)** ﴾9﴿ एह़राम के लिये एक बार ज़बान से **लब्बैक** कहना ज़रूरी है और अगर इस की जगह سُبۡحٰنَ اللّٰه या اَلۡحَمۡدُ لِلّٰه या لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه या कोई और **ज़िक्रुल्लाह** किया और

एह्राम की निय्यत की तो एह्राम हो गया मगर सुन्नत **लब्बैक** कहना है। (ایضاً)

करूं ख़ूब एह्राम में लब्बैक की तकरार

दे ह्ज का शरफ़ हर बरस रब्बे ग़फ़्फ़ार

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

निय्यत के मु-तअ़ल्लिक़ ज़रूरी हिदायत : याद रखिये ! निय्यत दिल के इरादे को कहते हैं। ख़्वाह नमाज़, रोज़ा, एह्राम कुछ भी हो, अगर दिल में निय्यत मौजूद न हो तो सिर्फ़ ज़बान से निय्यत के अल्फ़ाज़ अदा कर लेने से निय्यत नहीं हो सकती और निय्यत के अल्फ़ाज़ अ़-रबी ज़बान में कहना ज़रूरी नहीं, अपनी मा-दरी ज़बान में भी कह सकते हैं बल्कि ज़बान से कहना लाज़िमी नहीं, **सिर्फ़ दिल में इरादा भी काफ़ी है।** हां ज़बान से कह लेना अफ़्ज़ल है और अ़-रबी ज़बान में ज़ियादा बेहतर क्यूं कि येह हमारे मक्की म-दनी सुल्त़ान, रह्मते आ़-लमियान صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी ज़बान है। अ़-रबी ज़बान में जब निय्यत के अल्फ़ाज़ कहें तो उस के मा'ना भी ज़रूर ज़ेह्न में होने चाहिएं।

एह्राम के मा'ना : **एह्राम** के लफ़्ज़ी मा'ना हैं : ह्राम करना क्यूं कि एह्राम बांधने वाले पर बा'ज़ ह्लाल बातें भी ह्राम हो जाती हैं, एह्राम वाले इस्लामी भाई को मोह्रिम और इस्लामी बहन को मोह्रिमा कहते हैं।

एह्राम में येह बातें ह्राम हैं : ﴾1﴿ इस्लामी भाई को सिलाई किया हुवा कपड़ा पहनना ﴾2﴿ सर पर टोपी ओढ़ना, इमामा या रुमाल वगै़रा बांधना ﴾3﴿ मर्द का सर पर कपड़े की गठड़ी उठाना (इस्लामी बहनें सर पर चादर ओढ़ें और इन्हें सर पर कपड़े की गठरी उठाना मन्अ़ नहीं) ﴾4﴿ मर्द का दस्ताने पहनना। (इस्लामी बहनों को मन्अ़ नहीं) ﴾5﴿ इस्लामी भाई ऐसे मोज़े या जूते नहीं पहन सकते जो वस्ते़ क़दम (या'नी क़दम के बीच का उभार) छुपाएं, (हवाई चप्पल मुनासिब हैं) ﴾6﴿ जिस्म, लिबास या बालों में ख़ुश्बू लगाना ﴾7﴿ ख़ालिस ख़ुश्बू म-सलन इलायची, लोंग, दारचीनी, ज़ा'फ़रान, जावत्तरी खाना या आंचल में बांधना, येह चीज़ें अगर किसी खाने या सालन वगै़रा में डाल कर पकाई गई हों अब चाहे ख़ुश्बू भी दे रही हों तो भी खाने में ह्रज नहीं ﴾8﴿ जिमाअ़ करना या बोसा, मसास (या'नी छूना), गले लगाना, अन्दामे निहानी (औ़रत की शर्मगाह) पर निगाह डालना जब कि येह आख़िरी चारों[4] या'नी जिमाअ़ के इलावा काम ब शह्वत हों ﴾9﴿ फ़ोह्श और हर क़िस्म का गुनाह हमेशा ह्राम था अब और भी सख़्त ह्राम हो गया

﴾10﴿ किसी से दुन्यवी लड़ाई झगड़ा ﴾11﴿ जंगल का शिकार करना या किसी त़रह़ भी इस पर मुआ़विन होना, इस का गोश्त या अन्डा वग़ैरा ख़रीदना, बेचना या खाना ﴾12﴿ अपना या दूसरे का नाख़ुन कतरना या दूसरे से **अपने नाख़ुन कतरवाना** ﴾13﴿ **सर** या दाढ़ी के बाल काटना, बग़लें बनाना, मूए ज़ेरे नाफ़ लेना, बल्कि सर से पाउं तक कहीं से कोई बाल जुदा करना ﴾14﴿ **वस्मा** या महंदी का ख़िज़ाब लगाना ﴾15﴿ ज़ैतून का या तिल का तेल चाहे बे ख़ुश्बू हो, बालों या जिस्म पर लगाना ﴾16﴿ किसी का सर मूंडना ख़्वाह वोह एह़राम में हो या न हो। (हां एह़राम से बाहर होने का वक़्त आ गया तो अब अपना या दूसरे का सर मूंड सकता है) ﴾17﴿ **जूं** मारना, फेंकना, किसी को मारने के लिये इशारा करना, कपड़ा उस के मारने के लिये धोना या धूप में डालना, बालों में जूं मारने के लिये किसी क़िस्म की दवा वग़ैरा डालना, ग़-रज़े कि किसी त़रह़ उस के हलाक पर बाइ़स होना।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1078, 1079)

एह़राम में येह बातें मक्रूह हैं : ﴾1﴿ जिस्म का मैल छुड़ाना ﴾2﴿ बाल या जिस्म साबुन वग़ैरा से धोना ﴾3﴿ कंघी करना ﴾4﴿ इस त़रह़ खुजाना कि बाल टूटने या जूं गिरने का अन्देशा हो ﴾5﴿ कुरता या शेरवानी वग़ैरा पहनने की त़रह़ कन्धों पर डालना ﴾6﴿ जान बूझ कर ख़ुश्बू सूंघना ﴾7﴿ ख़ुश्बूदार फल या पत्ता म-सलन लीमूं, पोदीना, नारंगी वग़ैरा सूंघना (खाने में मुज़ा-यक़ा नहीं)

《8》 इत्र फ़रोश की दुकान पर इस निय्यत से बैठना कि ख़ुश्बू आए 《9》 **महक्ती ख़ुश्बू** हाथ से छूना जब कि हाथ पर न लग जाए वरना ह़राम है 《10》 कोई ऐसी चीज़ खाना या पीना जिस में ख़ुश्बू पड़ी हो और न वोह पकाई गई हो न बू ज़ाइल (या'नी ख़त्म) हो गई हो 《11》 **ग़िलाफ़े का'बा** के अन्दर इस त़रह़ दाख़िल होना कि ग़िलाफ़ शरीफ़ सर या मुंह से लगे 《12》 नाक वग़ैरा मुंह का कोई भी ह़िस्सा कपड़े से छुपाना 《13》 बे सिला कपड़ा रफ़ू किया हुवा या पैवन्द लगा हुवा पहनना 《14》 **तक्ये** पर मुंह रख कर औंधा लैटना (एह़राम के इ़लावा भी औंधा सोना मन्अ़ है कि ह़दीसे पाक में इस त़रह़ सोने को जहन्नमियों का त़रीक़ा कहा गया है) 《15》 ता'वीज़ अगर्चे बे सिले कपड़े में लपेटा हुवा हो, उसे बांधना मक्रूह है। हां अगर बे सिले कपड़े में लपेटा हुवा ता'वीज़ बाज़ू वग़ैरा पर बांधा नहीं बल्कि गले में डाल लिया तो ह़रज नहीं 《16》 सर या मुंह पर पट्टी बांधना 《17》 बिला उ़ज़्र बदन पर पट्टी बांधना 《18》 बनाव सिंघार करना 《19》 चादर ओढ़ कर इस के सिरों में गिरह दे लेना जब कि सर खुला हो वरना ह़राम है 《20》 तहबन्द के दोनों[2] कनारों में गिरह देना 《21》 रक़म वग़ैरा रखने की निय्यत से जेब वाला बेल्ट बांधने की इजाज़त है। अलबत्ता सिर्फ़ तहबन्द को कसने की निय्यत से **बेल्ट या रस्सी** वग़ैरा बांधना मक्रूह है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1079, 1080)

येह बातें एह़राम में जाइज़ हैं : ﴾1﴿ मिस्वाक करना ﴾2﴿ अंगूठी पहनना[1] ﴾3﴿ बे ख़ुश्बू सुरमा लगाना। लेकिन मोह़रिम के लिये बिला ज़रूरत इस का इस्ति'माल मक्रूहे तन्ज़ीही है। (ख़ुश्बूदार सुरमा एक या दो बार लगाया तो "स-दक़ा" है और तीन या इस से ज़ाइद में "दम") ﴾4﴿ बे मैल छुड़ाए ग़ुस्ल करना ﴾5﴿ कपड़े धोना। (मगर जूं मारने की ग़रज़ से ह़राम है) ﴾6﴿ सर या बदन इस त़रह़ आहिस्ता से खुजाना कि बाल न टूटें ﴾7﴿ छत्री लगाना

1 : अंगूठी के बारे में अ़र्ज़ है कि ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा अ-ज़मत में एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पीतल की अंगूठी पहने हुए थे। मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या बात है कि तुम से बुत की बू आती है ? उन्हों ने वोह (पीतल की) अंगूठी उतार कर फेंक दी फिर लोहे की अंगूठी पहन कर ह़ाज़िर हुए। फ़रमाया : क्या बात है कि तुम जहन्नमियों का ज़ेवर पहने हुए हो ? उन्हों ने उसे भी फेंक दिया फिर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! कैसी अंगूठी बनवाऊं ? फ़रमाया : चांदी की बनाओ और एक मिस्क़ाल पूरा न करो। **(ابو داؤد ج٤ ص١٢٢ حدیث٤٢٢٣)** या'नी साढ़े चार माशा से कम वज़्न की हो। इस्लामी भाई जब कभी अंगूठी पहनें तो सिर्फ़ चांदी की साढ़े चार माशा (या'नी 4 ग्राम 374 मिली ग्राम) से कम वज़्न चांदी की एक ही अंगूठी पहनें एक से ज़ियादा न पहनें और उस एक अंगूठी में नगीना भी एक ही हो एक से ज़ियादा नगीने न हों और बिग़ैर नगीने के भी न पहनें। नगीने के वज़्न की कोई क़ैद नहीं। चांदी या किसी और धात का छल्ला (चाहे मदीनए मुनव्वरह ही का क्यूं न हो) या चांदी के बयान कर्दा वज़्न वग़ैरा के इ़लावा किसी भी धात (म-सलन सोना, तांबा, लोहा, पीतल, स्टील वग़ैरा) की अंगूठी नहीं पहन सकते। सोने, चांदी या किसी भी धात की ज़न्जीर गले में पहनना गुनाह है। इस्लामी बहनें सोने चांदी की अंगूठियां और ज़न्जीरें वग़ैरा पहन सकती हैं, वज़्न और नगीनों की कोई क़ैद नहीं। (अंगूठी के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात के लिये, फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द 2 के बाब "नेकी की दा'वत" (ह़िस्सए अव्वल) सफ़ह़ा 408 ता 412 का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये)

या किसी चीज़ के साए में बैठना ﴾8﴿ चादर के आंचलों को तहबन्द में घुरसना ﴾9﴿ दाढ़ उखाड़ना ﴾10﴿ टूटे हुए नाख़ुन जुदा करना ﴾11﴿ फुन्सी तोड़ देना ﴾12﴿ आंख में जो बाल निकले, उसे जुदा करना ﴾13﴿ ख़तना करना ﴾14﴿ फ़स्द (बिग़ैर बाल मूंडे) **पछने** (ह़जामत) करवाना ﴾15﴿ चील, कव्वा, चूहा, छुपकली, गिरगट, सांप, बिच्छू, खटमल, मच्छर, पिस्सू, मख्खी वग़ैरा ख़बीस और मूज़ी जानवरों को मारना। (ह़रम में भी इन को मार सकते हैं) ﴾16﴿ सर या मुंह के इलावा किसी और जगह ज़ख़्म पर पट्टी बांधना[1] ﴾17﴿ सर या गाल के नीचे तक्या रखना ﴾18﴿ कान कपड़े से छुपाना ﴾19﴿ सर या नाक पर अपना या दूसरे का हाथ रखना (कपड़ा या रुमाल नहीं रख सकते) ﴾20﴿ ठोड़ी से नीचे दाढ़ी पर कपड़ा आना ﴾21﴿ सर पर सीनी (या'नी धात का बना हुवा ख़्वान) या ग़ल्ले की बोरी उठाना जाइज़ है मगर सर पर कपड़े की गठड़ी उठाना **ह़राम** है। हां "**मोह़रिमा**" दोनों उठा सकती है ﴾22﴿ जिस खाने में इलायची, दारचीनी, लोंग वग़ैरा पकाई गई हों अगर्चे उन की **ख़ुश्बू** भी आ रही हो (म-सलन क़ोरमा, बिरयानी, ज़र्दा वग़ैरा) उस का खाना या बे पकाए जिस खाने पीने में कोई **ख़ुश्बू** डाली हुई हो वोह बू नहीं देती, उस का खाना पीना ﴾23﴿ घी या चरबी या

1 : मजबूरी की सूरत में सर या मुंह पर पट्टी बांध सकते हैं मगर इस पर कफ़्फ़ारा देना होगा। (इस का मस्अला सफ़ह़ा 315 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं)

कड़वा तेल या बादाम या नारियल या कद्दू, काहू का तेल जिस में **ख़ुश्बू** न डाली हुई हो उस का बालों या जिस्म पर लगाना 《24》 ऐसा जूता पहनना जाइज़ है जो क़दम के वस्त़ के जोड़ या'नी क़दम के बीच की उभरी हुई हड्डी को न छुपाए। (लिहाज़ा **मोह़रिम** के लिये इसी में आसानी है कि वोह हवाई चप्पल पहने) 《25》 बे सिले हुए कपड़े में लपेट कर ता'वीज़ गले में डालना 《26》 पालतू जानवर म-सलन ऊंट, बकरी, मुर्ग़ी, गाय वग़ैरा को ज़ब्ह़ करना उस का गोश्त पकाना, खाना। उस के अन्डे तोड़ना, भूनना, खाना। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1081, 1082)

मर्द व औ़रत के एह़राम में फ़र्क़ : एह़राम के मज़्कूरए बाला मसाइल में मर्द व औ़रत दोनों[2] बराबर हैं ताहम चन्द बातें इस्लामी बहनों के लिये जाइज़ हैं। **आज** कल एह़राम के नाम पर सिले सिलाए "स्कार्फ़" बाज़ार में बिकते हैं, मा'लूमात की कमी की बिना पर इस्लामी बहनें उसी को एह़राम समझती हैं, ह़ालां कि ऐसा नहीं, ह़स्बे मा'मूल सिले हुए कपड़े पहनें। हां अगर मज़्कूरा स्कार्फ़ को शरअ़न ज़रूरी न समझें और वैसे ही पहनना चाहें तो मन्अ़ नहीं।

《1》 **सर** छुपाना, बल्कि एह़राम के इ़लावा भी नमाज़ में और ना मह़रम (जिन में ख़ालू, फूफा, बहनोई, मामूंज़ाद, चचाज़ाद, फूफीज़ाद, ख़ालाज़ाद और ख़ुसूसिय्यत के साथ देवर व जेठ भी शामिल हैं) के सामने फ़र्ज़ है। ना मह़रमों के सामने औ़रत का इस त़रह़ आ जाना कि

सर खुला हुवा हो या इतना बारीक दुपट्टा ओढ़ा हुवा हो कि बालों की सियाही चमक्ती हो इलावा एह़राम के भी **ह़राम** है और एह़राम में सख़्त ह़राम ﴾2﴿ **मोह़रिमा** जब सर छुपा सकती है तो कपड़े की गठड़ी सर पर उठाना ब द-र-जए औला **जाइज़** हुवा ﴾3﴿ सिला हुवा ता'वीज़ गले या बाज़ू में बांधना ﴾4﴿ ग़िलाफ़े **का'बए मुशर्रफ़ा** में यूं दाख़िल होना कि सर पर रहे मुंह पर न आए कि इसे भी मुंह पर कपड़ा डालना **ह़राम** है। (आज कल ग़िलाफ़े का'बा पर लोग ख़ूब ख़ुश्बू छिड़क्ते हैं लिहाज़ा एह़राम में एह़तियात़ करें) ﴾5﴿ दस्ताने, मोज़े और सिले कपड़े पहनना ﴾6﴿ एह़राम में मुंह छुपाना औ़रत को भी ह़राम है, ना महृरम के आगे कोई पंखा (या गत्ता) वग़ैरा मुंह से बचा हुवा सामने रखे। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1083) ﴾7﴿ इस्लामी बहन पी केप वाला निक़ाब भी पहन सकती है मगर येह एह़तियात़ ज़रूरी है कि चेहरे से मस (TOUCH) न हो। इस में येह अन्देशा रहेगा कि तेज़ हवा चले और निक़ाब चेहरे से चिपक जाए या बे तवज्जोही में पसीना वग़ैरा उसी निक़ाब से पोंछने लगे, लिहाज़ा सख़्त एह़तियात़ रखनी होगी।

"*ह़ज का एह़राम*" के नव ह़ुरूफ़ की निस्बत से एह़राम की 9 मुफ़ीद एह़तियातें

﴾1﴿ एह़राम ख़रीदते वक़्त खोल कर देख लीजिये वरना रवानगी के

मौक़अ़ पर पहनते वक़्त छोटा बड़ा निकला तो सख़्त आज़्माइश हो सकती है ﴾2﴿ रवानगी से चन्द रोज़ क़ब्ल घर ही में एह़राम बांधने की मश्क़ कर लीजिये ﴾3﴿ ऊपर की चादर तोलिये की और तहबन्द मोटे लठ्ठे का रखिये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ नमाज़ों में भी सहूलत रहेगी और मिना शरीफ़ वग़ैरा में हवा से उड़ने का इम्कान भी कम हो जाएगा ﴾4﴿ एह़राम और बेल्ट वग़ैरा बांध कर घर में कुछ चल फिर लीजिये ताकि मश्क़ हो जाए, वरना बांध कर एक दम से चलने फिरने में तहबन्द ख़ूब टाइट होने या खुल जाने वग़ैरा की सूरत में परेशानी हो सकती है ﴾5﴿ खुसूसन लठ्ठे का एह़राम उ़म्दा और मोटे कपड़े का लीजिये वरना पतला कपड़ा हुवा और पसीना आया तो तहबन्द चिपक जाने की सूरत में रानों वग़ैरा की रंगत ज़ाहिर हो सकती है। बा'ज़ अवक़ात तहबन्द का कपड़ा इतना बारीक होता है कि पसीना न हो तब भी रानों वग़ैरा की रंगत चमक्ती है। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 496 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''नमाज़ के अह़काम'' सफ़ह़ा** 194 पर है : अगर ऐसा बारीक कपड़ा पहना जिस से बदन का वोह ह़िस्सा जिस का नमाज़ में छुपाना फ़र्ज़ है नज़र आए या जिल्द का रंग ज़ाहिर हो नमाज़ न होगी। (فتاوٰی عالمگیری ج۱ ص۵۸) आज कल बारीक कपड़ों का रवाज बढ़ता जा रहा है। ऐसे बारीक कपड़े का पाजामा पहनना जिस से रान या सत्र का कोई ह़िस्सा चमक्ता हो इ़लावा नमाज़ के भी पहनना **ह़राम** है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 480) ﴾6﴿ निय्यत से क़ब्ल एह़राम

पर खुश्बू लगाना सुन्नत है, बेशक लगाइये मगर लगाने के बा'द इत्र की शीशी बेल्ट की जेब में मत डालिये। वरना निय्यत के बा'द जेब में हाथ डालने की सूरत में खुश्बू लग सकती है। अगर हाथ में इतना इत्र लग गया कि देखने वाले कहें कि "ज़ियादा है" तो दम वाजिब होगा और कम कहें तो स–दक़ा। अगर इत्र की तरी वग़ैरा नहीं लगी हाथ में सिर्फ़ महक आ गई तो कोई कफ़्फ़ारा नहीं। बेग में भी रखना हो तो किसी शोपर वग़ैरा में लपेट कर ख़ूब एह़तियात की जगह रखिये ﴾7﴿ ऊपर की चादर दुरुस्त करने में येह एह़तियात रखिये कि अपने या किसी दूसरे **मोह़रिम** के सर या चेहरे पर न पड़े। सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ ने भीड़भाड़ में एह़राम दुरुस्त करने वालों की चादरों में दीगर मोह़रिमों के मुंडे हुए सर फंसते देखे हैं ﴾8﴿ कई **मोह़रिम** ह़ज़रात के **एह़राम का तहबन्द** नाफ़ के नीचे होता है और ऊपर की चादर पेट पर से अक्सर सरक्ती रहती और नाफ़ के नीचे का कुछ ह़िस्सा सब के सामने ज़ाहिर होता रहता है और वोह इस की परवाह नहीं करते, इसी त़रह़ चलते फिरते और उठते बैठते वक़्त बे एह़तियाती के बाइ़स बा'ज़ एह़राम वालों की रान वग़ैरा भी दूसरों पर ज़ाहिर हो जाती है। बराए मेहरबानी ! इस मस्अले को याद रखिये कि नाफ़ के नीचे से ले कर घुटनों समेत जिस्म का सारा ह़िस्सा सत्र है और इस में से थोड़ा सा ह़िस्सा भी बिला इजाज़ते शर–ई़ दूसरों के आगे खोलना **ह़राम** है। सत्र के येह मसाइल सिर्फ़ एह़राम के साथ मख़्सूस नहीं।

एह़राम के इ़लावा भी दूसरों के आगे **अपना सत्र खोलना या दूसरों के खुले सत्र की त़रफ़ नज़र करना ह़राम है** ﴾9﴿ बा'ज़ों के एह़राम का तहबन्द नाफ़ के नीचे होता है और बे एह़तियात़ी की वजह से مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ दूसरों की मौजू-दगी में **पेड़ू**[1] का कुछ हि़स्सा खुला रहता है। **बहारे शरीअ़त** में है : नमाज़ में चौथाई (1/4) की मिक़्दार (**पेड़ू**) खुला रहा तो नमाज़ न होगी और बा'ज़ बेबाक ऐसे हैं कि लोगों के सामने घुटने बल्कि रानें खोले रहते हैं येह (नमाज़ व एह़राम के इ़लावा) भी **ह़राम** है और इस की आ़दत है तो **फ़ासिक़** हैं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 481)

एह़राम के बारे में ज़रूरी तम्बीह : जो बातें **एह़राम** में ना जाइज़ हैं अगर वोह किसी मजबूरी के सबब या भूल कर हों तो गुनाह नहीं मगर उन पर जो जुर्माना मुक़र्रर है वोह बहर ह़ाल अदा करना होगा अब येह बातें चाहे बिग़ैर इरादा हों, भूल कर हों, सोते में हों या जब्रन कोई करवाए।

(ऐज़न, स. 1083)

मैं एह़राम बांधूं करूं ह़ज्जो उ़म्रह
मिले लुत़्फ़े सअ़्ये सफ़ा और मर्वह

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

1 : नाफ़ के नीचे से ले कर उ़ज़्वे मख़्सूस की जड़ तक बदन की गोलाई में जितना हि़स्सा आता है उसे "पेड़ू" कहते हैं।

ह़रम की वज़ाह़त : अ़ाम बोलचाल में लोग "**मस्जिदे ह़राम**" को **ह़रम शरीफ़** कहते हैं, इस में कोई शक नहीं कि **मस्जिदे ह़राम शरीफ़ ह़-रमे मोह़तरम ही में दाख़िल है** मगर ह़रम शरीफ़ मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا समेत[1] उस के इर्द गिर्द मीलों तक फैला हुवा है और हर त़रफ़ इस की ह़दें बनी हुई हैं। म-सलन जद्दा शरीफ़ से आते हुए **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا से क़ब्ल 23 किलो मीटर पहले पोलीस चौकी आती है, यहां सड़क के ऊपर बोर्ड पर जली हुरूफ़ में لِلۡمُسۡلِمِیۡنَ فَقَط (या'नी सिर्फ़ मुसल्मानों के लिये) लिखा हुवा है। इसी सड़क पर जब मज़ीद आगे बढ़ते हैं तो **बीरे शमीस** या'नी हुदैबिया का मक़ाम है, इस सम्त पर "**ह़रम शरीफ़**" की ह़द यहां से शुरूअ़ हो जाती है। "एक **मुअर्रिख़** की जदीद पैमाइश के ह़िसाब से **ह़रम** के रक़्बे का दाएरा 127 किलो मीटर है जब कि कुल रक़्बा 550 मुरब्बअ़ किलो मीटर है।" (तारीख़े मक्कए मुकर्रमा, स. 15) (जंगलों की कांट छांट, पहाड़ों की तराश ख़राश और सुरंगों (TUNNELS) की तरकीबों वग़ैरा के ज़रीए़ बनाए जाने वाले नए रास्तों और सड़कों के सबब वहां फ़ासिले में कमी बेशी होती रहती है ह़रम की अस्ल हुदूद वोही हैं जिन का अह़ादीसे मुबा-रका में बयान हुवा है)

मदीना

1 : मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में आबादी बढ़ती जा रही है और कहीं कहीं ह़रम के बाहर तक फैल चुकी है म-सलन **तन्ईम** कि येह ह़रम से बाहर है मगर शायद शहरे मक्का में दाख़िल। واللہ ورسولہٗ اعلم۔

ठन्डी ठन्डी हवा ह़रम की है
बारिश अल्लाह के करम की है

(वसाइले बख़्शिश, स. 124)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا **की ह़ाज़िरी : ह़रम** जब क़रीब आए तो सर झुकाए, आंखें शर्मे गुनाह से नीची किये खुशूओ खुज़ूअ़ के साथ इस की ह़द में दाख़िल हों, ज़िक्रो दुरूद और **लब्बैक** की ख़ूब कसरत कीजिये और जूं ही **रब्बुल आ़-लमीन** جَلَّ جَلَالُهٗ के मुक़द्दस शहर **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا पर नज़र पड़े तो येह दुआ़ पढ़िये :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ لِّيْ قَرَارًا وَّارْزُقْنِيْ فِيْهَا رِزْقًا حَلَالًا

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे इस में क़रार और रिज़्के ह़लाल अ़त़ा फ़रमा।

मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا पहुंच कर ज़रूरतन मकान और ह़िफ़ाज़ते सामान वग़ैरा का इन्तिज़ाम कर के "**लब्बैक**" कहते हुए "**बाबुस्सलाम**" पर ह़ाज़िर हों और उस दरवाज़ए पाक को चूम कर पहले सीधा पाउं **मस्जिदुल ह़राम** में रख कर हमेशा की त़रह़ मस्जिद में दाख़िले की दुआ़ पढ़िये :

بِسْمِ اللّٰهِ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ ط اَللّٰهُمَّ
افْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ ط

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर सलाम हो, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे लिये अपनी **रह़मत** के दरवाजे़ खोल दे।

ए'तिकाफ़ की निय्यत कर लीजिये : जब भी किसी मस्जिद में दाखि़ल हों और ए'तिकाफ़ की निय्यत करें तो सवाब मिलता है, मस्जिदुल ह़राम में भी निय्यत कर लीजिये, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ यहां **एक नेकी लाख नेकी के बराबर है,** लिहाज़ा एक लाख ए'तिकाफ़ का सवाब पाएंगे जब तक मस्जिद के अन्दर रहेंगे ए'तिकाफ़ का सवाब मिलेगा और ज़िम्नन खाना, ज़मज़म शरीफ़ पीना और सोना वगै़रा भी जाइज़ हो जाएगा वरना मस्जिद में येह चीजे़ं शरअ़न **ना जाइज़** हैं।

نَوَیْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِکَافِ ط **तरजमा :** मैं ने सुन्नते ए'तिकाफ़ की निय्यत की।

का'बए मुशर्रफ़ा पर पहली नज़र : जूं ही **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** पर पहली नज़र पड़े तीन बार لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ ط कहिये और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर दुआ़ मांगिये कि **का'बतुल्लाह** शरीफ़ पर पहली नज़र जब पड़ती है उस वक़्त मांगी हुई दुआ़ ज़रूर क़बूल होती है। आप चाहें तो येह दुआ़ मांग लीजिये कि "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! मैं जब भी कोई जाइज़ दुआ़ मांगा करूं और उस में बेहतरी हो**

तो वोह क़बूल हुवा करे ।" ह़ज़रते अ़ल्लामा शामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی ने फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के ह़वाले से लिखा है : **का'बतुल्लाह** पर पहली नज़र पड़ते वक़्त जन्नत में बे ह़िसाब दाख़िले की दुआ़ मांगी जाए और दुरूद शरीफ़ पढ़ा जाए । **(رَدُّالْمُحتار ج۳ص ۵۷۵)**

नूरी चादर तनी है का'बे पर
बारिश अल्लाह के करम की है

(वसाइले बख़्शिश, स. 124)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सब से अफ़्ज़ल दुआ़ : अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللهُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की रिज़ा के त़लब गार **मोह़तरम आ़शिक़ाने रसूल !** अगर त़वाफ़ व सअ़्य वग़ैरा में हर जगह किसी और दुआ़ के बजाए दुरूद शरीफ़ ही पढ़ते रहें तो येह सब से अफ़्ज़ल है और اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दुरूदो सलाम की ब-र-कत से बिगड़े काम संवर जाएंगे, वोह इख़्तियार करो जो **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सच्चे वा'दे से तमाम दुआ़ओं से बेहतर व अफ़्ज़ल है या'नी यहां और तमाम मवाक़ेअ़ में अपने लिये दुआ़ के बदले अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजो, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ऐसा करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे सब काम बना देगा और तेरे गुनाह **मुआ़फ़** फ़रमा देगा । (**ترمذی ج ٤ ص ٢٠٧ حدیث ٢٤٦٥**, फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 740)

त़वाफ़ में दुआ़ के लिये रुकना मन्अ़ है : मोह़तरम ह़ाजियो ! चाहें तो सिर्फ़ दुरूदो सलाम पर ही इक्तिफ़ा कीजिये कि येह आसान भी है और अफ़्ज़ल भी । ताहम शाइक़ीने दुआ़ के लिये दुआ़एं भी दाख़िले तरकीब कर दी हैं लेकिन याद रहे कि दुरूदो सलाम पढ़ें या दुआ़एं सब आहिस्ता आवाज़ में पढ़ना है, चिल्ला कर नहीं जैसा कि बा'ज़ मुत़व्विफ़ (या'नी त़वाफ़ करने वाले) पढ़ाते हैं नीज़ चलते चलते पढ़ना है, पढ़ने के लिये दौराने त़वाफ़ कहीं भी रुकना नहीं है ।

उ़म्रे का त़रीक़ा

त़वाफ़ का त़रीक़ा : त़वाफ़ शुरूअ़ करने से क़ब्ल मर्द **इज़्तिबाअ़** कर लें या'नी चादर सीधे हाथ की बग़ल के नीचे से निकाल कर उस के दोनों पल्ले उलटे कन्धे पर इस त़रह़ डाल लें कि सीधा कन्धा खुला रहे । अब परवाना वार **शम्ए़ का'बा** के गिर्द त़वाफ़ के लिये तय्यार हो जाइये ।

इज़्तिबाई ह़ालत में का'बा शरीफ़ की त़रफ़ मुंह किये **ह़-जरे अस्वद** की बाईं (left) त़रफ़ रुक्ने यमानी की जानिब **ह़-जरे अस्वद** के क़रीब इस त़रह़ खड़े हो जाइये कि पूरा **"ह़-जरे अस्वद"** आप के सीधे हाथ की त़रफ़ रहे । अब बिग़ैर हाथ उठाए

इस त़रह़ **त़वाफ़ की निय्यत**[1] कीजिये :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْۤ اُرِیْدُ طَوَافَ بَیْتِكَ الْحَرَامِ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तेरे **मोह़तरम घर** का त़वाफ़ करने का इरादा करता हूं,

فَیَسِّرْہُ لِیْ وَتَقَبَّلْہُ مِنِّیْ ط

तू इसे मेरे लिये आसान फ़रमा दे और मेरी जानिब से इसे क़बूल फ़रमा।

निय्यत कर लेने के बा'द **का'बा शरीफ़** ही की त़रफ़ मुंह किये सीधे हाथ की जानिब इतना चलिये कि ह़-जरे अस्वद आप के ऐ़न सामने हो जाए। (और येह मा'मूली सा सरक्ने से हो जाएगा, आप ह़-जरे अस्वद की ऐ़न सीध में आ चुके इस की अ़लामत येह है कि दूर सुतून में जो सब्ज़ लाइट लगी है वोह आप की पीठ के बिल्कुल पीछे हो जाएगी)

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ! **येह जन्नत का वोह ख़ुश नसीब पथ्थर** है जिसे हमारे प्यारे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यक़ीनन चूमा है। अब दोनों हाथ कानों तक इस त़रह़ उठाइये कि हथेलियां ह़-जरे अस्वद की त़रफ़ रहें और पढ़िये :

1 : नमाज़, रोज़ा, ए'तिकाफ़, त़वाफ़ वग़ैरा हर जगह येह मस्अला ज़ेह्न में रखिये कि अ़-रबी ज़बान में निय्यत उसी वक़्त कारआमद होती है जब कि उस के मा'ना मा'लूम हों वरना निय्यत उर्दू में बल्कि अपनी मा-दरी ज़बान में भी हो सकती है और हर सूरत में दिल में **निय्यत होना शर्त़** है, ज़बान से न भी कहें तब भी चल जाएगा कि दिल ही में निय्यत होना काफ़ी है हां ज़बान से कह लेना **अफ़्ज़ल** है।

بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَالصَّلٰوةُ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से और तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है

وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ ط

और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम हों।

अब अगर मुम्किन हो तो **ह़-जरे अस्वद** शरीफ़ पर दोनों हथेलियां और उन के बीच में मुंह रख कर यूं बोसा दीजिये कि आवाज़ पैदा न हो, तीन बार ऐसा ही कीजिये। سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! झूम जाइये कि आप के लब उस मुबारक जगह लग रहे हैं जहां यक़ीनन मदीने वाले आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के **लबहाए मुबा-रका** लगे हैं। मचल जाइये...... तड़प उठिये...... और हो सके तो आंसूओं को बहने दीजिये। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि हमारे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **ह़-जरे अस्वद** पर लबहाए मुबा-रका रख कर रोते रहे फिर **इल्तिफ़ात** फ़रमाया (या'नी तवज्जोह फ़रमाई) तो क्या देखते हैं कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ भी रो रहे हैं। इर्शाद फ़रमाया : ऐ उ़मर (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) ! येह रोने और आंसू बहाने का ही मक़ाम है। **(ابن ماجه ج٣ ص٤٣٤ حديث٢٩٤٥)**

रोने वाली आंखें मांगो रोना सब का काम नहीं
ज़िक्रे मह़ब्बत आ़म है लेकिन सोज़े मह़ब्बत आ़म नहीं

इस बात का ख़याल रखिये कि लोगों को आप के धक्के न लगें कि येह कुव्वत के मुज़ा-हरे की नहीं, आ़जिज़ी और मिस्कीनी के इज़्हार की जगह है। हुजूम के सबब अगर बोसा मुयस्सर न आ सके तो न औरों को ईज़ा दें न खुद दबें कुचलें बल्कि हाथ या लकड़ी से ह़-जरे अस्वद को छू कर उसे चूम लीजिये, येह भी न बन पड़े तो हाथों का इशारा कर के अपने हाथों को चूम लीजिये, येही क्या कम है कि मक्की म-दनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक मुंह रखने की जगह पर आप की निगाहें पड़ रही हैं।

ह़-जरे अस्वद को बोसा देने या लकड़ी या हाथ से छू कर चूमने या हाथों का इशारा कर के उन्हें चूम लेने को "**इस्तिलाम**" कहते हैं।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : रोज़े क़ियामत येह पथ्थर उठाया जाएगा, इस की आंखें होंगी जिन से देखेगा, ज़बान होगी जिस से कलाम करेगा, जिस ने ह़क़ के साथ इस का इस्तिलाम किया उस के लिये गवाही देगा। **(ترمذی ج۲ص۲۸۶حدیث۹۶۳)**

अब **اَللّٰھُمَّ اِیْمَانًا بِکَ وَاتِّبَاعًا لِّسُنَّۃِ نَبِیِّکَ مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ ط** **तरजमा :** इलाही तुझ पर ईमान ला कर और तेरे नबी मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की सुन्नत की पैरवी करने को येह त़वाफ़ करता हूं। कहते हुए **का'बा शरीफ़** की त़रफ़ ही

चेहरा किये सीधे हाथ की त़रफ़ थोड़ा सा सरकिये जब **ह़-जरे अस्वद** आप के चेहरे के सामने न रहे (और येह अदना सी ह़-र-कत में हो जाएगा) तो फ़ौरन इस त़रह़ सीधे हो जाइये कि **ख़ानए का'बा** आप के उलटे हाथ की त़रफ़ रहे, इस त़रह़ चलिये कि किसी को आप का धक्का न लगे। मर्द इब्तिदाई तीन[3] फेरों में **रमल** करते चलें या'नी जल्द जल्द छोटे क़दम रखते, शाने (या'नी कन्धे) हिलाते चलें जैसे क़वी व बहादुर लोग चलते हैं। बा'ज़ लोग कूदते और दौड़ते हुए जाते हैं, येह **सुन्नत** नहीं है। जहां जहां भीड़ ज़ियादा हो और रमल में ख़ुद को या दूसरों को तक्लीफ़ होती हो उतनी देर रमल तर्क कर दीजिये मगर **रमल** की ख़ात़िर रुकिये नहीं, त़वाफ़ में मश्ग़ूल रहिये। फिर जूं ही मौक़अ़ मिले, उतनी देर तक के लिये **रमल** के साथ त़वाफ़ कीजिये।

त़वाफ़ में जिस क़दर **ख़ानए का'बा** से क़रीब रहें येह बेहतर है मगर इतने ज़ियादा क़रीब भी न हो जाएं कि कपड़ा या जिस्म पुश्तए दीवार[1] से लगे और अगर नज़्दीकी में हुजूम के सबब **रमल** न हो सके तो अब दूरी बेहतर है। इस्लामी बहनों के लिये त़वाफ़ में ख़ानए का'बा से दूरी अफ़्ज़ल है। पहले चक्कर में चलते चलते दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआ़ पढ़िये :

मदीना
1 : मिट्टी (या सिमेन्ट) का ढेर जो मकान की बाहरी दीवार की मज़्बूत़ी के लिये उस की जड़ में लगाते हैं उसे "पुश्तए दीवार" कहते हैं।

पहले चक्कर की दुआ

سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ

अल्लाह तआ़ला पाक है और सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के लिये हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

اَكْبَرُ ؕ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ

सब से बड़ा है और गुनाहों से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की तौफ़ीक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है जो सब से बुलन्द

الْعَظِيْمِ ؕ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ

और अ़-ज़मत वाला है और रह़मते कामिला और सलाम नाज़िल हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ؕ اَللّٰهُمَّ

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ पर । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !

اِيْمَانًا بِكَ وَتَصْدِيْقًا بِكِتَابِكَ وَوَفَآءً

तुझ पर ईमान लाते हुए और तेरी किताब की तस्दीक़ करते हुए और तुझ से किये हुए अ़ह्द

بِعَهْدِكَ وَاتِّبَاعًا لِّسُنَّةِ نَبِيِّكَ وَحَبِيْبِكَ

को पूरा करते हुए और तेरे नबी और तेरे ह़बीब मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ की

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ ط

सुन्नत की पैरवी करते हुए (मैं त़वाफ़ शुरूअ़ कर चुका हूं) ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !

اِنِّیْٓ اَسْئَلُکَ الْعَفْوَ وَالْعَافِیَۃَ وَالْمُعَافَاۃَ الدَّآئِمَۃَ

मैं तुझ से (गुनाहों से) मुआ़फ़ी का और (बलाओं से) आ़फ़िय्यत का और दाइमी ह़िफ़ाज़त का,

فِی الدِّیْنِ وَالدُّنْیَا وَالْاٰخِرَۃِ وَالْفَوْزَ

दीनो दुन्या और आख़िरत में और ह़ुसूले जन्नत में काम्याबी

بِالْجَنَّۃِ وَالنَّجَاۃَ مِنَ النَّارِ ط (दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

और जहन्नम से नजात पाने का सुवाल करता हूं।

रुक्ने यमानी पहुंचने तक येह दुआ़ पूरी कर लीजिये, अब अगर भीड़ की वजह से अपनी या दूसरों की ईज़ा का अन्देशा न हो तो रुक्ने यमानी को दोनों हाथों से या सीधे हाथ से तबर्रुकन छूएं, सिर्फ़ बाएं (उलटे) हाथ से न छूएं। मौक़अ़ मिले तो **रुक्ने यमानी** को बोसा भी दीजिये, अगर चूमने या छूने का मौक़अ़ न मिले तो यहां हाथों से इशारा कर के चूमना नहीं। (**रुक्ने यमानी** पर आज कल लोग काफ़ी ख़ुश्बू लगा देते हैं लिहाज़ा एह़राम वाले छूने और चूमने में एह़तियात़ फ़रमाएं)

अब आप का'बए मुशर्रफ़ा के तीन[3] कोनों का त़वाफ़ पूरा कर के चौथे[4] कोने **रुक्ने अस्वद** की त़रफ़ बढ़ रहे हैं, **रुक्ने यमानी** और रुक्ने अस्वद की दरमियानी दीवार को "**मुस्तजाब**" कहते हैं, **यहां दुआ़**

पर आमीन कहने के लिये सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते मुक़र्रर हैं। आप जो चाहें अपनी ज़बान में अपने लिये और तमाम मुसल्मानों के लिये दुआ़ मांगिये या सब की निय्यत से और मुझ गुनहगार **सगे मदीना** عُفِیَ عَنْہُ की भी निय्यत शामिल कर के एक मर्तबा **दुरूद शरीफ़** पढ़ लीजिये, नीज़ येह क़ुरआनी दुआ़ भी पढ़ लीजिये :

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे

وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾

और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

ऐ लीजिये ! आप **ह़-जरे अस्वद** के क़रीब आ पहुंचे, यहां आप का एक चक्कर पूरा हुवा। लोग यहां एक दूसरे की देखा देखी दूर ही दूर से हाथ लहराते हुए गुज़र रहे होते हैं ऐसा करना हरगिज़ सुन्नत नहीं, आप ह़स्बे साबिक़ या'नी पहले की त़रह़ रू ब क़िब्ला **ह़-जरे अस्वद** की त़रफ़ मुंह कर लीजिये। अब निय्यत करने की ज़रूरत नहीं कि वोह तो इब्तिदाअन हो चुकी, अब **दूसरा² चक्कर** शुरूअ़ करने के लिये पहले ही की त़रह़ दोनों² हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ़ :

بِسْمِ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ ط

पढ़ कर इस्तिलाम कीजिये। या'नी मौक़अ़ हो तो ह़-जरे अस्वद को बोसा दीजिये वरना उसी त़रह़ हाथ से इशारा कर के उसे चूम लीजिये।

पहले ही की त़रह़ का'बा शरीफ़ की त़रफ़ मुंह कर के थोड़ा सा सीधे हाथ की जानिब सरकिये । जब ह़-जरे अस्वद सामने न रहे तो फ़ौरन उसी त़रह़ **का'बए मुशर्रफ़ा** को बाएं (left) हाथ की त़रफ़ लिये त़वाफ़ में मश्ग़ूल हो जाइये और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआ़ पढ़िये :

दूसरे चक्कर की दुआ़

اَللّٰھُمَّ اِنَّ ھٰذَا الْبَیْتَ بَیْتُکَ وَالْحَرَمَ حَرَمُکَ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! बेशक येह घर तेरा घर है और येह ह़रम तेरा ह़रम है

وَالْاَمْنَ اَمْنُکَ وَالْعَبْدَ عَبْدُکَ وَاَنَا عَبْدُکَ

और (यहां का) अम्नो अमान तेरा ही दिया हुवा है और हर बन्दा तेरा ही बन्दा है और मैं भी तेरा ही बन्दा हूं

وَابْنُ عَبْدِکَ وَھٰذَا مَقَامُ الْعَآئِذِ بِکَ مِنَ

और तेरे ही बन्दे का बेटा हूं और येह मक़ाम जहन्नम से तेरी पनाह मांगने वाले का है,

النَّارِ ط فَحَرِّمْ لُحُوْمَنَا وَبَشَرَتَنَا عَلَی النَّارِ ط

तो हमारे गोश्त और जिस्म को दोज़ख़ पर ह़राम फ़रमा दे,

اَللّٰھُمَّ حَبِّبْ اِلَیْنَا الْاِیْمَانَ وَزَیِّنْہُ فِیْ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे लिये ईमान को मह़बूब बना दे

قُلُوۡبِنَا وَكَرِّهۡ اِلَيۡنَا الۡكُفۡرَ وَالۡفُسُوۡقَ

और हमारे दिलों में इस की चाह पैदा कर दे और हमारे लिये कुफ़्र और बदकारी

وَالۡعِصۡيَانَ وَاجۡعَلۡنَا مِنَ الرَّاشِدِيۡنَ ط اَللّٰهُمَّ

और ना फ़रमानी को ना पसन्द बना दे और हमें हिदायत पाने वालों में शामिल कर ले, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

قِنِيۡ عَذَابَكَ يَوۡمَ تَبۡعَثُ عِبَادَكَ ط اَللّٰهُمَّ

जिस दिन तू अपने बन्दों को दोबारा ज़िन्दा कर के उठाए मुझे अपने अ़ज़ाब से बचा, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !

اُرۡزُقۡنِيۡ الۡجَنَّةَ بِغَيۡرِ حِسَابٍ ط (दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

मुझे बे ह़िसाब जन्नत अ़त़ा फ़रमा ।

रुक्ने यमानी पर **पहुंचने** से **पहले पहले** येह दुआ़ ख़त्म कर दीजिये । अब मौक़अ़ मिले तो पहले की त़रह़ बोसा ले कर या फिर उसी त़रह़ छू कर "**ह़-जरे अस्वद**" की त़रफ़ बढ़िये, दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआ़ए कु़रआनी पढ़िये :

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنۡيَا حَسَنَةً وَّفِي الۡاٰخِرَةِ حَسَنَةً

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे

وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾

और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा ।

ऐ लीजिये ! आप फिर ह़-जरे अस्वद के क़रीब आ पहुंचे। अब आप का "दूसरा[2] चक्कर" भी पूरा हो गया, फिर ह़स्बे साबिक़ दोनों[2] हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ़ :

بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰه ط

पढ़ कर ह़-जरे अस्वद का इस्तिलाम कीजिये और पहले ही की त़रह़ **तीसरा[3] चक्कर** शुरूअ़ कीजिये और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआ़ पढ़िये :

तीसरे चक्कर की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْۤ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الشَّكِّ وَالشِّرْكِ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं शक और शिर्क

وَالنِّفَاقِ وَالشِّقَاقِ وَسُوْٓءِ الْاَخْلَاقِ وَسُوْٓءِ

और निफ़ाक़ और ह़क़ की मुख़ा-लफ़त से और बुरे अख़्लाक़ और बुरे

الْمَنْظَرِ وَالْمُنْقَلَبِ فِي الْمَالِ وَالْاَهْلِ وَالْوَلَدِ ط

ह़ाल से और अहलो इ़याल और माल में बुरे अन्जाम से तेरी पनाह चाहता हूं।

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْۤ اَسْئَلُكَ رِضَاكَ وَالْجَنَّةَ وَ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से तेरी रिज़ा और जन्नत मांगता हूं और

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡۤ اَعُوۡذُبِکَ مِنۡ سَخَطِکَ وَالنَّارِ ؕ

तेरे ग़ज़ब और जहन्नम से पनाह चाहता हूं, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !

اَعُوۡذُبِکَ مِنۡ فِتۡنَۃِ الۡقَبۡرِ وَاَعُوۡذُبِکَ مِنۡ

मैं क़ब्र की आज़्माइश और ज़िन्दगी और

فِتۡنَۃِ الۡمَحۡیَا وَالۡمَمَاتِ ؕ (दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

मौत के फ़ितने से तेरी पनाह मांगता हूं ।

रुक्ने यमानी पर पहुंचने से पहले येह दुआ ख़त्म कर दीजिये और पहले की त़रह़ अ़मल करते हुए **ह़-जरे अस्वद** की त़रफ़ बढ़ते हुए दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआए क़ुरआनी पढ़िये :

رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِی الدُّنۡیَا حَسَنَۃً وَّ فِی الۡاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे

وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾

और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा ।

ऐ लीजिये ! आप फिर ह़-जरे अस्वद के क़रीब आ पहुंचे, आप का ''तीसरा चक्कर'' भी मुकम्मल हो गया, फिर पहले की त़रह़ दोनों[2] हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ :

بِسۡمِ اللّٰہِ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰہِ وَاللّٰہُ اَکۡبَرُ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوۡلِ اللّٰہِ ؕ

पढ़ कर ह़-जरे अस्वद का इस्तिलाम कीजिये और पहले ही की त़रह़ **चौथा[4] चक्कर** शुरूअ़ कीजिये, अब रमल न कीजिये कि रमल सिर्फ़ तीन[3] इब्तिदाई फेरों में करना था। अब आप को ह़स्बे मा'मूल दरमियाना चाल के साथ बक़िय्या फेरे मुकम्मल करने हैं। दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआ़ पढ़िये :

चौथे चक्कर की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ حَجًّا مَّبْرُوْرًا وَّسَعْيًا مَّشْكُوْرًا

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे इस ह़ज को ह़ज्जे मबरूर और मेरी कोशिश को काम्याब

وَّذَنْبًا مَّغْفُوْرًا وَّعَمَلًا صَالِحًا مَّقْبُوْلًا وَّ

और गुनाहों की मग़्फ़िरत का ज़रीआ़ और मक़्बूल नेक अ़मल और

تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ط يَا عَالِمَ مَا فِي الصُّدُوْرِ

बे नुक़्सान तिजारत बना दे। ऐ सीनों के ह़ाल जानने वाले !

اَخْرِجْنِيْ يَا اَللّٰهُ مِنَ الظُّلُمَاتِ اِلَى النُّوْرِ ط

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे (गुनाह की) तारीकियों से (अ़-मले सालेह़ की) रोशनी की त़रफ़ निकाल दे।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْۤ اَسْئَلُكَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से तेरी रह़मत (के ह़ासिल होने) के ज़रीओं

وَعَزَآئِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ

और तेरी मग़्फ़िरत के अस्बाब का और तमाम

اِثْمٍ وَّالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَّالْفَوْزَ

गुनाहों से बचते रहने और हर नेकी की तौफ़ीक़ का और

بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ ط اَللّٰھُمَّ قَنِّعْنِیْ

जन्नत में जाने और **जहन्नम** से नजात पाने का सुवाल करता हूं। और ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपने दिये

بِمَا رَزَقْتَنِیْ وَبَارِكْ لِیْ فِیْهِ وَاخْلُفْ عَلٰی

हुए रिज़्क़ में क़नाअ़त अ़त़ा फ़रमा और इस में मेरे लिये ब-र-कत भी दे और

كُلِّ غَآئِبَةٍ لِّیْ بِخَیْرٍ ط (दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

हर नुक़्सान का अपने करम से मुझे ने'मल बदल अ़त़ा फ़रमा।

रुक्ने यमानी तक येह दुआ़ ख़त्म कर के फिर पहले की त़रह़ अ़मल करते हुए **ह़-जरे अस्वद** की त़रफ़ बढ़िये और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह क़ुरआनी दुआ़ पढ़िये :

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे

وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿٢٠١﴾

और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

ऐ लीजिये ! आप फिर **ह़-जरे अस्वद** पर आ पहुंचे। ह़स्बे साबिक़ दोनों हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ़ :

بِسْمِ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَاللهُ اَكْبَرُ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ

पढ़ कर **इस्तिलाम** कीजिये और **पांचवां[5] चक्कर** शुरूअ़ कीजिये और **दुरूद शरीफ़** पढ़ कर येह दुआ़ पढ़िये :

पांचवें चक्कर की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اَظِلَّنِىْ تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِكَ يَوْمَ لَا

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे उस दिन अपने अ़र्श के साए में जगह दे जिस दिन

ظِلَّ اِلَّا ظِلُّ عَرْشِكَ وَلَا بَاقِىَ اِلَّا وَجْهُكَ

तेरे अ़र्श के साए के सिवा कोई साया न होगा और तेरी ज़ाते पाक के सिवा कोई बाक़ी न रहेगा

وَاسْقِنِىْ مِنْ حَوْضِ نَبِيِّكَ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ

और मुझे अपने नबी **मुह़म्मद मुस्त़फ़ा**

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ شَرْبَةً

से (कौसर) हौज़ के صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

هَنِيْٓئَةً مَّرِيْٓئَةً لَّا نَظْمَأُ بَعْدَهَا اَبَدًا ط اَللّٰهُمَّ

ऐसा ख़ुश गवार और ख़ुश ज़ाएक़ा घूंट पिला कि इस के बा'द कभी मुझे प्यास न लगे, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !

اِنِّيْٓ اَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَئَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ

मैं तुझ से उन चीज़ों की भलाई मांगता हूं जिन्हें तेरे नबी

سَيِّدُنَا مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ

सय्यिदुना **मुह़म्मद** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तुझ से त़लब किया

وَسَلَّمَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَكَ

और उन चीज़ों की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूं जिन से

مِنْهُ نَبِيُّكَ سَيِّدُنَا مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ

तेरे नबी सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पनाह मांगी ।

وَسَلَّمَ ط اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وَنَعِيْمَهَا

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से जन्नत और इस की ने'मतों का

وَمَا يُقَرِّبُنِيۡۤ اِلَيۡهَا مِنۡ قَوۡلٍ اَوۡ فِعۡلٍ اَوۡ عَمَلٍ ط

और हर उस क़ौल या फ़े'ल या अ़मल (की तौफ़ीक़) का सुवाल करता हूं जो मुझे जन्नत से क़रीब कर दे

وَاَعُوۡذُ بِكَ مِنَ النَّارِ وَمَا يُقَرِّبُنِيۡۤ اِلَيۡهَا مِنۡ

और मैं दोज़ख़ और हर उस क़ौल या फ़े'ल या अ़मल से तेरी पनाह चाहता हूं जो मुझे जहन्नम से क़रीब

قَوۡلٍ اَوۡ فِعۡلٍ اَوۡ عَمَلٍ ط (दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

कर दे

रुक्ने यमानी तक येह दुआ ख़त्म कर के पहले की त़रह़ ह़-जरे अस्वद की त़रफ़ बढ़िये और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह क़ुरआनी दुआ पढ़िये :

رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِى الدُّنۡيَا حَسَنَةً وَّفِى الۡاٰخِرَةِ حَسَنَةً

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे

وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾

और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

फिर **ह़-जरे अस्वद** पर आ कर दोनों हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ :

بِسۡمِ اللهِ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰهِ وَاللهُ اَكۡبَرُ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوۡلِ اللهِ ط

पढ़ कर इस्तिलाम कीजिये और अब **छटा[6] चक्कर** शुरूअ़ कीजिये और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआ पढ़िये :

छटे चक्कर की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنَّ لَكَ عَلَيَّ حُقُوْقًا كَثِيْرَةً فِيْمَا

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! बेशक मुझ पर तेरे बहुत से हुक़ूक़ हैं उन मुआ़–मलात में

بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ وَحُقُوْقًا كَثِيْرَةً فِيْمَا بَيْنِيْ

जो मेरे और तेरे दरमियान हैं और बहुत से हुक़ूक़ हैं उन मुआ़–मलात में जो मेरे और तेरी

وَبَيْنَ خَلْقِكَ اَللّٰهُمَّ مَا كَانَ لَكَ مِنْهَا

मख़्लूक़ के दरमियान हैं। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन में से जिन का तअ़ल्लुक़ तुझ से हो उन की (कोताही की)

فَاغْفِرْهُ لِيْ وَمَا كَانَ لِخَلْقِكَ فَتَحَمَّلْهُ عَنِّيْ

मुझे मुआ़फ़ी दे और जिन का तअ़ल्लुक़ तेरी मख़्लूक़ से (भी) हो उन की मुआ़फ़ी अपने ज़िम्मए करम पर ले ले।

وَاَغْنِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَبِطَاعَتِكَ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे (रिज़्क़े) ह़लाल अ़त़ा फ़रमा कर ह़राम से बे परवाह कर दे और अपनी इत़ाअ़त की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा कर

عَنْ مَّعْصِيَتِكَ وَبِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ يَا

ना फ़रमानी से और अपने फ़ज़्ल से नवाज़ कर अपने इ़लावा दूसरों से मुस्तग़्नी (या'नी बे परवा) कर दे,

وَاسِعَ الْمَغْفِرَةِ ط اَللّٰهُمَّ اِنَّ بَيْتَكَ عَظِيْمٌ وَّ وَجْهَكَ

ऐ वसीअ़ मग़्फ़िरत वाले ! ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! बेशक तेरा घर बड़ी अ़-ज़मत वाला है और तेरी ज़ात

كَرِيْمٌ وَّ اَنْتَ يَا اَللّٰهُ حَلِيْمٌ كَرِيْمٌ عَظِيْمٌ

करीम है और ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू ह़िल्म वाला, करम वाला, अ़-ज़मत वाला है

تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّيْ ط (दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

और तू मुआ़फ़ी को पसन्द करता है सो मेरी ख़त़ाओं को बख़्श दे ।

रुक्ने यमानी तक येह दुआ़ ख़त्म कर के फिर पहले की त़रह़ अ़मल करते हुए **ह़-जरे अस्वद** की त़रफ़ बढ़िये और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह क़ुरआनी दुआ़ पढ़िये :

رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे

وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾

और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा ।

फिर पहले की त़रह़ दोनों हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ़ :

بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ ط

पढ़ कर ह़-जरे अस्वद का इस्तिलाम कीजिये और **सातवां[7] और आख़िरी**

चक्कर शुरूअ़ कीजिये और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआ़ पढ़िये :

सातवें चक्कर की दुआ़

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْۤ اَسْئَلُكَ اِیْمَانًا كَامِلًا وَّیَقِیْنًا

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से तेरी रह़मत के वसीले से कामिल ईमान और सच्चा यक़ीन

صَادِقًا وَّ رِزْقًا وَّاسِعًا وَّ قَلْبًا خَاشِعًا وَّ

और कुशादा रिज़्क़ और आ़जिज़ी करने वाला दिल और

لِسَانًا ذَاكِرًا وَّ رِزْقًا حَلَالًا طَیِّبًا وَّ تَوْبَةً

ज़िक्र करने वाली ज़बान और ह़लाल और पाक रोज़ी और सच्ची तौबा

نَّصُوْحًا وَّ تَوْبَةً قَبْلَ الْمَوْتِ وَ رَاحَةً عِنْدَ الْمَوْتِ

और मौत से पहले की तौबा और मौत के वक़्त राह़त

وَمَغْفِرَةً وَّ رَحْمَةً بَعْدَ الْمَوْتِ وَالْعَفْوَ عِنْدَ

और मरने के बा'द मग़्फ़िरत और रह़मत और ह़िसाब के वक़्त मुआ़फ़ी

الْحِسَابِ وَالْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ

और जन्नत का हुसूल और जहन्नम से नजात मांगता हूं,

بِرَحْمَتِكَ يَا عَزِيْزُ يَا غَفَّارُ ط رَبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا

ऐ इ़ज़्ज़त वाले ! ऐ बहुत बख़्शने वाले ! ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मेरे इ़ल्म में इज़ाफ़ा फ़रमा

وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ط (दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

और मुझे नेकों में शामिल फ़रमा।

रुक्ने यमानी पर आ कर येह दुआ़ ख़त्म कर के पहले की त़रह़ अ़मल करते हुए दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह क़ुरआनी दुआ़ पढ़िये :

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे

وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿٢٠١﴾

और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

ह़-जरे अस्वद पर पहुंच कर आप के सात फेरे मुकम्मल हो गए मगर फिर आठवीं बार पहले की त़रह़ दोनों हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ़ :

بِسْمِ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَاللهُ اَكْبَرُ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللهِ ط

पढ़ कर **इस्तिलाम** कीजिये और **येह हमेशा याद रखिये कि जब भी त़वाफ़ करें उस में फेरे सात होते हैं और इस्तिलाम आठ ।**

मक़ामे इब्राहीम

अब सीधा कन्धा ढांप लीजिये और "मक़ामे इब्राहीम" पर आ कर पारह 1 **सू-रतुल ब-क़रह** की येह आयते मुक़द्दसा पढ़िये :

وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ का मक़ाम बनाओ ।

नमाज़े त़वाफ़ : अब मक़ामे इब्राहीम के क़रीब जगह मिले तो बेहतर वरना **मस्जिदे ह़राम** में जहां भी जगह मिले अगर वक़्ते मकरूह न हो तो दो रक्अ़त **नमाज़े त़वाफ़** अदा कीजिये, पहली रक्अ़त में **सूरए फ़ातिह़ा** के बा'द **قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ** और दूसरी में **قُلْ هُوَ اللّٰهُ** शरीफ़ पढ़िये, येह नमाज़ **वाजिब** है और कोई मजबूरी न हो तो त़वाफ़ के बा'द फ़ौरन पढ़ना सुन्नत है । अक्सर लोग कन्धा खुला रख कर नमाज़ पढ़ते हैं येह **मकरूह** है । **इज़्तिबाअ़** या'नी कन्धा खुला रखना सिर्फ़ उस

त़वाफ़ के सातों फेरों में है जिस के बा'द सअ़्य होती है। अगर वक़्ते मकरूह दाख़िल हो गया हो तो बा'द में पढ़ लीजिये और याद रखिये इस नमाज़ का पढ़ना लाज़िमी है।

मक़ामे इब्राहीम पर दो रक्अ़त अदा कर के दुआ़ मांगिये, ह़दीसे पाक में है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **फ़रमाता है :** "जो येह दुआ़ करेगा मैं उस की ख़त़ा बख़्श दूंगा, ग़म दूर करूंगा, मोह़ताजी उस से निकाल लूंगा, हर ताजिर से बढ़ कर उस की तिजारत रखूंगा, दुन्या नाचार व मजबूर उस के पास आएगी अगर्चे वोह उसे न चाहे।" (ابنِ عساکر ج٧ ص٤٣١) वोह दुआ़ येह है :

मक़ामे इब्राहीम की दुआ़

اَللّٰھُمَّ اِنَّکَ تَعْلَمُ سِرِّیْ وَعَلَانِیَتِیْ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू मेरी सब छुपी और खुली बातें जानता है

فَاقْبَلْ مَعْذِرَتِیْ وَتَعْلَمُ حَاجَتِیْ فَاَعْطِنِیْ

लिहाज़ा मेरी मा'ज़िरत क़बूल फ़रमा और तू मेरी ह़ाजत को जानता है लिहाज़ा मेरी ख़्वाहिश को

سُؤْلِیْ وَتَعْلَمُ مَا فِیْ نَفْسِیْ فَاغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ ط

पूरा कर और तू मेरे दिल का ह़ाल जानता है लिहाज़ा मेरे गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ اِیْمَانًا یُّبَاشِرُ قَلْبِیْ وَیَقِیْنًا

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से मांगता हूं ऐसा ईमान जो मेरे दिल में समा जाए और ऐसा सच्चा यक़ीन

صَادِقًا حَتّٰی اَعْلَمَ اَنَّهٗ لَا یُصِیْبُنِیْٓ اِلَّا مَا كَتَبْتَ

कि मैं जान लूं कि जो कुछ तूने मेरी तक़्दीर में लिख दिया है वोही मुझे पहुंचेगा

لِیْ وَرِضًا بِمَا قَسَمْتَ لِیْ یَآ اَرْحَمَ الرّٰحِمِیْنَ ط

और तेरी त़रफ़ से अपनी क़िस्मत पर रिज़ा मन्दी, ऐ सब से बढ़ कर रह़्म फ़रमाने वाले ।

"*ख़लील*" के चार हुरूफ़ की निस्बत से मक़ामे इब्राहीम पर नमाज़ के चार म-दनी फूल

﴾1﴿ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जो मक़ामे इब्राहीम के पीछे दो रक्अ़तें पढ़े, उस के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे और क़ियामत के दिन अम्न वालों में मह़शूर होगा ।" (या'नी उठाया जाएगा) (الشفاء الجزء الثانی ص۹۳) ﴾2﴿ अक्सर लोग भीड़भाड़ में गिरते पड़ते भी ज़बर दस्ती "मक़ामे इब्राहीम" के पीछे ही नमाज़ पढ़ते हैं, बा'ज़ ह़ज़रात मस्तूरात को नमाज़ पढ़ाने के लिये हाथों का ह़ल्क़ा बना कर रास्ता घेर लेते हैं उन्हें इस त़रह़ करने के बजाए भीड़ के मौक़अ़ पर "नमाज़े त़वाफ़" मक़ामे इब्राहीम से दूर पढ़नी चाहिये कि त़वाफ़ करने वालों को भी तक्लीफ़ न हो और ख़ुद को भी धक्के न लगें ﴾3﴿ **मक़ामे इब्राहीम** के बा'द इस नमाज़ के लिये सब से

अफ़्ज़ल **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** के अन्दर पढ़ना है फिर **ह़त़ीम** में **मीज़ाबे रह़मत** के नीचे इस के बा'द **ह़त़ीम** में किसी और जगह फिर का'बए मुअ़ज़्ज़मा से क़रीब तर जगह में फिर मस्जिदुल ह़राम में किसी जगह फिर **ह़-रमे मक्का** के अन्दर जहां भी हो। (لُبابُ المَناسِك ص ١٠٦) 《4》 सुन्नत येह है कि वक़्ते कराहत न हो तो त़वाफ़ के बा'द फ़ौरन नमाज़ पढ़े, बीच में फ़ासिला न हो और अगर न पढ़ी तो उ़म्र भर में जब पढ़ेगा, अदा ही है क़ज़ा नहीं मगर बुरा किया कि सुन्नत फ़ौत हुई। (اَلْمَسْلَکُ الْمُتَقَسِّط ص ١٠٠)

अब मुल्तज़म पर आइये......! : नमाज़े त़वाफ़ व दुआ़ से फ़ारिग़ हो कर (**मुल्तज़म** की ह़ाज़िरी मुस्तह़ब है) **मुल्तज़म** से लिपट जाइये। दरवाज़ए का'बा और ह़-जरे अस्वद के दरमियानी ह़िस्से को **मुल्तज़म** कहते हैं, इस में दरवाज़ए का'बा शामिल नहीं। **मुल्तज़म** से कभी सीना लगाइये तो कभी पेट, इस पर कभी दायां रुख़्सार तो कभी बायां रुख़्सार और दोनों हाथ सर से ऊंचे कर के दीवारे मुक़द्दस पर फैलाइये या सीधा हाथ दरवाज़ए का'बा की त़रफ़ और उलटा हाथ **ह़-जरे अस्वद** की त़रफ़ फैलाइये। ख़ूब आंसू बहाइये और निहायत ही आ़जिज़ी के साथ **गिड़गिड़ा** कर अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से अपने लिये और तमाम उम्मत के लिये अपनी ज़बान में **दुआ़** मांगिये कि **मक़ामे क़बूल** है। यहां की एक दुआ़ येह है :

يَاوَاجِدُيَامَاجِدُلَاتُزِلْ عَنِّیْ نِعْمَةً اَنْعَمْتَهَا عَلَیَّ ط

ऐ क़ुदरत वाले ! ऐ बुज़ुर्ग ! तूने मुझे जो ने'मत दी, उस को मुझ से ज़ाइल न कर।

ह़दीस में फ़रमाया : "जब मैं चाहता हूं जिब्रील को देखता हूं कि मुल्तज़म से लिपटे हुए येह दुआ़ कर रहे हैं।" (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1104) और हो सके तो दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह **दुआ़** भी पढ़िये :

मक़ामे मुल्तज़म पर पढ़ने की दुआ़

اَللّٰهُمَّ يَارَبَّ الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ اَعْتِقْ رِقَابَنَا

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ऐ इस क़दीम घर के मालिक! हमारी गरदनों को और हमारे

وَرِقَابَ اٰبَآئِنَا وَاُمَّهَاتِنَا وَاِخْوَانِنَا وَاَوْلَادِنَا مِنَ

(मुसल्मान) बाप दादों और माओं (बहनों) और भाइयों और औलाद की गरदनों को

النَّارِ يَاذَا الْجُوْدِ وَالْكَرَمِ وَالْفَضْلِ وَالْمَنِّ وَالْعَطَآءِ

दोज़ख़ से आज़ाद कर दे, ऐ बख़्शिश और करम और फ़ज़्ल और एह़सान

وَالْاِحْسَانِ ط اَللّٰهُمَّ اَحْسِنْ عَاقِبَتَنَا فِى الْاُمُوْرِ

और अ़ता वाले ! ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तमाम मुआ़-मलात में हमारा अन्जाम

كُلِّهَا وَاَجِرْنَا مِنْ خِزْيِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ

बख़ैर फ़रमा और हमें दुन्या की रुस्वाई और आख़िरत के अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रख।

الْاٰخِرَةِ ط اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ عَبْدُكَ وَابْنُ عَبْدِكَ وَاقِفٌ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरा बन्दा हूं और बन्दा ज़ादा हूं, तेरे (मुक़द्दस घर के) दरवाज़े के

تَحْتَ بَابِكَ مُلْتَزِمٌ بِاَعْتَابِكَ مُتَذَلِّلٌ

नीचे खड़ा हूं, तेरे दरवाज़े की चौखटों से लिपटा हूं, तेरे सामने आ़जिज़ी का इज़्हार कर रहा हूं

بَيْنَ يَدَيْكَ اَرْجُوْ رَحْمَتَكَ وَاَخْشٰى عَذَابَكَ

और तेरी रह़मत का त़लब गार हूं और तेरे दोज़ख़ के अ़ज़ाब से डर रहा हूं

مِنَ النَّارِ يَا قَدِيْمَ الْاِحْسَانِ ط اَللّٰھُمَّ اِنِّیْۤ اَسْئَلُكَ

ऐ हमेशा के मोह़सिन ! (अब भी एह़सान फ़रमा) ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से सुवाल करता हूं कि

اَنْ تَرْفَعَ ذِكْرِیْ وَتَضَعَ وِزْرِیْ وَتُصْلِحَ

मेरे ज़िक्र को बुलन्दी अ़त़ा फ़रमा और मेरे गुनाहों का बोझ हलका कर और मेरे कामों को

اَمْرِیْ وَتُطَهِّرَ قَلْبِیْ وَتُنَوِّرَ لِیْ فِیْ قَبْرِیْ

दुरुस्त फ़रमा और मेरे दिल को पाक कर और मेरे लिये क़ब्र में रोशनी फ़रमा

وَتَغْفِرَ لِیْ ذَنْبِیْ وَاَسْئَلُكَ الدَّرَجَاتِ الْعُلٰى

और मेरे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा और मैं तुझ से जन्नत के ऊंचे द–रजों की भीक मांगता

مِنَ الْجَنَّةِ ط اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم । हूं

एक अहम मस्अला : मुल्तज़म के पास नमाज़े त़वाफ़ के बा'द आना उस त़वाफ़ में है जिस के बा'द सअ्य है और जिस के बा'द सअ्य न हो म-सलन त़वाफ़े नफ़्ल या **त़वाफ़ुज़्ज़ियारह** (जब कि ह़ज की सअ्य से पहले फ़ारिग़ हो चुके हों) उस में नमाज़ से पहले **मुल्तज़म** से लिपटिये, फिर **मक़ामे इब्राहीम** के पास जा कर **दो रक्अ़त** नमाज़ अदा कीजिये । **(اَلْمَسْلَکُ الْمُتَقَسِّط ص۱۳۸)**

अब ज़मज़म पर आइये ! : अब बाबुल का'बा के सामने वाली सीध में दूर रखे हुए **आबे ज़मज़म शरीफ़** के कूलरों पर तशरीफ़ लाइये और (याद रहे ! मस्जिद में आबे ज़मज़म पीते वक़्त ए'तिकाफ़ की निय्यत होना ज़रूरी है) क़िब्ला रू खड़े खड़े तीन सांस में ख़ूब पेट भर कर पियें, **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : हमारे और मुनाफ़िक़ीन के दरमियान फ़र्क़ येह है कि वोह ज़मज़म पेट भर कर नहीं पीते । (ابن ماجہ ج۳ ص۴۸۹ حدیث ۳۰۶۱) हर बार **बिस्मिल्लाह** से शुरूअ़ कीजिये और पीने के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ कहिये हर बार **का'बए मुशर्रफ़ा** की त़रफ़ निगाह उठा

कर देख लीजिये, बाक़ी पानी जिस्म पर डालिये या मुंह, सर और बदन पर उस से **मस्ह़** कर लीजिये मगर येह एह़तियात़ रखिये कि कोई क़त़रा ज़मीन पर न गिरे। पीते वक़्त दुआ़ कीजिये कि क़बूल है।

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : 《1》 येह (आबे ज़मज़म) बा ब-र-कत है और भूके के लिये खाना है और मरीज़ के लिये शिफ़ा है। (ابوداود طیالسی ص ٦١ حدیث ٤٥٧) 《2》 ज़मज़म जिस मुराद से पिया जाए उसी के लिये है।

(اِبنِ ماجه ج ٣ ص ٤٩٠ حدیث ٣٠٦٢)

येह ज़ज़म उस लिये है जिस लिये इस को पिये कोई
इसी ज़मज़म में जन्नत है, इसी ज़मज़म में कौसर है

(ज़ौक़े ना'त)

आबे ज़मज़म पी कर येह दुआ़ पढ़िये

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْۤ اَسْئَلُكَ عِلْمًا نَّافِعًا وَّ رِزْقًا وَّاسِعًا

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से इ़ल्मे नाफ़ेअ़ और कुशादा रिज़्क़

وَّشِفَآءً مِّنْ كُلِّ دَآءٍ ط

और हर बीमारी से सिह़्ह़त याबी का सुवाल करता हूं।

आबे ज़मज़म पीते वक़्त दुआ मांगने का त़रीक़ा :

शारेह़े मुस्लिम शरीफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम न-ववी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : पस उस शख़्स के लिये **मुस्तह़ब** है जो मग़्फ़िरत या मरज़ वग़ैरा से शिफ़ा के लिये आबे ज़मज़म पीना चाहता है कि क़िब्ला रू हो कर फिर بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط पढ़े फिर कहे : "ऐ **अल्लाह** मुझे येह ह़दीस पहुंची कि तेरे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "आबे ज़मज़म उस मक़्सद के लिये है कि जिस के लिये इसे पिया जाए।" (مسند امام احمد ج٥ ص١٣٦ حدیث١٨٥٥) (फिर यूं दुआएं मांगे म-सलन) ऐ **अल्लाह !** मैं इसे पीता हूं ताकि तू मुझे बख़्श दे या ऐ **अल्लाह !** मैं इसे पीता हूं इस के ज़रीए अपने मरज़ से शिफ़ा चाहते हुए, ऐ **अल्लाह !** पस तू मुझे शिफ़ा अ़ता फ़रमा दे" और मिस्ल इस के (या'नी ह़स्बे ज़रूरत इसी त़रह़ मुख़्तलिफ़ दुआएं करे)

(الایضاح فی مناسك الحج للنووی ص٤٠١)

ज़ियादा ठन्डा न पियें : बहुत ठन्डा पानी इस्ति'माल न फ़रमाएं कहीं आप की इ़बादत में रुकावट के अस्बाब न पैदा हो जाएं ! नफ़्स की ख़्वाहिश को दबाते हुए ऐसे कूलर से आबे ज़मज़म नोश फ़रमाएं जिस पर लिखा हो : زَمْزَمْ غَیْرُمُبَرَّد (या'नी ग़ैर ठन्डा ज़मज़म)।

नज़र तेज़ होती है : आबे ज़मज़म देखने से नज़र तेज़ होती और गुनाह दूर होते हैं, तीन[3] चुल्लू सर पर डालने से ज़िल्लतो रुस्वाई से ह़िफ़ाज़त होती है।

(البحر العمیق فی المناسک ج ٥ ص ٢٠٦٩-٢٠٧٣)

तू हर साल ह़ज पर बुला या इलाही

वहां आबे ज़मज़म पिला या इलाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

सफ़ा व मर्वह की सअ़्य[1] : अगर कोई मजबूरी या थकन वग़ैरा न हो तो अभी वरना आराम कर के **सफ़ा व मर्वह** की **सअ़्य** के लिये तय्यार हो जाइये, याद रहे कि **सअ़्य** में **इज़्तिबाअ़** या'नी कन्धा खुला रखना नहीं है। अब **सअ़्य** के लिये **ह़-जरे अस्वद** का पहले ही की त़रह़ दोनों[2] हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ़ :

بِسْمِ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ ط

पढ़ कर **इस्तिलाम** कीजिये। और न हो सके तो उस की त़रफ़ मुंह कर के اَللّٰہُ اَکْبَرُ وَلَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ और दुरूद पढ़ते हुए फ़ौरन **बाबुस्सफ़ा** पर आइये ! "**कोहे सफ़ा**" चूंकि

1 : तहख़ाने (BASEMENT) में सअ़्य कीजिये।

“**मस्जिदे ह़राम**” से बाहर वाक़ेअ़ है और हमेशा मस्जिद से बाहर निकलते वक़्त उलटा पाउं निकालना **सुन्नत** है, लिहाज़ा यहां भी पहले उलटा पाउं निकालिये और ह़स्बे मा'मूल दुरूद शरीफ़ पढ़ कर मस्जिद से बाहर आने की येह दुआ़ पढ़िये :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُکَ مِنْ فَضْلِکَ وَرَحْمَتِکَ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से तेरे फ़ज़्ल और तेरी रह़मत का सुवाल करता हूं।

अब **दुरूदो सलाम** पढ़ते हुए **सफ़ा** पर इतना चढ़िये कि **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** नज़र आ जाए और येह बात यहां मा'मूली सा चढ़ने पर ह़ासिल हो जाती है, अ़वामुन्नास की त़रह़ ज़ियादा ऊपर तक न चढ़िये अब येह दुआ़ पढिये :

اَبْدَءُ بِمَا بَدَأَ اللّٰہُ تَعَالٰی بِہٖ ﴿اِنَّ الصَّفَا وَ

मैं उस से शुरूअ़ करता हूं जिस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पहले ज़िक्र किया। **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक सफ़ा और

الْمَرْوَۃَ مِنْ شَعَآئِرِ اللّٰہِ ۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَیْتَ

मर्वह **अल्लाह** के निशानों से हैं तो जो इस घर का ह़ज

اَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَیْہِ اَنْ یَّطَّوَّفَ بِہِمَا ؕ

या उ़म्रह करे, इस पर कुछ गुनाह नहीं कि इन दोनों के फेरे करे

وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۵۸﴾

और जो कोई भली बात अपनी त़रफ़ से करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नेकी का सिला देने वाला ख़बरदार है। (پ۲،البقرۃ:۱۵۸)

सफ़ा पर अ़वाम के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ : काफ़ी लोग **का'बा शरीफ़** की त़रफ़ हथेलियां करते हैं, बा'ज़ हाथ लहरा रहे होते हैं तो बा'ज़ तीन[3] बार कानों तक हाथ उठा कर छोड़ देते हैं, आप ऐसा न करें बल्कि ह़स्बे मा'मूल दुआ़ की त़रह़ हाथ कन्धों तक उठा कर **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** की त़रफ़ मुंह किये उतनी देर तक दुआ़ मांगिये जितनी देर में **सू-रतुल ब-क़रह** की **25** आयतों की तिलावत की जाए, ख़ूब गिड़गिड़ा कर और हो सके तो रो रो कर दुआ़ मांगिये कि येह **क़बूलिय्यत का मक़ाम** है। अपने लिये और तमाम जिन्नो इन्स मुस्लिमीन की ख़ैर व भलाई के लिये और एह़साने अ़ज़ीम होगा कि मुझ गुनहगारों के सरदार **सगे मदीना** عُفِیَ عَنْہُ की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत होने के लिये भी दुआ़ मांगिये। नीज़ **दुरूद शरीफ़** पढ़ कर येह दुआ़ पढ़िये :[1]

1 : रम्ये जमरात, वुक़ूफ़े अ़-रफ़ात वग़ैरा के लिये जिस त़रह़ निय्यत शर्त़ नहीं इसी त़रह़ **सअ़्य** में भी शर्त़ नहीं बिग़ैर निय्यत के भी अगर किसी ने सअ़्य की तो हो जाएगी मगर सअ़्य में निय्यत कर लेना मुस्तह़ब है। निय्यत नहीं होगी तो सवाब नहीं मिलेगा।

कोहे सफ़ा की दुआ

اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط لَآ اِلٰهَ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा

اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ ط اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

कोई इबादत के लाइक़ नहीं, और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है। और ह़म्द है अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के लिये

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى مَا هَدٰنَا اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى مَآ اَوْلَانَا

ह़म्द है अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के लिये कि उस ने हम को हिदायत की, ह़म्द है अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के लिये कि उस ने हम को दिया,

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى مَآ اَلْهَمَنَا ط اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ

ह़म्द है अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के लिये कि उस ने हम को इल्हाम किया, ह़म्द है अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के लिये जिस ने

هَدٰنَا لِهٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِىَ لَوْلَآ اَنْ هَدٰنَا

हम को इस की हिदायत की और अगर अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) हिदायत न करता तो हम हिदायत न पाते।

اَللّٰهُ ط لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ط لَهُ

अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई मा'बूद नहीं, जो अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये

الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ

मुल्क है और उसी के लिये ह़म्द है, वोही ज़िन्दा करता और मारता है और वोह ख़ुद ज़िन्दा है

لَا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

मरता नहीं, उसी के हाथ में ख़ैर है और वोह हर शै पर

قَدِيْرٌ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ صَدَقَ وَعْدَهٗ

क़ादिर है। **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई मा'बूद नहीं जो अकेला है, उस ने अपना वा'दा सच्चा किया

وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَاَعَزَّ جُنْدَهٗ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ

और अपने बन्दे की मदद की और अपने लश्कर को ग़ालिब किया और काफ़िरों की जमाअ़तों को तन्हा उस ने शिकस्त दी।

وَحْدَهٗ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَا نَعْبُدُ اِلَّآ اِيَّاهُ

अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई मा'बूद नहीं हम उसी की इ़बादत करते हैं,

مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُوْنَ ؕ

उसी के लिये दीन को ख़ालिस करते हुए अगर्चे काफ़िर बुरा मानें।

﴿ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ

﴾ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की पाकी है शाम व

تُصْبِحُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ

सुब्ह़ और उसी के लिये ह़म्द है आस्मानों

وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿۱۸﴾

और ज़मीन में और तीसरे पहर को और ज़ोहर के वक़्त,

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ

वोह ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को

الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ

ज़िन्दा से निकालता है और ज़मीन को उस के मरने के बा'द

مَوْتِهَا ؕ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿۱۹﴾ اَللّٰهُمَّ

ज़िन्दा करता है और इसी त़रह़ तुम निकाले जाओगे इलाही !

كَمَا هَدَيْتَنِيْ لِلْاِسْلَامِ اَسْاَلُكَ اَنْ لَّا

तूने जिस त़रह़ मुझे इस्लाम की त़रफ़ हिदायत की, तुझ से सुवाल करता हूं कि

تَنْزِعَهُ مِنِّيْ حَتّٰى تَوَفَّانِيْ وَاَنَا مُسْلِمٌ ؕ

इसे मुझ से जुदा न करना यहां तक कि मुझे इस्लाम पर मौत दे,

سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ

अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के लिये पाकी है और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये ह़म्द है और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई मा'बूद नहीं

وَاللّٰہُ اَکْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ

और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) सब से बड़ा है, और गुनाह से फिरना और नेकी की त़ाक़त नहीं मगर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की मदद से

الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ ط اَللّٰھُمَّ اَحْیِنِیْ عَلٰی سُنَّۃِ

जो बरतर व बुज़ुर्ग है । इलाही ! तू मुझ को अपने

نَبِیِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ

नबी मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत पर ज़िन्दा रख

وَتَوَفَّنِیْ عَلٰی مِلَّتِہٖ وَاَعِذْنِیْ مِنْ مُّضِلَّاتِ

और इन की मिल्लत पर वफ़ात दे और फ़ितनों की गुमराहियों

الْفِتَنِ ط اَللّٰھُمَّ اجْعَلْنَا مِمَّنْ یُّحِبُّكَ

से बचा, इलाही ! तू मुझ को उन लोगों में कर जो तुझ से मह़ब्बत रखते हैं

وَیُحِبُّ رَسُوْلَكَ وَاَنْبِیَآئَكَ وَمَلٰٓئِکَتَكَ

और तेरे रसूल व अम्बिया व मलाएका और नेक बन्दों से

وَعِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ط اَللّٰهُمَّ يَسِّرْلِيَ

महब्बत रखते हैं । इलाही ! मेरे लिये आसानी मुयस्सर कर

الْيُسْرٰى وَجَنِّبْنِى الْعُسْرٰى اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِىْ

और मुझे सख़्ती से बचा, इलाही ! अपने **रसूल मुहम्मद**

عَلٰى سُنَّةِ رَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत पर मुझ को ज़िन्दा रख

تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ وَتَوَفَّنِىْ مُسْلِمًا وَّ

और मुसल्मान मार और

اَلْحِقْنِىْ بِالصّٰلِحِيْنَ وَاجْعَلْنِىْ مِنْ

नेकों के साथ मिला और जन्नतुन्नईम

وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ وَاغْفِرْلِىْ خَطِيْٓئَتِىْ

का वारिस कर और क़ियामत के दिन मेरी ख़ता

يَوْمَ الدِّيْنِ ط اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ اِيْمَانًا كَامِلًا

बख़्श दे । इलाही ! तुझ से ईमाने कामिल

وَّقَلْبًا خَاشِعًا وَّنَسْئَلُكَ عِلْمًا نَّافِعًا

और क़ल्बे ख़ाशेअ़ का हम सुवाल करते हैं और हम तुझ से इ़ल्मे नाफ़ेअ़

وَّيَقِيْنًا صَادِقًا وَّدِيْنًا قَيِّمًا وَّنَسْئَلُكَ

और यक़ीने सादिक़ और दीने मुस्तक़ीम का सुवाल करते हैं और हर

الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ مِنْ كُلِّ بَلِيَّةٍ وَّنَسْئَلُكَ

बला से अ़फ़्वो आ़फ़िय्यत का सुवाल करते हैं और

تَمَامَ الْعَافِيَةِ وَنَسْئَلُكَ دَوَامَ الْعَافِيَةِ

पूरी आ़फ़िय्यत और आ़फ़िय्यत की हमेशगी

وَنَسْئَلُكَ الشُّكْرَ عَلَى الْعَافِيَةِ وَنَسْئَلُكَ

और आ़फ़िय्यत पर शुक्र का सुवाल करते हैं और आदमियों

الْغِنٰى عَنِ النَّاسِ ط اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ

से बे नियाज़ी का सुवाल करते हैं । इलाही ! तू दुरूदो सलाम

وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ

व ब-र-कत नाज़िल कर हमारे सरदार **मुह़म्मद** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

وَصَحْبِهٖ عَدَدَ خَلْقِكَ وَرِضَا نَفْسِكَ

और इन की आल व अस्हाब पर ब क़दरे शुमार तेरी मख़्लूक़ और तेरी रिज़ा

وَزِنَةَ عَرْشِكَ وَمِدَادَ كَلِمَاتِكَ كُلَّمَا

और वज़्न तेरे अर्श के और ब क़दरे दराज़ी

ذَكَرَكَ الذَّاكِرُوْنَ وَغَفَلَ عَنْ ذِكْرِكَ

तेरे कलिमात के जब तक ज़िक्र करने वाले तेरा ज़िक्र करते रहें और जब तक ग़ाफ़िल तेरे

الْغَافِلُوْنَ ط اٰمين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صلی اللہ علیہ وسلم

ज़िक्र से ग़ाफ़िल रहें। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दुआ ख़त्म होने के बा'द हाथ छोड़ दीजिये और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर **सअ्य** की निय्यत अपने दिल में कर लीजिये मगर ज़बान से भी कह लेना बेहतर है। मा'ना ज़ेह्न में रखते हुए इस तरह निय्यत कीजिये :

सअ्य की निय्यत

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْٓ اُرِیْدُ السَّعْیَ بَیْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَۃِ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी ख़ुशनूदी की ख़ातिर **सफ़ा और मर्वह** के दरमियान सअ्य के

سَبْعَةَ اَشْوَاطٍ لِّوَجْهِكَ الْكَرِيْمِ فَيَسِّرْهُ

सात फेरे करने का इरादा कर रहा हूं तो इसे मेरे लिये आसान फ़रमा दे

لِيْ وَتَقَبَّلْهُ مِنِّيْ ط

और इसे मेरी त़रफ़ से क़बूल फ़रमा।

सफ़ा/मर्वह से उतरने की दुआ

اَللّٰهُمَّ اسْتَعْمِلْنِيْ بِسُنَّةِ نَبِيِّكَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू मुझे अपने प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत का ताबेअ़ बना दे

عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ وَتَوَفَّنِيْ عَلٰى مِلَّتِهٖ وَاَعِذْنِيْ مِنْ

और मुझे उन के दीन पर मौत नसीब फ़रमा और मुझे पनाह दे

مُضِلَّاتِ الْفِتَنِ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ ط

फ़ितनों की गुमराहियों से अपनी रह़मत के साथ, ऐ सब से ज़ियादा रह़म करने वाले।

सफ़ा से अब ज़िक्रो दुरूद में मश्ग़ूल दरमियाना चाल चलते हुए जानिबे मर्वह चलिये (आज कल तो यहां **संगे मरमर** बिछा हुवा है और एर कूलर भी लगे हैं। एक सअ़्य वोह भी थी जो

सय्यि-दतुना हाजिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने की थी, ज़रा अपने ज़ेह्न में वोह दिल हिला देने वाला मन्ज़र ताज़ा कीजिये, जब यहां बे आबो गियाह मैदान था और नन्हे मुन्ने **इस्माईल** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام शिद्दते प्यास से बिलक रहे थे और ह़ज़रते **सय्यि-दतुना हाजिरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا तलाशे आब (पानी) में बेताब चिल-चिलाती धूप के अन्दर इन संगलाख़ रास्तों में फिर रही थीं) जूं ही **पहला सब्ज़ मील** आए मर्द दौड़ना शुरूअ़ कर दें। (मगर मुहज़्ज़ब त़रीक़े पर न कि बे तह़ाशा) और सुवार सुवारी तेज़ कर दें, हां अगर भीड़ ज़ियादा हो तो थोड़ा रुक जाइये जब कि भीड़ कम होने की उम्मीद हो। दौड़ने में येह याद रखिये कि ख़ुद को या किसी दूसरे को ईज़ा न पहुंचे कि यहां दौड़ना **सुन्नत** है जब कि किसी मुसल्मान को क़स्दन ईज़ा देना **ह़राम।** इस्लामी बहनें न दौड़ें। अब इस्लामी भाई दौड़ते हुए और इस्लामी बहनें चलते हुए येह दुआ़ पढ़ें :

सब्ज़ मीलों के दरमियान पढ़ने की दुआ़

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ اِنَّكَ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे मुआ़फ़ फ़रमा और मुझ पर रह़्म कर और मेरी ख़त़ाएं जो कि यक़ीनन तेरे इ़ल्म में हैं उन से दर गुज़र फ़रमा, बेशक तू

تَعْلَمُ مَا لَا نَعْلَمُ ط اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَكْرَمُ

जानता है हमें उस का इ़ल्म नहीं। बेशक तू इ़ज़्ज़त व इक्राम वाला है

وَاھْدِنِیْ لِلَّتِیْ ھِیَ اَقْوَمُ ؕ اَللّٰھُمَّ اجْعَلْہُ حَجًّا

और मुझे सिराते़ मुस्तक़ीम पे क़ाइम रख, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे ह़ज को

مَّبْرُوْرًا وَّسَعْیًا مَّشْکُوْرًا وَّذَنْبًا مَّغْفُوْرًا ؕ

मबरूर और मेरी सअ्य को मश्कूर (पसन्दीदा) कर और मेरे गुनाहों को बख़्श दे।

जब **दूसरा सब्ज़ मील** आए तो आहिस्ता हो जाइये और दरमियाना चाल से जानिबे मर्वह बढ़े चलिये। **ऐ लीजिये ! मर्वह शरीफ़** आ गया, अ़वामुन्नास दूर ऊपर तक चढ़े हुए हैं। आप उन की नक़्ल मत कीजिये यहां पहली सीढ़ी पर चढ़ने बल्कि उस के क़रीब ज़मीन पर खड़े होने से भी **मर्वह** पर चढ़ना हो गया, यहां अगर्चे इ़मारात बन जाने के सबब **का'बा शरीफ़** नज़र नहीं आता मगर **का'बए मुशर्रफ़ा** की त़रफ़ मुंह कर के **सफ़ा** की त़रह़ उतनी ही देर तक दुआ़ मांगिये। अब निय्यत करने की ज़रूरत नहीं कि वोह तो पहले हो चुकी येह **एक फेरा** हुवा।

अब ह़स्बे साबिक़ **दुआ़** पढ़ते हुए **मर्वह** से **जानिबे सफ़ा** चलिये और ह़स्बे मा'मूल **मीलैने अख़्ज़रैन** (या'नी सब्ज़ मीलों) के दरमियान **मर्द** दौड़ते हुए और **इस्लामी बहनें** चलते हुए वोही दुआ़ पढ़ें, अब **सफ़ा** पर पहुंच कर **दो फेरे** पूरे हुए। इसी त़रह़ **सफ़ा** और **मर्वह** के दरमियान चलते, दौड़ते

सातवां फेरा मर्वह पर ख़त्म होगा, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप की **सअ़्य** मुकम्मल हुई।

दौराने सअ़्य एक ज़रूरी एह़तियात़ : बसा अवक़ात लोग मस्आ़ में नमाज़ पढ़ रहे होते हैं। दौराने त़वाफ़ तो नमाज़ी के आगे से गुज़रना जाइज़ है मगर दौराने सअ़्य ना जाइज़। ऐसे मौक़अ़ पर रुक कर नमाज़ी के सलाम फेरने का इन्तिज़ार कर लीजिये। हां किसी गुज़रने वाले को आड़ बना कर गुज़र सकते हैं।

नमाज़े सअ़्य मुस्तह़ब है : अब हो सके तो मस्जिदे ह़राम में दो रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल (अगर मक्रूह वक़्त न हो तो) अदा कर लीजिये कि मुस्तह़ब है। हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सअ़्य के बा'द मत़ाफ़ के कनारे **ह़-जरे अस्वद** की सीध में दो नफ़्ल अदा फ़रमाए हैं। **(مُسنَد إمام احمد ج١٠ص ٣٥٤ حديث٢٧٣١٣، رَدُّالمُحتار ج٣ص٥٨٩)** **इन्हीं त़वाफ़ व सअ़्य का नाम उ़म्रह है। क़ारिन व मु-तमत्तेअ़** के लिये येही "उ़म्रह" हो गया।

शरफ़ मुझ को उ़म्रे का मौला दिया है
करम मुझ गुनहगार पर येह बड़ा है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

त़वाफ़े कुदूम : मुफ़्रिद के लिये येह त़वाफ़, त़वाफ़े कुदूम या'नी ह़ाज़िरिये दरबार का मुजरा (या'नी सलामी) हुवा। क़ारिन इस के बा'द त़वाफ़े कुदूम की निय्यत से मज़ीद एक त़वाफ़ व सअ़्य कर ले। त़वाफ़े कुदूम, क़ारिन व मुफ़्रिद दोनों के लिये **सुन्नते मुअक्कदा** है, अगर तर्क किया तो बुरा किया मगर दम वग़ैरा वाजिब नहीं।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1111)

ह़ल्क़ या तक़्सीर : अब मर्द **ह़ल्क़** करें या'नी सर मुंडवा दें या तक़्सीर करें या'नी बाल कतरवाएं। मगर ह़ल्क़ करवाना बेहतर है। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **ह़िज्जतुल वदाअ़** में ह़ल्क़ कराया और सर मुंडवाने वालों के लिये तीन बार दुआ़ए रह़मत फ़रमाई और कतरवाने वालों के लिये एक बार। (بُخاری ج۱ص۵۷٤حدیث۱۷۲۸)

तक़्सीर की ता'रीफ़ : तक़्सीर या'नी कम अज़ कम चौथाई (1/4) सर के बाल उंगली के पोरे बराबर कटवाना। इस में येह एह़तियात़ रखिये कि एक पोरे से ज़ियादा कटें ताकि सर के बीच में जो छोटे छोटे बाल होते हैं वोह भी एक पोरे के बराबर कट जाएं। बा'ज़ लोग क़ैंची से दो तीन जगह के चन्द बाल काट लिया करते हैं, **ह़-नफ़िय्यों** के लिये येह त़रीक़ा ग़लत़ है और इस त़रह़ **एह़राम** की पाबन्दियां भी ख़त्म न होंगी।

इस्लामी बहनों की तक़्सीर : इस्लामी बहनों को सर मुंडाना ह़राम है वोह सिर्फ़ तक़्सीर करवाएं । इस का आसान त़रीक़ा येह है कि अपनी चुटिया के सिरे को उंगली के गिर्द लपेट कर उतना ह़िस्सा काट लें, लेकिन येह एह़तियात़ लाज़िमी है कि कम अज़ कम **चौथाई (1/4) सर** के बाल एक पोरे के बराबर कट जाएं ।

लगाओ दिल को न दुन्या में हर किसी शै से
तअ़ल्लुक़ अपना हो का'बे से या मदीने से

(सामाने बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیٰ محمّد

त़वाफ़े क़ुदूम वालों के लिये हिदायत : त़वाफ़े क़ुदूम में इज़्ति़बाअ़ व रमल और सअ़्य ज़रूरी नहीं मगर इस में नहीं करेंगे तो येह सारे अफ़्आ़ल "**त़वाफ़ुज़्ज़ियारह**" में करने होंगे, हो सकता है उस वक़्त थकन वग़ैरा के सबब दुश्वारी पेश आए लिहाज़ा इसे मुत़लक़न तरकीब में दाख़िल कर दिया है कि इस त़रह़ **त़वाफ़ुज़्ज़ियारह** में इन चीज़ों की ह़ाजत न होगी ।

मु-तमत्तेअ़ के लिये हिदायत : मुफ़्रिद व क़ारिन तो ह़ज के रमल व सअ़्य से "त़वाफ़े क़ुदूम" में फ़ारिग़ हो चुके मगर

मु-तमत्तेअ़ ने जो त़वाफ़ व सअ़्य किये वोह "उ़म्रे" के थे और इस के लिये "**त़वाफ़े क़ुदूम**" सुन्नत नहीं है कि इस में फ़राग़त पा ले। लिहाज़ा अगर "**मु-तमत्तेअ़**" भी पहले से फ़ारिग़ होना चाहे तो जब **ह़ज** का एह़राम बांधे उस वक़्त एक नफ़्ली त़वाफ़ में रमल व सअ़्य कर ले, अब उसे भी **त़वाफ़ुज़्ज़ियारह** में इन उमूर की ह़ाजत न रहेगी। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1112) 6 या 7 या 8 **ज़ुल ह़िज्जह** को अगर ह़ज का एह़राम बांधा तो उ़मूमन बहुत ज़ियादा भीड़ होती है, अगर चाहें तो **ह़ज** के रमल व सअ़्य के लिये अभी **नफ़्ली त़वाफ़** न कीजिये, **त़वाफ़ुज़्ज़ियारह** में कर लीजिये कि एह़राम भी नहीं होगा और उम्मीद है भीड़ में भी क़दरे कमी पाएंगे, 10 को फिर भी ख़ूब हुजूम होता है अलबत्ता 11 और 12 को रश में काफ़ी कमी आ जाती है।

तमाम ह़ाजियों के लिये म-दनी फूल : अब तमाम हुज्जाजे किराम (क़ारिन, **मु-तमत्तेअ़** और **मुफ़्रिद**) सब के सब **मिना शरीफ़** जाने के लिये **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में आठवीं **ज़ुल ह़िज्जह** के इन्तिज़ार में अपनी ज़िन्दगी के ह़सीन लम्ह़ात गुज़ार रहे हैं। **प्यारे आ़शिक़ाने रसूल !** येह वोह मुक़द्दस गलियां हैं जिन में हमारे प्यारे प्यारे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ह़याते त़य्यिबा के कमो बेश 53 साल गुज़ारे हैं, यहां हर जगह **मह़बूबे अकरम,**

रसूले मुह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नक़्शे क़दम हैं, इन मुबारक गलियों का ख़ूब ख़ूब अदब कीजिये। **ख़बरदार !** गुनाह तो कुजा गुनाह का तसव्वुर भी न आने पाए कि हुदूदे ह़रम में **अगर एक नेकी लाख के बराबर है तो गुनाह भी लाख गुना है।** गाली गलोच, ग़ीबत, चुग़ली, झूट, बद निगाही, बद गुमानी वग़ैरा हमेशा **ह़राम** हैं मगर यहां का जुर्म तो **लाख गुना** है। हरगिज़ ऐसी ह़माक़त मत कीजिये कि ह़ल्क़ करवाते हुए साथ ही مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! दाढ़ी भी मुंडवा दी ! ख़बरदार ! **दाढ़ी मुंडवाना या कतरवा कर एक मुठ्ठी से छोटी कर डालना** दोनों **ह़राम** और जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं और यहां तो अगर एक बार भी येह ह़-र-कत करेंगे तो लाख बार ह़राम का गुनाह मिलेगा। **ऐ आ़शिक़ाने रसूल !** अब तो आप के चेहरे को मक्के मदीने की हवाएं चूम रही हैं, मान जाइये ! इन मुबारक बालों को बढ़ने ही दीजिये और अब तक जितनी बार मुंडवाई या एक मुठ्ठी से घटाई इस से तौबा कर लीजिये और हमेशा के लिये प्यारे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पाकीज़ा सुन्नत को अपने चेहरे पर सजा लीजिये।

सरकार का आ़शिक़ भी क्या दाढ़ी मुंडाता है ?
क्यूं इश्क़ का चेहरे से इज़्हार नहीं होता !

(वसाइले बख़्शिश, स. 234)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जब तक मक्कए मुकर्रमा में रहें क्या करें ?[1] :

﴾1﴿ ख़ूब नफ़्ली त़वाफ़ कीजिये, येह याद रहे कि त़वाफ़े नफ़्ल में त़वाफ़ के बा'द पहले मुल्तज़म से लिपटना है इस के बा'द दो रक्अ़त मक़ामे इब्राहीम पर अदा करनी हैं ﴾2﴿ कभी **हु़ज़ूरे अकरम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नाम का त़वाफ़ कीजिये तो कभी **ग़ौसुल आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के नाम का, कभी अपने पीरो मुर्शिद के नाम का कीजिये तो कभी अपने **वालिदैन** के नाम का ﴾3﴿ ख़ूब नफ़्ली रोज़े रख कर फ़ी रोज़ा लाख लाख रोज़े का सवाब लूटिये, इस बात का ध्यान रखिये कि मस्जिदुल ह़राम (या किसी भी मस्जिद) में रोज़ा इफ़्त़ार करने के लिये खजूर वग़ैरा खाएं या **आबे ज़मज़म** पियें **ए'तिकाफ़** की निय्यत होना ज़रूरी है ﴾4﴿ जब कभी **का'बतुल्लाह** पर नज़र पड़े तीन[3] बार لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ कहिये और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर दुआ़ मांगिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! क़बूल होगी ﴾5﴿ जिन की **पैदल ह़ज** की निय्यत है वोह दो चार रोज़ क़ब्ल मिना शरीफ़, मुज़्दलिफ़ा शरीफ़ और अ़-रफ़ात शरीफ़ ह़ाज़िर हो कर अपने ख़ैमे देख कर निशानियां मुक़र्रर कर लें, नीज़ उस रास्ते का इन्तिख़ाब कर लें कि जो बा आसानी उन ख़ैमों तक पहुंचा दे, वरना भीड़ में सख़्त आज़्माइश हो सकती है। (इस्लामी बहनों को बस में ही आ़फ़िय्यत

مدینہ

1 : ज़ियारते ह़-रमैन के बारे में सफ़ह़ा 242 मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

है। पैदल चलने में इस्लामी भाइयों से इख़्तिलात् और बिछड़ने का ख़त्रा रहता है नीज़ मुज़्दलिफ़ा में दाख़िले के वक़्त लाखों की भीड़ में इस्लामी बहनों को संभालने में वोह आज़्माइश होती है कि الامان والحفیظ)

﴿6﴾ "शोंपिंग" में ज़ियादा वक़्त सर्फ़ करने के बजाए इबादत में वक़्त गुज़ारने की कोशिश फ़रमाइये, बार बार येह सुनहरी मौक़अ़ हाथ नहीं आता।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

चप्पलों के बारे में ज़रूरी मस्अला : मस्जिदे ह़राम व **मस्जिदुन्न-बविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلام के मुबारक दरवाज़ों के बाहर बे शुमार लोग जूते चप्पल उतार देते हैं फिर वापसी में जो भी जूता पसन्द आया पहन कर चलते बनते हैं! इस त़रह़ के जूते या चप्पल बिला इजाज़ते शर-ई जितनी बार इस्ति'माल करेंगे उतनी ता'दाद में गुनाह होता रहेगा म-सलन बिला इजाज़ते शर-ई एक बार के उठाए हुए जूते 100 बार पहने तो 100 मर्तबा पहनने का गुनाह हुवा। इन जूतों के अह़काम "**लुक़्त़ा**" (या'नी किसी की गिरी पड़ी चीज़) के हैं कि **मालिक** मिलने की उम्मीद ही ख़त्म हो जाए तो जिस को येह "**लुक़्त़ा**" मिला अगर येह फ़क़ीर है तो ख़ुद रख सकता है वरना किसी फ़क़ीर को दे दे।

जिस ने दूसरों के जूते ना जाइज़ इस्ति'माल कर लिये अब क्या करें ? : मज़्कूरा अन्दाज़ पर दुन्या में जिस ने जहां से भी इस त़रह़ की ह़-र-कत की वोह गुनहगार है। अपने लिये "**लुक़्ता**" या'नी गिरी पड़ी चीज़ उठा ले जाने वाले पर फ़र्ज़ है कि तौबा भी करे और इस त़रह़ जितने भी जूते चप्पल या चीज़ें ली हैं, अगर इन के अस्ल मालिकों या वोह न रहे हों तो उन के वारिसों तक पहुंचाना मुम्किन न हो तो वोह सारी चीज़ें या अगर वोह अश्या बाक़ी नहीं रहीं तो उन की क़ीमत किसी मिस्कीन को दे दे। या उन की क़ीमत मस्जिद व मद्रसा वग़ैरा में दे दे। (लुक़्ते के तफ़्सीली मसाइल के लिये बहारे शरीअ़त जिल्द 2 **सफ़ह़ा** 471 ता 484 का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये)

आह ! जो बो चुका हूं, वक़्ते दिरौ[1]
होगा ह़सरत का सामना या रब !

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इस्लामी बहनों के लिये म-दनी फूल : औ़रतें नमाज़ फ़रोद गाह (या'नी क़ियाम गाह) ही में पढ़ें। नमाज़ों के लिये जो मस्जिदैने करीमैन में ह़ाज़िर होती हैं जहालत है कि मक़्सूद सवाब है और खु़द प्यारे सरकार, म-दनी ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

1 : या'नी फ़स्ल काटते वक़्त

ने फ़रमाया : "औ़रत को मेरी मस्जिद (या'नी मस्जिदे न-बवी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) में नमाज़ पढ़ने से ज़ियादा सवाब घर में पढ़ना है।" (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1112, مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج١٠ص٣١٠حدیث٢٧١٥٨)

त़वाफ़ में सात बातें ह़राम हैं

त़वाफ़ अगर्चे नफ़्ल हो, उस में येह सात बातें **ह़राम** हैं : ﴾1﴿ बे वुज़ू त़वाफ़ करना ﴾2﴿ बिग़ैर मजबूरी डोली में या किसी की गोद में या किसी के कन्धों वग़ैरा पर **त़वाफ़** करना ﴾3﴿ बिला उ़ज़्र बैठ कर सरक्ना या घुटनों पर चलना ﴾4﴿ का'बे को सीधे हाथ पर ले कर उलटा त़वाफ़ करना ﴾5﴿ त़वाफ़ में "ह़त़ीम" के अन्दर हो कर गुज़रना ﴾6﴿ सात फेरों से कम करना ﴾7﴿ जो उ़ज़्व **सत्र** में दाख़िल है उस का चौथाई (1/4) ह़िस्सा खुला होना, म-सलन रान या आज़ाद औ़रत का कान या कलाई। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1112) इस्लामी बहनें ख़ूब एह़तियात़ करें, दौराने त़वाफ़ ख़ुसूसन **ह़-जरे** अस्वद का इस्तिलाम करते वक़्त काफ़ी ख़्वातीन की चौथाई कलाई तो क्या बा'ज़ अवक़ात पूरी कलाई खुल जाती है! (त़वाफ़ के इ़लावा भी ग़ैर मह़रम के सामने सर के बाल या कान या कलाई खोलना ह़राम व गुनाह है। पर्दे के तफ़्सीली अह़काम मा'लूम करने के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 397 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**पर्दे के बारे में सुवाल जवाब**" का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये)

त़वाफ़ के ग्यारह मक्रूहात

﴾1﴿ फ़ुज़ूल बात करना ﴾2﴿ ज़िक्रो दुआ़ या तिलावत या ना'त व मुनाजात या कोई कलाम बुलन्द आवाज़ से करना ﴾3﴿ ह़म्दो सलात व मन्क़बत के सिवा कोई शे'र पढ़ना ﴾4﴿ नापाक कपड़ों में **त़वाफ़** करना (मुस्ता'मल चप्पल या जूते साथ लिये **त़वाफ़** न करें एह़तियात़ इसी में है) ﴾5﴿ रमल या ﴾6﴿ इज़्तिबाअ़ या ﴾7﴿ बोसए संगे अस्वद जहां जहां इन का हुक्म है तर्क करना ﴾8﴿ **त़वाफ़** के फेरों में ज़ियादा फ़ासिला देना। हां ज़रूरत हो तो इस्तिन्जा के लिये जा सकते हैं, वुज़ू कर के बाक़ी पूरा कर लीजिये ﴾9﴿ एक त़वाफ़ के बा'द जब तक उस की दो रक्अ़तें न पढ़ लें दूसरा त़वाफ़ शुरूअ़ कर देना। हां अगर मक्रूह वक़्त हो तो ह़रज नहीं। म–सलन सुब्ह़े सादिक़ से ले कर सूरज बुलन्द होने तक या बा'दे नमाज़े अ़स्र से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक कि इस में कई त़वाफ़ बिग़ैर "नमाज़े त़वाफ़" जाइज़ हैं अलबत्ता मक्रूह वक़्त गुज़र जाने के बा'द हर त़वाफ़ के लिये दो दो रक्अ़त अदा करनी होंगी ﴾10﴿ **त़वाफ़** में कुछ खाना ﴾11﴿ पेशाब या रीह़ वग़ैरा की शिद्दत होते हुए **त़वाफ़** करना।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1113, اَلْمَسْلَكُ الْمُتَقَسِّط لِلقاری ص١٦٥)

तवाफ़ व सअ़्य में येह सात काम जाइज़ हैं : ﴾1﴿ सलाम करना ﴾2﴿ जवाब देना ﴾3﴿ ज़रूरत के वक़्त बात करना ﴾4﴿ पानी पीना (सअ़्य में खा भी सकते हैं) ﴾5﴿ ह़म्दो ना'त या मन्क़बत के अश्आ़र आहिस्ता आहिस्ता पढ़ना ﴾6﴿ दौराने त़वाफ़ नमाज़ी के आगे से गुज़रना **जाइज़** है कि **त़वाफ़** भी नमाज़ ही की त़रह़ है मगर **सअ़्य** के दौरान गुज़रना जाइज़ नहीं ﴾7﴿ फ़तवा पूछना या फ़तवा देना ।

(ऐज़न, स. 1114, **اَلْمَسْلَكُ الْمُتَقَسِّط** ص١٦٢)

सअ़्य के 10 मक्रूहात : ﴾1﴿ बिग़ैर ज़रूरत इस के फेरों में ज़ियादा फ़ासिला (वक़्फ़ा, दूरी) देना । हां क़ज़ाए ह़ाजत या तज्दीदे वुज़ू के लिये जा सकते हैं (सअ़्य में वुज़ू ज़रूरी नहीं, मुस्तह़ब है) ﴾2﴿ ख़रीद व ﴾3﴿ फ़रोख़्त ﴾4﴿ फ़ुज़ूल कलाम ﴾5﴿ "परेशान नज़री" या'नी इधर उधर फ़ुज़ूल देखना सअ़्य में भी मक्रूह है और त़वाफ़ में और ज़ियादा मक्रूह ﴾6﴿ सफ़ा, या ﴾7﴿ मर्वह पर न चढ़ना (मा'मूली सा चढ़िये ऊपर तक नहीं) ﴾8﴿ बिग़ैर मजबूरी मर्द का "मस्आ़" में न दौड़ना ﴾9﴿ त़वाफ़ के बा'द बहुत ताख़ीर से **सअ़्य** करना ﴾10﴿ सत्रे औ़रत न होना ।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1115)

सअ़्य के चार मु-तफ़र्रिक़ म-दनी फूल : «1» सअ़्य में पैदल चलना **वाजिब** है जब कि उ़ज़्र न हो (बिला उ़ज़्र सुवारी पर या घिसट कर की तो **दम** वाजिब होगा) (لُبابُ المَناسِك ص ١٧٨) «2» सअ़्य के लिये **त़हारत** शर्त़ नहीं हैज़ व निफ़ास वाली भी कर सकती है (عالمگیری ج۱ص۲۴۷) «3» जिस्म व लिबास पाक हों और बा वुज़ू भी हों येह मुस्तह़ब है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1110) «4» सअ़्य शुरूअ़ करते वक़्त पहले **सफ़ा** की दुआ़ पढ़िये फिर **सअ़्य की निय्यत** कीजिये। सअ़्य के **मु-तअ़द्दिद** अफ़्आ़ल हैं, जैसा कि ह़-जरे अस्वद का इस्तिलाम, सफ़ा पर चढ़ना, दुआ़ मांगना वग़ैरा इन सब पर **निय्यतें** कर ले तो अच्छा है, कम अज़ कम दिल में येह निय्यत होना भी काफ़ी है हुसूले सवाब के लिये **अस्ल सअ़्य** से पहले के अफ़्आ़ल कर रहा हूं।

इस्लामी बहनों के लिये ख़ास ताकीद : इस्लामी बहनें यहां भी और हर जगह मर्दों से अलग थलग रहें। अक्सर नादान औ़रतें "ह़-जरे अस्वद" और **रुक्ने यमानी** को चूमने के लिये या **का'बतुल्लाह** शरीफ़ के क़रीब जाने के लिये बे धड़क मर्दों में जा घुसती हैं। **तौबा ! तौबा !** येह सख़्त बेबाकी है। इस्लामी बहनों के लिये ठीक दोपहर के वक़्त म-सलन दिन के 10 बजे त़वाफ़ करना मुनासिब है कि उस वक़्त भीड़ कम होती है।

बारिश और मीज़ाबे रह़मत : बारिश के दौरान ह़त़ीम शरीफ़ में बहुत भीड़ हो जाती है, मीज़ाबे रह़मत से निछावर होने वाला मुबारक पानी लेने के लिये ह़ाजी साह़िबान दीवाना वार लपक्ते हैं इस में ज़ख़्मी होने बल्कि कुचल कर मर जाने तक का ख़त़रा होता है, ऐसे मौक़अ़ पर इस्लामी बहनों को दूर रहना ज़रूरी है।

है त़वाफ़े ख़ानए का'बा सआ़दत मरह़बा !
ख़ूब बरसता है यहां पर अब्रे रह़मत मरह़बा !

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ह़ज का एह़राम बांध लीजिये : अगर आप ने अभी तक **ह़ज का एह़राम** नहीं बांधा तो 8 **ज़ुल ह़िज्जह** को भी बांध सकते हैं मगर सहूलत 7 को रहेगी क्यूं कि मुअ़ल्लिम अपने अपने ह़ाजियों को सातवीं की इ़शा के बा'द से **मिना** शरीफ़ पहुंचाना शुरूअ़ कर देते हैं। **मस्जिदे ह़राम** में ग़ैर मक्रूह वक़्त में एह़राम के दो नफ़्ल अदा कर के मा'ना पर नज़र रखते हुए इस त़रह़ **ह़ज की निय्यत** कीजिये :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْٓ اُرِیْدُ الْحَجَّ فَیَسِّرْہُ لِیْ وَتَقَبَّلْہُ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं **ह़ज** का इरादा करता हूं तू मेरे लिये इसे आसान कर और मुझ से

مِنِّیْ ط وَاَعِنِّیْ عَلَیْہِ وَبَارِکْ لِیْ فِیْہِ ط نَوَیْتُ

क़बूल फ़रमा और इस में मेरी मदद कर और मेरे लिये इस में ब-र-कत दे, निय्यत की मैं ने

اَلْحَجَّ وَاَحْرَمْتُ بِہٖ لِلّٰہِ تَعَالٰی ط

ह़ज की और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये इस का एह़राम बांधा।

निय्यत के बा'द इस्लामी भाई बुलन्द आवाज़ से और इस्लामी बहनें धीमी आवाज़ में तीन तीन मर्तबा **लब्बैक** पढ़ें। अब एक बार फिर आप पर एह़राम की पाबन्दियां आ़इद हो गईं।

एक मुफ़ीद मशवरा : अगर आप चाहें तो एक **नफ़्ली त़वाफ़** में **ह़ज** के इज़्त़िबाअ़, रमल और सअ़्य से फ़ारिग़ हो लीजिये, इस त़रह़ **त़वाफ़ुज़्ज़ियारह** में आप को **रमल** और **सअ़्य** की ज़रूरत नहीं रहेगी। मगर येह ज़ेह्न में रहे कि 7 और 8 को भीड़ बहुत ज़ियादा होती है, नीज़ 10 को **त़वाफ़ुज़्ज़ियारह** में भी काफ़ी हुजूम होता है अलबत्ता 11 और 12 के **त़वाफ़ुज़्ज़ियारह** में रश में कमी आ जाती है और सअ़्य में भी क़दरे आसानी रहती है।

मिना को रवानगी : आज आठवीं शब है, बा'दे नमाज़े इ़शा हर त़रफ़ धूम पड़ी है, सब को एक ही धुन है कि मिना चलो ! आप भी तय्यार हो जाइये, अपनी ज़रूरिय्यात की अश्या म-सलन तस्बीह़, मुसल्ला, क़िब्ला नुमा, गले में लटकाने

वाली पानी की बोतल, ज़रूरत की दवाएं, **मुअ़ल्लिम का एड्रेस** और येह तो हर वक़्त साथ ही होना चाहिये ताकि रास्ता भूल जाने या مَعَاذَالله عَزَّوَجَلَّ ह़ादिसे या बेहोशी की सूरत में काम आए। अगर **ह़ज्जनें** साथ हैं तो सब्ज़ या किसी भी नुमायां रंग के कपड़े का टुकड़ा उन के सर की पिछली जानिब बुरक़अ़ में सी लीजिये, ताकि भीड़भाड़ में पहचान हो सके, राह चलते खु़सूसन रश में उन्हें अपने आगे रखिये अगर आप आगे रहे और येह ज़ियादा पीछे रह गई तो बिछड़ सकती हैं। **अख़राजात बराए त़आ़म व क़ुरबानी** वग़ैरा वग़ैरा साथ लेना न भूलिये, चूल्हा न लीजिये कि वहां मन्अ़ है। अगर मुम्किन हो तो **मिना, अ़-रफ़ात, मुज़्दलिफ़ा** वग़ैरा का सफ़र पैदल ही तै़ कीजिये कि जब तक **मक्का शरीफ़** पलटेंगे हर क़दम पर सात करोड़ **नेकियां** मिलेंगी। وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ० रास्ते भर **लब्बैक** और **ज़िक्रो दुरूद** की खू़ब खू़ब कसरत कीजिये। जूं ही **मिना शरीफ़** नज़र आए **दुरूदे पाक** पढ़ कर येह दुआ़ पढ़िये :

اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ مِنًى فَامْنُنْ عَلَيَّ بِمَا مَنَنْتَ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! येह मिना है मुझ पर वोह एह़सान फ़रमा जो

بِهٖ عَلٰۤى اَوْلِيَآئِكَ ط

तूने अपने औलिया पर फ़रमाया।

ऐ लीजिये ! अब आप **मिना शरीफ़** की ह़सीन वादियों

में दाख़िल हो गए, मरह़बा ! किस क़दर दिलकुशा मन्ज़र है, क्या ज़मीन, क्या पहाड़, हर त़रफ़ **ख़ैमों** की बहार है। आप भी अपने मुअ़ल्लिम की त़रफ़ से दिये हुए ख़ैमे में क़ियाम फ़रमाइये। **8 की ज़ोहर से ले कर कल नवीं की फ़ज्र तक पांच नमाज़ें आप को मिना शरीफ़ में अदा करनी हैं क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ऐसा ही किया है।**

मिना शरीफ़ में पहले दिन जगह के लिये लड़ाइयां :

मिना शरीफ़ की आज की ह़ाज़िरी अ़ज़ीम इ़बादत है, और लाखों लाख हुज्जाज इस इ़बादत के लिये जम्अ़ हो गए हैं, इस लिये शैत़ान भी एक दम बिफरा हुवा है और बात बात पर ह़ाजियों को ग़ुस्सा दिला रहा है, इस का यूं भी इज़्हार हो रहा है कि ख़ैमों में जगह के लिये बा'ज़ हुज्जाज उलझने और शोर शराबे में मश्ग़ूल हैं। आप शैत़ान के वार से होशियार रहिये अगर कोई ह़ाजी साह़िब आप की जगह पर वाक़ेई क़ाबिज़ हो गए हैं तो हाथ जोड़ कर नरमी से उन को समझाइये अगर वोह नहीं मानते और आप के पास कोई मु-तबादिल जगह भी नहीं तो झगड़ने के बजाए मुअ़ल्लिम के आदमी को त़लब फ़रमा लीजिये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप का मस्अला ह़ल हो जाएगा। बहर ह़ाल आप को दिल बड़ा रखना और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मेहमानों के साथ नरमी और दर गुज़र से काम लेना है, आज का दिन बहुत अहम है हो सकता है कुछ लोग गपशप कर रहे हों, मगर आप अपनी **इ़बादत** में लगे

रहिये, हो सके तो उन को नेकी की दा'वत दीजिये कि येह भी एक आ'ला द-रजे की इ़बादत है। आज आने वाली रात **शबे अ़-रफ़ा** है, मुम्किन हो तो येह रात ज़रूर **इ़बादत** में गुज़ारिये कि सोने के दिन बहुत पड़े हैं, ऐसे मवाक़ेअ़ बार बार कहां नसीब होते हैं !

दुआ़ए शबे अ़-रफ़ा : फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जो शख़्स अ़-रफ़े की रात में येह दुआ़एं हज़ार मर्तबा पढ़े तो जो कुछ **अल्लाह तआ़ला** से मांगेगा पाएगा जब कि गुनाह या क़त़्ए़ रेह़्म (या'नी रिश्तेदारी काटने) का सुवाल न करे। (दुआ़ येह है :)

سُبْحٰنَ الَّذِیْ فِی السَّمَآءِ عَرْشُهٗ ط سُبْحٰنَ

पाक है वोह जिस का अ़र्श बुलन्दी में है। पाक है

الَّذِیْ فِی الْاَرْضِ مَوْطِئُهٗ ط سُبْحٰنَ الَّذِیْ فِی

वोह जिस की हुकूमत ज़मीन में है, पाक है वोह कि जिस का

الْبَحْرِ سَبِیْلُهٗ ط سُبْحٰنَ الَّذِیْ فِی النَّارِ

रास्ता दरिया में है, पाक है वोह कि नार में उस की

سُلْطَانُهٗ ط سُبْحٰنَ الَّذِیْ فِی الْجَنَّةِ رَحْمَتُهٗ ط

सल्त़नत है, पाक है वोह कि जन्नत में उस की रह़मत है,

سُبْحٰنَ الَّذِیْ فِی الْقَبْرِ قَضَائُہٗ ط سُبْحٰنَ الَّذِیْ

पाक है वोह कि क़ब्र में उसी का हुक्म है, पाक है वोह कि

فِی الْھَوَآءِ رُوْحُہٗ ط سُبْحٰنَ الَّذِیْ رَفَعَ السَّمَآءَ ط

हवा में जो रूहें हैं उसी की मिल्क हैं, पाक है वोह कि जिस ने आस्मान को बुलन्द किया,

سُبْحٰنَ الَّذِیْ وَضَعَ الْاَرْضَ ط سُبْحٰنَ الَّذِیْ لَا

पाक है वोह कि जिस ने ज़मीन को पस्त किया, पाक है वोह कि उस के अ़ज़ाब से

مَلْجَأَ وَلَا مَنْجٰی مِنْہُ اِلَّآ اِلَیْہِ ط

पनाह व नजात की कोई जगह नहीं मगर उसी की त़रफ़ ।

नवीं रात मिना में गुज़ारना सुन्नते मुअक्कदा है :

रातों रात मुअ़ल्लिमों की बसें सूए अ़-रफ़ात शरीफ़ चल पड़ती हैं और **मिना** शरीफ़ में नवीं रात गुज़ारने की **सुन्नते मुअक्कदा** लाखों ह़ाजियों की फ़ौत हो जाती है । **बहारे शरीअ़त** में है : अगर रात को मिना में रहा मगर सुब्ह़े सादिक़ होने से पहले या नमाज़े फ़ज्र से पहले या आफ़्ताब निकलने से पहले **अ़-रफ़ात** को चला गया तो बुरा किया । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1120) मा'लूमात की कमी के बाइस बे शुमार हुज्जाज सुब्ह़े सादिक़

से क़ब्ल ही नमाज़े फ़ज्र अदा कर लेते हैं ! जल्द बाज़ी से काम लेने के बजाए ह़ाजी साहि़बान अपने मुअ़ल्लिम से मिल कर **मिना शरीफ़** में रात गुज़ारने की तरकीब बना लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप के लिये तुलूए़ आफ़्ताब के बा'द बस का बन्दो बस्त हो जाएगा।

चलो अ़-रफ़ात चलते हैं वहां ह़ाजी बनेंगे हम
गुनह से पाक होंगे लौट के जिस दम चलेंगे हम

अ़-रफ़ात शरीफ़ को रवानगी : आज 9 ज़ुल ह़िज्जह को नमाज़े फ़ज्र मुस्तह़ब वक़्त में अदा कर के **लब्बैक** और ज़िक्रो दुआ़ में मश्ग़ूल रहिये यहां तक कि सूरज तुलूअ़ होने के बा'द मस्जिदे ख़ैफ़ शरीफ़ के सामने वाक़ेअ़ **कोहे सबीर** पर चमके, अब धड़क्ते हुए दिल के साथ जानिबे **अ़-रफ़ात** शरीफ़ चलिये और रास्ते भर **लब्बैक** और ज़िक्रो दुरूद की कसरत रखिये। दिल को ख़याले ग़ैर से पाक करने की कोशिश कीजिये कि आज वोह दिन है कि कुछ का **ह़ज** क़बूल किया जाएगा और कुछ को उन्हीं मक़्बूलीन के तुफ़ैल बख़्शा जाएगा। मह़रूम है वोह जो आज मह़रूम रहा, अगर वस्वसे आएं तो उन से भी लड़ाई मत बांधिये कि यूं भी शैत़ान की काम्याबी है कि उस ने आप को किसी और काम पर लगा दिया ! बस आप की एक ही धुन हो कि मुझे अपने रब عَزَّوَجَلَّ से काम है। यूं करने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैत़ान नाकाम व ना मुराद दफ़्अ़ होगा।

महब्बत में अपनी गुमा या इलाही

न पाउं मैं अपना पता या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

राहे अ-रफ़ात की दुआ

(**मिना शरीफ़** से निकल कर येह दुआ पढ़ लीजिये :)

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْھَا خَیْرَ غُدْوَۃٍ غَدَوْتُھَا قَطُّ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी इस सुब्ह़ को तमाम सुब्ह़ों से अच्छी बना दे

وَقَرِّبْھَا مِنْ رِضْوَانِکَ وَاَبْعِدْھَا مِنْ سَخَطِکَ ط

और इसे अपनी ख़ुशनूदी से क़रीब कर और अपनी नाख़ुशी से दूर कर।

اَللّٰھُمَّ اِلَیْکَ تَوَجَّھْتُ وَعَلَیْکَ تَوَکَّلْتُ وَ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह हुवा और तुझ पर मैं ने तवक्कुल किया और

وَجْھَکَ اَرَدْتُّ فَاجْعَلْ ذَنْۢبِیْ مَغْفُوْرًا وَّ

तेरे वज्हे करीम का इरादा किया तो मेरे गुनाह बख़्श और

حَجِّیْ مَبْرُوْرًا وَّارْحَمْنِیْ وَلَا تُخَیِّبْنِیْ

मेरे ह़ज को मबरूर कर और मुझ पर रह़्म फ़रमा और मुझे मह़रूम न कर

وَبَارِكْ لِيْ فِيْ سَفَرِيْ وَاقْضِ بِعَرَفَاتٍ

और मेरे सफ़र में मेरे लिये ब-र-कत अ़ता फ़रमा और अ़-रफ़ात में मेरी

حَاجَتِيْ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ط

ह़ाजत पूरी कर, बेशक तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।

अ़-रफ़ात शरीफ़ में दाख़िला : ऐ लीजिये ! अब आप **अ़-रफ़ात** शरीफ़ के क़रीब आ पहुंचे, तड़प जाइये और आंसूओं को बहने दीजिये कि अ़न्क़रीब आप उस मुक़द्दस मैदान में दाख़िल होंगे कि जहां आने वाला मह़रूम लौटता ही नहीं। जब नज़र **ज-बले रह़मत** को चूमे **लब्बैक** व दुआ़ में और ज़ियादा कोशिश कीजिये कि अब जो दुआ़ मांगेंगे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ क़बूल होगी। दिल संभाले, निगाहें नीची किये **लब्बैक** की पैहम तकरार करते हुए रोते रोते **मैदाने अ़-रफ़ाते पाक** में दाख़िल हों।

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! येह वोह मुक़द्दस मक़ाम है जहां आज लाखों मुसल्मान एक ही लिबास (एह़राम) में मल्बूस जम्अ़ हैं, हर त़रफ़ **लब्बैक** की सदाएं गूंज रही हैं। यक़ीन जानिये बे शुमार औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दो[2] नबी ह़ज़रते सय्यिदुना **ख़िज़्र** और ह़ज़रते सय्यिदुना **इल्यास** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी बरोज़े अ़-रफ़ा

मैदाने **अ-रफ़ाते मुबारक** में तशरीफ़ फ़रमा होते हैं। अब आप बख़ूबी आज के दिन की अहम्मिय्यत का अन्दाज़ा लगा सकते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق से मरवी है : कुछ गुनाह ऐसे हैं जिन का कफ़्फ़ारा वुक़ूफ़े अ-रफ़ा ही है। (या'नी वोह सिर्फ़ वुक़ूफ़े अ-रफ़ात से ही मिटते हैं)

(قوت القلوب ج٢ص١٩٩)

यौमे अ-रफ़ा के दो अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ाइल : 《1》 अ-रफ़े से ज़ियादा किसी दिन में **अल्लाह तआ़ला** अपने बन्दों को जहन्नम से आज़ाद नहीं करता फिर उन के साथ मलाएका पर मुबाहात (या'नी फ़ख़्र) फ़रमाता है। (مسلم ص ٧٠٣ حديث ١٣٤٨) 《2》 अ-रफ़े से ज़ियादा किसी दिन में शैत़ान को ज़ियादा सग़ीर व ज़लील व ह़क़ीर और ग़ैज़ (या'नी सख़्त ग़ुस्से) में भरा हुवा नहीं देखा गया और इस की वजह येह है कि इस दिन में रह़मत का नुज़ूल और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बन्दों के बड़े बड़े गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाना शैत़ान देखता है। (موطّا امام مالك ج١ ص ٣٨٦ حديث ٩٨٢)

किसी ने जब औ़रतों को देखा......: एक शख़्स ने अ-रफ़ा के दिन औ़रतों की त़रफ़ नज़र की, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "आज वोह दिन है कि जो शख़्स कान और आंख और ज़बान को क़ाबू में रखे, उस की मग़्फ़िरत हो जाएगी।" (شُعَبُ الْاِيمان ج٣ ص٤٦١ حديث ٤٠٧١)

या इलाही ह़ज करूं तेरी रिज़ा के वासिते
कर क़बूल इस को मुह़म्मद मुस्त़फ़ा के वासिते

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

अ़-रफ़ात में कंकरों को गवाह करने की ईमान अफ़्रोज़ ह़िकायत : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम वासित़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने एक बार **ह़ज** के मौक़अ़ पर **मैदाने अ़-रफ़ात** में सात **कंकर** हाथ में उठाए और उन से फ़रमाया : ऐ कंकरो ! तुम **गवाह** हो जाओ कि मैं कहता हूं : لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ तरजमा : **अल्लाह तआ़ला** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) उस के बन्दए ख़ास और रसूल हैं । फिर जब सोए तो ख़्वाब में देखा कि **मह़शर** बरपा है और **ह़िसाब** किताब हो रहा है, इन से भी ह़िसाब लिया जाता है और **हुक्मे दोज़ख़** सुनाया जाता है, अब फ़िरिश्ते सूए **जहन्नम** लिये जा रहे हैं जब **जहन्नम** के दरवाज़े पर पहुंचते हैं तो उन सात **कंकरों** में से एक कंकर दरवाज़े पर आ कर **रोक** बन जाता है फिर दूसरे दरवाज़े पर पहुंचे तो दूसरा **कंकर** इसी त़रह़ दरवाज़े के आगे आ गया, यूंही **जहन्नम** के **सातों** दरवाज़ों पर हुवा फिर मलाएका **अ़र्शे मुअ़ल्ला** के पास ले कर ह़ाज़िर हुए ।

अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ इब्राहीम ! तू ने **कंकरों** को अपने **ईमान पर गवाह** रखा तो उन बे जान **पथ्थरों** ने तेरा ह़क़ ज़ाएअ़ न किया, तो मैं तेरी **गवाही** का ह़क़ कैसे ज़ाएअ़ कर सकता हूं ! फिर **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला ने फ़रमान जारी किया कि इसे **जन्नत** की त़रफ़ ले जाओ चुनान्चे जब **जन्नत** की त़रफ़ ले जाया गया तो **जन्नत** का दरवाज़ा बन्द पाया, **कलिमए** पाक की **गवाही** आई और आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه **जन्नत** में दाख़िल हो गए। (دُرّۃ الناصحین ص ۳۷)

ख़ुश नसीब ह़ाजियो और ह़ज्जनो ! : आप भी मैदाने **अ़-रफ़ात** में सात **कंकर** उठा कर मज़्कूरा **कलिमा** या कलिमए शहादत पढ़ कर उन को गवाह बना कर वापस वहीं रख दीजिये नीज़ दुन्या में जहां भी हों मौक़अ़ मिलने पर दरख़्तों, पहाड़ों, दरियाओं, नहरों और बारिश के क़त़रों वग़ैरा वग़ैरा को कलिमा शरीफ़ सुना कर अपने **ईमान का गवाह** बनाते रहिये।

"बाराने रह़मत" के नव ह़ुरूफ़ की निस्बत से वुक़ूफ़े अ़-रफ़ात शरीफ़ के 9 म-दनी फूल

《1》 जब दो पहर क़रीब आए तो नहाओ कि **सुन्नते मुअक्कदा** है और न हो सके तो सिर्फ़ वुज़ू। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1123) **《2》** आज या'नी 9 **ज़ुल ह़िज्जह** को दो पहर ढलने (या'नी

नमाज़े ज़ोहर का वक़्त शुरूअ़ होने) से ले कर दसवीं की सुब्हे़ सादिक़ के दरमियान जो कोई एह़राम के साथ एक लम्ह़े के लिये भी **अ़-रफ़ाते पाक** में दाखि़ल हुवा वोह **ह़ाजी** हो गया, आज यहां का वुक़ूफ़ **ह़ज का रुक्ने आ'ज़म है** ﴾3﴿ अ़-रफ़ात शरीफ़ में वक़्ते ज़ोहर में ज़ोहर व अ़स्र मिला कर पढ़ी जाती है[1] मगर इस की बा'ज़ शराइत़ हैं ﴾4﴿ ह़ाजी को आज बे रोज़ा होना और हर वक़्त बा वुज़ू रहना **सुन्नत** है ﴾5﴿ **ज-बले रह़मत** के क़रीब जहां सियाह पथ्थर का फ़र्श है वहां वुक़ूफ़ करना अफ़्ज़ल है ﴾6﴿ बा'ज़ लोग "**ज-बले रह़मत**" के ऊपर चढ़ जाते और वहां से खड़े खड़े रुमाल हिलाते रहते हैं, आप ऐसा न कीजिये और उन की त़रफ़ भी दिल में बुरा ख़याल न लाइये, आज का दिन औरों के ऐ़ब देखने का नहीं, अपने ऐ़बों पर शर्म-सारी और गिर्या व ज़ारी का है ﴾7﴿ वुक़ूफ़ के लिये खड़ा रहना अफ़्ज़ल है शर्त़ या वाजिब नहीं, बैठा रहा जब भी वुक़ूफ़ हो गया वुक़ूफ़ में निय्यत और रू ब क़िब्ला होना अफ़्ज़ल है ﴾8﴿ नमाज़ों के बा'द फ़ौरन वुक़ूफ़ करना सुन्नत है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1124) ﴾9﴿ **मौक़िफ़** (या'नी ठहरने की जगह) में हर त़रह़ के साए ह़त्ता कि छत्री लगाने से बचिये, हां **जो मजबूर है वोह मा'ज़ूर है।** (ऐज़न, स. 1128) छत्री लगाएं तो मर्द येह एह़तियात़ फ़रमाएं कि सर से मस (TOUCH) न हो वरना कफ़्फ़ारे की सूरतें पैदा हो सकती हैं।

---

1 : आप अपने अपने ख़ैमों ही में ज़ोहर की नमाज़ ज़ोहर के वक़्त में और अ़स्र की नमाज़ अ़स्र के वक़्त में बा जमाअ़त अदा कीजिये।

इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़ास नसीह़त :

बद निगाही हमेशा ह़राम है न कि एह़राम में, न कि मौक़िफ़ या **मस्जिदुल ह़राम** में, न कि **का'बे** के सामने, न कि **त़वाफ़े बैतुल्लाह** में । येह तुम्हारे इम्तिह़ान का मौक़अ़ है, औ़रतों को हुक्म दिया गया है कि यहां मुंह न छुपाओ और तुम्हें हुक्म दिया गया है कि उन की त़रफ़ निगाह न करो, यक़ीन जानो कि येह **बड़े इ़ज़्ज़त वाले बादशाह** की बांदियां हैं और इस वक़्त तुम और वोह सब ख़ास दरबार में ह़ाज़िर हो, बिला तश्बीह शेर का बच्चा उस की बग़ल में हो उस वक़्त कौन उस की त़रफ़ निगाह उठा सकता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वाह़िदे क़ह्ह़ार की कनीज़ें कि उस के दरबारे ख़ास में ह़ाज़िर हैं, उन पर बद निगाही किस क़दर सख़्त होगी । وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰی ط (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** की शान सब से बुलन्द । (پ ۱٤، النحل : ٦٠)) **हां हां ! होशियार !** ईमान बचाए हुए, क़ल्ब व निगाह संभाले हुए, ह़रम (याद रहे ! अ़-रफ़ात हुदूदे ह़रम से बाहर है) वोह जगह है जहां गुनाह के इरादे से भी पकड़ा जाता है और **एक** गुनाह **लाख** के बराबर ठहरता है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ैर की तौफ़ीक़ दे । (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 750)

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّی اللهُ تعالٰی علیه واٰله وسلَّم

गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही
बुरी आ़दतें भी छुड़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 79)

अ़-रफ़ात शरीफ़ की दुआ़एं (अ़-रबी)

﴿1﴾ दो पहर के वक़्त दौराने वुक़ूफ़ मौक़िफ़ में मुन्द-र-जए ज़ैल कलिमए तौह़ीद, सूरए इख़्लास शरीफ़ और फिर इस के बा'द दिया हुवा **दुरूद शरीफ़** सो सो बार पढ़ने वाले की ब हुक्मे ह़दीस **बख़्शिश** कर दी जाती है, नीज़ अगर वोह तमाम अ़-रफ़ात शरीफ़ वालों की सिफ़ारिश कर दे तो वोह भी क़बूल कर ली जाए।

(**अलिफ़**) येह कलिमए तौह़ीद 100 बार पढ़िये :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये

الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِیْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ط

मुल्क है और तमाम ख़ूबियां उसी के लिये हैं, वोही ज़िन्दा करता और मारता है और वोह हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है।

(**बा**) सूरए इख़्लास शरीफ़ 100 बार (**जीम**) येह दुरूद शरीफ़ 100 बार पढ़िये :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى (سَيِّدِنَا) مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ

ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! हमारे सरदार ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज जिस त़रह़ तूने दुरूद

عَلٰى (سَيِّدِنَا) اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ (سَيِّدِنَا)

भेजे हमारे सरदार ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام पर और हमारे सरदार ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام

اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ وَّعَلَيْنَا مَعَهُمْ ط

की आल पर, बेशक तू ता'रीफ़ किया गया बुज़ुर्ग है और हम पर भी उन के साथ ।

तीन बार, फिर कलिमए तौह़ीद एक बार, इस के बा'द येह दुआ़ اَللهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ (2)

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِیْ بِالْهُدٰی وَنَقِّنِیْ وَاعْصِمْنِیْ : तीन बार पढ़िये

ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझ को हिदायत के साथ रहनुमाई कर और पाक कर और परहेज़ गारी के साथ

بِالتَّقْوٰی وَاغْفِرْلِیْ فِی الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰی ط

से मह़फ़ूज़ रख और दुन्या व आख़िरत में मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा ।

इस के बा'द एक बार येह दुआ़ पढ़िये :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ حَجًّا مَّبْرُوْرًا وَّذَنْبًا مَّغْفُوْرًا. ط

ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस ह़ज को मबरूर कर और गुनाह बख़्श दे ।

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كَالَّذِیْ نَقُوْلُ وَخَیْرًا

इलाही ! तेरे लिये ह़म्द है जैसी हम कहते हैं और उस से बेहतर

مِّمَّا نَقُوْلُ ط اَللّٰهُمَّ لَكَ صَلَاتِیْ وَنُسُكِیْ وَ

जिस को हम कहें । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी नमाज़ व इबादत और

مَحْيَایَ وَمَمَاتِیْ وَاِلَیْكَ مَاٰبِیْ وَلَكَ رَبِّ

मेरा जीना और मरना तेरे ही लिये है और तेरी ही त़रफ़ मेरी वापसी है और ऐ परवर दगार !

تُرَاثِیْ ط اَللّٰهُمَّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ

तू ही मेरा वारिस है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी पनाह मांगता हूं अ़ज़ाबे क़ब्र

وَوَسْوَسَةِ الصَّدْرِ وَشَتَاتِ الْاَمْرِ ط

और सीने के वस्वसे और काम की परा-गन्दगी (परेशानी) से।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَسْئَلُكَ مِنْ خَیْرِ مَا تَجِیْٓءُ بِهِ

इलाही ! मैं सुवाल करता हूं उस चीज़ की ख़ैर का जिस को

الرِّیْحُ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا تَجِیْٓءُ بِهِ

हवा लाती है और उस चीज़ के शर से पनाह मांगता हूं जिसे

الرِّیْحُ ط اَللّٰهُمَّ اهْدِنَا بِالْهُدٰی وَزَیِّنَّا

हवा लाती है। इलाही ! हिदायत की त़रफ़ हम को रहनुमाई कर और तक़्वा से हम को

بِالتَّقْوٰی وَاغْفِرْ لَنَا فِی الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰی ط

ज़ीनत इनायत कर और आख़िरत और दुन्या में हम को बख़्श दे।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡۤ اَسۡئَلُكَ رِزۡقًا طَیِّبًا مُّبَارَكًا ط

इलाही ! मैं रिज़्क़े पाकीज़ा और बा ब-र-कत का तुझ से सुवाल करता हूं।

اَللّٰھُمَّ اِنَّكَ اَمَرۡتَ بِالدُّعَآءِ وَقَضَیۡتَ

इलाही ! तू ने दुआ़ करने का हुक्म दिया और क़बूल

عَلٰی نَفۡسِكَ بِالۡاِجَابَةِ وَاِنَّكَ لَاتُخۡلِفُ

करने का ज़िम्मा तू ने ख़ुद लिया और बेशक तू वा'दे के ख़िलाफ़

الۡمِیۡعَادَ وَلَاتَنۡكُثُ عَھۡدَكَ ط اَللّٰھُمَّ مَآ اَحۡبَبۡتَ

नहीं करता और अपने अ़ह्द को नहीं तोड़ता। इलाही ! जो अच्छी बातें तुझे मह़बूब हैं

مِنۡ خَیۡرٍ فَحَبِّبۡهُ اِلَیۡنَا وَیَسِّرۡهُ لَنَا وَمَا

उन्हें हमारी मह़बूब कर दे और हमारे लिये मुयस्सर कर और जो

كَرِھۡتَ مِنۡ شَرٍّ فَكَرِّھۡهُ اِلَیۡنَا وَجَنِّبۡنَاهُ

बुरी बातें तुझे ना पसन्द हैं उन्हें हमारी ना पसन्द कर और हम को उन से बचा

وَلَاتَنۡزِعۡ مِنَّا الۡاِسۡلَامَ بَعۡدَ اِذۡ ھَدَیۡتَنَا ط

और इस्लाम की त़रफ़ तूने हम को हिदायत फ़रमाई तो इस को हम से जुदा न कर।

اَللّٰھُمَّ اِنَّکَ تَرٰی مَکَانِیْ وَتَسْمَعُ کَلَامِیْ

इलाही ! तू मेरे मकान को देखता और मेरे कलाम को सुनता है

وَتَعْلَمُ سِرِّیْ وَعَلَانِیَتِیْ وَلَا یَخْفٰی

और मेरे पोशीदा और ज़ाहिर को जानता है कि मेरे काम में से कोई शै

عَلَیْکَ شَیْءٌ مِّنْ اَمْرِیْ اَنَا الْبَآئِسُ الْفَقِیْرُ

तुझ पर मख़्फ़ी (या'नी छुपी) नहीं । मैं ना मुराद, मोह़ताज,

الْمُسْتَغِیْثُ الْمُسْتَجِیْرُ الْوَجِلُ الْمُشْفِقُ الْمُقِرُّ

फ़रियाद करने वाला, पनाह चाहने वाला, तुझ से डरने वाला,

الْمُعْتَرِفُ بِذَنْبِہٖ اَسْئَلُکَ مَسْأَلَۃَ الْمِسْکِیْنِ

अपने गुनाह का मुक़िर व मो'तरिफ़ (या'नी इक़रार व ए'तिराफ़ करने वाला) हूं, मिस्कीन की त़रह़ तुझ से सुवाल करता हूं

وَاَبْتَھِلُ اِلَیْکَ اِبْتِھَالَ الْمُذْنِبِ الذَّلِیْلِ

और गुनहगार ज़लील की त़रह़ तुझ से आ़जिज़ी करता हूं

وَاَدْعُوْکَ دُعَآءَ الْخَآئِفِ الْمُضْطَرِّ دُعَآءَ

और डरने वाले मुज़्त़र की त़रह़ तुझ से दुआ़ करता हूं,

مَنْ خَضَعَتْ لَكَ رَقَبَتُهٗ وَفَاضَتْ لَكَ

उस की मिस्ल दुआ़ जिस की गरदन तेरे लिये झुकी हुई और आंखें जारी

عَيْنَاهُ وَنَحِلَ لَكَ جَسَدُهٗ وَرَغِمَ اَنْفُهٗ ط

और बदन लागिर और नाक ख़ाक में मिली है।

اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْنِىْ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا

ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! तू अपनी हिदायत से मुझे मह़रूम न कर

وَّكُنْ بِىْ رَءُوْفًا رَّحِيْمًا يَا خَيْرَ الْمَسْئُوْلِيْنَ

और मुझ पर बहुत मेहरबान हो जा ऐ बहुत बेहतर सुवाल किये गए

وَخَيْرَ الْمُعْطِيْنَ ط

और बेहतर देने वाले।

﴾3﴿ अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रावी कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **मेरी और अम्बिया की दुआ़ अ़-रफ़ा के दिन येह है :**

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ط لَهُ الْمُلْكُ

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वोह यक्ता है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये मुल्क है

وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ

और उसी के लिये सब ख़ूबियां हैं, वोह ज़िन्दा है और उसे कभी मौत नहीं आएगी और वोह हर चीज़ पर

قَدِيرٌ ط اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْ سَمْعِيْ نُوْرًا وَّفِيْ

कुदरत रखने वाला है। ऐ **अल्लाह** ! मेरी कुव्वते समाअ़त को नूर कर और

بَصَرِيْ نُوْرًا وَّفِيْ قَلْبِيْ نُوْرًا ط اَللّٰهُمَّ

मेरी नज़र को नूर कर और मेरे दिल में नूर भर दे। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !

اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ وَيَسِّرْ لِيْ اَمْرِيْ ط وَاَعُوْذُ بِكَ

मेरा सीना खोल दे और मेरा काम आसान कर और मैं तेरी पनाह मांगता हूं

مِنْ وَّسَاوِسِ الصَّدْرِ وَتَشْتِيْتِ الْاَمْرِ

सीने के वस्वसों और काम की परा–गन्दगी (इन्तिशार)

وَعَذَابِ الْقَبْرِ ط اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ

और अ़ज़ाबे क़ब्र से। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी पनाह मांगता हूं उस की बुराई से

مَا يَلِجُ فِي الَّيْلِ وَشَرِّ مَا يَلِجُ فِي النَّهَارِ

जो रात में दाख़िल होती है और उस की बुराई से जो दिन में दाख़िल होती है

وَشَرِّ مَا تَهُبُّ بِهِ الرِّيحُ وَشَرِّ بَوَائِقِ الدَّهْرِ ط

और उस की बुराई से जिसे हवा उड़ा लाती है और आफ़ाते दहर की बुराई से।

म-दनी फूल : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى मैदाने अ़-रफ़ात में पढ़ने की बा'ज़ दुआ़एं नक़्ल करने के बा'द फ़रमाते हैं : इस मक़ाम पर पढ़ने की बहुत दुआ़एं किताबों में मज़्कूर हैं मगर इतनी ही में किफ़ायत है और दुरूद शरीफ़ व तिलावते क़ुरआने मजीद सब दुआ़ओं से ज़ियादा मुफ़ीद।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1127)

मैदाने अ़-रफ़ात में दुआ़ खड़े खड़े मांगना सुन्नत है :

प्यारे प्यारे ह़ाजियो ! सिद्क़े दिल से अपने रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ **मु-तवज्जेह** हो जाइये और **मैदाने क़ियामत** में ह़िसाबे आ'माल के लिये उस की बारगाह में ह़ाज़िरी का तसव्वुर कीजिये। निहायत ही ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ के साथ लरज़ते, कांपते, ख़ौफ़ व उम्मीद के मिले जुले जज़्बात के साथ आंखें बन्द किये, सर झुकाए दुआ़ के लिये हाथ आस्मान की त़रफ़ सर से ऊंचे फैलाए **तौबा व इस्तिग़्फ़ार में डूब जाइये,** दौराने दुआ़ वक़्तन फ़ वक़्तन **लब्बैक** की तक्रार रखिये, ख़ूब रो रो कर अपनी, अपने वालिदैन और तमाम उम्मत की **मग़्फ़िरत** की दुआ़ मांगिये, कोशिश कीजिये

कि एक आध क़त्रए आंसू तो टपक ही जाए कि येह **क़बूलिय्यत की दलील है,** अगर रोना न आए तो **रोने जैसी सूरत** ही बना लीजिये कि अच्छों की नक़्ल भी अच्छी है। ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और अहले बैते अत़्हार का **वसीला** अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में पेश कीजिये। हुज़ूरे ग़ौसे पाक, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى का वासित़ा दीजिये, हर वली और हर आ़शिक़े नबी का सदक़ा मांगिये। आज रह़मत के दरवाज़े खोले गए हैं, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मांगने वाला नाकाम नहीं होगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत की घन्घोर घटाएं झूम झूम कर आ रही हैं, **रह़मतों की मूसला धार बारिश** बरस रही है। सारे का सारा **अ़-रफ़ात** अन्वारो तजल्लियात और **रह़मतो ब-रकात** में डूबा हुवा है ! कभी अपने गुनाहों और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ह्हारी और उस के अ़ज़ाब से पनाह मांगते हुए बैद की त़रह़ **लरज़िये** तो कभी ऐसे जज़्बात हों कि उस की रह़मते बे पायां की उम्मीद से मुरझाया हुवा दिल गुले नौ शिगुफ़्ता की त़रह़ खिल उठे।

अ़द्ल करे तां थरथर कम्बन उच्चियां शानां वाले
फ़ज़्ल करे तां बख़्शे जावन मैं जहे मुंह काले

दुआए अ़-रफ़ात (उर्दू)

(दौराने दुआ वक़्तन फ़ वक़्तन **लब्बैक** व दुरूद शरीफ़ पढ़िये)

दोनों[2] हाथ इस त़रह़ उठाइये कि सीने, कन्धे या चेहरे की सीध में रहें या इतने बुलन्द हो जाएं कि बग़ल की रंगत नज़र आ जाए, चारों सूरतों में हथेलियां आस्मान की त़रफ़ फैली हुई रहें कि दुआ का क़िब्ला आस्मान है। अब यूं दुआ शुरूअ़ कीजिये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط يَآ اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ يَآ اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ يَآ اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ[1]

يَا رَبَّنَا يَا رَبَّنَا يَا رَبَّنَا يَا رَبَّنَا يَا رَبَّنَا.[2]

जिस क़दर दुआए मासूरा (या'नी कुरआनो ह़दीस की दुआएं) याद

मदीना

1 : म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : इस्मे पाक "اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْن" पर एक फ़िरिश्ता **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुक़र्रर फ़रमाया है जो शख़्स इसे (या'नी اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْن) तीन बार कहता है फ़िरिश्ता निदा करता है : "मांग कि अर-ह़मुर्राह़िमीन तेरी त़रफ़ **मु-तवज्जेह** हुवा।" (अह़सनुल विआ़, स. 70)

2 : सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो शख़्स इज्ज़ (या'नी लाचारी) के वक़्त पांच बार "**يَارَبَّنَا**" कहे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस चीज़ से अमान बख़्शे जिस से ख़ौफ़ रखता है और वोह जो दुआ मांगता है वोह अ़त़ा करता है। (अह़सनुल विआ़, स. 71)

हों, वोह अ़-रबी में अ़र्ज़ करने के बा'द अपने दिली जज़्बात अपनी मा-दरी ज़बान में अपने रह़मत वाले परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के दरबारे गुहर बार में इस यक़ीने मोह़्कम के साथ कि आप की दुआ़ क़बूल हो रही है इस त़रह़ अ़र्ज़ कीजिये :

يَا اَللّٰہُ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيْمُ तेरे करोड़हा करोड़ एह़सान कि तूने मुझे इन्सान बनाया, **मुसल्मान किया** और मेरे हाथों में दामने रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अ़त़ा फ़रमाया । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ऐ मुह़म्मदे अ़-रबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ ! मैं किस ज़बान से तेरा शुक्र अदा करूं कि तू ने मुझे ह़ज का शरफ़ बख़्शा । मेरी किस क़दर ख़ुश बख़्ती है कि मैं उस मैदाने अ़-रफ़ात के अन्दर ह़ाज़िर हूं जिसे यक़ीनन **मीठे मीठे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **क़दम बोसी का शरफ़** मिला है, दुन्या के कोने कोने से आने वाले **लाखों मुसल्मान** आज यहां जम्अ़ हुए हैं, इन में यक़ीनन तेरे **दो[2] नबी** ह़ज़रते **इल्यास** व ह़ज़रते **ख़िज़्र** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और बे शुमार **औलियाए किराम** भी मौजूद हैं । चुनान्चे ऐ रब्बे रसूले करीम عَزَّوَجَلَّ ! आज जो रह़मत की बारिशें नबियों और वलियों पर बरस रही हैं उन्हीं की सदक़े एक आध क़त़रा मुझ गुनहगार पर भी बरसा दे ।

या अल्लाहु या रह़मानु या ह़न्नानु या मन्नानु
बख़्श दे बख़्शे हुओं का सदक़ा या अल्लाह मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 107)

(अव्वल आख़िर दुरूदे पाक और तीन बार **लब्बैक** पढ़िये)

या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ **!** मेरी कमज़ोरी और ना तुवानी तुझ पर आशकार है, आह ! मैं तो वोह कमज़ोर बन्दा हूं कि न गर्मी बरदाश्त कर सकता हूं न सर्दी, मुझ में खटमल, मच्छर के डंक की भी सहार नहीं ह़त्ता कि अगर च्यूंटी भी काट ले तो बेचैन हो जाता हूं, **आह !** अगर कोई परों वाला मा'मूली सा कीड़ा कपड़ों में घुस कर पर फड़-फड़ाता है तो मुझे उछाल कर रख देता है, आह ! हाए मेरी बरबादी ! अगर गुनाहों के सबब मुझे क़ब्र में तेरे क़ह्रो ग़ज़ब की आग ने घेर लिया तो मैं क्या करूंगा ! **आह !** अगर मेरे कफ़न में सांप और बिच्छू घुस गए तो मेरा क्या बनेगा ! ऐ रब्बे मुह़म्मद عَزَّوَجَلَّ ! ब तुफ़ैले मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم करम कर दे, मुझे नज़्अ़ व क़ब्र व ह़श्र की तक्लीफ़ों से बचा ले, यक़ीनन तेरे करम की फ़क़त़ एक नज़र हो जाए तो मुझ पापी व बदकार के दोनों जहां संवर जाएं, ऐ रब्बे मह़बूब عَزَّوَجَلَّ ! मुझ पर अपना फ़ज़्लो एह़सान फ़रमा और मुझ से हमेशा हमेशा के लिये राज़ी हो जा और मुझे अपना पसन्दीदा बन्दा बना ले।

गुनाहगार तृलब गारे अ़फ़्वो रह़मत है
अ़ज़ाब सहने का किस में है ह़ौसला या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 97)

(अव्वल आख़िर दुरूदे पाक और तीन बार **लब्बैक** पढ़िये)

या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ **!** तेरे प्यारे रसूल, मुह़म्मदे म-दनी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तेरा येह इर्शाद मुझ तक पहुंचा

चुके हैं कि ''**ऐ इब्ने आदम !** जब तक तू मुझ से दुआ़ करता रहेगा और पुर उम्मीद रहेगा मैं तेरे गुनाहों को बख़्शता रहूंगा, **ऐ इब्ने आदम !** अगर तेरे गुनाह आस्मान तक पहुंच जाएं और फिर भी अगर तू मुझ से बख़्शिश त़लब करेगा तो मैं मुआ़फ़ कर दूंगा और मुझे कोई परवाह न होगी, **ऐ इब्ने आदम !** अगर तू ज़मीन भर गुनाहों के साथ मेरे पास आएगा मगर इस ह़ाल में कि तू ने कोई कुफ़्र व शिर्क न किया हो तो मैं ज़मीन भर रह़मत व मग़्फ़िरत के साथ तेरे पास पहुंचूंगा।''[1] **तो ऐ मेरे मक्की म-दनी मह़बूब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मा'बूद عَزَّوَجَلَّ ! अगर्चे मैं ने गुनाहों से ज़मीन व आस्मान भर दिये हैं मगर फिर भी मुझे तेरी रह़मत पर नाज़ है, इलाही عَزَّوَجَلَّ ! मेरे **ग़ौसे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم, मेरे **ग़रीब नवाज़** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه और मेरे **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن का और मेरे **मुर्शिदे करीम** का वासित़ा मेरी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा, मेरी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा, मेरी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा।

तू बे ह़िसाब बख़्श कि हैं बे शुमार जुर्म
देता हूं वासित़ा तुझे शाहे ह़िजाज़ का

(ज़ौक़े ना'त)

(अव्वल आख़िर दुरूदे पाक और तीन बार **लब्बैक** पढ़िये)

ऐ रब्बे मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! मैं इक़रार करता हूं कि मैं

[1] ترمذی ج ٥ ص ٣١٨ حدیث ٣٥٥١

ने बड़े बड़े गुनाहों का इरतिकाब किया है मगर येह सब के सब तेरी शाने अ़फ़्वो दर गुज़र के सामने बहुत ही छोटे हैं, ऐ मेरे प्यारे प्यारे मालिक عَزَّوَجَلَّ ! यक़ीनन तेरी मग़्फ़िरत व बख़्शिश गुनहगारों को ढूंडती है और मुझ से बढ़ कर इस **मैदाने अ़-रफ़ात** में कोई **मुजरिम न होगा !** ऐ मेरे **म-दनी नबी** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रब्बे ग़नी عَزَّوَجَلَّ ! मैं अपने गुनाहों पर शरमिन्दा हूं और उम्मीद करता हूं कि तेरी बख़्शिश का इन्आ़म मुझ गुनहगार पर ज़रूर होगा, **या इलाहल आ़-लमीन** عَزَّوَجَلَّ **!** तुझे **ख़ु-लफ़ाए राशिदीन** عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और उम्महातुल मुअमिनीन عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का वासित़ा, बीबी फ़ात़िमा और ह़-सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم, बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और उवैस क़र्नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का सदक़ा, मेरी भी **बख़्शिश** फ़रमा और मेरे मुर्शिदे करीम, मेरे असातिज़ए किराम, तमाम उ़-लमा व मशाइख़े अहले सुन्नत और मेरे वालिदैन और घर के तमाम अफ़राद को बख़्श दे और सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा।

दवाम दीन पे अल्लाह मर्ह़मत फ़रमा
हमारी बल्कि सब उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा

(अव्वल आख़िर दुरूदे पाक और तीन बार **लब्बैक** पढ़िये)

ऐ मुह़म्मदे मा'सूम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ुदाए ह़य्यो क़य्यूम ! बेशक मुसल्मानों का स-दक़ा व ख़ैरात करना तू पसन्द फ़रमाता है। तो ऐ जवादो करीम मुझ से बढ़ कर

नेकियों के मुआ़-मले में ग़रीब व मुफ़्लिस कौन होगा ! और देने वालों में तुझ से बढ़ कर अ़ता करने वाला कौन होगा ! तो ऐ मालिके मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे दीन पर इस्तिक़ामत, अपनी दाइमी रिज़ा, जहन्नम से अमान और बे ह़िसाब मग़्फ़िरत की ख़ैरात से नवाज़ कर मुझ पर एह़साने अ़ज़ीम फ़रमा ।

हुसैन इब्ने अ़ली के लाडलों का वासित़ा मौला

बचा ले हम को तू नारे जहन्नम से बचा मौला

(अव्वल आख़िर दुरूदे पाक और तीन बार **लब्बैक** पढ़िये)

ऐ अपने मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के **पसीने में ख़ुश्बू** पैदा करने वाले ! ऐ मरीज़ों को शिफ़ा देने वाले ! तमाम मुसल्मानों में सब से बड़ा **मह़ब्बते** दुन्या का मरीज़ और गुनाहों का बीमार "**साइले शिफ़ा**" बन कर तेरी बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर है, **या शाफ़ियल अमराज़ !** मैं हुब्बे दुन्या और गुनाहों की बीमारी से सिह़्ह़त याबी का सुवाल करता हूं, ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! **सय्यिदुल अबरार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े मुझे शिफ़ाए कामिला अ़ता फ़रमा, मुझे **नेक** बना दे और मुझे **मरीज़े इश्क़े मुस्त़फ़ा** बना और मुझे **ग़मे मदीना** से नवाज़ दे ।

मैं गुनाहों में लिथड़ा हुवा हूं बद से बदतर हूं बिगड़ा हुवा हूं
अ़फ़्वे जुर्मो क़ुसूरो ख़त़ा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

(अव्वल आख़िर दुरूदे पाक और तीन बार **लब्बैक** पढ़िये)

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! तुझे तमाम अम्बिया व सह़ाबा व अहले बैत व जुम्ला औलिया का वासित़ा हमारे बीमारों को शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा, क़र्ज़दारों के क़र्ज़े उतार दे, तंगदस्तों को फ़राख़ दस्ती दे, बे रोज़गारों को ह़लाल आसान रोज़ी अ़त़ा फ़रमा, बे औलादों को बिग़ैर ऑपरेशन के आ़फ़िय्यत के साथ नेक औलाद अ़त़ा कर, जिन के रिश्तों में रुकावटें हैं उन्हें नेक रिश्ते नसीब फ़रमा, या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! मुसल्मानों को फ़िरंगी फ़ेशन की आफ़त से छुड़ा कर **इत्तिबाए़ सुन्नत** की सआ़दत इनायत फ़रमा, या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! जो बे जा मुक़द्दमों में घिरे हैं उन्हें नजात अ़त़ा फ़रमा, जिन के **रूठे** हैं उन को मना दे, जिन के बिछड़े हैं उन को **मिला दे,** जिन के घरों में **ना चाक़ियां** हैं उन को आपस में शीरो शकर कर दे, या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! जिन पर सेह़र है या जो आसेब ज़दा हैं उन्हें सेह़र व आसेब से छुटकारा अ़त़ा फ़रमा, या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! मुसल्मानों को **आफ़ातो बलिय्यात** से बचा, दुश्मनों की दुश्मनी, शरीरों के शर, ह़ासिदों के ह़सद और बद निगाहों की निगाहे बद से मह़फ़ूज़ व मामून फ़रमा।

वोह कि अ़र्से से बीमार हैं जो *जिन्नो जादू से बेज़ार हैं जो*
अपनी रह़मत से उन को शिफ़ा की *मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे*

(अव्वल आख़िर दुरूदे पाक और तीन बार **लब्बैक** पढ़िये)

या रब्बे करीम ! बीबी फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का वासित़ा, सय्यिदह ज़ैनब, सय्यिदह सकीना, बीबी ह़व्वा, बीबी सारह, बीबी हाजिरा, बीबी आसिया और बीबी मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ का सदक़ा, हमारी माओं बहनों और बहू बेटियों को **शर्मो ह़या की चादर** नसीब फ़रमा और उन्हें हर ना मह़रम मअ़ अपने देवर व जेठ, चचाज़ाद, ख़ालाज़ाद, फूफीज़ाद, मामूंज़ाद, बहनोई, फूफा और ख़ालू,[1] सब से **सह़ीह़ शर-ई पर्दा** करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा ।

दे दे पर्दा मेरी बेटियों को *माओं बहनों सभी औ़रतों को*
भीक दे दे तू अपनी अ़त़ा की *मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे*

(अव्वल आख़िर दुरूदे पाक और तीन बार **लब्बैक** पढ़िये)

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **!** ऐसा अ़मल जो तेरी बारगाह में मक़्बूल न हो, ऐसा दिल जो तेरी याद से ग़ाफ़िल रहे, ऐसी आंख जो फ़िल्में डिरामे देखती और बद निगाही करती रहे, ऐसे कान जो

मदीना

1 : बद क़िस्मती से इन तमाम अ़ज़ीज़ों से आज कल उ़मूमन पर्दा नहीं किया जाता ह़ालां कि शरीअ़त ने इन के साथ भी पर्दे का हुक्म दिया है । इन की आपस में बे पर्दगी और बे तकल्लुफ़ी में सख़्त गुनहगारी और अ़ज़ाबे नार की ह़क़दारी है ।

गाने बाजे और ग़ीबत व चुग़ली सुनते रहें, ऐसे पाउं जो बुरी मजलिसों की त़रफ़ चल कर जाते रहें, ऐसे हाथ जो ज़ुल्म के लिये उठते रहें, ऐसी ज़बान जो फ़ुज़ूल गोई और गाली गलोच से बाज़ न आए, ऐसा दिमाग़ जो बुरे मन्सूबे बांधता रहे और ऐसे सीने से जो मुसल्मानों के कीने से लबरेज़ हो **तेरी पनाह मांगता हूं,** ऐ मेरे प्यारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मक्के मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और तेरी अ़त़ा से कुल ख़ुदाई के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदके़ जुम्ला मुज्तहिदीन व अइम्मए अर-बअ़ा और सलासिले अर-बअ़ा के तमाम औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के वसीले से अपना ताबेए़ फ़रमान बना कर **मुझ पर फ़ज़्लो एह़सान** फ़रमा ।

ऐ **ख़ुदाए मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ **!** तुझे हर आ़शिके़ रसूल का वासित़ा, मुझे ग़मे मुस्त़फ़ा में रोने वाली आंख और तड़पने वाला दिल इनायत फ़रमा और सच्चा आ़शिके़ रसूल बना और मेरा सीना **मह़ब्बते** ह़बीब का मदीना बना दे और मुझे बे वफ़ा दुन्या का नहीं मदीने का दीवाना बना दे ।

पीछा मेरा दुन्या की मह़ब्बत से छुड़ा दे
या रब ! मुझे दीवाना मदीने का बना दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 100)

(अव्वल आख़िर दुरूदे पाक और तीन बार **लब्बैक** पढ़िये)

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! तुझे का'बए मुशर्रफ़ा और गुम्बदे

ख़ज़्रा का वासित़ा, मेरे **ह़ज व ज़ियारत** और मेरी जाइज़ दुआ़एं जो मेरे ह़क़ में बेहतर हों वोह क़बूल फ़रमा और मुझे **मुस्तजाबुद्दा'वात** बना दे मेरी और मैदाने अ़-रफ़ात में ह़ाज़िर हर ह़ाजी की मग़्फ़िरत फ़रमा, और मुझे हर साल **ह़ज व ज़ियारते मदीना** से मुशर्रफ़ फ़रमा और मुझे **मदीनए पाक** में ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़्रा जल्वए मह़बूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में आ़फ़िय्यत के साथ शहादत, **जन्नतुल बक़ीअ़** में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में अपने **प्यारे ह़बीब** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा। या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! मुझे जिन जिन **इस्लामी भाइयों** और **इस्लामी बहनों** ने दुआ़ओं के लिये कहा है, ब तुफ़ैले **ताजदारे मदीना** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन सब की हर जाइज़ मुराद में उन की बेहतरी पर नज़र फ़रमा और उन सब की **बख़्शिश** कर दे। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

जिन जिन मुरादों के लिये अह़बाब ने कहा
पेशे ख़बीर क्या मुझे ह़ाजत ख़बर की है

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

(अव्वल आख़िर दुरूदे पाक और तीन बार **लब्बैक** पढ़िये)

ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द तक दुआ़ जारी रखिये ! :

इसी त़रह़ आहो ज़ारी के साथ दुआ़ जारी रखिये यहां तक कि आफ़्ताब डूब जाए और रात का हलका सा ह़िस्सा आ जाए, इस से पहले

जाए वुक़ूफ़ (या'नी जहां आप ठहरे हुए हैं) से चल पड़ना मन्अ़ है और ग़ुरूबे आफ़्ताब से क़ब्ल हुदूदे **अ़-रफ़ात** से बाहर निकल जाना **ह़राम** है और **दम** लाज़िम, अगर ग़ुरूबे आफ़्ताब से क़ब्ल ही वापस अ़-रफ़ात में दाख़िल हो गया तो दम साक़ित़ हो जाएगा। याद रहे ! आज **ह़ाजी** को नमाज़े मग़रिब यहां नहीं बल्कि इ़शा के वक़्त में **मुज़्दलिफ़ा** में मग़रिब व इ़शा मिला कर पढ़नी है।

गुनाहों से पाक हो गए : प्यारे प्यारे ह़ाजियो ! आप के लिये येह ज़रूरी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सच्चे वा'दों पर भरोसा कर के यक़ीन कर लीजिये कि आज मैं गुनाहों से ऐसा पाक हो गया हूं जैसा कि उस दिन जब कि **मां के पेट से पैदा हुवा था।** अब कोशिश कीजिये कि आयन्दा गुनाह न हों। नमाज़, रोज़ा, ज़कात वग़ैरा में हरगिज़ कोताही न हो, फ़िल्मों डिरामों और गानों बाजों नीज़ ह़राम रोज़ी कमाने, दाढ़ी मुंडाने या एक मुठ्ठी से घटाने, मां बाप का दिल दुखाने वग़ैरा वग़ैरा गुनाहों में मुलव्वस हो कर कहीं फिर आप **शैत़ान के चुंगल** में न फंस जाएं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुज़्दलिफ़ा को रवानगी : जब गुरूबे आफ़्ताब का यक़ीन हो जाए तो **अ़-रफ़ात शरीफ़** से जानिबे **मुज़्दलिफ़ा शरीफ़** चलिये, रास्ते भर ज़िक्रो दुरूद और दुआ़ व **लब्बैक** व ज़ारी व बुका (या'नी रोने धोने) में मसरूफ़ रहो। कल मैदाने **अ़-रफ़ात शरीफ़** में **हुक़ूक़ुल्लाह** मुआ़फ़ हुए यहां **हुक़ूक़ुल इबाद** मुआ़फ़ फ़रमाने का वा'दा है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1131, 1133) **ऐ लीजिये ! मुज़्दलिफ़ा** शरीफ़ आ गया ! हर त़रफ़ चहल पहल और ख़ूब रौनक़ लगी हुई है, मुज़्दलिफ़ा के शुरूअ़ में काफ़ी रश होता है, आप बे धड़क आगे से ख़ूब आगे बढ़ते चले जाइये إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अन्दर की त़रफ़ काफ़ी कुशादा जगह मिल जाएगी मगर येह एह़तियात़ रहे कि कहीं मिना शरीफ़ की ह़द में दाख़िल न हो जाएं। पैदल चलने वालों के लिये मश्वरा है कि **मुज़्दलिफ़ा** में दाख़िल होने से पहले पहले इस्तिन्जा वुज़ू की तरकीब बना लें वरना भीड़ में सख़्त आज़्माइश हो सकती है।

मग़रिब व इ़शा मिला कर पढ़ने का त़रीक़ा : यहां आप को एक ही अज़ान और एक ही इक़ामत से नमाज़े मग़रिब व इ़शा वक़्ते इ़शा में अदा करनी हैं, लिहाज़ा अज़ान व इक़ामत के बा'द पहले मग़रिब के **तीन[3] फ़र्ज़** अदा कर लीजिये, सलाम फेरते ही फ़ौरन इ़शा के फ़र्ज़ पढ़िये फिर **मग़रिब की सुन्नतें**, नफ़्लें (अव्वाबीन) इस के बा'द **इ़शा की सुन्नतें**, नफ़्लें और वित्र व नवाफ़िल अदा कीजिये। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1132)

कंकरियां चुन लीजिये : आज की शब बा'ज़ अकाबिर उ़-लमा رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی के नज़्दीक **लै-लतुल क़द्र** से भी **अफ़्ज़ल** है, येह रात ग़फ़्लत या खुश गप्पियों में ज़ाएअ़ करना सख़्त महरूमी है, हो सके तो सारी रात **लब्बैक** और **ज़िक्रो दुरूद** में गुज़ारिये। (ऐज़न, स. 1133) रात ही में **शैतानों** को मारने के लिये पाक जगह से **उन्चास कंकरियां खजूर की गुठली** की साइज़ के बराबर चुन लीजिये बल्कि कुछ ज़ियादा ले लीजिये ताकि वार ख़ाली जाने वग़ैरा की सूरत में काम आ सकें, इन को तीन3 बार धो लीजिये, **कंकरियां** बड़े पथ्थर को तोड़ कर न बनाइये। नापाक जगह से या मस्जिद से या जमरे के पास से कंकरियां मत लीजिये।

एक ज़रूरी एह़तियात़ : आज नमाज़े फ़ज्र अव्वल वक़्त में अदा करना **अफ़्ज़ल** है मगर नमाज़ उस वक़्त अदा कीजिये जब कि सुब्हे सादिक़ यक़ीनी तौ़र पर हो जाए। उ़मूमन मुअ़ल्लिम के आदमी बहुत जल्दी मचाते हैं और इब्तिदाए वक़्ते फ़ज्र से पहले ही "**सलाह सलाह**" चिल्लाना शुरूअ़ कर देते हैं और बा'ज़ **हुज्जाज** वक़्त से क़ब्ल ही नमाज़ अदा कर लेते हैं ! आप ऐसा मत कीजिये बल्कि दूसरों को भी नरमी के साथ **नेकी की दा'वत दीजिये** कि अभी वक़्त नहीं हुवा, जब **तोप का गोला**[1] छूटे तब **नमाज़** अदा कीजिये।

मदीना

1 : सुब्हे सादिक़ के वक़्त मुज़्दलिफ़ा में तोप का गोला चलाया जाता है ताकि हुज्जाज को फ़ज्र की नमाज़ के वक़्त का पता चल जाए।

वुक़ूफ़े मुज़्दलिफ़ा : मुज़्दलिफ़ा में रात गुज़ारना **सुन्नते मुअक्कदा** है मगर इस का **वुक़ूफ़ वाजिब** है। वुक़ूफ़े मुज़्दलिफ़ा का वक़्त सुब्हे़ सादिक़ से ले कर तुलूए़ आफ़्ताब तक है, इस के दरमियान अगर एक लम्ह़ा भी यहां गुज़ार लिया तो **वुक़ूफ़** हो गया, ज़ाहिर है कि जिस ने **फ़ज्र** के वक़्त में मुज़्दलिफ़ा के अन्दर **नमाज़े फ़ज्र** अदा की उस का वुक़ूफ़ सह़ीह़ हो गया, जो कोई सुब्हे़ सादिक़ से पहले ही मुज़्दलिफ़ा से चला गया उस का **वाजिब** तर्क हो गया, लिहाज़ा उस पर **दम वाजिब** है। हां, औ़रत, बीमार या ज़ईफ़ या कमज़ोर कि जिन्हें भीड़ के सबब ईज़ा पहुंचने का अन्देशा हो अगर मजबूरन चले गए तो कुछ नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1135)

कोहे मश्अ़रुल ह़राम पर अगर जगह न मिले तो उस के दामन में और अगर येह भी न हो सके तो **वादिये मुह़स्सिर**[1] के सिवा कि यहां वुक़ूफ़ करना ना जाइज़ है जहां जगह मिल जाए वुक़ूफ़ कीजिये और **वुक़ूफ़े अ़-रफ़ात** वाली तमाम बातें यहां भी मल्ह़ूज़ रखिये या'नी **लब्बैक** की कसरत कीजिये और **ज़िक्रो दुरूद** और दुआ़ में मश्ग़ूल हो जाइये। (ऐज़न, स. 1133)

1 : येह मिना और मुज़्दलिफ़ा के बीच में है और येह इन दोनों की ह़ुदूद से ख़ारिज मुज़्दलिफ़ा से मिना को जाते हुए बाएं (या'नी उलटे) हाथ को जो पहाड़ पड़ता है उस की चोटी से शुरूअ़ हो कर 545 हाथ तक है। यहां अस्ह़ाबे फ़ील (या'नी हाथी वाले) आ कर ठहरे थे और उन पर अ़ज़ाबे अबाबील नाज़िल हुवा था, यहां वुक़ूफ़ जाइज़ नहीं। इस जगह से जल्द गुज़रना और अ़ज़ाबे इलाही से पनाह मांगनी चाहिये।

اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! जो कुछ मांगेंगे वोह पाएंगे कि कल अ़-रफ़ात शरीफ़ में **हुक़ूक़ुल्लाह** मुआ़फ़ हुए थे यहां हुक़ूक़ुल इ़बाद मुआ़फ़ फ़रमाने का वा'दा है । (हुक़ूक़ुल इ़बाद मुआ़फ़ होने की तफ़्सील **सफ़ह़ा** 18 पर गुज़री)

नमाज़ से क़ब्ल मगर तुलूए़ फ़ज्र के बा'द यहां से चला गया या तुलूए़ आफ़्ताब के बा'द गया तो **बुरा** किया मगर उस पर **दम** वग़ैरा वाजिब नहीं । (ऐज़न)

मुज़्दलिफ़ा से मिना जाते हुए रास्ते में पढ़ने की दुआ़ : जब तुलूए़ आफ़्ताब में दो रक्अ़त पढ़ने का वक़्त बाक़ी रह जाए तो सूए **मिना शरीफ़** रवाना हो जाइये और रास्ते भर **लब्बैक** और **ज़िक्रो दुरूद** की तक्रार रखिये । और येह दुआ़ पढ़िये :

اَللّٰھُمَّ اِلَیْکَ اَفَضْتُ وَمِنْ عَذَابِکَ اَشْفَقْتُ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी त़रफ़ वापस हुवा और तेरे अ़ज़ाब से डरा

وَاِلَیْکَ رَجَعْتُ وَمِنْکَ رَھِبْتُ فَاقْبَلْ

और तेरी त़रफ़ रुजूअ़ किया और तुझ से ख़ौफ़ किया, तू मेरी इ़बादत क़बूल

نُسُکِیْ وَعَظِّمْ اَجْرِیْ وَارْحَمْ تَضَرُّعِیْ

कर और मेरा अज्र ज़ियादा कर और मेरी आ़जिज़ी पर रह़्म कर

وَاقْبَلْ تَوْبَتِیْ وَاسْتَجِبْ دُعَآئِیْ ط

और मेरी तौबा क़बूल कर और मेरी दुआ़ मुस्तजाब (या'नी मक़्बूल) फ़रमा।

मिना नज़र आए तो येह दुआ़ पढ़िये

मिना शरीफ़ नज़र आए तो (अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ) वोही दुआ़ पढ़िये जो मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا से आते हुए मिना देख कर पढ़ी थी। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ مِنًى فَامْنُنْ عَلَيَّ بِمَا مَنَنْتَ بِهٖ عَلٰٓى اَوْلِيَآئِكَ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! येह मिना है मुझ पर वोह एह्सान फ़रमा जो तूने अपने औलिया पर फ़रमाया।

या इलाही फ़ज़्ल कर तुझ को मिना का वासित़ा
ह़ाजियों का वासित़ा कुल औलिया का वासित़ा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दसवीं ज़ुल ह़िज्जह का पहला काम रम्य : **मुज़्दलिफ़ा शरीफ़** से **मिना शरीफ़** पहुंच कर सीधे **जम्रतुल अ़-क़बह** या'नी बड़े शैत़ान की त़रफ़ तशरीफ़ लाइये, आज सिर्फ़ इसी एक को कंकरियां मारनी हैं। पहले का'बए शरीफ़ की सम्त मा'लूम कर लीजिये फिर जमरे से कम अज़ कम पांच[5] हाथ (या'नी तक़रीबन ढाई गज़) दूर

(ज़ियादा की कोई क़ैद नहीं) इस त़रह़ खड़े हों कि **मिना** आप के सीधे हाथ पर और **का'बा शरीफ़** उलटे हाथ की त़रफ़ रहे और मुंह जमरे की त़रफ़ हो, सात कंकरियां अपने उलटे हाथ में रख लीजिये बल्कि दो तीन ज़ाइद ले लीजिये।[1] अब सीधे हाथ की चुटकी में ले कर और हाथ अच्छी त़रह़ उठा कर कि बग़ल की रंगत ज़ाहिर हो हर बार بِسۡمِ اللّٰہِ اَللّٰہُ اَکۡبَر कहते हुए एक एक कर के **सात कंकरियां** इस त़रह़ मारिये कि तमाम कंकरियां **जमरे** तक पहुंचें वरना कम अज़ कम तीन[3] हाथ के फ़ासिले तक गिरें। पहली कंकरी मारते ही **लब्बैक** कहना **मौक़ूफ़** कर दीजिये जब सात पूरी हो जाएं तो वहां न रुकिये, न सीधे जाइये न दाएं बाएं बल्कि फ़ौरन **ज़िक्रो दुआ़** करते हुए पलट आइये। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1193) (फ़ौरन पलटना ही सुन्नत है मगर अब जदीद ता'मीरात के सबब पलटना मुम्किन नहीं रहा लिहाज़ा कंकरियां मार कर कुछ आगे बढ़ कर "यू टर्न" की तरकीब करनी होगी)

रम्य के वक़्त एह़तियात़ के 5 म–दनी फूल

ख़ुश नसीब ह़ाजियो ! रम्ये जमरात के वक़्त ख़ुसूसन दसवीं की सुब्ह़ ह़ाजियों का ज़बर दस्त रेला होता है और बा'ज़ अवक़ात इस में लोग कुचले भी जाते हैं। **सगे मदीना**

1 : काश ! इस वक़्त दिल में निय्यत ह़ाज़िर हो जाए कि मुझ पर जो बुरी ख़्वाहिशात मुसल्लत़ हैं उन्हें मार भगाने में काम्याब हो जाऊं।

मदीना عُفِیَ عَنۡہُ ने 1400 सि.हि. में दसवीं को सुब्ह़ **मिना शरीफ़** में अपनी आंखों से येह लरज़ा ख़ैज़ मन्ज़र देखा था कि लाशों को उठा उठा कर एक क़ितार में लिटाया जा रहा था मगर अब जगह में काफ़ी तौसीअ़ कर दी गई है नीचे के ह़िस्से के इ़लावा ऊपर चार[4] मन्ज़िलें मज़ीद बना दी गई हैं इस लिये हुजूम काफ़ी तक़्सीम हो जाता है। **कुछ एह़तियातें** अ़र्ज़ करता हूं :

﴾1﴿ 10वीं की सुब्ह़ काफ़ी हुजूम होता है, दो पहर के तीन चार बजे भीड़ कम हो जाती है अब अगर इस्लामी बहनें भी साथ हों तो ह़रज नहीं ऊपर की मन्ज़िल से रम्य करेंगे तो रश और भी कम मिलेगा और खुली हवा भी मिल सकेगी ﴾2﴿ रम्य में छड़ी, छत्री और दीगर सामान साथ न ले जाइये, इन्तिज़ामिया के अहल कार ले लेते हैं, वापस मिलना दुश्वार होता है। हां, छोटा सा स्कूल बेग अगर कमर पर लटका हुवा हो तो बा'ज़ अवक़ात ले जाने देते हैं मगर 10वीं की रम्य में येह भी न ही ले जाएं तो बेहतर है कि रोक लिया तो आप आज़्माइश में पड़ सकते हैं। 11 और 12 की रम्य में छोटी मोटी चीज़ें ले जाने के मुआ़-मले में इन्तिज़ामिया की त़रफ़ से सख़्ती क़दरे कम हो जाती है ﴾3﴿ व्हील चेर वालों के लिये रम्य का मुनासिब वक़्त तीनों दिन बा'द नमाज़े अ़स्र है ﴾4﴿ **कंकरियां** मारते वक़्त कोई चीज़ हाथ से छूट कर गिर जाए या पाउं से चप्पल निकलती मह़सूस हो तो हुजूम होने की सूरत में हरगिज़ मत झुकिये ﴾5﴿ जब कुछ रु-फ़क़ा मिल कर **रम्य**

करना चाहें तो पहले ही से वापस मिलने की कोई क़रीबी जगह मुक़र्रर कर के उस की निशानी याद रख लीजिये वरना बिछड़ जाने की सूरत में बेह़द परेशानी हो सकती है। भीड़ के दीगर मक़ामात पर भी इस बात का ख़याल रखिये। **सगे मदीना** عُفِیَ عَنۡہُ ने ऐसे ऐसे बूढ़े ह़ाजियों और ह़ज्जनों को बिछड़ते देखा है कि बेचारों को अपने **मुअ़ल्लिम** तक का नाम **मा'लूम** नहीं होता और फिर बिचारों के लिये वोह **आज़्माइश** होती है कि اَلْاَمان وَالْحَفِیْظ۔ ।

"अल्लाहु ग़फ़्फ़ार" के आठ ह़ुरूफ़ की निस्बत से रम्य के 8 म-दनी फूल

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : ﴾1﴿ अ़र्ज़ की गई : रम्ये जिमार में क्या सवाब है ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तू अपने रब के नज़्दीक इस का सवाब उस वक़्त पाएगा कि तुझे इस की ज़ियादा ह़ाजत होगी। (مُعْجَمُ اَوْسَط ج ۳ ص ۱۵۰ حدیث ۴۱۴۷) ﴾2﴿ जमरों की रम्य करना तेरे लिये क़ियामत के दिन नूर होगा। (اَلتَّرغِیب وَالتَّرھِیب ج۲ص۱۳۴حدیث ۳) ﴾3﴿ **सात** कंकरियों से कम मारना **जाइज़** नहीं। अगर सिर्फ़ तीन मारीं या बिल्कुल रम्य न की तो **दम वाजिब** होगा और अगर चार मारीं तो बाक़ी हर कंकरी के बदले स-दक़ा है। (رَدُّالْمُحتار ج۳ص۶۰۸) ﴾4﴿ अगर सब

कंकरियां एक साथ फेंकीं तो येह सात नहीं फ़क़त् एक मानी जाएगी। (ایضاً ص ۶۰۷) ﴾5﴿ **कंकरियां** ज़मीन की **जिन्स** से होना ज़रूरी हैं। (जैसे कंकर, पथ्थर, चूना, मिट्टी) अगर मेंगनी मारी तो रम्य नहीं होगी। (دُرِّمُختار و رَدُّالْمُحتار ج۳ص۶۰۸) ﴾6﴿ इसी त़रह़ बा'ज़ लोग जमरात पर डब्बे, या जूते मारते हैं येह भी कोई सुन्नत नहीं और कंकरी के बदले जूता या डब्बा मारा तो रम्य होगी ही नहीं ﴾7﴿ **रम्य** के लिये बेहतर येही है कि **मुज़्दलिफ़ा** से कंकरियां ली जाएं मगर लाज़िमी नहीं दुन्या के किसी भी ह़िस्से की कंकरियां मारेंगे रम्य दुरुस्त है ﴾8﴿ दसवीं की **रम्य तु़लूए़ आफ़्ताब** से ले कर ज़वाल तक सुन्नत है, ज़वाल (या'नी इब्तिदाए वक़्ते ज़ोहर) से ले कर गु़रूबे आफ़्ताब तक मुबाह़ (या'नी जाइज़) है और गु़रूबे आफ़्ताब से सुब्ह़े सादिक़ तक **मक्रूह** है। अगर किसी उ़ज़्र के सबब हो म-सलन चरवाहे ने रात में **रम्य** की तो कराहत नहीं। (ایضاً ص ۶۱۰)

इस्लामी बहनों की रम्य : उ़मूमन देखा जाता है कि मर्द बिला उ़ज़्र **औ़रतों** की त़रफ़ से **रम्य** कर दिया करते हैं इस त़रह़ इस्लामी बहनें **रम्य** की सआ़दत से मह़रूम रह जाती हैं और चूंकि **रम्य** वाजिब है लिहाज़ा तर्के वाजिब के सबब उन पर **दम** भी **वाजिब** हो जाता है लिहाज़ा इस्लामी बहनें अपनी रम्य ख़ुद ही करें।

मरीज़ों की रम्य : बा'ज़ ह़ाजी साह़िबान यूं तो हर जगह दन्दनाते फिरते हैं लेकिन मा'मूली सी बीमारी के सबब वोह दूसरों से **रम्य** करवा लेते हैं।

मरीज़ की त़रफ़ से रम्य का त़रीक़ा : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जो शख़्स मरीज़ हो कि जमरे तक सुवारी पर भी न जा सकता हो, वोह दूसरे को हुक्म कर दे कि उस की त़रफ़ से **रम्य** करे और उस को चाहिये कि पहले अपनी त़रफ़ से सात कंकरियां मारने के बा'द मरीज़ की त़रफ़ से **रम्य** करे या'नी जब कि ख़ुद **रम्य** न कर चुका हो और अगर यूं किया कि एक कंकरी अपनी त़रफ़ से मारी फिर एक मरीज़ की त़रफ़ से, यूंही सात बार किया तो मक्रूह है और मरीज़ के बिग़ैर हुक्म **रम्य** कर दी तो जाइज़ न हुई और अगर मरीज़ में इतनी त़ाक़त नहीं कि **रम्य** करे तो बेहतर येह कि उस का साथी उस के हाथ पर कंकरी रख कर **रम्य** कराए। यूंही बेहोश या मजनून या ना समझ की त़रफ़ से उस के साथ वाले रम्य कर दें और बेहतर येह कि उन के हाथ पर कंकरी रख कर रम्य कराएं।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1148)

“इब्राहीम” के सात हुरूफ़ की निस्बत से ह़ज की क़ुरबानी के 7 म-दनी फूल

﴾1﴿ दसवीं को **बड़े** शैत़ान की रम्य करने के बा'द **क़ुरबान गाह** तशरीफ़ लाइये और क़ुरबानी कीजिये, येह वोह क़ुरबानी नहीं जो **ब-क़रह ईद** में हुवा करती है बल्कि **ह़ज** के शुक्राने में **क़ारिन** और **मु-तमत्तेअ़** पर वाजिब है चाहे वोह **फ़क़ीर** ही क्यूं न हो, **मुफ़्रिद** के लिये येह क़ुरबानी **मुस्तह़ब** है चाहे वोह ग़नी (मालदार) हो ﴾2﴿ यहां भी जानवर की वोही शराइत़ हैं जो ब-क़रह ईद की क़ुरबानी की होती हैं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1140) म-सलन **बकरा** (इस में बकरी, दुम्बा, दुम्बी और भेड़ (नर व मादा) दोनों शामिल हैं) एक साल का हो, इस से कम उ़म्र हो तो क़ुरबानी जाइज़ नहीं, ज़ियादा हो तो जाइज़ बल्कि अफ़्ज़ल है। हां दुम्बा या भेड़ का छ महीने का बच्चा अगर इतना बड़ा हो कि दूर से देखने में साल भर का मा'लूम होता हो तो उस की क़ुरबानी जाइज़ है। (دُرِّمُختار ج۹ ص۵۳۳) याद रखिये ! मुत़्लक़न छ माह के दुम्बे की क़ुरबानी जाइज़ नहीं, इस का इतना फ़र्बा (या'नी तगड़ा) और क़दआवर होना ज़रूरी है कि दूर से देखने में साल भर का लगे। अगर 6 माह बल्कि साल में एक दिन भी कम उ़म्र का दुम्बे या भेड़ का बच्चा जो दूर से देखने में साल भर का नहीं लगता तो उस की क़ुरबानी नहीं होगी ﴾3﴿ अगर जानवर का कान एक तिहाई (1/3) से ज़ियादा कटा होगा तो

क़ुरबानी होगी ही नहीं और अगर तिहाई या इस से कम कटा हुवा हो, या चिरा हुवा हो या उस में सूराख़ हो इसी त़रह़ कोई थोड़ा सा ऐब हो तो क़ुरबानी हो तो जाएगी मगर मक्रूहे (तन्ज़ीही) होगी ﴿4﴾ ज़ब्ह़ करना आता हो तो ख़ुद ज़ब्ह़ करे कि सुन्नत है, वरना ज़ब्ह़ के वक़्त ह़ाज़िर रहे। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1141) दूसरे को भी क़ुरबानी का **नाइब** कर सकते हैं[1] ﴿5﴾ ऊंट की क़ुरबानी **अफ़्ज़ल** है कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **ह़िज्जतुल वदाअ़** के मौक़अ़ पर अपने दस्ते मुबारक से 63 ऊंट नह़्र फ़रमाए। और सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इजाज़त से **बक़िय्या** ऊंट ह़ज़रते मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने नह़्र किये। (مسلم ص٦٣٤ حدیث ١٢١٨) एक और रिवायत में है कि सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास पांच या छ ऊंट लाए गए तो ऊंटों पर भी गोया एक वज्द त़ारी था और वोह इस त़रह़ आगे बढ़ रहे थे कि हर एक चाहता था कि पहले मुझे नह़्र होने की सआ़दत मिल जाए। (ابوداوٗد ج٢ ص ٢١١ حدیث ١٧٦٥)

हर इक की आरज़ू है पहले मुझ को ज़ब्ह़ फ़रमाएं
तमाशा कर रहे हैं मरने वाले ईदे क़ुरबां में

(ज़ौक़े ना'त)

مدینہ

1 : क़ुरबानी के मसाइल की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त, जिल्द 3 सफ़ह़ा 327 ता 353 नीज़ मक-त-बतुल मदीना का मत़्बूआ़ रिसाला "अब्लक़ घोड़े सुवार" पढ़िये।

﴾6﴿ बेहतर येह है कि ज़ब्ह़ के वक़्त जानवर के दोनों हाथ, एक पाउं बांध लीजिये ज़ब्ह़ कर के खोल दीजिये। येह क़ुरबानी कर के अपने और तमाम मुसल्मानों के ह़ज व क़ुरबानी क़बूल होने की दुआ़ मांगिये। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1141) ﴾7﴿ **दसवीं** को क़ुरबानी करना **अफ़्ज़ल** है ग्यारहवीं और बारहवीं को भी कर सकते हैं मगर बारहवीं को ग़ुरूबे आफ़्ताब पर क़ुरबानी का **वक़्त ख़त्म** हो जाता है।

ह़ाजी और ब-क़रह ईद की क़ुरबानी

सुवाल : ह़ाजी पर **ब-क़रह ईद** की क़ुरबानी वाजिब है या नहीं ?

जवाब : मुक़ीम मालदार ह़ाजी पर वाजिब है, मुसाफ़िर ह़ाजी पर नहीं अगर्चे मालदार हो। ब-क़रह ईद की क़ुरबानी का ह़रम शरीफ़ में होना ज़रूरी नहीं, अपने मुल्क में भी किसी को कह कर करवाई जा सकती है। अलबत्ता दिन का ख़याल रखना होगा कि जहां क़ुरबानी होनी है वहां भी और जहां क़ुरबानी वाला है वहां भी दोनों जगह अय्यामे क़ुरबानी हों। मुक़ीम ह़ाजी पर क़ुरबानी वाजिब होने के बारे में "**अल बह़्रुर्राइक़**" में है : अगर ह़ाजी मुसाफ़िर है तो उस पर क़ुरबानी वाजिब नहीं है, वरना वोह (या'नी मुक़ीम ह़ाजी) मक्की की त़रह़ है और (ग़नी होने की सूरत में) उस पर क़ुरबानी वाजिब है। **(اَلْبَحْرُالرَّائِق ج۲ ص۶۰۶)** उ़-लमाए किराम ने जिस ह़ाजी पर क़ुरबानी वाजिब न होने का क़ौल किया है उस से मुराद वोह ह़ाजी है जो मुसाफ़िर हो।

चुनान्चे "मब्सूत़" में है : कुरबानी शह्र वालों पर वाजिब है, ह़ाजियों के इ़लावा और यहां शह्र वालों से मुराद मुक़ीम हैं और ह़ाजियों से मुराद मुसाफ़िर हैं, अहले मक्का पर कुरबानी वाजिब है अगर्चे वोह **ह़ज** करें । (المبسوط للسرخسی ج٦ ،الجزء الثانی عشرص٢٤)

कुरबानी के टोकन : आज कल बहुत सारे ह़ाजी साहि़बान बेंक में कुरबानी की रक़म जम्अ़ करवा कर टोकन ह़ासिल करते हैं, आप ऐसा मत कीजिये । इदारे के ज़रीए़ कुरबानी करवाने में सरासर ख़त़रा है क्यूं कि **मु-तमत्तेअ़ और क़ारिन के लिये येह तरतीब वाजिब है कि पहले रम्य करे फिर कुरबानी और फिर ह़ल्क़ अगर इस तरतीब के ख़िलाफ़ किया तो दम वाजिब हो जाएगा ।** अब आप ने इदारे को रक़म जम्अ़ करवा दी, उन्हों ने अगर्चे **कुरबानी** का वक़्त भी बता दिया फिर भी इस बात का पता लगना बेह़द दुश्वार है कि आप की त़रफ़ से **कुरबानी** वक़्त पर हुई या नहीं ! अगर आप ने **कुरबानी** से पहले ही **ह़ल्क़** करवा दिया तो आप पर "**दम**" वाजिब हो जाएगा । इदारे के ज़रीए़ कुरबानी करवाने वालों को येह इख़्तियार दिया जाता है कि अगर वोह अपनी कुरबानी का सह़ीह़ वक़्त मा'लूम करना चाहें तो **30** अफ़राद पर अपना एक नुमायन्दा मुन्तख़ब कर लें उस को फिर "ख़ुसूसी पास" जारी किया जाता है और वोह जा कर सब की कुरबानियां होती देख सकता है । मगर यहां भी एक ख़त़रा मौजूद है और वोह येह कि इदारे

वाले **लाखों जानवर** ख़रीदते हैं और उन सब का बे ऐब होना क़रीब ब ना मुम्किन है । अक्सर कारवान वाले भी इज्तिमाई़ क़ुरबानियों की तरकीब करते हैं मगर उन में भी बा'ज़ों की ''बद उ़न्वानियों'' की बद तरीन दास्तानें हैं ! बहर ह़ाल मुनासिब येही है कि अपनी क़ुरबानी आप ख़ुद ही करें ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

“या रब ! उम्मते नबी को बख़्श दे” के सत्तरह हुरूफ़ की निस्बत से ह़ल्क़ और तक़्सीर के 17 म-दनी फूल

ह़ज व उ़म्रे के एह़राम खोलने के वक़्त सर मुंडाने के मु-तअ़ल्लिक़ **दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : ﴾1﴿ बाल मुंडाने में हर बाल के बदले एक **नेकी** है और एक **गुनाह** मिटाया जाता है (اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب ج٢ ص ١٣٥ حديث ٣) ﴾2﴿ सर मुंडाने में जो बाल ज़मीन पर गिरेगा, वोह तेरे लिये क़ियामत के दिन **नूर** होगा (اَيضاً) ﴾3﴿ क़ुरबानी से फ़ारिग़ हो कर क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर के इस्लामी भाई ह़ल्क़ करें या'नी तमाम सर के बाल मुंडवा दें या तक़्सीर करें या'नी कम अज़ कम **चौथाई** (1/4) सर के बाल उंगली के पोरे के बराबर कटवाएं । दो तीन जगह से चन्द बाल क़ैंची से काट लेना काफ़ी नहीं ﴾4﴿ ह़ल्क़ हो या तक़्सीर सीधी जानिब से इब्तिदा

कीजिये ﴾5﴿ **इस्लामी बहनें** सिर्फ़ तक़्सीर करवाएं या'नी **चौथाई** (1/4) सर के बालों में से हर बाल उंगली के पोरे के बराबर कटवाएं या ख़ुद ही क़ैंची से काट लें। इन्हें सर मुंडवाना ह़राम है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1142) (याद रहे ! औ़रत का ग़ैर मर्द से बाल कटवाना कुजा उस के आगे अपने बाल ज़ाहिर करना भी जाइज़ नहीं) ﴾6﴿ **बाल** चूंकि छोटे बड़े होते हैं लिहाज़ा एक पोरे से ज़ियादा कटवाएं ताकि चौथाई सर के बाल कम अज़ कम एक पोरे के बराबर कट जाएं ﴾7﴿ अब एह़राम से बाहर होने का वक़्त आ गया तो अब मोह़रिम (या'नी एह़राम वाला) अपना या दूसरे का सर मूंड या क़स्र कर सकता है अगर्चे दूसरा भी **मोह़रिम** हो ﴾8﴿ ह़ल्क़ या तक़्सीर से पहले अगर नाख़ुन कतरवाएंगे या ख़त़ बनवाएंगे तो कफ़्फ़ारा लाज़िम आएगा। इस मौक़अ़ पर सर मुंडवाने के बा'द मूंछें तरश्वाना, मूए ज़ेरे नाफ़ दूर करना मुस्तह़ब है ﴾9﴿ ह़ल्क़ या तक़्सीर का वक़्त अय्यामे नह़्र या'नी **10**, **11** और **12 ज़ुल ह़िज्जह** है और **अफ़्ज़ल 10**। अगर बारहवीं के ग़ुरूबे आफ़्ताब तक **ह़ल्क़ या क़स्र** न किया तो दम लाज़िम आएगा (عالمگیری ج۱ص۲۳۱، رَدُّالْمُحتار ج۳ ص۶۱۶) ﴾10﴿ **जिस** के सर पर बाल न हों, क़ुदरती गन्ज हो उसे भी सर पर उस्तरा फिरवाना **वाजिब** है (عالمگیری ج۱ص۲۳۱) ﴾11﴿ **अगर** किसी के सर पर फुड़ियां हैं। जिन की वजह से मुंडवा नहीं सकता और बाल भी इतने बड़े नहीं कि कटवा सके तो इस मजबूरी के सबब उस से मुंडवाना

और कतरवाना साक़ित़ हो गया उसे भी मुंडवाने और कतरवाने वालों की त़रह़ सब चीज़ें ह़लाल हो गईं मगर बेहतर येह है कि **अय्यामे नह़्र** ख़त्म होने तक ब दस्तूर एह़राम में रहे (ایضاً) ﴾12﴿ ह़ल्क़ या क़स्र मिना शरीफ़ में सुन्नत है जब कि ह़ुदूदे ह़रम में वाजिब। अगर ह़ुदूदे ह़रम से बाहर किया तो **दम** वाजिब होगा। ﴾13﴿ ह़ल्क़ या तक़्सीर के दौरान येह तक्बीर पढ़ते रहिये और फ़ारिग़ हो कर भी पढ़िये :

اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
وَاللّٰهُ اَكْبَرُ ط اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ ط

﴾14﴿ बा'दे फ़राग़त अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ येह दुआ पढ़िये :

اَللّٰهُمَّ اَثْبِتْ لِيْ لِكُلِّ شَعْرَةٍ حَسَنَةً وَّامْحُ
عَنِّيْ بِهَا سَيِّئَةً وَّارْفَعْ لِيْ بِهَا عِنْدَكَ دَرَجَةً ط

तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! हर बाल के बदले मेरे लिये एक नेकी लिख दे और एक गुनाह मिटा दे और अपने हां हर बाल के बदले मेरा एक द-रजा बुलन्द फ़रमा दे। (احیاء العلوم ج۱ ص۳٤۳) और तमाम उम्मत के लिये **दुआए मग़्फ़िरत** कीजिये ﴾15﴿ मुफ़्रिद अगर क़ुरबानी करना चाहे तो उस के लिये **मुस्तह़ब** येह है कि ह़ल्क़ या तक़्सीर क़ुरबानी के बा'द करवाए और अगर ह़ल्क़ के बा'द क़ुरबानी की जब भी ह़रज नहीं और **तमत्तोअ़** और

क़िरान वाले के लिये ह़ल्क़ या तक़्सीर क़ुरबानी के बा'द करना वाजिब है, अगर पहले ह़ल्क़ या तक़्सीर करेगा तो **दम** वाजिब हो जाएगा (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1142) 《**16**》 बाल दफ़्न कर दें और हमेशा बदन से जो चीज़ बाल, नाख़ुन, खाल जुदा हों दफ़्न कर दिया करें। (ऐज़न, स. 1144) 《**17**》 ह़ल्क़ या तक़्सीर के बा'द अब औ़रत से सोह़बत करने, ब शह्वत उसे हाथ लगाने, बोसा लेने, शर्मगाह देखने के सिवा जो कुछ एह़राम ने ह़राम किया था सब ह़लाल हो गया। (ऐज़न)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"का'बे का त़वाफ़" के दस हुरूफ़ की निस्बत से त़वाफ़े ज़ियारत के 10 म-दनी फूल

《**1**》 **त़वाफ़ुज़्ज़ियारह** को "त़वाफ़े इफ़ाज़ा" भी कहते हैं येह ह़ज का **दूसरा रुक्न** है, इस का वक़्त 10 **ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम** की सुब्ह़े सादिक़ से शुरूअ़ होता है इस से क़ब्ल नहीं हो सकता। इस में **चार फेरे** फ़र्ज़ हैं बिग़ैर इस के त़वाफ़ होगा ही नहीं और **ह़ज** न होगा और पूरे सात करना **वाजिब** है 《**2**》 **त़वाफ़ुज़्ज़ियारह** दसवीं **ज़ुल ह़िज्जह** को कर लेना अफ़्ज़ल है, लिहाज़ा पहले **जम्रतुल अ़-क़बह** की रम्य फिर "क़ुरबानी" और इस के बा'द ह़ल्क़ या तक़्सीर से फ़ारिग़ हो लें, अब अफ़्ज़ल येह है कि कुछ क़ुरबानी का गोश्त खा कर पैदल

मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا ह़ाज़िर हों और येह भी अफ़्ज़ल है कि बाबुस्सलाम से मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ में दाख़िल हों ﴾3﴿ अफ़्ज़ल वक़्त तो 10 तारीख़ ही है मगर तीनों दिन या'नी बारहवीं के ग़ुरूबे आफ़्ताब तक त़वाफ़े ज़ियारत कर सकते हैं चूंकि 10 तारीख़ को भीड़ ज़ियादा होती है लिहाज़ा अपनी सहूलत को पेशे नज़र रखना बहुत मुफ़ीद रहेगा। इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **मु-तअ़द्दिद** तक्लीफ़ देह चीज़ों और बा'ज़ सूरतों में दूसरों की ईज़ा रसानियों, औ़रतों से गुडमुड होने उन से बदन टकराने और नफ़्सो शैत़ान के बहकावे में आ कर होने वाले गुनाहों से बचत हो जाएगी ﴾4﴿ बा वुज़ू और सत्रे औ़रत के साथ त़वाफ़ कीजिये। (अक्सर इस्लामी बहनों की कलाइयां दौराने त़वाफ़ खुली होती हैं अगर ''त़वाफ़ुज़्ज़ियारह'' के चार फेरे या इस से ज़ियादा इस त़रह़ किये कि चहारुम (1/4) कलाई या चौथाई (1/4) सर के बाल खुले थे तो **दम** वाजिब हो गया। अगर सत्रे औ़रत के साथ इस त़वाफ़ का इआ़दा (या'नी नए सिरे से) कर लिया तो दम साक़ित़ हो जाएगा) ﴾5﴿ अगर क़ारिन और मुफ़्रिद ''त़वाफ़े क़ुदूम'' में और **मु-तमत्तेअ़** ह़ज का एह़राम बांधने के बा'द किसी नफ़्ली त़वाफ़ में ह़ज के ''रमल व सअ़्य'' से फ़ारिग़ हो चुके हों तो अब **त़वाफ़े ज़ियारत** में इस की ह़ाजत नहीं ﴾6﴿ अगर ह़ज के रमल व सअ़्य से पहले फ़ारिग़ नहीं हुए थे तो अब रोज़ मर्रा के कपड़ों ही में कर लीजिये। हां ''इज़्तिबाअ़'' नहीं हो सकेगा क्यूं कि अब इस का मौक़अ़ न रहा ﴾7﴿ जो ग्यारवीं को न जाए **बारहवीं** को कर ले इस

के बा'द बिला उ़ज़्र ताख़ीर गुनाह है, जुर्माने में एक कुरबानी करनी होगी। हां म–सलन औ़रत को ह़ैज़ या निफ़ास आ गया तो इन के ख़त्म के बा'द त़वाफ़ करे मगर ह़ैज़ या निफ़ास से अगर ऐसे वक़्त पाक हुई कि नहा धो कर **बारहवीं तारीख़** में आफ़्ताब डूबने से पहले चार फेरे कर सकती है तो करना वाजिब है, न करेगी गुनहगार होगी। यूंही अगर इतना वक़्त उसे मिला था कि त़वाफ़ कर लेती और न किया अब ह़ैज़ या निफ़ास आ गया तो गुनहगार हुई। (ऐज़न, स. 1145) ﴾8﴿ अगर **त़वाफ़ुज़्ज़ियारह** न किया औ़रतें ह़लाल न होंगी चाहे बरसों गुज़र जाएं। (عالمگیری ج ۱ ص ۲۳۲) इसी त़रह़ अगर बीवी ने नहीं किया तो शोहर उस के लिये ह़लाल न होगा ﴾9﴿ त़वाफ़ से फ़ारिग़ हो कर दो रक्अ़त "वाजिबुत्त़वाफ़" ब दस्तूर अदा कीजिये इस के बा'द "**मुल्तज़म**" पर भी ह़ाज़िरी दीजिये और "आबे ज़मज़म" भी ख़ूब पेट भर कर नोश कीजिये ﴾10﴿ اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! **मुबारक हो** कि आप का **ह़ज मुकम्मल** हो गया और औ़रतें भी ह़लाल हो गईं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"*या अल्लाह ! शैत़ान से पनाह दे*" के अठ्ठारह ह़ुरूफ़ की निस्बत से ग्यारह और बारह की रम्य के 18 म–दनी फूल

﴾1﴿ **11** और **12 ज़ुल ह़िज्जह** को तीनों शैत़ानों को कंकरियां मारनी हैं। इस की तरतीब येह है : पहले **जम्रतुल ऊला**

(या'नी छोटा शैत़ान) फिर **जम्रतुल वुस्त़ा** (या'नी मंझला शैत़ान) और आख़िर में **जम्रतुल अ़-क़बह** (या'नी बड़ा शैत़ान) ﴾2﴿ दो पहर (या'नी ज़ोहर का वक़्त शुरूअ़ होने) के बा'द **जम्रतुल ऊला** (या'नी छोटे शैत़ान) पर आइये और क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर के **सात कंकरियां** मारिये (कंकरी पकड़ने और मारने का त़रीक़ा इसी किताब के **सफ़ह़ा 187** पर गुज़रा) कंकरियां मार कर **जम्रे** से कुछ आगे बढ़ जाइये और उलटे हाथ की जानिब हट कर क़िब्ला रू खड़े हो कर दोनों हाथ कन्धों तक उठाइये कि हथेलियां आस्मान की त़रफ़ नहीं बल्कि क़िब्ले की जानिब रहें,[1] अब दुआ़ व इस्तिग़्फ़ार में कम अज़ कम **20** आयतें पढ़ने की मिक़्दार मश्ग़ूल रहिये ﴾3﴿ अब **जम्रतुल वुस्त़ा** (या'नी मंझले शैत़ान) पर भी इसी त़रह़ कीजिये ﴾4﴿ फिर आख़िर में **जम्रतुल अ़-क़बह** (या'नी बड़े शैत़ान) पर उस त़रह़ "**रम्य**" कीजिये जिस त़रह़ आप ने **10** तारीख़ को की थी (त़रीक़ा सफ़ह़ा **186** पर गुज़रा) याद रहे ! बड़े शैत़ान की **रम्य** के बा'द आप को ठहरना नहीं, फ़ौरन पलट पड़ना और इसी दौरान **दुआ़** भी करनी है। (दुरुस्त त़रीक़ा येही है मगर अब फ़ौरन पलटना मुम्किन नहीं रहा लिहाज़ा कंकरियां मार कर कुछ आगे बढ़ कर "यू टर्न" की तरकीब फ़रमा लीजिये) ﴾5﴿ बारहवीं को भी इसी त़रह़ तीनों जमरात की **रम्य** कीजिये ﴾6﴿ ग्यारहवीं और बारहवीं की **रम्य** का वक़्त

1 : रम्ये जिमार के बा'द दुआ़ में हथेलियों का रुख़ का'बे की त़रफ़ हो। ह़-जरे अस्वद के सामने खड़ा होने के वक़्त हथेलियों का रुख़ ह़-जरे अस्वद की त़रफ़ हो और बाक़ी अह़वाल में आस्मान की त़रफ़ हो।

ज़वाले आफ़्ताब (या'नी इब्तिदाए वक़्ते ज़ोहर) से शुरूअ़ होता है। लिहाज़ा ग्यारहवीं और बारहवीं की रम्य दो पहर से पहले अस्लन (या'नी बिल्कुल) सहीह़ नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1148) ﴾7﴿ दसवीं, ग्यारहवीं और बारहवीं की रातें (अक्सर या'नी हर रात का आधे से ज़ियादा ह़िस्सा) **मिना शरीफ़** में गुज़ारना **सुन्नत** है ﴾8﴿ बारहवीं की रम्य कर के ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले पहले इख़्तियार है कि **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا को रवाना हो जाएं मगर बा'दे ग़ुरूब चला जाना मा'यूब। अब एक दिन और ठहरना और **तेरहवीं** को ब दस्तूर दो पहर ढले (या'नी इब्तिदाए वक़्ते ज़ोहर) रम्य कर के मक्का शरीफ़ जाना होगा और येही अफ़्ज़ल है ﴾9﴿ अगर मिना में तेरहवीं की **सुब्ह़े सादिक़** हो गई अब **रम्य** करना वाजिब हो गया अगर बिग़ैर रम्य किये चले गए तो **दम वाजिब** होगा ﴾10﴿ ग्यारहवीं और बारहवीं की **रम्य** का वक़्त आफ़्ताब ढलने (या'नी ज़ोहर का वक़्त शुरूअ़ होने) से सुब्ह़े सादिक़ तक है मगर बिला उ़ज़्र आफ़्ताब डूबने के बा'द **रम्य** करना **मक्रूह** है ﴾11﴿ तेरहवीं की रम्य का वक़्त **सुब्ह़े सादिक़** से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक है मगर सुब्ह़ से इब्तिदाए वक़्ते ज़ोहर तक मक्रूहे (तन्ज़ीही) है, ज़ोहर का वक़्त शुरूअ़ होने के बा'द मस्नून है ﴾12﴿ किसी दिन की रम्य अगर रह गई तो दूसरे दिन क़ज़ा कर लीजिये और **दम** भी देना होगा। क़ज़ा का आख़िरी वक़्त तेरहवीं के ग़ुरूबे आफ़्ताब तक है ﴾13﴿ **रम्य** एक दिन की रह गई और आप ने तेरहवीं के **ग़ुरूबे आफ़्ताब** से पहले पहले **क़ज़ा** कर ली तब भी और अगर नहीं की जब भी या

एक से ज़ियादा दिनों की रह गई बल्कि बिल्कुल **रम्य** की ही नहीं हर सूरत में सिर्फ़ एक ही **दम वाजिब** है ﴾14﴿ ज़ाइद बची हुई **कंकरियां** किसी को ज़रूरत हो तो उस को दे दीजिये या **किसी पाक जगह** डाल दीजिये, इन को जम्रों पर फेंक देना मक्रूहे (तन्ज़ीही) है ﴾15﴿ आप ने **कंकरी** मारी और वोह किसी के **सर** वग़ैरा से टकरा कर **जम्रे** को लगी या तीन हाथ के फ़ासिले पर गिरी तो **जाइज़** हो गई ﴾16﴿ अगर आप की कंकरी किसी पर गिरी और उस ने हाथ वग़ैरा का झटका दिया जिस से वहां तक पहुंची तो उस के बदले की दूसरी मारिये ﴾17﴿ ऊपर की मन्ज़िल से **रम्य** की और कंकरी **जम्रे** के गिर्द बनी हुई **पियाला नुमा फ़सील** (या'नी बाउन्ड्री) में गिरी तो **जाइज़** हो गई क्यूं कि फ़सील में से लुढ़क कर या तो **जम्रे** को लगती है या तीन[3] हाथ के फ़ासिले के अन्दर अन्दर गिरती है ﴾18﴿ अगर शक हो कि कंकरी अपनी जगह पहुंची या नहीं तो दोबारा मारिये ।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1146, 1148)

"وَالْعِيَاذُ بِاللّٰہ" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से रम्य के 12 मक्रूहात

(नम्बर 1 और 2 सुन्नते मुअक्कदा के तर्क की वजह से इसाअत । जब कि बक़िय्या सब मक्रूहे तन्ज़ीही हैं)

﴾1﴿ दसवीं की **रम्य** बिग़ैर मजबूरी के **ग़ुरूबे आफ़्ताब** के बा'द करना । (सुन्नते मुअक्कदा के ख़िलाफ़ होने के सबब इसाअत है) ﴾2﴿ **जम्रों** में ख़िलाफ़े तरतीब करना

﴿3﴾ तेरहवीं की **रम्य ज़ोहर का वक़्त** शुरूअ़ होने से पहले करना ﴿4﴾ बड़ा पथ्थर मारना ﴿5﴾ बड़े पथ्थर को तोड़ कर कंकरियां बनाना ﴿6﴾ मस्जिद की कंकरियां मारना ﴿7﴾ **जम्रे** के नीचे जो कंकरियां पड़ी हैं उन में से उठा कर मारना (मक्रूहे तन्ज़ीही है) कि येह **ना मक़्बूल** कंकरियां हैं, जो **मक़्बूल** होती हैं वोह ग़ैबी तौर पर उठा ली जाती हैं और क़ियामत के दिन नेकियों के पलड़े में रखी जाएंगी ﴿8﴾ जान बूझ कर **सात** से ज़ियादा कंकरियां मारना ﴿9﴾ नापाक कंकरियां मारना ﴿10﴾ **रम्य** के लिये जो सम्त मुक़र्रर हुई उस के ख़िलाफ़ करना ﴿11﴾ **जम्रे** से पांच हाथ से कम फ़ासिले पर खड़े होना। ज़ियादा का कोई मुज़ा-यक़ा नहीं (अलबत्ता येह ज़रूरी है कि क़रीब हो तब भी कंकरी मारी ही जाए, सिर्फ़ रख देने के अन्दाज़ में न हो।) ﴿12﴾ मारने के बदले **कंकरी** जमरे के क़रीब डाल देना।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1148, 1149)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"या ख़ुदा बार बार ह़ज नसीब कर" के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से त़वाफ़े रुख़्सत के 19 म-दनी फूल

﴿1﴾ जब रुख़्सत का इरादा हो उस वक़्त **"आफ़ाक़ी ह़ाजी"** पर त़वाफ़े रुख़्सत वाजिब है, न करने वाले पर **दम**

वाजिब होता है। इस को त़वाफ़े वदाअ़ और त़वाफ़े सद्र भी कहते हैं ﴾2﴿ इस में **इज़्तिबाअ़, रमल** और **सअ़्य** नहीं ﴾3﴿ उ़म्रे वालों पर **वाजिब** नहीं ﴾4﴿ हैज़ व निफ़ास वाली की सीट बुक है तो जा सकती है उस पर अब येह त़वाफ़ वाजिब नहीं और **दम** भी नहीं ﴾5﴿ **त़वाफ़े रुख़्सत** में सिर्फ़ त़वाफ़ की निय्यत ही काफ़ी है, वाजिब, अदा, वदाअ़ (या'नी रुख़्सत) वग़ैरा अल्फ़ाज़ निय्यत में शामिल होना ज़रूरी नहीं यहां तक कि त़वाफ़े नफ़्ल की निय्यत की जब भी **वाजिब** अदा हो गया ﴾6﴿ सफ़र का इरादा था, **त़वाफ़े रुख़्सत** कर लिया फिर किसी वजह से ठहरना पड़ा जैसा कि गाड़ी वग़ैरा में उ़मूमन ताख़ीर हो जाती है और इक़ामत की निय्यत नहीं की तो वोही त़वाफ़ काफ़ी है, दोबारा करने की ह़ाजत नहीं और मस्जिदुल ह़राम में नमाज़ वग़ैरा के लिये जाने में भी कोई मुज़ा-यक़ा नहीं, हां मुस्तह़ब येह है कि फिर त़वाफ़ कर ले कि आख़िरी काम त़वाफ़ रहे ﴾7﴿ **त़वाफ़े ज़ियारत** के बा'द जो भी पहला नफ़्ली त़वाफ़ किया वोही त़वाफ़े रुख़्सत है ﴾8﴿ जो बिग़ैर त़वाफ़ के रुख़्सत हो गया तो जब तक मीक़ात से बाहर न हुवा वापस आए और त़वाफ़ कर ले ﴾9﴿ अगर **मीक़ात** से बाहर होने के बा'द याद आया तो वापस होना ज़रूरी नहीं बल्कि **दम** के लिये जानवर **ह़रम** में भेज दे, अगर वापस हो तो **उ़म्रे का एह़राम** बांध कर वापस आए और **उ़म्रे** से फ़ारिग़ हो कर

त़वाफ़े रुख़्सत बजा लाए, अब इस सूरत में **दम साक़ित** हो जाएगा ﴾10﴿ त़वाफ़े रुख़्सत के तीन फेरे छोड़ेगा तो **हर फेरे** के बदले एक एक **स-दक़ा** दे और अगर **चार** से कम किये हैं तो **दम** देना होगा ﴾11﴿ हो सके तो बे क़रारी के साथ रोते रोते **त़वाफ़े रुख़्सत** बजा लाइये कि न जाने आयन्दा येह **सआ़दत** मुयस्सर आती भी है या नहीं ﴾12﴿ बा'दे त़वाफ़ ब दस्तूर दो रक्अ़त **वाजिबुत्त़वाफ़** अदा कीजिये ﴾13﴿ **त़वाफ़े रुख़्सत** के बा'द ब दस्तूर ज़मज़म शरीफ़ पर ह़ाज़िर हो कर **आबे ज़मज़म** नोश कीजिये और बदन पर डालिये ﴾14﴿ फिर **दरवाज़ए का'बा** के सामने खड़े हो कर हो सके तो आस्तानए पाक को बोसा दीजिये और क़बूले ह़ज व ज़ियारत और बार बार ह़ाज़िरी की दुआ़ मांगिये। और दुआ़ए जामेअ़ (या'नी رَبَّنَا اٰتِنَا ---اِلخ) या येह दुआ़ पढ़िये :

اَلسَّآئِلُ بِبَابِكَ يَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ وَمَعْرُوْفِكَ وَيَرْجُوْ رَحْمَتَكَ

(**तरजमा :** तेरे दरवाज़े पर साइल तेरे फ़ज़्लो एह़सान का सुवाल करता है और तेरी रह़मत का उम्मीद वार है) (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1152) ﴾15﴿ **मुल्तज़म** पर आ कर ग़िलाफ़े का'बा थाम कर उसी त़रह़ चिमटिये और ज़िक्रो दुरूद और दुआ़ की कसरत कीजिये ﴾16﴿ फिर मुम्किन हो तो **ह़-जरे अस्वद** को बोसा दीजिये और

जो आंसू रखते हैं गिराइये ﴾17﴿ फिर का'बए मुशर्रफ़ा की त़रफ़ मुंह किये उलटे पाउं या ह़स्बे मा'मूल चलते हुए बार बार मुड़ कर **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** को ह़सरत से देखते, उस की जुदाई पर आंसू बहाते या कम अज़ कम रोने जैसी सूरत बनाए **मस्जिदुल ह़राम** से हमेशा की त़रह़ उलटा पाउं बढ़ा कर बाहर निकलिये और बाहर निकलने की **दुआ़** पढ़िये ﴾18﴿ ह़ैज़ व निफ़ास वाली दरवाज़ए मस्जिद पर खड़ी हो कर ब निगाहे ह़सरत **का'बए मुशर्रफ़ा** की ज़ियारत करे और रोती हुई दुआ़ करती हुई पलटे ﴾19﴿ फिर ब क़दरे कुदरत फु-क़राए **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** में ख़ैरात तक़्सीम कीजिये । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1151, 1153)

या इलाही ! हर बरस ह़ज की सआ़दत हो नसीब
बा'दे ह़ज जा करूं दीदारे दरबारे ह़बीब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ज्जे बदल : जिस पर **ह़ज फ़र्ज़** हो उस की त़रफ़ से किये जाने वाले **ह़ज्जे बदल** की कुछ शर्तें हैं मगर **ह़ज्जे नफ़्ल** की कोई शर्त़ नहीं, येह तो **ईसाले सवाब** की एक सूरत है और ईसाले सवाब फ़र्ज़ नमाज़ व रोज़ा, ह़ज व ज़कात, स-दक़ात व ख़ैरात वग़ैरा तमाम आ'माल का हो सकता है । लिहाज़ा अगर अपने मर्ह़ूम वालिदैन वग़ैरा की त़रफ़ से आप अपनी मरज़ी से ह़ज करना चाहें या'नी न उन पर **फ़र्ज़** था न उन्हों

ने वसिय्यत की थी तो इस की कोई शराइत़ नहीं। एह़रामे ह़ज, वालिद या वालिदा की निय्यत से बांध लीजिये और तमाम **मनासिके ह़ज** बजा लाइये। इस त़रह़ फ़ाएदा येह होगा कि उन को एक **ह़ज** का सवाब मिलेगा और **ह़ज** करने वाले को ब हुक्मे ह़दीस **दस ह़ज** का सवाब अ़त़ा किया जाएगा। (دارقطنی ج۲ص۳۲۹حدیث ۲۰۸۷) लिहाज़ा जब भी **नफ़्ल ह़ज** की सआ़दत मिले तो **अफ़्ज़ल** येही है कि वालिद या वालिदा की त़रफ़ से कीजिये। याद रहे ! ईसाले सवाब के लिये किये जाने वाले **ह़ज्जे तमत्तोअ़** या क़िरान की क़ुरबानी वाजिब है और ह़ज करने वाला ख़ुद अपनी निय्यत से करे और इस का भी ईसाले सवाब कर दे।

"या ख़ुदा ह़ज का शरफ़ अ़त़ा कर" के सत्तरह हुरूफ़ की निस्बत से ह़ज्जे बदल के 17 शराइत़

अब जिन लोगों पर **ह़ज** फ़र्ज़ हो चुका उन के **ह़ज्जे बदल** की शराइत़ पेश की जाती हैं **:**

《1》 जो **ह़ज्जे बदल** करवाता हो उस के लिये ज़रूरी है कि उस पर **ह़ज फ़र्ज़** हो चुका हो या'नी अगर **फ़र्ज़** न होने के बा वुजूद उस ने **ह़ज्जे बदल** करवाया तो **फ़र्ज़ ह़ज** अदा न हुवा। या'नी बा'द में अगर उस पर ह़ज फ़र्ज़ हो गया तो पहला ह़ज्जे बदल किफ़ायत न करेगा 《2》 जिस की त़रफ़ से ह़ज किया हो वोह इस क़दर आ़जिज़ व मजबूर हो कि ख़ुद ह़ज कर ही न सकता हो। अगर इस क़ाबिल

हो कि ख़ुद ह़ज कर सकता है तो उस की त़रफ़ से **ह़ज्जे बदल** नहीं हो सकता ﴾3﴿ वक़्ते ह़ज से मौत तक उ़ज़्र बराबर बाक़ी रहे। या'नी **ह़ज्जे बदल** करवाने के बा'द मौत से पहले पहले अगर ख़ुद **ह़ज** करने के क़ाबिल हो गया तो जो ह़ज दूसरे से करवा लिया था वोह नाकाफ़ी हो गया ﴾4﴿ **हां !** अगर वोह कोई ऐसा उ़ज़्र था जिस के जाने की उम्मीद ही न थी म-सलन नाबीना है और **ह़ज्जे बदल** करवाने के बा'द अंखियारा हो गया तो अब दोबारा **ह़ज** करने की ज़रूरत नहीं ﴾5﴿ जिस की त़रफ़ से **ह़ज्जे बदल** किया जाए ख़ुद उस ने हुक्म भी दिया हो बिग़ैर उस के हुक्म के **ह़ज्जे बदल** नहीं हो सकता ﴾6﴿ हां, वारिस ने अगर **मूरिस** (या'नी **वारिस** करने वाले) की त़रफ़ से किया तो इस में हुक्म की ज़रूरत नहीं ﴾7﴿ तमाम अख़्राजात या कम अज़ कम अक्सर अख़्राजात भेजने वाले की त़रफ़ से हों (मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1201, 1202) ﴾8﴿ वसिय्यत की थी कि मेरे माल से **ह़ज** करवा दिया जाए मगर **वारिस** ने अपने माल से करवा दिया तो **ह़ज्जे बदल** न हुवा, हां अगर येह **निय्यत** हो कि तर्के (या'नी **मय्यित** के छोड़े हुए माल) में से ले लूंगा तो हो जाएगा और अगर लेने का इरादा न हो तो नहीं होगा और अगर अजनबी ने अपने माल से **ह़ज्जे बदल** करवा दिया तो न हुवा, अगर्चे वापस लेने का इरादा हो, अगर्चे वोह मर्हूम ख़ुद उसी को **ह़ज्जे बदल** करने को कह गया हो। (رَدُّالمُحتار ج٤ ص٢٨) ﴾9﴿ अगर यूं कहा कि मेरी त़रफ़ से **ह़ज्जे बदल** करवा दिया जाए और येह न कहा कि मेरे माल से अब अगर

वारिस ने ख़ुद अपने माल से **ह़ज्जे बदल** करवा दिया और वापस लेने का भी इरादा न हो, हो गया। (اَیضاً) ﴾10﴿ जिस को हुक्म दिया वोही करे अगर जिस को हुक्म था उस ने किसी दूसरे से करवा दिया तो न हुवा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1202) ﴾11﴿ **मय्यित** ने जिस के बारे में **वसिय्यत** की थी उस का भी अगर इन्तिक़ाल हो गया या वोह जाने पर राज़ी नहीं तो अब दूसरे से **ह़ज** करवा लिया गया तो **जाइज़** है। (رَدُّالْمُحتار ج٤ ص١٩) ﴾12﴿ **ह़ज्जे बदल** करने वाला अक्सर रास्ता सुवारी पर क़त्अ़ (या'नी तै़) करे वरना **ह़ज्जे बदल** न होगा और ख़र्च भेजने वाले को देना पड़ेगा। हां ! अगर ख़र्च में कमी पड़ी तो पैदल भी जा सकता है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1203) ﴾13﴿ जिस की त़रफ़ से **ह़ज्जे बदल** करना है उसी के वत़न से ह़ज को जाए। (ऐज़न) ﴾14﴿ अगर आमिर (हुक्म देने वाले) ने "**ह़ज**" का हुक्म दिया था और ख़ुद मामूर (या'नी जिस को हुक्म दिया गया उस) ने **ह़ज्जे तमत्तोअ़** किया तो ख़र्चा वापस कर दे। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 660) क्यूं कि "**ह़ज्जे तमत्तोअ़**" में **ह़ज** का एह़राम "**मीक़ाते आमिर**" से नहीं होगा बल्कि **ह़रम** ही से बंधेगा। **हां** आमिर की इजाज़त से ऐसा किया गया (या'नी **ह़ज्जे तमत्तोअ़** किया गया) तो मुज़ा-यक़ा नहीं। ﴾15﴿ "**वसी**" ने (या'नी जिस को वसिय्यत कर गया था कि तू मेरी त़रफ़ से **ह़ज** करवा देना, उस ने) अगर मय्यित के छोड़े हुए माल का तीसरा ह़िस्सा इतना था कि वत़न से आदमी भेजा जा सकता था, फिर भी अगर ग़ैर जगह से भेजा तो येह ह़ज मय्यित की

त़रफ़ से न हुवा। **हां** वोह जगह वत़न से इतनी क़रीब हो कि वहां जा कर रात के आने से पहले वापस आ सकता है तो हो जाएगा वरना उसे चाहिये कि ख़ुद अपने माल से मय्यित की त़रफ़ से दोबारा **ह़ज** करवाए। (عالمگیری ج۱ص۲۵۹،رَدُّالْمُحتار ج ٤ ص۲۷) **16** आमिर (या'नी जिस ने ह़ज का हुक्म दिया है उसी) की **निय्यत** से **ह़ज** करे और **अफ़्ज़ल** येह है कि ज़बान से भी لَبَّیْکَ عَنْ فُلان[1] कह ले और अगर उस का नाम भूल गया है तो येह निय्यत कर ले कि जिस ने भेजा है (या जिस के लिये भेजा है) उस की त़रफ़ से करता हूं। (رَدُّالْمُحتار ج٤ص۲۰) **17** अगर **एह़राम** बांधते वक़्त निय्यत करना भूल गया तो जब तक **अफ़्आ़ले ह़ज** शुरूअ़ न किये हों इख़्तियार है कि **निय्यत** कर ले। (ایضاً ص۱۸)

"आओ ह़ज करें" के नव हुरूफ़ की निस्बत से ह़ज्जे बदल के 9 मु-तफ़र्रिक़ म-दनी फूल

1 "**वसी**" (या'नी वसिय्यत करने वाले) ने इस साल किसी को **ह़ज्जे बदल** के लिये मुक़र्रर किया मगर वोह इस साल न गया साले आयन्दा जा कर अदा किया, अदा हो गया, उस पर कोई जुर्माना नहीं। (عالمگیری ج۱ص۲٦۰) **2** **ह़ज्जे बदल** करने वाले के लिये ज़रूरी है कि जो कुछ

1 : फुलां की जगह जिस के नाम पर ह़ज करना चाहता है उस का नाम ले म-सलन لَبَّیْکَ عَنْ عَبْدِالرَّحمٰنِ اَللّٰھُمَّ لَبَّیْک...اِلَخ

बचा है वोह वापस कर दे। अगर्चे बहुत थोड़ी सी चीज़ हो उसे रख लेना **जाइज़** नहीं। अगर्चे शर्त़ कर ली हो कि जो कुछ बचा वोह वापस नहीं दूंगा कि येह शर्त़ बात़िल है। हां दो[2] सूरतों में रखना जाइज़ होगा : **(1)** भेजने वाला उस को **वकील** कर दे कि जो कुछ बच जाए वोह अपने आप को **हिबा** कर के (या'नी बत़ौरे तोह़फ़ा दे कर) क़ब्ज़ा कर लेना **(2)** येह कि भेजने वाला **क़रीबुल मौत** हो और इस त़रह़ **वसिय्यत** कर दे कि जो कुछ बचे उस की मैं ने तुझे **वसिय्यत** की। (मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1210, دُرِّمُختار، رَدُّالمُحتار ج٤ ص٣٨) **﴿3﴾** बेहतर येह है कि जिसे **ह़ज्जे बदल** के लिये भेजा जाए पहले वोह ख़ुद अपने **फ़र्ज़ ह़ज** से सुबुक दोश (या'नी बरिय्युज़्ज़िम्मा) हो चुका हो, अगर ऐसे को भेजा जिस ने ख़ुद **ह़ज** नहीं किया जब भी **ह़ज्जे बदल** हो जाएगा। **(عالمگیری ج١ ص٢٥٧)** ऐसा शख़्स जिस ने **फ़र्ज़** होने के बा वुजूद **ह़ज** न किया हो उसे ह़ज्जे बदल पर भिजवाना मक्रूहे तह़रीमी है। **(اَلْمَسْلَكُ الْمُتَقَسِّط لِلقاری ص٤٥٣)** **﴿4﴾** बेहतर येह है कि ऐसे शख़्स को भेजें जो **ह़ज** के अफ़्आ़ल और त़रीक़े से आगाह हो, अगर **मुराहिक़** या'नी क़रीबुल बुलूग़ बच्चे से **ह़ज्जे बदल** करवाया जब भी अदा हो जाएगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1204, **دُرِّمُختار ج٤ ص٢٥**) **﴿5﴾** भेजने वाले के पैसों से न किसी को खाना खिला सकता है न फ़क़ीर को दे सकता है, हां भेजने वाले ने इजाज़त दी हो तो मुज़ा-यक़ा नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1210, **لُبابُ الْمَناسِك ص ٤٥٧**)

﴾6﴿ **हर** क़िस्म के **जुर्मे इख़्तियारी** के दम ख़ुद **ह़ज्जे बदल** अदा करने वाले पर हैं भेजने वाले पर नहीं ﴾7﴿ अगर किसी ने न ख़ुद **ह़ज** किया हो न **वारिस** को **वसिय्यत** की हो और **इन्तिक़ाल** कर गया और **वारिस** ने अपनी मरज़ी से अपनी त़रफ़ से **ह़ज्जे बदल** करवा दिया (या ख़ुद किया) तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उम्मीद है कि उस की त़रफ़ से अदा हो जाएगा। **(عالمگیری ج ۱ ص ۲۵۸)** ﴾8﴿ **ह़ज्जे बदल** करने वाला अगर मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا ही में रह गया तो येह भी जाइज़ है लेकिन **अफ़्ज़ल** येह है कि वापस आए, आने जाने के अख़्राजात भेजने वाले के ज़िम्मे हैं। **(اَیضاً)** ﴾9﴿ **ह़ज्जे बदल** करने वाला भेजने वाले की रक़म से मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا का एक बार सफ़र कर सकता है, मक्के मदीने की ज़ियारतों पर ख़र्च नहीं कर सकता, दरमियाना द-रजे का खाना खाएगा, जिस में गोश्त भी दाख़िल है, अलबत्ता सीख़ कबाब, चरग़ा वग़ैरा उ़म्दा खाने, मिठाइयां, ठन्डी बोतलें फल फ्रूट वग़ैरा नहीं खा सकते, नीज़ खजूरें, तस्बीह़ात वग़ैरा तबर्रुकात लाने की भी इजाज़त नहीं। (ह़ज्जे बदल की मज़ीद तफ़्सीलात के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल **सफ़ह़ा** 1199 ता 1211 का मुत़ा-लआ़ ज़रूरी है)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मदीने की ह़ाज़िरी

ह़सन ह़ज कर लिया का'बे से आंखों ने ज़िया पाई
चलो देखें वोह बस्ती जिस का रस्ता दिल के अन्दर है

ज़ौक़ बढ़ाने का त़रीक़ा : मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا का **मुक़द्दस** सफ़र आप को मुबारक हो ! रास्ते भर **दुरूदो सलाम** की कसरत कीजिये और **ना'तिया अश्आ़र** पढ़ते रहिये या हो सके तो टेप रेकॉर्डर पर ख़ुश इल्ह़ान ना'त ख़्वानों के केसिट सुनते रहिये कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ तरक़्क़िये ज़ौक़ के अस्बाब होंगे । **मदीनए पाक** की अ़-ज़-मतो रिफ़्अ़त का तसव्वुर बांधते रहिये, इस के फ़ज़ाइल पर ग़ौर करते रहिये ।[1] इस से भी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप का शौक़ मज़ीद बढ़ेगा ।

मदीना कितनी देर में आएगा ! : मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا से **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا का फ़ासिला तक़रीबन 425 मिलो मीटर है जिसे आ़म दिनों में बस तक़रीबन 5 घन्टे में तै़ कर लेती है मगर **ह़ज** के दिनों में बा'ज़

1 : दौराने क़ियामे ह़-रमैने शरीफ़ैन फ़ज़ाइले मक्का व मदीना पर मब्नी कुतुब का मुत़ा-लआ़ तरक़्क़िये ज़ौक़ का बेहतरीन ज़रीआ़ है नीज़ इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बढ़ाने के लिये आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का ना'तिया दीवान "ह़दाइक़े बख़्शिश" और उस्ताज़े ज़मन मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عليه رَحمةُ اللّٰهِ ذُوالْمِنَن का कलाम "ज़ौक़े ना'त" का ख़ूब मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये ।

मस्लह़तों की बिना पर रफ़्तार कम रखी जाती और पहुंचने में बस तक़्रीबन 8 ता 10 घन्टे ले लेती है। "मर्कज़े इस्तिक़्बाले हुज्जाज" पर बस रुकती है, यहां पासपोर्ट का इन्दिराज होता है और पासपोर्ट रख कर एक कार्ड जारी किया जाता है जिसे ह़ाजी ने संभाल कर रखना होता है, यहां की कारवाई में बसा अवक़ात कई घन्टे भी लग जाते हैं, सब्र का फल मीठा है। अ़न्क़रीब आप اِنْ شَآءَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ मीठे मदीने के गली कूचों के जल्वे लूटेंगे, जल्द ही आप **गुम्बदे ख़ज़रा** के दीदार से अपनी आंखें ठन्डी करेंगे। जूं ही दूर से **मस्जिदुन्न-बविय्यिशशरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मीनारे नूरबार पुर वक़ार पर निगाह पड़ेगी, सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद नज़र आएगा اِنْ شَآءَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ आप के क़ल्ब में हलचल मच जाएगी और आंखों से बे इख़्तियार आंसू छलक पड़ेंगे।

साइम कमाले ज़ब्त़ की कोशिश तो की मगर
पलकों का ह़ल्क़ा तोड़ कर आंसू निकल गए

हवाए मदीना से आप के मशामे दिमाग़ **मुअ़त्तर** हो रहे होंगे और आप अपनी रूह़ में ता-ज़गी मह़सूस कर रहे होंगे, हो सके तो नंगे पाउं रोते हुए **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا की फ़ज़ाओं में दाख़िल हों।

जूते उतार लो चलो बा होश बा अदब
देखो मदीने का ह़सीं गुलज़ार आ गया

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नंगे पाउं रहने की कु़रआनी दलील : और यहां नंगे पाउं रहना कोई ख़िलाफ़े शर-अ़ फे़'ल भी नहीं बल्कि **मुक़द्दस सर ज़मीन** का सरासर अदब है । चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से हम कलामी का शरफ़ ह़ासिल किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया :

فَاخْلَعْ نَعْلَیْكَ ۚ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ؕ﴿۱۲﴾ (پ۱۶ طٰہٰ:۱۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो अपने जूते उतार डाल, बेशक तू पाक जंगल तुवा में है ।

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ! जब **तू़रे सीना** की मुक़द्दस वादी में सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ख़ुद **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** जूते उतार लेने का हुक्म फ़रमाए तो **मदीना** तो फिर **मदीना** है, यहां अगर नंगे पाउं रहा जाए तो क्यूं सआ़दत की बात न होगी ! करोड़ों मालिकिय्यों के पेश्वा और मश्हूर आ़शिके़ रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ **मदीनए पाक** زَادَھَا اللہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की गलियों में नंगे पैर चला करते थे । (الطبقات الکبرٰی لِلشّعرانی الجزء الاول ص ۷۶) आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में कभी घोड़े पर सुवार न होते, फ़रमाते हैं : मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से

ह़या आती है कि उस मुबारक ज़मीन को अपने घोड़े के क़दमों तले रौंदूं जिस में उस के प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मौजूद हैं। (या'नी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का रौज़ए अन्वर है)

(اِحیاءُ العلوم ج۱ ص ٤٨)

ऐ ख़ाके मदीना ! तू ही बता मैं कैसे पाउं रख्खूं यहां
तू ख़ाके पा सरकार की है आंखों से लगाई जाती है

ह़ाज़िरी की तय्यारी : ह़ाज़िरिये **रौज़ए रसूल** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पहले मकान वग़ैरा का बन्दो बस्त कर लीजिये, ह़ाजत हो तो खा पी लीजिये, अल ग़रज़ हर वोह बात जो **ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़** में **मानेअ़** हो उस से फ़ारिग़ हो लीजिये। अब ताज़ा **वुज़ू** कीजिये इस में **मिस्वाक** ज़रूर हो बल्कि बेहतर येह है कि ग़ुस्ल कर लीजिये, धुले हुए कपड़े बल्कि हो सके तो नया सफ़ेद लिबास, नया इमामा शरीफ़ वग़ैरा ज़ैबे तन कीजिये, सुरमा और ख़ुश्बू लगा लीजिये और मुश्क अफ़्ज़ल है, अब रोते हुए **दरबार** की त़रफ़ बढ़िये। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1223 माख़ूज़न)

ऐ लीजिये ! सब्ज़ गुम्बद आ गया : ऐ लीजिये ! वोह **सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद** जिसे आप ने तस्वीरों में देखा था, ख़यालों में चूमा था अब सचमुच आप की आंखों के सामने है।

अश्कों के मोती अब निछावर ज़ाइरो करो वोह सब्ज़ गुम्बद मम्बए अन्वार आ गया

अब सर झुकाए बा अदब पढ़ते हुए दुरूद

रोते हुए आगे बढ़ो दरबार आ गया

(वसाइले बख़्शिश, स. 473)

हां ! हां ! येह वोही **सब्ज़ गुम्बद** है जिस के दीदार के लिये आ़शिक़ाने रसूल के दिल बे क़रार रहते और आंखें अश्कबार हो जाया करती हैं, खु़दा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! **रौज़ए रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़ज़ीम जगह दुन्या के किसी मक़ाम में तो कुजा **जन्नत** में भी नहीं है।

फ़िरदौस की बुलन्दी भी छू सके न इस को

ख़ुल्दे बरीं से ऊंचा मीठे नबी का रौज़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 298)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ किताब "वसाइले बख़्शिश" के **सफ़्ह़ा** 298 के ह़ाशिये में है : रौज़ा के लफ़्ज़ी मा'ना हैं : बाग़। शे'र में रौज़ा से मुराद वोह ह़िस्सए ज़मीन है जिस पर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जिस्मे मुअ़ज़्ज़म तशरीफ़ फ़रमा है। इस की फ़ज़ीलत बयान करते हुए फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : मह़बूबे दावर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जिस्मे अन्वर से ज़मीन का जो ह़िस्सा लगा हुवा है। वोह का'बा शरीफ़ से बल्कि अ़र्शो कुर्सी से भी अफ़्ज़ल है। **(دُرِّمُختَار ج٤ ص ٦٢)**

हो सके तो बाबुल बक़ीअ़ से ह़ाज़िर हों : अब सरापा अ-दबो होश बने, आंसू बहाते या रोना न आए तो कम अज़ कम रोने जैसी सूरत बनाए। **बाबे बक़ीअ़[1]** पर ह़ाज़िर हों। "**اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ**" अ़र्ज़ कर के ज़रा ठहर जाइये। गोया सरकारे ज़ी वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के **शाही दरबार** में ह़ाज़िरी की इजाज़त मांग रहे हैं। अब **بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم** कह कर अपना सीधा क़दम **मस्जिद शरीफ़** में रखिये और हमातन अदब हो कर दाख़िले **मस्जिदे न-बवी** عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हों **इस वक़्त जो ता'ज़ीम व अदब फ़र्ज़ है** वोह हर आ़शिक़े रसूल का दिल जानता है। हाथ, पाउं, आंख, कान, ज़बान, दिल सब ख़याले ग़ैर से पाक कीजिये और रोते हुए आगे बढ़िये, न इर्द गिर्द नज़रें घुमाइये, न ही मस्जिद के नक़्शो निगार देखिये, बस एक ही तड़प, एक ही लगन और एक ही ख़याल हो कि भागा हुवा मुजरिम अपने आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में पेश होने के लिये चला है।

---

1 : येह मस्जिदे न-बवी عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के जानिबे मशरिक़ वाक़ेअ़ है। उ़मूमन दरबान बाबे **बक़ीअ़** से ह़ाज़िरी के लिये नहीं जाने देते लिहाज़ा लोग बाबुस्सलाम ही से ह़ाज़िर होते हैं इस त़रह़ ह़ाज़िरी की इब्तिदा सरे अक़्दस से होगी और येह ख़िलाफ़े अदब है क्यूं कि बुज़ुर्गों की ख़िदमत में क़दमों की त़रफ़ से आना ही अदब है। अगर बाबे **बक़ीअ़** से ह़ाज़िरी न हो सके तो बाबुस्सलाम से भी ह़रज नहीं। अगर भीड़ वग़ैरा न हो तो कोशिश कीजिये कि बाबे **बक़ीअ़** से ह़ाज़िरी हो जाए।

चला हूं एक मुजरिम की त़रह़ मैं जानिबे आक़ा

नज़र शरमिन्दा शरमिन्दा, बदन लरज़ीदा लरज़ीदा

नमाज़े शुक्राना : अब अगर मक्रूह वक़्त न हो और ग़-ल-बए शौक़ मोहलत दे तो दो दो रक्अ़त **तह़िय्यतुल मस्जिद** व शुक्रानए बारगाहे अक़्दस अदा कीजिये, पहली रक्अ़त में अल ह़म्द शरीफ़ के बा'द قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ और दूसरी में अल ह़म्द शरीफ़ के बा'द قُلْ هُوَاللّٰه शरीफ़ पढ़िये।

सुनह़री जालियों के रू बरू : अब अ-दबो शौक़ में डूबे, गरदन झुकाए, आंखें नीची किये, रोने वाली सूरत बनाए बल्कि ख़ुद को बज़ोर रोने पर लाते, आंसू बहाते, थर-थराते, कप-कपाते, गुनाहों की नदामत से पसीना पसीना होते, सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ज़्लो करम की उम्मीद रखते, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़-दमैने शरीफ़ैन[1] की त़रफ़ से सुनह़री जालियों के रू बरू मुवा-जहा शरीफ़ में (या'नी चेहरए मुबारक के सामने) ह़ाज़िर हों कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने मज़ारे पुर अन्वार में रू ब क़िब्ला जल्वा अफ़्रोज़ हैं, मुबारक

---

1 : बाबुल बक़ीअ़ से ह़ाज़िरी मिली तो पहले क़-दमैने शरीफ़ैन आएंगे और बाबुस्सलाम से आए तो पहले सरे अक़्दस आएगा।

क़दमों की त़रफ़ से ह़ाज़िर होंगे तो सरकारे दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहे बेकस पनाह बराहे रास्त आप की त़रफ़ होगी और येह बात आप के लिये दोनों जहां में काफ़ी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1224)

मुवा-जहा शरीफ़ पर ह़ाज़िरी[1] : अब सरापा अदब बने ज़ेरे क़िन्दील उन चांदी की कीलों के सामने जो सुनहरी जालियों के दरवाज़ए मुबा-रका में ऊपर की त़रफ़ जानिबे मशरिक़ लगी हुई हैं, क़िब्ले को पीठ किये कम अज़ कम चार हाथ (या'नी तक़रीबन दो गज़) दूर नमाज़ की त़रह़ हाथ बांध कर सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेह्‌रए पुर अन्वार की त़रफ़ रुख़ कर के खड़े हों कि "फ़तावा आ़लमगीरी" वग़ैरा में येही अदब लिखा है कि **یَقِفُ کَمَا یَقِفُ فِی الصَّلٰوۃ** या'नी "सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबार में इस त़रह़ खड़ा हो जिस त़रह़ नमाज़ में खड़ा होता है।" यक़ीन मानिये ! सरकारे ज़ी वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार में सच्ची ह़क़ीक़ी दुन्यावी जिस्मानी ह़यात से उसी त़रह़ ज़िन्दा हैं जिस त़रह़ वफ़ात शरीफ़ से पहले थे और आप को भी देख रहे हैं बल्कि आप के दिल

1 : लोग उ़मूमन बड़े सूराख़ को "मुवा-जहा शरीफ़" समझते हैं बल्कि अक्सर उर्दू किताबों में भी येही लिखा है मगर रफ़ीक़ुल ह़-रमैन में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ मुवा-जहा शरीफ़ की निशान देही की गई है।

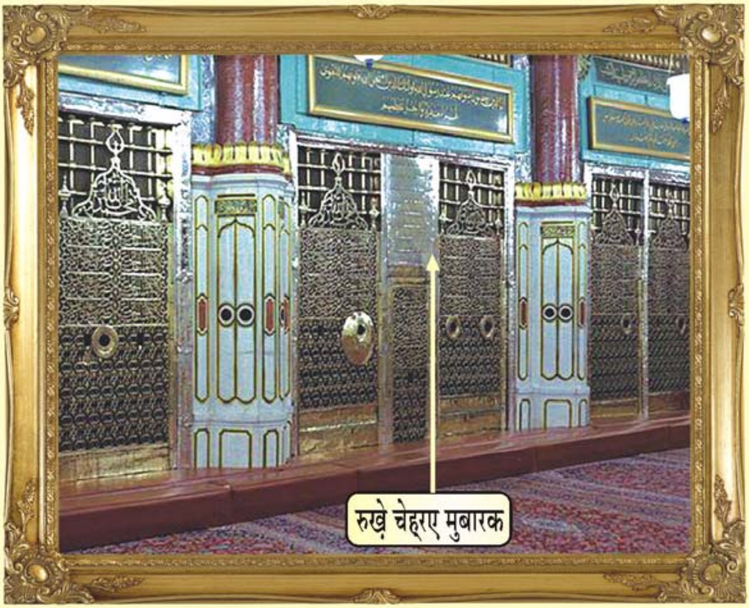
रुख़े चेहरए मुबारक

صلى الله تعالى عليه واله وسلم
रुख़े चेहरए मुबारक

गुम्बदे ख़ज़रा की एक क़दीम यादगार तस्वीर

में जो ख़यालात आ रहे हैं उन पर भी मुत्त़लअ़ (या'नी बा ख़बर) हैं। ख़बरदार ! जाली मुबारक को बोसा देने या हाथ लगाने से बचिये कि येह ख़िलाफ़े अदब है, हमारे हाथ इस क़ाबिल ही नहीं की जाली मुबारक को छू सकें, लिहाज़ा चार हाथ (या'नी तक़रीबन दो गज़) दूर रहिये, येह उन की रह़मत क्या कम है कि आप को अपने मुवा-ज-हए अक़्दस के क़रीब बुलाया ! सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहे करम अगर्चे हर जगह आप की त़रफ़ थी, अब ख़ुसूसिय्यत और इस द-र-जए क़ुर्ब के साथ आप की त़रफ़ है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1224, 1225)

दीदार के क़ाबिल तो कहां मेरी नज़र है
येह तेरी इनायत है जो रुख़ तेरा इधर है

बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **में सलाम अ़र्ज़ कीजिये : अब** अदब और शौक़ के साथ ग़मगीन और दर्द भरी आवाज़ में मगर आवाज़ इतनी बुलन्द और सख़्त न हो कि सारे आ'माल ही **ज़ाएअ़** हो जाएं, न बिल्कुल ही पस्त (या'नी धीमी) कि येह भी **सुन्नत** के ख़िलाफ़ है, मो'तदिल (या'नी दरमियानी) आवाज़ में इन अल्फ़ाज़ के साथ सलाम अ़र्ज़ कीजिये :

اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ اَیُّھَا النَّبِیُّ وَرَحْمَةُ اللّٰہِ

तरजमा : ऐ नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप पर सलाम और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें

وَبَرَكَاتُهٗ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ط

और ब-र-कतें। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप पर सलाम।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَيْرَ خَلْقِ اللّٰهِ ط اَلسَّلَامُ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तमाम मख़्लूक़ से बेहतर आप पर सलाम।

عَلَيْكَ يَا شَفِيْعَ الْمُذْنِبِيْنَ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

ऐ गुनहगारों की शफ़ाअ़त करने वाले आप पर सलाम, आप पर,

وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ وَاُمَّتِكَ اَجْمَعِيْنَ ط

आप की आल व अस्ह़ाब पर और आप की तमाम उम्मत पर सलाम।

जहां तक ज़बान साथ दे, दिल जम्ई़ हो मुख़्तलिफ़ अल्क़ाब के साथ सलाम अ़र्ज़ करते रहिये, अगर अल्क़ाब याद न हों तो اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه की तक्रार करते (या'नी येही बार बार पढ़ते) रहिये। जिन जिन लोगों ने आप को सलाम के लिये कहा है उन का भी सलाम अ़र्ज़ कीजिये, जो जो आ़शिक़ाने रसूल येह तह़रीर पढ़ें वोह मुझ **सगे मदीना** عُفِیَ عَنْهُ का सलाम अ़र्ज़ कर दें तो मुझ गुनहगारों के सरदार पर **एह़साने अ़ज़ीम** होगा। यहां ख़ूब **दुआ़एं** मांगिये और बार बार इस त़रह़ **शफ़ाअ़त की भीक त़लब** कीजिये :

اَسْئَلُكَ الشَّفَاعَةَ يَا رَسُوْلَ اللهِ صلّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلّم

या'नी **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं आप से शफ़ाअ़त का सुवाल करता हूं।

सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ **की ख़िदमत में सलाम :**

फिर मशरिक़ की जानिब (अपने सीधे हाथ की त़रफ़) आधे गज़ के क़रीब हट कर (क़रीबी छोटे सूराख़ की त़रफ़) ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के चेह्रए अन्वर के सामने दस्त बस्ता (या'नी उसी त़रह़ हाथ बांध कर) खड़े हो कर उन को सलाम पेश कीजिये, बेहतर येह है कि इस त़रह़ सलाम अ़र्ज़ कीजिये :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَلِيْفَةَ رَسُوْلِ اللهِ ط

ऐ **ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह** ! आप पर सलाम,

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَزِيْرَ رَسُوْلِ اللهِ ط

ऐ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वज़ीर आप पर सलाम,

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ رَسُوْلِ

ऐ ग़ारे सौर में **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रफ़ीक़ !

اللّٰہِ فِی الْغَارِ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ ط

आप पर सलाम और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें और ब-र-कतें।

फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **की ख़िदमत में सलाम :** **फिर** इतना ही मज़ीद जानिबे मशरिक़ (अपने सीधे हाथ की त़रफ़) थोड़ा सा सरक कर (आख़िरी सूराख़ के सामने) ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के रू बरू अ़र्ज़ कीजिये :

اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا اَمِیْرَ الْمُؤْمِنِیْنَ ط اَلسَّلَامُ

ऐ **अमीरुल मुअमिनीन** ! आप पर सलाम,

عَلَیْکَ یَا مُتَمِّمَ الْاَرْبَعِیْنَ ط اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ

ऐ चालीस का अ़दद पूरा करने वाले ! आप पर सलाम,

یَا عِزَّ الْاِسْلَامِ وَالْمُسْلِمِیْنَ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ ط

ऐ इस्लाम व मुस्लिमीन की इ़ज़्ज़त ! आप पर सलाम और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें और ब-र-कतें।

दोबारा एक साथ शैख़ैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا **की ख़िदमतों में सलाम : फिर** बालिश्त भर जानिबे मग़रिब या'नी अपने उलटे हाथ की त़रफ़ सरकिये और दोनों छोटे सूराख़ों के बीच में खड़े हो कर एक साथ सय्यिदैना सिद्दीक़े अक्बर व फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا

की ख़िदमतों में इस त़रह़ सलाम अ़र्ज़ कीजिये :

اَلسَّلَامُ عَلَیۡکُمَا یَا خَلِیۡفَتَیۡ رَسُوۡلِ اللّٰہِ ط اَلسَّلَامُ

ऐ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के **ख़ु-लफ़ा !** आप दोनों पर सलाम,

عَلَیۡکُمَا یَا وَزِیۡرَیۡ رَسُوۡلِ اللّٰہِ ط اَلسَّلَامُ عَلَیۡکُمَا

ऐ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वु-ज़रा ! आप दोनों पर सलाम, ऐ **रसूलुल्लाह**

یَا ضَجِیۡعَیۡ رَسُوۡلِ اللّٰہِ وَرَحۡمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ ط

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पहलू में आराम फ़रमाने वाले ! (अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) आप दोनों पर सलाम हो

اَسۡئَلُکُمَا الشَّفَاعَۃَ عِنۡدَ رَسُوۡلِ اللّٰہِ صَلَّی

और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें और ब-र-कतें । आप दोनों साह़िबान से सुवाल करता हूं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَعَلَیۡکُمَا وَبَارَکَ وَسَلَّمَ ط

के ह़ुज़ूर मेरी सिफ़ारिश कीजिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन पर और आप दोनों पर दुरूद व ब-र-कत और सलाम नाज़िल फ़रमाए

येह दुआ़एं मांगिये : येह तमाम ह़ाज़िरियां क़बूलिय्यते दुआ़ के मक़ामात हैं, यहां दुन्या व आख़िरत की भलाइयां मांगिये । अपने वालिदैन, पीरो मुर्शिद, उस्ताद, औलाद, अहले ख़ानदान, दोस्त व अह़बाब और तमाम उम्मत के

लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत कीजिये और शहन्शाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त की भीक मांगिये, खु़सूसन मुवा-जहा शरीफ़ में ना'तिया अश्आ़र अ़र्ज़ कीजिये, अगर नीचे दिया हुवा मक़्त़अ़ यहां सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ की त़रफ़ से **12** बार अ़र्ज़ कर दें तो एह़साने अ़ज़ीम होगा :

पड़ोसी ख़ुल्द में अ़त्तार को अपना बना लीजे
जहां हैं इतने एह़सां और एह़सां या रसूलल्लाह

"मदीनतुल मुनव्वरह" के बारह ह़ुरूफ़ की निस्बत से बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी के 12 म-दनी फूल

﴾1﴿ मिम्बरे अत़्हर के क़रीब दुआ़ मांगिये ﴾2﴿ जन्नत की क्यारी में (या'नी जो जगह मिम्बर व हु़ज्रए मुनव्वरह के दरमियान है, उसे ह़दीस में ''जन्नत की क्यारी'' फ़रमाया) आ कर दो रक्अ़त नफ़्ल ग़ैरे वक़्ते मक्रूह में पढ़ कर दुआ़ कीजिये ﴾3﴿ जब तक मदीनए त़य्यिबा زَادَهَا اللهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की ह़ाज़िरी नसीब हो, एक सांस बेकार न जाने दीजिये ﴾4﴿ ज़रूरिय्यात के सिवा अक्सर वक़्त **मस्जिदुन्न-बविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में बा त़हारत ह़ाज़िर रहिये, नमाज़ व तिलावत व ज़िक्रो दुरूद में वक़्त गुज़ारिये, दुन्या की बात तो किसी भी मस्जिद में न चाहिये न कि यहां ﴾5﴿ मदीनए त़य्यिबा زَادَهَا اللهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में **रोज़ा** नसीब हो खु़सूसन गरमी में तो क्या कहना कि इस पर वा'दए शफ़ाअ़त है ﴾6﴿ यहां **हर**

صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم
मेहराबे मस्जिदे न-बवी
जन्नत की क्यारी

صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم
मेहराबे मस्जिदे न-बवी
जन्नत की क्यारी

का'बतुल्लाह की एक क़दीम यादगार तस्वीर

नेकी एक की पचास हज़ार लिखी जाती है, लिहाज़ा इबादत में ज़ियादा कोशिश कीजिये, खाने पीने की कमी ज़रूर कीजिये और जहां तक हो सके तसद्दुक़ (या'नी ख़ैरात) कीजिये ख़ुसूसन यहां वालों पर ﴿7﴾ क़ुरआने मजीद का कम से कम एक ख़त्म यहां और एक ह़त़ीमे का'बए मुअ़ज़्ज़मा में कर लीजिये ﴿8﴾ रौज़ए अन्वर पर नज़र इबादत है जैसे का'बए मुअ़ज़्ज़मा या क़ुरआने मजीद का देखना तो अदब के साथ इस की कसरत कीजिये और दुरूदो सलाम अ़र्ज़ कीजिये ﴿9﴾ पन्जगाना या कम अज़ कम सुब्ह़, शाम मुवा-जहा शरीफ़ में अ़र्ज़े सलाम के लिये ह़ाज़िर हों ﴿10﴾ शह्र में ख़्वाह शह्र से बाहर जहां कहीं गुम्बदे मुबारक पर नज़र पड़े, फ़ौरन दस्त बस्ता उधर मुंह कर के सलातो सलाम अ़र्ज़ कीजिये, बे इस के हरगिज़ न गुज़रिये कि ख़िलाफ़े अदब है ﴿11﴾ ह़त्तल वस्अ़ कोशिश कीजिये कि **मस्जिदे अव्वल** या'नी ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में जितनी थी उस में नमाज़ पढ़िये और उस की मिक़्दार **100** हाथ त़ूल (लम्बाई) और 100 हाथ अ़र्ज़ (चौड़ाई) (या'नी तक़रीबन 50X50 गज़) है अगर्चे बा'द में कुछ इज़ाफ़ा हुवा है, उस (या'नी इज़ाफ़ा शुदा ह़िस्से) में नमाज़ पढ़ना भी **मस्जिदुन-बविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ही में पढ़ना है ﴿12﴾ रौज़ए अन्वर का न त़वाफ़ कीजिये, न सज्दा, न इतना झुकना कि रुकूअ़ के बराबर हो। **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम उन की इत़ाअ़त में है।

(माख़ूज़न बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, स. 1227 ता 1228)

आ़लमे वज्द में रक़्सां मेरा पर पर होता

काश ! मैं गुम्बदे ख़ज़्रा का कबूतर होता

जाली मुबारक के रू बरू पढ़ने का विर्द : जो कोई हुज़ूरे अकरम, **नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की **क़ब्रे मुअ़ज़्ज़म** के रू बरू खड़ा हो कर येह आयते शरीफ़ा **एक बार** पढ़े :

﴿اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰٓىٕكَتَهٗ یُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِیِّؕ-یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْهِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا(۵۶)﴾

फिर **70 मर्तबा** येह अ़र्ज़ करे : صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْکَ وَسَلَّمَ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ फ़िरिश्ता इस के जवाब में यूं कहता है : ऐ फुलां ! तुझ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का सलाम हो। फिर फ़िरिश्ता उस के लिये दुआ़ करता है : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस की कोई ह़ाजत ऐसी न रहे जिस में येह नाकाम हो। (اَلْمَواہِبُ اللَّدُنِّیَۃ ج۳ص۴۱۲)

दुआ़ के लिये जाली मुबारक को पीठ मत कीजिये : **जब** जब सुनहरी जालियों के रू बरू ह़ाज़िरी की सआ़दत मिले इधर उधर हरगिज़ न देखिये और ख़ास कर जाली शरीफ़ के अन्दर झांकना तो बहुत बड़ी जुरअत है। क़िब्ले की त़रफ़ पीठ किये कम अज़ कम चार[4] हाथ (या'नी तक़रीबन दो गज़) जाली

मुबारक से दूर खड़े रहिये और मुवा-जहा शरीफ़ की त़रफ़ रुख़ कर के सलाम अ़र्ज़ कीजिये, दुआ़ भी मुवा-जहा शरीफ़ ही की त़रफ़ रुख़ किये मांगिये। बा'ज़ लोग वहां दुआ़ मांगने के लिये का'बे की त़रफ़ मुंह करने को कहते हैं, उन की बातों में आ कर हरगिज़ हरगिज़ सुनहरी जालियों की त़रफ़ आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को या'नी **का'बे के का'बे** को पीठ मत कीजिये।

का'बे की अ़-ज़-मतों का मुन्किर नहीं हूं लेकिन
का'बे का भी है का'बा मीठे नबी का रौज़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 298)

पचास हज़ार ए'तिकाफ़ का सवाब : जब जब आप **मस्जिदुन्न-बविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में दाख़िल हों तो **ए'तिकाफ़** की निय्यत करना न भूलिये, इस त़रह़ हर बार आप को "पचास हज़ार नफ़्ली ए'तिकाफ़" का सवाब मिलेगा और ज़िम्नन खाना, पीना, इफ़्त़ार करना वग़ैरा भी जाइज़ हो जाएगा। ए'तिकाफ़ की निय्यत इस त़रह़ कीजिये :

نَوَیْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِکَافِ[1] **तरजमा :** मैं ने सुन्नते ए'तिकाफ़ की निय्यत की।

---

1 : बाबुस्सलाम और बाबुर्रह़मह से मस्जिदे न-बवी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में दाख़िल हों तो सामने वाले सुतून मुबारक पर ग़ौर से देखेंगे तो सुनहरी ह़ुरूफ़ से "نَوَیْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِکَاف" उभरा हुवा नज़र आएगा जो कि आ़शिक़ाने रसूल की याद दिहानी के लिये है।

रोज़ाना पांच ह़ज का सवाब : खु़सूसन चालीस नमाज़ें बल्कि तमाम फ़र्ज़ नमाज़ें **मस्जिदुन्न-बविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ही में अदा कीजिये कि ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो शख़्स वुज़ू कर के मेरी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के इरादे से निकले येह उस के लिये एक ह़ज के बराबर है।''

(شُعَبُ الْاِیمان ج۳ ص۴۹۹ حدیث۴۱۹۱)

सलाम ज़बानी ही अ़र्ज़ कीजिये : वहां जो भी **सलाम** अ़र्ज़ करना है, वोह ज़बानी याद कर लेना मुनासिब है, किताब से देख कर **सलाम** और **दुआ़** के सीग़े वहां पढ़ना अ़जीब सा लगता है क्यूं कि सरवरे काएनात, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस्मानी ह़यात के साथ **हु़जरए मुबा-रका** में **क़िब्ले** की त़रफ़ रुख़ किये तशरीफ़ फ़रमा हैं और हमारे दिलों तक के ख़त़रात (या'नी ख़यालात) से आगाह हैं। इस तसव्वुर के क़ाइम हो जाने के बा'द किताब से देख कर **सलाम** वग़ैरा अ़र्ज़ करना ब ज़ाहिर भी ना मुनासिब मा'लूम होता है, म-सलन आप के पीर साह़िब आप के सामने मौजूद हों तो आप उन को किताब से पढ़ पढ़ कर सलाम अ़र्ज़ करेंगे या ज़बानी ही ''**या ह़ज़रत** اَلسَّلامُ عَلَیْکُم'' कहेंगे ? उम्मीद है आप मेरा मुद्दआ़ समझ गए होंगे। **याद रखिये !** बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में बने सजे अल्फ़ाज़ नहीं बल्कि दिल देखे जाते हैं।

बुढ़िया को दीदार हो गया : मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا 1405 सि.हि. की ह़ाज़िरी में **सगे मदीना** عُفِیَ عَنْہُ को एक पीर भाई मर्ह़ूम ह़ाजी इस्माईल ने येह वाक़िआ़ सुनाया था : दो या तीन साल पहले तक़रीबन 85 सालह एक **ह़ज्जन** बी सुनह्‌री जालियों के रू बरू सलाम अ़र्ज़ करने ह़ाज़िर हुई और अपने टूटे फूटे अल्फ़ाज़ में सलातो सलाम अ़र्ज़ करना शुरूअ़ किया, नागाह एक ख़ातून पर नज़र पड़ी जो किताब से देख देख कर निहायत उ़म्दा अल्क़ाब के साथ सलातो सलाम अ़र्ज़ कर रही थी, येह देख कर बेचारी अनपढ़ **बुढ़िया** का दिल डूबने लगा, अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **!** मैं तो पढ़ी लिखी हूं नहीं जो अच्छे अच्छे अल्फ़ाज़ के साथ सलाम अ़र्ज़ कर सकूं, मुझ अनपढ़ का सलाम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कहां पसन्द आएगा ! दिल भर आया, रो धो कर चुप हो रही । रात जब सोई तो सोई हुई क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी ! क्या देखती है कि सिरहाने उम्मत के वाली, सरकारे आ़ली صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए हैं, लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई, रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : **"मायूस क्यूं होती हो ? हम ने तुम्हारा सलाम सब से पहले क़बूल फ़रमाया है ।"**

तुम उस के मददगार हो तुम उस के त़रफ़ दार *जो तुम को निकम्मे से निकम्मा नज़र आए*
लगाते हैं उस को भी सीने से आक़ा *जो होता नहीं मुंह लगाने के क़ाबिल*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल इन्तिज़ार.....! अल इन्तिज़ार.....! : सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद और हुज्रए मक़्सूरा (या'नी वोह मुबारक कमरा जिस में हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे मुनव्वर है) पर नज़र जमाना इबादत और कारे सवाब है। ज़ियादा से ज़ियादा वक़्त **मस्जिदुन्-बविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में गुज़ारने की कोशिश कीजिये। मस्जिद शरीफ़ में बैठे हुए दुरूदो सलाम पढ़ते हुए हुज्रए मुतहहरा पर जितना हो सके निगाहे अक़ीदत जमाया कीजिये और इस हसीन तसव्वुर में डूब जाया कीजिये गोया अन्क़रीब हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हुज्रए मुनव्वरह से बाहर तशरीफ़ लाने वाले हैं। हिज्रो फ़िराक़ और इन्तिज़ारे आक़ाए नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में अपने आंसूओं को बहने दीजिये।

क्या ख़बर आज ही दीदार का अरमां निकले
अपनी आंखों को अक़ीदत से बिछाए रखिये

एक मेमन हाजी को दीदार हो गया : सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ को 1400 सि.हि. की हाज़िरी में मदीनए पाक زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में बाबुल मदीना कराची के एक नौ जवान हाजी ने बताया कि मैं **मस्जिदुन्-बविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में रहमते आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुज्रए मक़्सूरा के पीछे पुश्ते अत्हर की जानिब सब्ज़ जालियों के पीछे बैठा हुवा था कि ऐन

बेदारी के आ़लम में, मैं ने देखा कि अचानक **सब्ज़ सब्ज़ जालियों** की रुकावट हट गई और ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **हुज्रए पाक** से बाहर तशरीफ़ ले आए और मुझ से फ़रमाने लगे : **“मांग क्या मांगता है ?”** मैं नूर की तजल्लियों में इस क़दर गुम हो गया कि कुछ अ़र्ज़ करने की जसारत (या'नी हिम्मत) ही न रही, **आह !** मेरे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जल्वा दिखा कर मुझे तड़पता छोड़ कर अपने हुज्रए मुत़ह्हरा में वापस तशरीफ़ ले गए।

शरबते दीद ने इक आग लगाई दिल में तपिशे दिल को बढ़ाया है बुझाने न दिया
अब कहां जाएगा नक़्शा तेरा मेरे दिल से तह में रख्खा है इसे दिल ने गुमाने न दिया

गलियों में न थूकिये ! : मक्के मदीने की गलियों में **थूका** न कीजिये, न ही नाक साफ़ कीजिये। जानते नहीं इन गलियों से हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم गुज़रे हैं।

ओ पाए नज़र होश में आ, कूए नबी है आंखों से भी चलना तो यहां बे अ-दबी है

जन्नतुल बक़ीअ़ : जन्नतुल बक़ीअ़ शरीफ़ नीज़ जन्नतुल मअ़ला (मक्कए मुकर्रमा) दोनों मुक़द्दस क़ब्रिस्तानों के मक़्बरों और मज़ारों को शहीद कर दिया गया है। हज़ारहा सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن और बे शुमार अहले बैते अत़्हार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم

व औलियाए किबार व उश्शाक़े ज़ार رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْغَفَّار के मज़ारात के नुक़ूश तक मिटा दिये गए हैं । ह़ाज़िरी के लिये अन्दर दाख़िले की सूरत में आप का पाउं مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ किसी भी सह़ाबी या आ़शिक़े रसूल के मज़ार शरीफ़ पर पड़ सकता है ! शर-ई मस्अला येह है कि आ़म मुसल्मानों की क़ब्रों पर भी पाउं रखना ह़राम है। "**रद्दुल मुह़तार**" में है : (क़ब्रिस्तान में क़ब्रें मिटा कर) जो नया रास्ता निकाला गया हो उस पर चलना ह़राम है । (رَدُّالْمُحتار ج۱ص۶۱۲) बल्कि नए रास्ते का सिर्फ़ गुमान हो तब भी उस पर चलना **ना जाइज़ व गुनाह** है । (دُرِّمُختار ج ۳ص۱۸۳) लिहाज़ा म-दनी इल्तिजा है कि बाहर ही से सलाम अ़र्ज़ कीजिये और वोह भी जन्नतुल बक़ीअ़ के सद्र दरवाज़े (MAIN ENTRANCE) पर नहीं बल्कि उस की चार दीवारी के बाहर उस सम्त खड़े हों जहां से क़िब्ले को आप की पीठ हो ताकि मदफ़ूनीने बक़ीअ़ के चेहरे आप की त़रफ़ रहें । अब इस त़रह़

अहले बक़ीअ़ को सलाम अ़र्ज़ कीजिये

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ فَاِنَّا

तरजमा : तुम पर सलाम हो ऐ मोमिनों की बस्ती में रहने वालो ! हम भी

اِنْ شَآءَ اللّٰہُ بِکُمْ لَاحِقُوْنَ ط اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِاَھْلِ

اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तुम से आ मिलने वाले हैं । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! बक़ीए ग़रक़द वालों की

الْبَقِیْعِ الْغَرْقَدِ ط اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَلَھُمْ ط

मग़्फ़िरत फ़रमा । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें भी मुआफ़ फ़रमा और इन्हें भी मुआफ़ फ़रमा ।

दिलों पर ख़न्जर फिर जाता : आह ! एक वक़्त वोह था कि जब ह़िजाज़े मुक़द्दस में अहले सुन्नत की "ख़िदमत" का दौर था और उस वक़्त के ख़त़ीबो इमाम भी आ़शिक़ाने रसूल हुवा करते थे, जुमुआ़ के रोज़ दौराने ख़ुत़्बा जब ख़त़ीब साहि़ब मस्जिदे न–बवी शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में रौज़ए अन्वर की त़रफ़ हाथ से इशारा करते हुए اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی ھٰذَا النَّبِی ط (या'नी इस नबिय्ये मोह़तरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम हो) कहते तो हज़ारों आ़शिक़ाने रसूल के दिलों पर ख़न्जर फिर जाता और वोह अज़ख़ुद रफ़्तगी के आ़लम में रोने लग जाया करते ।

अल वदाई ह़ाज़िरी : जब मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا से रुख़्सत होने की जां सोज़ घड़ी आए रोते हुए और न हो सके तो रोने जैसा मुंह बनाए मुवा–जहा शरीफ़ में ह़ाज़िर हो कर रो रो कर सलाम अ़र्ज़ कीजिये और फिर सोज़ व

रिक्क़त के साथ यूं अर्ज़ कीजिये :

اَلْوَدَاعُ یَارَسُوْلَ اللہِ ط اَلْوَدَاعُ یَارَسُوْلَ اللہِ ط

اَلْوَدَاعُ یَارَسُوْلَ اللہِ ط اَلْفِرَاقُ یَارَسُوْلَ اللہِ ط

اَلْفِرَاقُ یَارَسُوْلَ اللہِ ط اَلْفِرَاقُ یَارَسُوْلَ اللہِ ط

اَلْفِرَاقُ یَاحَبِیْبَ اللہِ ط اَلْفِرَاقُ یَانَبِیَّ اللہِ ط

اَلْاَمَانُ یَاحَبِیْبَ اللہِ ط لَاجَعَلَہُ اللہُ تَعَالٰی

اٰخِرَ الْعَھْدِ مِنْکَ وَلَا مِنْ زِیَارَتِکَ وَلَا

مِنَ الْوُقُوْفِ بَیْنَ یَدَیْکَ اِلَّا مِنْ خَیْرٍ

وَّعَافِیَۃٍ وَّصِحَّۃٍ وَّسَلَامَۃٍ اِنْ عِشْتُ

اِنْ شَآءَ اللہُ تَعَالٰی جِئْتُکَ وَاِنْ مِّتُّ فَاَوْدَعْتُ

عِنْدَکَ شَھَادَتِیْ وَاَمَانَتِیْ وَعَھْدِیْ وَمِیْثَاقِیْ

مِنْ یَّوْمِنَا ھٰذَا اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَۃِ وَھِیَ شَھَادَۃُ

اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ
اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ؕ ﴿ سُبْحٰنَ رَبِّكَ
رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ ۚ وَسَلٰمٌ عَلَى
الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۸۱﴾ ۚ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۸۲﴾ ع ﴾
اٰمِيْنَ اٰمِيْنَ اٰمِيْنَ يَا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ بِحَقِّ طٰهٰ وَيٰسٓ

अल वदाअ़ ताजदारे मदीना

आह ! अब वक़्ते रुख़्सत है आया अल वदाअ़ ताजदारे मदीना

सद्मए हिज्र कैसे सहूंगा अल वदाअ़ ताजदारे मदीना

बे क़रारी बढ़ी जा रही है हिज्र की अब घड़ी आ रही है

दिल हुवा जाता है पारा पारा अल वदाअ़ ताजदारे मदीना

किस त़रह़ शौक़ से मैं चला था दिल का गुन्चा ख़ुशी से खिला था

आह ! अब छूटता है मदीना अल वदाअ़ ताजदारे मदीना

कूए जानां की रंगीं फ़ज़ाओ ! ऐ मुअ़त्त़र मुअ़म्बर हवाओ !
लो सलाम आख़िरी अब हमारा अल वदाअ़ ताजदारे मदीना
काश ! क़िस्मत मेरा साथ देती मौत भी या-वरी मेरी करती
जान क़दमों पे क़ुरबान करता अल वदाअ़ ताजदारे मदीना
सोज़े उल्फ़त से जलता रहूं मैं इ़श्क़ में तेरे घुलता रहूं मैं
मुझ को दीवाना समझे ज़माना अल वदाअ़ ताजदारे मदीना
मैं जहां भी रहूं मेरे आक़ा हो नज़र में मदीने का जल्वा
इल्तिजा मेरी मक़्बूल फ़रमा अल वदाअ़ ताजदारे मदीना
कुछ न हुस्ने अ़मल कर सका हूं नज़्र चन्द अश्क मैं कर रहा हूं
बस येही है मेरा कुल असासा अल वदाअ़ ताजदारे मदीना
आंख से अब हुवा ख़ून जारी रूह़ पर भी है अब रन्ज त़ारी
जल्द अ़त्त़ार को फिर बुलाना अल वदाअ़ ताजदारे मदीना

अब पहले की त़रह़ शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا की पाक बारगाहों

जन्नतुल बक़ीअ़ की एक क़दीम यादगार तस्वीर

बाबुल बक़ीअ़

बाबुल बक़ीअ़

में भी सलाम अ़र्ज़ कीजिये, ख़ूब रो रो कर दुआ़एं मांगिये बार बार ह़ाज़िरी का सुवाल कीजिये और मदीने में **ईमान** व आ़फ़िय्यत के साथ मौत और जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न की भीक मांगिये। बा'दे फ़राग़त रोते हुए उलटे पाउं चलिये और बार बार दरबारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस त़रह़ ह़सरत भरी नज़र से देखिये जिस त़रह़ कोई बच्चा अपनी मां की गोद से जुदा होने लगे तो बिलक बिलक कर रोता और उस की त़रफ़ उम्मीद भरी निगाहों से देखता है कि मां अब बुलाएगी, कि अब बुलाएगी और बुला कर शफ़्क़त से सीने से चिमटा लेगी। **ऐ काश !** रुख़्सत के वक़्त ऐसा हो जाए तो कैसी ख़ुश बख़्ती है, कि मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बुला कर अपने सीने से लगा लें और बे क़रार रूह़ क़दमों में क़ुरबान हो जाए।

है तमन्नाए अ़त़्त़ार या रब उन के क़दमों में यूं मौत आए
झूम कर जब गिरे मेरा लाशा थाम लें बढ़ के शाहे मदीना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की ज़ियारतें

विलादत गाहे सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **: ह़ज़रते** अ़ल्लामा क़ुत़्बुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत गाह पर दुआ़ क़बूल होती है। (بلدالامین ص۲۰۱) यहां पहुंचने का आसान त़रीक़ा येह है कि आप **कोहे मर्वह** के किसी भी क़रीबी दरवाज़े से बाहर आ जाइये। सामने नमाज़ियों के लिये बहुत बड़ा इह़ात़ा बना हुवा है, इह़ात़े के उस पार येह मकाने आ़लीशान अपने जल्वे लुटा रहा है, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दूर ही से नज़र आ जाएगा। ख़लीफ़ा हारून रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِيْد की वालिदए मोह़-त-रमा رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا ने यहां मस्जिद ता'मीर करवाई थी। आज कल इस मकाने अ़-ज़मत निशान की जगह लायब्रेरी क़ाइम है और उस पर येह बोर्ड लगा हुवा है : "مَكْتَبَةُ مَكَّةَ الْمُكَرَّمَة"

ज-बले अबू क़ुबैस : येह दुन्या का सब से पहला पहाड़ है, मस्जिदुल ह़राम के बाहर सफ़ा व मर्वह के क़रीब वाक़ेअ़ है। इस पहाड़ पर दुआ़ क़बूल होती है, अहले मक्का क़ह़त़ साली के मौक़अ़ पर इस पर आ कर दुआ़ मांगते थे। ह़दीसे पाक में है कि **ह़-जरे अस्वद** जन्नत से यहीं नाज़िल हुवा था (الترغیب والترہیب ج۲ص۱۲۵حدیث۲۰) इस पहाड़ को

"अल अमीन" भी कहा गया है कि "तू़फ़ाने नूह़" में ह़-जरे अस्वद इस पहाड़ पर ब ह़िफ़ाज़ते तमाम तशरीफ़ फ़रमा रहा, का'बए मुशर्रफ़ा की ता'मीर के मौक़अ़ पर इस पहाड़ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام को पुकार कर अ़र्ज़ की : "ह़-जरे अस्वद इधर है।" (بلد الامین ص۲۰۴ بتغیر قلیل) मन्क़ूल है : हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसी पहाड़ पर जल्वा अफ़रोज़ हो कर **चांद** के दो टुकड़े फ़रमाए थे। चूंकि मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا पहाड़ों के दरमियान घिरा हुवा है चुनान्चे इस पर से चांद देखा जाता था पहली रात के चांद को हिलाल कहते हैं लिहाज़ा इस जगह पर बतौ़रे यादगार **मस्जिदे हिलाल** ता'मीर की गई। बा'ज़ लोग इसे मस्जिदे बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं। **وَاللّٰہُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم۔ पहाड़ पर अब शाही मह़ल ता'मीर कर दिया गया है, और अब उस मस्जिद शरीफ़ की ज़ियारत नहीं हो सकती। 1409 सि.हि. के मौसिमे ह़ज में इस मह़ल के क़रीब बम के धमाके हुए थे और कई हु़ज्जाजे किराम ने जामे शहादत नोश किया था, इस लिये अब मह़ल के गिर्द सख़्त पहरा रहता है। मह़ल की ह़िफ़ाज़त के पेशे नज़र इसी पहाड़ की सुरंगों में बनाए हुए वुज़ूख़ाने भी ख़त्म कर दिये गए हैं। एक रिवायत के मुताबिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام इसी **ज-बले अबू क़ुबैस** पर वाक़ेअ़ "**ग़ारुल कन्ज़**" में मदफ़ून हैं जब

कि एक मुस्तनद रिवायत के मुत़ाबिक़ **मस्जिदे ख़ैफ़** में दफ़्न हैं जो कि **मिना** शरीफ़ में है।

وَاللّٰہُ تعالٰی اَعْلَمُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ख़दी-जतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **का मकाने रह़मत निशान : मक्के** मदीने के सुल्त़ान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब तक मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में रहे इसी मकाने आ़लीशान में सुकूनत पज़ीर रहे। सय्यिदुना इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इ़लावा तमाम औलाद ब शुमूल शहज़ादिये कौनैन बीबी **फ़ात़िमा** ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की यहीं विलादत हुई। सय्यिदुना **जिब्रईले** अमीन عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बारहा इस मकाने आ़लीशान के अन्दर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी दी, **हु़ज़ूरे अकरम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कसरत से नुज़ूले वह़्य इसी में हुवा। **मस्जिदे ह़राम** के बा'द मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में इस से बढ़ कर अफ़्ज़ल कोई मक़ाम नहीं। मगर सद करोड़ बल्कि अरबों खरबों अफ़्सोस! कि अब इस के निशान तक मिटा दिये गए हैं और लोगों के चलने के लिये यहां हमवार फ़र्श बना दिया गया है। **मर्वह** की पहाड़ी के क़रीब वाके़अ़ बाबुल मर्वह से निकल कर बाईं त़रफ़ (LEFT SIDE) ह़सरत भरी निगाहों से सिर्फ़ इस मकाने अ़र्श निशान की फ़ज़ाओं की ज़ियारत कर लीजिये।

गा़रे ज-बले सौर : येह गा़रे मुबारक **मक्कए मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की दाईं जानिब महल्लए मस्फ़ला की त़रफ़ कमो बेश चार[4] किलो मीटर पर वाके़अ़ "ज-बले सौर" में है। येह वोह मुक़द्दस गा़र है जिस का ज़िक्र कु़रआने करीम में है, मक्के मदीने के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने यारे गा़र व यारे मज़ार ह़ज़रते **सय्यिदुना सिद्दीके़** अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ ब वक़्ते हिजरत यहां **तीन रात** कि़याम पज़ीर रहे। जब दुश्मन तलाशते हुए **गा़रे सौर** के मुंह पर आ पहुंचे तो ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ग़मज़दा हो गए और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** दुश्मन इतने क़रीब आ चुके हैं कि अगर वोह अपने क़दमों की त़रफ़ नज़र डालेंगे तो हमें देख लेंगे, सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तसल्ली देते हुए फ़रमाया : **لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا** **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ग़म न खा बेशक **अल्लाह** हमारे साथ है। (پ۱۰،التوبہ:۴۰) इसी **ज-बले सौर** पर क़ाबील ने सय्यिदुना **हाबील** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को शहीद किया।

गा़रे ह़िरा : ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जु़हूरे रिसालत से पहले यहां ज़िक्रो फ़िक्र में मशग़ूल रहे हैं। येह कि़ब्ला रुख़ वाके़अ़ है। सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर पहली वह़्य इसी गा़र में उतरी, जो कि **اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ** से **مَا لَمْ یَعْلَمْ** तक पांच आयतें हैं। येह

ग़ारे मुबारक मस्जिदुल ह़राम से जानिबे मशरिक़ तक़रीबन तीन मील पर वाक़ेअ़ "ज-बले ह़िरा" पर है, इस मुबारक पहाड़ को **ज-बले नूर** भी कहते हैं। "ग़ारे ह़िरा" ग़ारे सौर से अफ़्ज़ल है क्यूं कि ग़ारे सौर ने तीन3 दिन तक सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दम चूमे जब कि **ग़ारे ह़िरा** सुल्त़ाने दो सरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बते बा ब-र-कत से ज़ियादा अ़र्सा मुशर्रफ़ हुवा।

क़िस्मते सौरो ह़िरा की ह़िर्स है
चाहते हैं दिल में गहरा ग़ार हम

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

दारे अरक़म : दारे अरक़म कोहे सफ़ा के क़रीब वाक़ेअ़ था। जब कुफ़्फ़ारे जफ़ाकार की त़रफ़ से ख़त़रात बढ़े तो सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इसी में पोशीदा त़ौर पर तशरीफ़ फ़रमा रहे। इसी मकाने आ़लीशान में कई साह़िबान मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए। **सय्यिदुश्शु-हदा** ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ और **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़-मरे फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ इसी मकाने ब-र-कत निशान में दाख़िले इस्लाम हुए। इसी में येह आयते मुबा-रका يٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَ مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ۠ (۶۴) नाज़िल हुई। ख़लीफ़ा हारून रशीद عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡمَجِیۡد की वालिदए मोह़-त-रमा رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہَا ने इस जगह पर **मस्जिद** बनवाई। बा'द के कई

खु-लफ़ा अपने अपने दौर में इस की तज़ईन में हि़स्सा लेते रहे। अब येह तौसीअ़ में शामिल कर लिया गया है और कोई अ़लामत नहीं मिलती।

मह़ल्लए मस्फ़ला : येह मह़ल्ला बड़ा तारीख़ी है, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام यहीं रहा करते थे, ह़ज़राते सिद्दीक़ व फ़ारूक़ व ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم भी इसी मह़ल्लए मुबा-रका में क़ियाम पज़ीर थे। येह मह़ल्ला ख़ानए का'बा के हि़स्सए दीवार "मुस्तजार" की जानिब वाक़ेअ़ है।

जन्नतुल मअ़ला : जन्नतुल बक़ीअ़ के बा'द **जन्नतुल मअ़ला** दुन्या का सब से अफ़्ज़ल क़ब्रिस्तान है। यहां **उम्मुल मुअमिनीन ख़दी-जतुल कुब्रा**, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और कई सह़ाबा व ताबिईन رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن और औलिया व सालिह़ीन رَحِمَھُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن के मज़ाराते मुक़द्दसा हैं। अब इन के कुब्बे (या'नी गुम्बद) वग़ैरा शहीद कर दिये गए हैं, मज़ारात मिस्मार कर के उन पर रास्ते निकाले गए हैं। लिहाज़ा बाहर रह कर दूर ही से इस त़रह़ सलाम अ़र्ज़ कीजिये :

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ یَا اَھْلَ الدِّیَارِ مِنَ

सलाम हो आप पर ऐ क़ब्रों में रहने वालो !

اَلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَاِنَّآ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ

मोमिनो और मुसल्मानो ! और हम भी اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

بِكُمْ لَاحِقُوْنَ ط نَسْئَلُ اللّٰهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ ط

आप से मिलने वाले हैं। हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से आप की और अपनी आ़फ़िय्यत के त़ालिब हैं।

अपने लिये अपने वालिदैन और तमाम उम्मत की मग़्फ़िरत के लिये दुआ़ मांगिये और बिल ख़ुसूस **अहले जन्नतुल मअ़ला** के लिये ईसाले सवाब कीजिये। इस क़ब्रिस्तान में दुआ़ क़बूल होती है।

मस्जिदे जिन्न : येह मस्जिद जन्नतुल मअ़ला के क़रीब वाक़ेअ़ है। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से नमाज़े फ़ज्र में क़ुरआने पाक की तिलावत सुन कर यहां **जिन्नात** मुसल्मान हुए थे।

मस्जिदुर्रायह : येह मस्जिदे जिन्न के क़रीब ही सीधे हाथ की त़रफ़ है। "**रायह**" अ़-रबी में झन्डे को कहते हैं। येह वोह तारीख़ी मक़ाम है जहां **फ़त्हे मक्का** के मौक़अ़ पर हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना झन्डा शरीफ़ नस्ब फ़रमाया था।

मस्जिदे ख़ैफ़ : येह मिना शरीफ़ में वाक़ेअ़ है। ह़िज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर हमारे प्यारे प्यारे **आक़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यहां नमाज़ अदा फ़रमाई है। रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **صَلّٰى فِىْ مَسْجِدِ الْخَيْفِ سَبْعُوْنَ نَبِيًّا** मस्जिदे ख़ैफ़ में 70 अम्बिया (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने नमाज़ अदा फ़रमाई। (مُعجَم اَوسط ج٤ص١١٧حديث ٥٤٠٧) और फ़रमाया : **فِى الْمَسْجِدِ الْخَيْفِ قَبْرُ سَبْعِيْنَ نَبِيًّا** मस्जिदे ख़ैफ़ में 70 अम्बिया (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) की क़ब्रें हैं। (مُعجَم كبير ج١٢ ص ٣١٦حديث ١٣٥٢٥) अब इस मस्जिद शरीफ़ की काफ़ी तौसीअ़ हो चुकी है। ज़ाइरीने किराम को चाहिये कि बसद अ़क़ीदतो एह़तिराम इस मस्जिद शरीफ़ की ज़ियारत करें, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ख़िदमतों में इस त़रह़ सलाम अ़र्ज़ करें : **اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَااَنْۢبِيَاءَ اللّٰهِ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ** फिर ईसाले सवाब कर के दुआ़ मांगें।

मस्जिदे जिइर्राना : मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا से जानिबे त़ाइफ़ तक़रीबन 26 किलो मीटर पर वाक़ेअ़ है। आप भी यहां से उ़म्रे का एह़राम बांधिये कि फ़त्ह़े मक्का के बा'द त़ाइफ़ शरीफ़ फ़त्ह़ कर के वापसी पर हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यहां से **उ़म्रे** का एह़राम ज़ैबे

तन फ़रमाया था। यूसुफ़ बिन माहक عَلَیْهِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق फ़रमाते हैं : मक़ामे जिइर्राना से 300 अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उ़म्रे का एह़राम बांधा है, सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिइर्राना पर अपना अ़सा मुबारक गाड़ा जिस से पानी का चश्मा उबला जो निहायत ठन्डा और मीठा था। (بلدالامین ص۲۲۱،اخبار مکہ، جزء۵ ص۶۲،۶۹) मश्हूर है उस जगह पर कूंआं है। सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ता़इफ़ से वापसी पर यहां क़ियाम किया और यहीं माले ग़नीमत भी तक़्सीम फ़रमाया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने 28 शव्वालुल मुकर्रम को यहां से उ़म्रे का एह़राम बांधा था। (بلدالامین ص۲۲۰،۲۲۱) इस जगह की निस्बत कु़रैश की एक अ़ौरत की त़रफ़ है जिस का लक़ब जिइर्राना था। (ایضاً ص۱۳۷) अ़वाम इस मक़ाम को "बड़ा उ़म्रह" बोलते हैं। येह निहायत ही पुरसोज़ मक़ाम है, ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَیْهِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی "अख़्बारुल अख़्यार" में नक़्ल करते हैं कि मेरे पीरो मुर्शिद ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब मुत्तक़ी عَلَیْهِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने मुझे ताकीद फ़रमाई है कि मौक़अ़ मिलने पर **जिइर्राना** से ज़रूर उ़म्रे का एह़राम बांधना कि येह ऐसा **मु-तबर्रक** मक़ाम है कि मैं ने यहां एक रात के मुख़्तसर से हि़स्से के अन्दर सो से ज़ाइद बार मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़्वाब में दीदार किया है

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ۔ ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब मुत्तक़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی का मा'मूल था कि उ़म्रे का एह़राम बांधने के लिये रोज़ा रख कर पैदल **जिइर्राना** जाया करते थे। (مُلَخَّص از اخبار الاخیار ص۲۷۸)

मज़ारे मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **:** **मदीना** रोड पर "नवारिया" के क़रीब वाक़ेअ़ है। ता दमे तह़रीर यहां की ह़ाज़िरी का एक त़रीक़ा येह है कि आप बस 2 A या 13 में सुवार हो जाइये, येह बस मदीना रोड पर तन्ईम या'नी मस्जिदे आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से गुज़रती हुई आगे बढ़ती है, मस्जिदुल ह़राम से तक़रीबन 17 मिलो मीटर पर इस का आख़िरी स्टोप "नवारिया" है, यहां उतर जाइये और पलट कर रोड के उसी कनारे पर मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की त़रफ़ चलना शुरूअ़ कीजिये, दस या पन्दरह मिनट चलने के बा'द एक पोलीस चेक पोस्ट (नुक्तए तफ़्तीश) है फिर मौक़िफ़े हुज्जाज बना हुवा है इस से थोड़ा आगे रोड की उसी जानिब एक चार दीवारी नज़र आएगी, यहीं उम्मुल मुअमिनीन **ह़ज़रते सय्यि-दतुना मैमूना** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार है। येह मज़ारे मुबारक सड़क के बीच में है। लोगों का कहना है कि सड़क की ता'मीर के लिये इस मज़ार शरीफ़ को शहीद करने की कोशिश की गई तो ट्रेक्टर (TRACTOR) उलट जाता था, नाचार यहां चार दीवारी बना दी गई। हमारी प्यारी प्यारी अम्मीजान सय्यि-दतुना

मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की **करामत** मरह़बा !

अहले इस्लाम की मा-दराने शफ़ीक़

बानुवाने त़हारत पे लाखों सलाम

"या नबी ! चश्मे करम" के ग्यारह ह़ुरूफ़ की निस्बत से मस्जिदुल ह़राम में नमाज़े मुस्त़फ़ा के 11 मक़ामात

﴾1﴿ **बैतुल्लाह** शरीफ़ के अन्दर ﴾2﴿ मक़ामे इब्राहीम के पीछे ﴾3﴿ **मत़ाफ़** के कनारे पर **ह़-जरे अस्वद** की सीध में ﴾4﴿ ह़त़ीम और **बाबुल का'बा** के दरमियान **रुक्ने इराक़ी** के क़रीब ﴾5﴿ मक़ामे ह़ुफ़्रह पर जो बाबुल का'बा और ह़त़ीम के दरमियान दीवारे का'बा की जड़ में है। इस मक़ाम को "मक़ामे इमामते जिब्राईल" भी कहते हैं। शहन्शाहे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसी मक़ाम पर सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیۡہِ السَّلَام को पांच नमाज़ों में इमामत का शरफ़ बख़्शा। इसी मुबारक मक़ाम पर सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने "ता'मीरे का'बा" के वक़्त मिट्टी का गारा बनाया था ﴾6﴿ **बाबुल का'बा** की त़रफ़ रुख़ कर के। (दरवाज़ए का'बा की सीध में नमाज़ अदा करना तमाम अत़राफ़ की सीध से अफ़्ज़ल है[1]) ﴾7﴿ मीज़ाबे रह़मत की त़रफ़ रुख़

مدینہ

1 : कहा जाता है : पाक व हिन्द दरवाज़ए का'बा ही की सम्त वाक़ेअ़ हैं।

कर के। (कहा जाता है कि मज़ारे ज़ियाबार में सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेह्रए पुर अन्वार इसी जानिब है) 《8》 तमाम ह़त़ीम में ख़ुसूसन **मीज़ाबे रह़मत** के नीचे 《9》 **रुक्ने अस्वद** और **रुक्ने यमानी** के दरमियान 《10》 **रुक्ने शामी** के क़रीब इस त़रह़ कि "बाबे उ़म्रह" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पुश्ते अक़्दस के पीछे होता। ख़्वाह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم "ह़त़ीम" के अन्दर हो कर नमाज़ अदा फ़रमाते या बाहर 《11》 ह़ज़रते सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के नमाज़ पढ़ने के मक़ाम पर जो कि **रुक्ने यमानी** के दाईं या बाईं त़रफ़ है और ज़ाहिर तर येह है कि मुसल्लाए आदम "**मुस्तजार**" पर है।

(किताबुल ह़ज, स. 274)

मदीनए मुनव्वरह की ज़ियारतें

रौ-ज़तुल जन्नह : ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुज्रए मुबा-रका (जिस में सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मज़ारे पुर अन्वार है) और मिम्बरे नूरबार (जहां आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुत़बा इर्शाद फ़रमाया करते थे) का दरमियानी ह़िस्सा जिस का त़ूल (या'नी लम्बाई) 22 मीटर और

अ़र्ज़ (चौड़ाई) 15 मीटर है **रौ-ज़तुल जन्नह** या'नी "जन्नत की क्यारी" है। चुनान्चे हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **مَا بَیْنَ بَیْتِیْ وَمِنْبَرِیْ رَوْضَةٌ مِّنْ رِیَاضِ الْجَنَّةِ ۔** या'नी मेरे घर और मिम्बर की दरमियानी जगह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है। (بُخاری ج۱ ص ۴۰۲ حدیث ۱۱۹۵) आ़म बोलचाल में लोग इसे "**रियाज़ुल जन्नह**" कहते हैं मगर अस्ल लफ़्ज़ "**रौ-ज़तुल जन्नह**" है।

येह प्यारी प्यारी क्यारी तेरे ख़ाना बाग़ की
सर्द इस की आबो ताब से आतश सक़र की है

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मस्जिदे क़ुबा : मदीनए त़य्यिबा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا से तक़रीबन तीन किलो मीटर जुनूब मग़रिब की त़रफ़ "क़ुबा" नामी एक क़दीमी गाउं है जहां येह **मु-तबर्रक** मस्जिद बनी हुई है, क़ुरआने करीम और अह़ादीसे सह़ीह़ा में इस के फ़ज़ाइल निहायत एहतिमाम से बयान फ़रमाए गए हैं। आ़शिक़ाने रसूल **मस्जिदुन-बविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से दरमियानी चाल चल कर पैदल तक़रीबन 40 मिनट में मस्जिदे क़ुबा पहुंच सकते हैं। बुख़ारी शरीफ़ में है :

हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर हफ़्ते कभी पैदल तो कभी सुवारी पर **मस्जिदे कुबा** तशरीफ़ ले जाते थे।

(بُخاری ج ۱ص۴۰۲حدیث۱۱۹۳)

उ़म्रे का सवाब : दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** ﴾1﴿ मस्जिदे कुबा में नमाज़ पढ़ना **उ़म्रे** के बराबर है **(ترمذی ج ۱ص۳۴۸حدیث۳۲۴)** ﴾2﴿ जिस शख़्स ने अपने घर में वुज़ू किया फिर मस्जिदे कुबा में जा कर नमाज़ पढ़ी तो उसे **उ़म्रे** का सवाब मिलेगा।

(ابنِ ماجہ ج۲ ص۱۷۵حدیث۱۴۱۲)

मज़ारे सय्यिदुना ह़म्ज़ा : आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ग़ज़्वए उहुद (3 सि.हि.) में शहीद हुए थे, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार उहुद शरीफ़ के क़रीब वाक़ेअ़ है। साथ ही ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन **जह़श** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के मज़ारात भी हैं। नीज़ ग़ज़्वए उहुद में 70 सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने जामे शहादत नोश किया था उन में से बेशतर शु-हदाए उहुद भी साथ ही बनी हुई चार दीवारी में हैं।

शु-हदाए उहुद عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان को सलाम करने की फ़ज़ीलत :

सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی नक़्ल करते हैं : जो शख़्स इन शु-हदाए उहुद से गुज़रे और इन को सलाम करे येह क़ियामत तक उस पर सलाम भेजते रहते हैं । शु-हदाए उहुद عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان और बिल ख़ुसूस मज़ारे सय्यिदुश्शु-हदा सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से बारहा **जवाबे सलाम** की आवाज़ सुनी गई है ।

(جذبُ الْقلوب ص۱۷۷)

सय्यिदुना ह़म्ज़ा की ख़िदमत में सलाम

اَلسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَا سَیِّدَنَا حَمۡزَۃُ ط اَلسَّلَامُ

तरजमा : सलाम हो आप पर ऐ सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ । सलाम

عَلَیۡکَ یَا عَمَّ رَسُوۡلِ اللّٰہِ ط اَلسَّلَامُ عَلَیۡکَ

हो आप पर ऐ मोह़तरम चचा **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के, सलाम हो

یَا عَمَّ نَبِیِّ اللّٰہِ ط اَلسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَا عَمَّ

आप पर ऐ अ़म्मे बुज़ुर्ग-वार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के, सलाम हो आप पर ऐ चचा

मज़ारे ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ
मज़ारे ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رضی اللہ تعالٰی عنہ
मज़ारे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श رضی اللہ تعالٰی عنہ

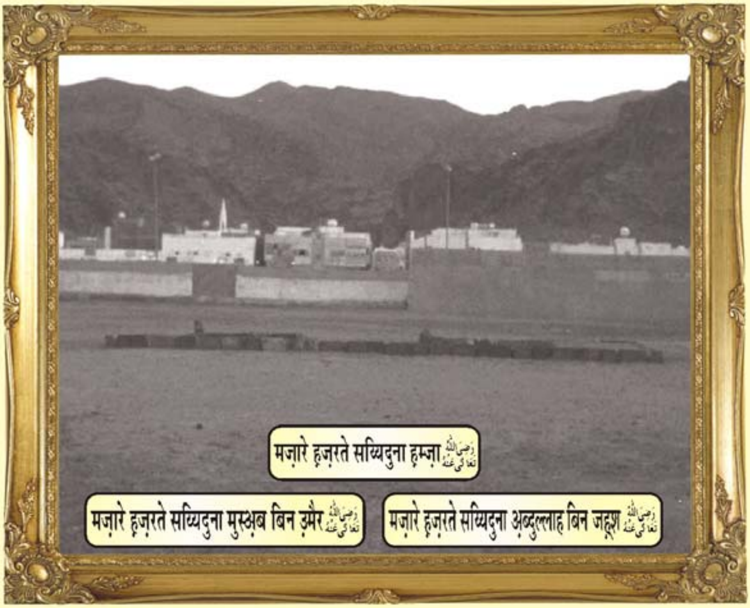
मज़ारे ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ
मज़ारे ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رضی اللہ تعالٰی عنہ
मज़ारे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श رضی اللہ تعالٰی عنہ

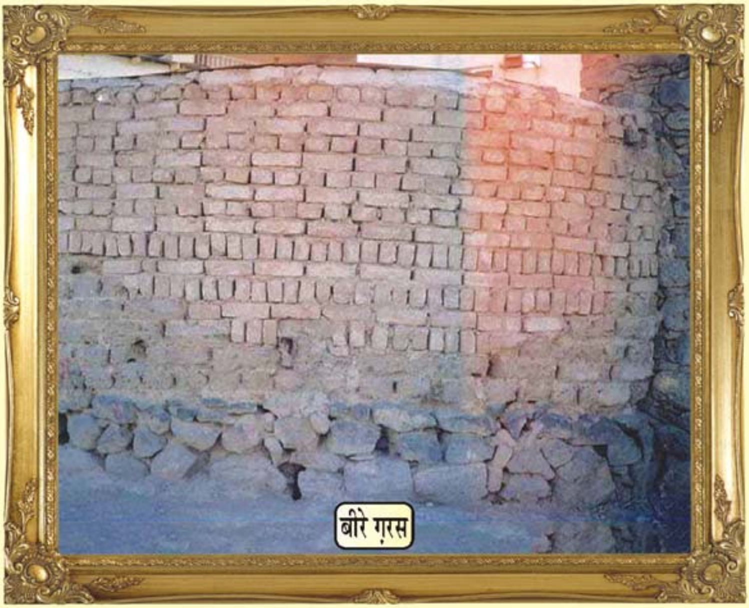
बीरे ग़रस

बीरे रूमा

حَبِیْبِ اللّٰہِ ط اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا عَمَّ

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के, सलाम हो आप पर ऐ चचा

الْمُصْطَفٰی ط اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدَ الشُّھَدَآءِ

मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के, सलाम हो आप ऐ सरदार शहीदों के

وَیَا اَسَدَ اللّٰہِ وَاَسَدَ رَسُوْلِہٖ ط اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ

और ऐ शेर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के और शेर उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के। सलाम

یَا سَیِّدَنَا عَبْدَ اللّٰہِ بْنَ جَحْشٍ ط اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ

हो आप पर ऐ सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन **जह़्श** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ, सलाम हो आप पर

یَا مُصْعَبَ بْنَ عُمَیْرٍ ط اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ یَا

ऐ मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ । सलाम हो ऐ

شُھَدَآءَ اُحُدٍ کَآفَّۃً عَآمَّۃً وَّرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ ط

शु-हदाए उहुद आप सभी पर और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की रह़मतें और ब-र-कतें।

शु-हदाए उहुद عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को मज्मूई सलाम

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا شُهَدَآءُ يَا سُعَدَآءُ

तरजमा : सलाम हो आप पर ऐ शहीदो ! ऐ नेक बख़्तो !

يَا نُجَبَآءُ يَا نُقَبَآءُ يَآ اَهْلَ الصِّدْقِ وَالْوَفَاءِ ط

ऐ शरीफ़ो ! ऐ सरदारो ! ऐ मुजस्समे सिद्क़ो वफ़ा !

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا مُجَاهِدِيْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ

सलाम हो आप पर ऐ मुजाहिदो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद का ह़क़ अदा करने वालो !

حَقَّ جِهَادِهٖ ط ﴿سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ

﴿**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला तो पिछला घर क्या ही

عُقْبَى الدَّارِ ط ﴿٢٤﴾﴾ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا شُهَدَآءَ

ख़ूब मिला﴾ सलाम हो ऐ शु-हदाए

اُحُدٍ كَافَّةً عَامَّةً وَّ رَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ ط

उहुद आप सभी पर और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें और ब-र-कतें नाज़िल हों।

ज़ियारतों पर ह़ाज़िरी के दो त़रीक़े : मीठे मीठे मक्के मदीने के ज़ाइरो ! ज़ियारतों और इन के पतों को ब ख़ौफ़े त़वालते **रफ़ीक़ुल ह़-रमैन** दर्ज नहीं किया, शाइक़ीन आ़शिक़ाने रसूल, ज़ियारात और ईमान अफ़रोज़ ह़िकायात की मा'लूमात के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ किताब, "**आ़शिक़ाने रसूल की ह़िकायतें मअ़ मक्के मदीने की ज़ियारतें**" का मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और अपने ईमान को गर्माएं । अलबत्ता किताब पढ़ कर हर शख़्स ज़ियारात के मक़ामात पर पहुंच जाए येह दुश्वार है । ज़ियारत की दो सूरतें हैं : एक तो येह कि **मस्जिदुन्न-बविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बाहर सुब्ह़ गाड़ियों वाले : **ज़ियारह ! ज़ियारह !** की सदाएं लगाते रहते हैं, आप उन की गाड़ियों में सुवार हो जाइये । येह आप को मसाजिदे ख़म्सा, मस्जिदे क़ुबा और मज़ारे सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ले जाएंगे । दूसरी येह कि **मक्के मदीने** की मज़ीद ज़ियारतों के लिये आप को ऐसे आदमी तलाश करने होंगे जो उजरत ले कर ज़ियारतें करवाते हों ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जराइम और इन के कफ़्फ़ारे

सुवाल व जवाब के मुत़ा-लए़ से क़ब्ल चन्द ज़रूरी **इस्तिलाहात** वग़ैरा ज़ेह्न नशीन कर लीजिये।

दम वग़ैरा की ता'रीफ़ :

﴾1﴿ **दम** या'नी एक बकरा। (इस में नर, मादा, दुम्बा, भेड़, नीज़ गाय या ऊंट का सातवां ह़िस्सा सब शामिल हैं)

﴾2﴿ **ब-दना** या'नी ऊंट या गाय। (इस में बैल, भेंस वग़ैरा शामिल हैं)

गाय बकरा वग़ैरा येह तमाम जानवर उन ही शराइत़ के हों जो कुरबानी में हैं।

﴾3﴿ **स-दक़ा** या'नी स-द-क़ए फ़ित्र की मिक़्दार। आज कल के ह़िसाब से स-द-क़ए फ़ित्र की मिक़्दार 2 किलो में से 80 ग्राम कम गन्दुम या उस का आटा या उस की रक़म या उस के दुगने जव या खजूर या उस की रक़म है।

दम वग़ैरा में रिआ़यत : अगर बीमारी, सख़्त सर्दी, सख़्त गरमी, फोड़े और ज़ख़्म या जूओं की शदीद तक्लीफ़ की वजह से कोई जुर्म हुवा तो उसे ''जुर्मे ग़ैर इख़्तियारी'' कहते हैं। अगर कोई

"जुर्मे ग़ैर इख़्तियारी" सादिर हुवा जिस पर दम वाजिब होता है तो इस सूरत में इख़्तियार है कि चाहे तो **दम** दे दे और अगर चाहे तो **दम** के बदले **छ मिस्कीनों** को **स-दक़ा** दे दे। अगर एक ही मिस्कीन को छ स-दक़े दे दिये तो एक ही शुमार होगा। लिहाज़ा येह ज़रूरी है कि अलग अलग छ मिस्कीनों को दे। **दूसरी रिआयत** येह है कि अगर चाहे तो दम के बदले छ मसाकीन को दोनों वक़्त पेट भर कर खाना खिला दे। **तीसरी रिआयत** येह है कि अगर स-दक़ा वग़ैरा नहीं देना चाहता तो तीन रोज़े रख ले "दम" अदा हो गया। अगर कोई ऐसा जुर्मे ग़ैर इख़्तियारी किया जिस पर स-दक़ा वाजिब होता है तो इख़्तियार है कि स-दक़े के बजाए **एक रोज़ा** रख ले।

(मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1162)

दम, स-दक़े और रोज़े के ज़रूरी मसाइल : अगर कफ़्फ़ारे के रोज़े रखें तो येह शर्त़ है कि रात से या'नी सुब्ह़े सादिक़ से पहले पहले येह निय्यत कर लें कि येह फ़ुलां कफ़्फ़ारे का रोज़ा है। इन "रोज़ों" के लिये न एह़राम शर्त़ है न ही इन का पै दर पै होना। स-दक़े और रोज़े की अदाएगी अपने वत़न में भी कर सकते हैं, अलबत्ता **स-दक़ा** और खाना अगर ह़रम के मसाकीन को पेश कर दिया जाए तो येह अफ़्ज़ल है। **दम** और **ब-दना** के जानवर का ह़रम में ज़ब्ह़ होना शर्त़ है।

ह़ज की क़ुरबानी और दम के गोश्त के अह़काम :

ह़ज के शुक्राने की क़ुरबानी ह़ुदूदे ह़रम में होना शर्त़ है। इस का गोश्त आप ख़ुद भी खाइये, मालदार को भी खिलाइये और मसाकीन को भी पेश कीजिये, मगर कफ़्फ़ारे या'नी "दम" और "ब-दने" वग़ैरा का गोश्त सिर्फ़ मोह़ताजों का ह़क़ है, न ख़ुद खा सकते हैं न ग़नी को खिला सकते हैं। (मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1162, 1163) दम हो या शुक्राने की क़ुरबानी, ज़ब्ह़ के बा'द गोश्त वग़ैरा ह़रम के बाहर ले जाने में ह़रज नहीं। मगर ज़ब्ह़ ह़ुदूदे ह़रम में होना ज़रूरी है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरिये : बा'ज़ नादान जान बूझ कर "जुर्म" करते हैं और कफ़्फ़ारा भी नहीं देते। यहां **दो गुनाह** हुए, एक तो जान बूझ कर जुर्म करने का और दूसरा कफ़्फ़ारा न देने का। ऐसों को कफ़्फ़ारा भी देना होगा और तौबा भी वाजिब होगी। **हां** मजबूरन जुर्म करना पड़ा या बे ख़याली में हो गया तो कफ़्फ़ारा काफ़ी है गुनाह नहीं हुवा इस लिये तौबा भी वाजिब नहीं और येह भी याद रखिये कि जुर्म चाहे याद से हो या भूले से, इस का जुर्म होना जानता हो या न जानता हो, ख़ुशी से हो या मजबूरन, सोते में हो या जागते में, बेहोशी में हो या होश में, अपनी मरज़ी से किया हो या दूसरे के ज़रीए करवाया हो हर सूरत में **कफ़्फ़ारा** लाज़िमी है, अगर नहीं देगा तो गुनहगार होगा। जब ख़र्च सर पर आता है तो बा'ज़ लोग येह भी कह दिया

करते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुआ़फ़ फ़रमाएगा !" और फिर वोह दम वग़ैरा नहीं देते। ऐसों को सोचना चाहिये कि कफ़्फ़ारात शरीअ़त ही ने वाजिब किये हैं और जान बूझ कर टालम टोल करना शरीअ़त ही की ख़िलाफ़ वर्ज़ी है जो कि सख़्त तरीन जुर्म है। बा'ज़ माल के मतवाले नादान हुज्जाज, उ़-लमाए किराम से यहां तक पूछते सुनाई देते हैं कि **सिर्फ़ गुनाह है ना ! दम तो वाजिब नहीं ?** (مَعَاذَاللّٰه) सद करोड़ अफ़्सोस ! चन्द सिक्के बचाने ही की फ़िक्र है, गुनाह के सबब होने वाले सख़्त अ़ज़ाब के इस्तिह़्क़ाक़ की कोई परवाह नहीं, **गुनाह** को हलका जानना बहुत सख़्त बात बल्कि बा'ज़ सूरतों में **कुफ़्र** है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ म-दनी फ़िक्र नसीब फ़रमाए।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

क़ारिन के लिये डबल कफ़्फ़ारा होता है : जहां एक कफ़्फ़ारे (या'नी एक दम या एक स-दक़े) का हुक्म है वहां **क़ारिन** के लिये दो कफ़्फ़ारे हैं। (ہدایہ ج۱ ص۱۷۱) ना बालिग़ अगर जुर्म करे तो कोई कफ़्फ़ारा नहीं।

क़ारिन के लिये कहां दुगना कफ़्फ़ारा है और कहां नहीं : आ़म तौ़र पर किताबों में लिखा होता है कि जहां ह़ाजी मुफ़्रिद या **मु-तमत्तेअ़** पर एक दम या स-दक़ा लाज़िम आता है वहां **ह़ज्जे क़िरान** वाले पर दो दम या दो स-दक़े लाज़िम आते

हैं, येह मस्अला अपनी जगह दुरुस्त है लेकिन इस की ख़ास सूरतें हैं या'नी ऐसा नहीं कि जहां भी ह़ज्जे इफ़राद या **तमत्तोअ़** वाले पर एक दम लाज़िम आए तो **क़ारिन** पर दो दम क़रार दे दिये जाएं, लिहाज़ा इस की मुकम्मल वज़ाह़त पेश की जा रही है ताकि कोई ग़लत़ फ़हमी न रहे। ह़ज़रते अ़ल्लामा शामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی के इर्शाद का ख़ुलासा है : एह़राम बांधने वाले पर नफ़्से एह़राम की वजह से जो काम करना ह़राम हैं अगर उन में से कोई काम ह़ज्जे इफ़राद करने वाला करेगा तो उस पर एक दम लाज़िम होगा जब कि ह़ज्जे क़िरान करने वाला या जो इस के हुक्म में है वोह करेगा तो उस पर दो दम लाज़िम होंगे और स-दक़े के बारे में भी क़ारिन का येही हुक्म है कि इस पर दो स-दक़े लाज़िम होंगे क्यूं कि इस ने ह़ज और उ़म्रह दोनों का एह़राम बांधा हुवा है और अगर इस ने **ह़ज के वाजिबात** में से किसी वाजिब को तर्क किया जैसे सअ़्य या रम्य छोड़ दी, जनाबत की ह़ालत में या बे वुज़ू ह़ज या उ़म्रे का त़वाफ़ किया या ह़रम की घास काटी तो इस पर डबल सज़ा लाज़िम नहीं होगी क्यूं कि येह नफ़्से एह़राम के मम्नूआ़त में से नहीं हैं बल्कि ह़ज व उ़म्रह के वाजिबात और ह़रम के मम्नूआ़त में से हैं। (رَدُّالْمُحتار ج۳ ص۷۰۱۔۷۰۲)

इसी मस्अले की मुकम्मल तफ़्सील ह़ज़रते **अ़ल्लामा अ़ली क़ारी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی ने बयान फ़रमाई है : क़ारिन या जो क़ारिन के हुक्म में है उस पर दम या स-दक़ा वग़ैरा लाज़िम

आने में उसूल येह है कि (नफ़्से एह़राम की वजह से) हर वोह मम्नूअ़ काम जिसे करने की सूरत में **मुफ़्रिद** पर एक दम या एक स-दक़ा वग़ैरा देना लाज़िम आए, उस काम को करने की वजह से क़ारिन पर या जो क़ारिन के हुक्म में है उस पर ह़ज और उ़म्रे के एह़राम की वजह से **दो दम** और **दो स-दक़े** लाज़िम आएंगे, अलबत्ता चन्द सूरतें ऐसी हैं जिन में इन पर सिर्फ़ एक दम या एक स-दक़ा वग़ैरा लाज़िम आएगा (और इस की अस्ल वजह वोही है कि इन चीज़ों का तअ़ल्लुक़ नफ़्से एह़राम के मम्नूआ़त के साथ नहीं है) ﴾1﴿ जब ह़ज या उ़म्रह करने वाला एह़राम के बिग़ैर मीक़ात से गुज़र जाए और वापस लौटने के बजाए वहीं से ह़ज्जे क़िरान का एह़राम बांध ले तो उस पर एक दम लाज़िम आएगा क्यूं कि उस ने जो मम्नूअ़ काम किया है वोह ह़ज्जे क़िरान का एह़राम बांधने से पहले किया है ﴾2﴿ अगर क़ारिन ने या जो क़ारिन के हुक्म में है उस ने ह़रम का दरख़्त काटा तो उस पर एक जज़ा लाज़िम है। क्यूं कि दरख़्त काटने का तअ़ल्लुक़ एह़राम की जिनायत से नहीं है ﴾3﴿ अगर पैदल ह़ज या उ़म्रह करने की मन्नत मानी फिर म-सलन ह़ज के दिनों में ह़ज्जे क़िरान किया और सुवार हो कर ह़ज के लिये गया तो इस पर (सुवार होने की वजह से) **एक दम** लाज़िम है ﴾4﴿ अगर त़वाफ़ुज़्ज़ियारह जनाबत की ह़ालत में किया या वुज़ू के बिग़ैर किया तो एक ही जज़ा लाज़िम होगी क्यूं कि त़वाफ़े ज़ियारत की जिनायत सिर्फ़ ह़ज के साथ ही

ख़ास है । इसी त़रह़ अगर ख़ाली उम्रह करने वाले ने उ़म्रे का त़वाफ़ इसी त़रह़ किया तो उस पर एक जज़ा (दम या स-दक़ा) लाज़िम है ﴾5﴿ अगर क़ारिन या जो क़ारिन के हुक्म में है वोह किसी उ़ज़्र के बिग़ैर इमाम से पहले अ़-रफ़ात से लौट आया और अभी सूरज भी ग़ुरूब नहीं हुवा तो उस पर **एक दम** लाज़िम है क्यूं कि येह ह़ज के वाजिबात के साथ ख़ास है और उ़म्रे के एह़राम के साथ इस का कोई तअ़ल्लुक़ नहीं ﴾6﴿ किसी उ़ज़्र के बिग़ैर मुज़्दलिफ़ा का वुक़ूफ़ तर्क कर दिया तो क़ारिन और जो क़ारिन के हुक्म में है उस पर **एक दम** लाज़िम है ﴾7﴿ अगर उस ने ज़ब्ह़ करने से पहले ह़ल्क़ करवा लिया तो उस पर **एक दम** लाज़िम है ﴾8﴿ अगर उस ने अय्यामे नह़्र गुज़रने के बा'द ह़ल्क़ करवाया तो उस पर **एक दम** लाज़िम है ﴾9﴿ अगर उस ने अय्यामे नह़्र गुज़रने के बा'द क़ुरबानी का जावनर ज़ब्ह़ किया तो उस पर एक दम लाज़िम है ﴾10﴿ अगर उस ने मुकम्मल रम्य न की या इतनी रम्य छोड़ दी जिस की वजह से दम या स-दक़ा लाज़िम आए तो उस पर **एक दम** या एक स-दक़ा लाज़िम है ﴾11﴿ अगर उस ने उ़म्रे या ह़ज में से किसी एक की सअ़्य छोड़ दी तो उस पर **एक दम** लाज़िम आएगा ﴾12﴿ अगर उस ने त़वाफ़े सद्र (या'नी त़वाफ़े वदाअ़) छोड़ दिया तो उस पर **एक दम** लाज़िम आएगा क्यूं कि इस का तअ़ल्लुक़ आफ़ाक़ी ह़ाजी के साथ है, उ़म्रह करने वाले के साथ मुत़लक़न इस का कोई तअ़ल्लुक़ नहीं ।

नोट : क़ारिन पर दो जज़ाएं लाज़िम होने का जो उसूल बयान किया गया उस में हर वोह शख़्स दाख़िल है जो दो एह़राम जम्अ़ करे और दो एह़रामों को जम्अ़ करना चाहे सुन्नत से हो जैसे वोह **मु-तमत्तेअ़** जो हद्य साथ ले कर आया या हद्य साथ ले कर न आया था लेकिन अभी उ़म्रे के एह़राम से बाहर नहीं आया था कि उस ने ह़ज का एह़राम बांध लिया या सुन्नत से न हो जैसे मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا के रिहाइशी या जो मक्कए पाक के रिहाइशी के मा'ना में है उस ने ह़ज्जे क़िरान का एह़राम बांध लिया, इसी त़रह़ हर वोह शख़्स जिस ने एक निय्यत के साथ या दो निय्यतों के साथ या एक निय्यत पर दूसरी निय्यत को दाख़िल कर के दो ह़ज या दो उ़म्रे के एह़राम जम्अ़ कर दिये, यूंही अगर सो ह़ज या सो उ़म्रे करने की निय्यत से एह़राम बांधा और उन्हें पूरा करने से पहले कोई जुर्म सरज़द हुवा तो उस पर (उस जुर्म के ह़िसाब से) **सो जज़ाएं** लाज़िम होंगी। **(اَلْمَسْلَكُ الْمُتَقَسِّط لِلقاری ص٤٠٦۔٤١٠ مُلَخَّصاً)**

त़वाफ़े ज़ियारत के बारे में सुवाल व जवाब

सुवाल : औ़रत त़वाफ़े ज़ियारत कर रही थी, दौराने त़वाफ़ माहवारी शुरूअ़ हो गई, क्या करे ?

जवाब : फ़ौरन त़वाफ़ मौक़ूफ़ कर के मस्जिदुल ह़राम से बाहर आ जाए। अगर त़वाफ़ जारी रखा या मस्जिद के अन्दर ही रही तो गुनहगार होगी।

सुवाल : अगर चार फेरों के बा'द ह़ैज़ आया तो और कम के बा'द आया तो क्या हुक्म है ?

जवाब : त़वाफ़ के दौरान अगर औ़रत को हैज़ शुरूअ़ हो जाए तो चाहे चार चक्कर कर लिये हों या न कर पाई हो, वोह त़वाफ़ फ़ौरन तर्क कर दे कि हैज़ की ह़ालत में त़वाफ़ करना या मस्जिद में रहना जाइज़ नहीं और मस्जिदुल ह़राम से बाहर निकल जाए, हो सके तो **तयम्मुम** कर के बाहर आए कि येह अह़्वत़ (या'नी एह़तियात़ से ज़ियादा क़रीब) व मुस्तह़ब है। फिर जब औ़रत पाक हो जाए तो अगर चार या इस से ज़ियादा चक्कर कर लिये थे तो बक़िय्या चक्कर कर के अपने उसी त़वाफ़ को पूरा करे। और अगर तीन या इस से कम चक्कर लगाए थे तो अब भी बिना (या'नी जहां से छोड़ा वहां से शुरूअ़) कर सकती है। जिस औ़रत को तीन चक्करों के बा'द हैज़ आया है अगर उसे अपने हैज़ की आ़दत मा'लूम थी और हैज़ आने से क़ब्ल उसे इतना वक़्त मिला था कि अगर वोह चाहती तो चार चक्कर लगा सकती थी तो इस सूरत में उस पर चार चक्कर **मुअख़्ख़र** (या'नी ताख़ीर से) करने की वजह से **दम** लाज़िम होगा और वोह गुनहगार भी होगी। **बहारे शरीअ़त** में है : "यूंही अगर इतना वक़्त उसे मिला था कि त़वाफ़ कर लेती और न किया अब हैज़ या निफ़ास आ गया तो गुनहगार हुई।" (बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, स. 1145) लेकिन जो औ़रत चार चक्कर लगा चुकी है उस पर इन तीन चक्करों में ताख़ीर करने की वजह से

कुछ लाज़िम नहीं होगा क्यूं कि त़वाफ़े ज़ियारत के अक्सर हिस्से का वक़्त के अन्दर होना **वाजिब** है न कि पूरे का। बहारे शरीअ़त, "ह़ज के वाजिबात" में है : "त़वाफ़े इफ़ाज़ा का अक्सर हिस्सा अय्यामे नह़्र में होना। अ़-रफ़ात से वापसी के बा'द जो त़वाफ़ किया जाता है उस का नाम त़वाफ़े इफ़ाज़ा है और इसे त़वाफ़े ज़ियारत भी कहते हैं। त़वाफ़े ज़ियारत के अक्सर हिस्से से जितना ज़ाइद है या'नी तीन फेरे अय्यामे नह़्र के ग़ैर में भी हो सकता है।" (ऐज़न, स. 1049) और अगर औ़रत ने **चार चक्कर** पूरे कर लिये थे और बक़िय्या तीन मजबूरी ख़्वाह बिग़ैर मजबूरी इसी (या'नी माहवारी की) ह़ालत में पूरे किये या वैसे ही चार फेरे कर के चली गई और बक़िय्या फेरे छोड़ दिये तो **दम** लाज़िम होगा। और अगर येह ह़ैज़ की ह़ालत में किये हुए त़वाफ़ का इआ़दा कर ले तो दम साक़ित़ हो जाएगा अगर्चे अय्यामे नह़्र के बा'द इआ़दा करे। और अगर तीन पाकी की ह़ालत में किये थे और बक़िय्या चार ह़ैज़ की ह़ालत में किये तो **ब-दना** लाज़िम आएगा नीज़ इआ़दा करना वाजिब होगा। **बहारे शरीअ़त** में है : "त़वाफ़े फ़र्ज़ कुल या अक्सर या'नी चार फेरे जनाबत या ह़ैज़ व निफ़ास में किया तो **ब-दना** है और बे वुज़ू किया तो **दम** और पहली सूरत में त़हारत के साथ इआ़दा वाजिब।" (ऐज़न, स. 1175) और पाक हो कर इआ़दा करने की सूरत में

ब-दना साक़ित़ हो जाएगा जैसा कि ऊपर बयान हुवा।

ह़ाएज़ा की सीट बुक हो तो त़वाफ़े ज़ियारत का क्या करे ?

सुवाल : ह़ाएज़ा की निशस्त मह़फ़ूज़ हो तो **त़वाफ़े ज़ियारत** का क्या करे ?

जवाब : निशस्त मन्सूख़ करवाए और बा'दे त़हारत (या'नी पाक हो कर गुस्ल के बा'द) **त़वाफ़े ज़ियारत** करे। अगर निशस्त मन्सूख़ करवाने में अपनी या हम-सफ़रों की सख़्त दुश्वारी हो तो मजबूरी की सूरत में त़वाफ़े ज़ियारत कर ले मगर "**ब-दना**" या'नी गाय या ऊंट की कुरबानी लाज़िम आएगी और **तौबा** करना भी ज़रूरी है क्यूं कि जनाबत की ह़ालत में मस्जिद में दाख़िल होना और त़वाफ़ करना दोनों काम गुनाह हैं। अगर बारहवीं के गुरूबे आफ़्ताब तक त़हारत कर के त़वाफ़ुज़्ज़ियारह का इआ़दा करने में काम्याब हो गई तो कफ़्फ़ारा साक़ित़ हो गया और बारहवीं के बा'द अगर पाक होने के बा'द मौक़अ़ मिल गया और इआ़दा कर लिया तो "ब-दना" साक़ित़ हो गया मगर **दम** देना होगा।

सुवाल : बा'ज़ ख़वातीन ह़ैज़ रोकने की गोलियां इस्ति'माल करती हैं तो उन बारी के दिनों में जब कि ह़ैज़ दवा के ज़रीए बन्द हुवा हो **त़वाफ़ुज़्ज़ियारह** कर सकती हैं या नहीं ?

जवाब : कर सकती हैं। (मगर अपनी लेडी डोक्टर से मश्वरा कर लें क्यूं कि इन का इस्ति'माल बा'ज़ दफ़्आ़ नुक़्सान

देह होता है और अगर फ़ौरी नुक़्सान का ग़-ल-बए ज़न हो तो दवा का इस्ति'माल मम्नूअ़ है। अलबत्ता हैज़ बन्द होने की सूरत में त़वाफ़ दुरुस्त हो जाएगा)

सुवाल : अगर किसी ने बे वुज़ू या नापाक कपड़ों में **त़वाफ़ुज़्ज़ियारह** कर लिया तो क्या हुक्म है ?

जवाब : बे वुज़ू त़वाफ़े ज़ियारत किया तो **दम** वाजिब हो गया। हां, बा वुज़ू इआ़दा करना मुस्तह़ब है नीज़ इआ़दा कर लेने से दम भी वाजिब न रहा बल्कि बारहवीं के बा'द भी अगर इआ़दा कर लिया तो दम साक़ित़ हो गया। नापाक कपड़ों में हर क़िस्म का त़वाफ़ मक्रूहे (तन्ज़ीही) है। कर लिया तो कफ़्फ़ारा नहीं।

त़वाफ़ की निय्यत का अहम तरीन म-दनी फूल

सुवाल : दसवीं को **त़वाफ़ुज़्ज़ियारह** के लिये ह़ाज़िर हुए मगर ग़-लत़ी से "नफ़्ली त़वाफ़" की निय्यत कर ली, अब क्या करना चाहिये ?

जवाब : आप का त़वाफ़े ज़ियारत अदा हो गया। येह बात ज़ेह्न नशीन कर लीजिये कि त़वाफ़ में **निय्यत** ज़रूर फ़र्ज़ है कि इस के बिग़ैर त़वाफ़ होता ही नहीं मगर इस में येह शर्त़ नहीं कि किसी मुअ़य्यन (या'नी मख़्सूस) त़वाफ़ की निय्यत की जाए। हर त़रह़ का त़वाफ़ फ़क़त़ "निय्यते त़वाफ़" से अदा हो जाता है, बल्कि जिस त़वाफ़

को किसी ख़ास वक़्त के साथ मख़्सूस कर दिया गया है अगर उस मख़्सूस वक़्त में आप ने किसी दूसरे त़वाफ़ की निय्यत की भी, जब भी येह दूसरा न होगा बल्कि वोह होगा जो मख़्सूस है । म-सलन **उ़म्रे** का एह़राम बांध कर बाहर से ह़ाज़िर हुए और उ़म्रे के त़वाफ़ की निय्यत न की मुत़्लक़न (सिर्फ़) ''त़वाफ़'' की निय्यत की बल्कि ''नफ़्ली त़वाफ़'' की निय्यत की, हर सूरत में येह उ़म्रे ही का त़वाफ़ माना जाएगा । इसी त़रह़ ''क़िरान'' का एह़राम बांध कर ह़ाज़िर हुए और आने के बा'द जो पहला त़वाफ़ किया वोह ''उ़म्रे'' का है और दूसरा त़वाफ़ ''त़वाफ़े क़ुदूम'' । (اَلْمَسْلَکُ الْمُتَقَسِّط لِلقاری ص١٤٥)

सुवाल : अगर त़वाफ़े ज़ियारत किये बिग़ैर वत़न चला गया तो क्या कफ़्फ़ारा है ?

जवाब : कफ़्फ़ारे से गुज़ारा नहीं क्यूं कि **ह़ज** ही न हुवा । इस का कोई **ने'मल बदल** (Alternative) नहीं लिहाज़ा लाज़िमी है कि दोबारा **मक्कए मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا ह़ाज़िर हो और त़वाफ़े ज़ियारत करे, जब तक त़वाफ़े ज़ियारत नहीं करेगा औ़रतें ह़लाल नहीं होंगी चाहे बरसों गुज़र जाएं । अगर औ़रत ने येह भूल की है तो जब तक त़वाफ़े ज़ियारत न करे वोह मर्द के लिये ह़लाल न होगी अगर कंवारों ने किया तो शादी कर भी

लें तो जब तक त़वाफ़े ज़ियारत न कर लें "ह़लाल" न होंगे।

त़वाफ़े रुख़्सत के बारे में सुवाल व जवाब

सुवाल : त़वाफ़े वदाअ़ या'नी त़वाफ़े रुख़्सत कर लिया फिर गाड़ी लेट हो गई अब नमाज़ के लिये मस्जिदुल ह़राम जा सकते हैं या नहीं ? क्या वापसी के वक़्त फिर त़वाफ़े रुख़्सत बजा लाना होगा ?

जवाब : जा सकते हैं बल्कि जितनी बार मौक़अ़ मिले मज़ीद उ़म्रे और त़वाफ़ वग़ैरा भी कर सकते हैं। दोबारा त़वाफ़ करना वाजिब नहीं मगर कर ले तो **मुस्तह़ब** है। **सदरुश्शरीअ़ह** رَحْمَۃُاللہِ تَعالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : सफ़र का इरादा था त़वाफ़े रुख़्सत कर लिया मगर किसी वजह से ठहर गया, अगर इक़ामत की निय्यत न की तो वोही त़वाफ़ काफ़ी है मगर **मुस्तह़ब** येह है कि फिर त़वाफ़ करे कि पिछला काम त़वाफ़ रहे।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1151, **عالمگیری ج۱ ص۲۳۴**)

त़वाफ़े रुख़्सत का अहम मस्अला

सुवाल : अगर **ह़ज** के बा'द वत़न रवानगी से क़ब्ल दो दिन जद्दा शरीफ़ में किसी अ़ज़ीज़ के हां ठहरने का इरादा है और फिर बा'द में "अ़ज़्मे मदीना" है तो त़वाफ़े रुख़्सत कब करें ?

जवाब : जद्दा शरीफ़ जाने से पहले कर लीजिये, कि त़वाफ़े ज़ियारत के बा'द अगर नफ़्ली त़वाफ़ भी किया तो वोही "अल वदाई त़वाफ़" या'नी त़वाफ़े रुख़्सत है क्यूं कि आफ़ाक़ी के लिये त़वाफ़े ज़ियारत के फ़ौरन बा'द त़वाफ़े रुख़्सत का वक़्त शुरूअ़ हो जाता है और आगे गुज़रा कि हर त़वाफ़ मुत्लक़न त़वाफ़ की निय्यत से भी अदा हो जाता है। अल ह़ासिल अगर रवानगी से क़ब्ल त़वाफ़े ज़ियारत के बा'द अगर कोई नफ़्ली त़वाफ़ कर लिया है तो त़वाफ़े रुख़्सत अदा हो चुका।

सुवाल : वक़्ते रुख़्सत आफ़ाक़ी औ़रत को ह़ैज़ आ गया, त़वाफ़े रुख़्सत का क्या करे ? रुक जाए या **दम** दे कर चली जाए ?

जवाब : इस पर अब त़वाफ़े रुख़्सत वाजिब न रहा, जा सकती है, दम की भी ह़ाजत नहीं।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1151)

सुवाल : जो **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا या जद्दा शरीफ़ में रहते हैं क्या उन पर भी त़वाफ़े रुख़्सत वाजिब है ?

जवाब : जी नहीं। जो लोग मीक़ात के बाहर से **ह़ज** पर आते हैं वोह "आफ़ाक़ी ह़ाजी" कहलाते हैं, सिर्फ़ उन ही पर ब वक़्ते वापसी **त़वाफ़े रुख़्सत** वाजिब है।

सुवाल : अहले मदीना **ह़ज** करें तो वापसी के वक़्त उन पर त़वाफ़े रुख़्सत वाजिब है या नहीं ?

जवाब : वाजिब है क्यूं कि वोह "आफ़ाक़ी ह़ाजी" हैं, **मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا मीक़ात से बाहर है।

सुवाल : क्या उ़म्रह करने वाले पर भी त़वाफ़े रुख़्सत वाजिब है ?

जवाब : जी नहीं, येह सिर्फ़ **आफ़ाक़ी ह़ाजी** पर वक़्ते रुख़्सत वाजिब है।

त़वाफ़ के बारे में मु-तफ़र्रिक़ सुवाल व जवाब

सुवाल : भीड़ के सबब या बे ख़याली में किसी **त़वाफ़** के दौरान थोड़ी देर के लिये अगर सीना या पीठ का'बे की त़रफ़ हो जाए तो क्या करें ?

जवाब : **त़वाफ़** में सीना या पीठ किये जितना फ़ासिला तै किया हो उतने फ़ासिले का इआ़दा (या'नी दोबारा करना) वाजिब है और अफ़्ज़ल येह है कि वोह फेरा ही नए सिरे से कर लिया जाए।

इस्तिलामे ह़जर में हाथ कहां तक उठाएं ?

सुवाल : त़वाफ़ में ह़-जरे अस्वद के सामने हाथ कन्धों तक उठाना सुन्नत है या नमाज़ी की त़रह़ कानों तक ?

जवाब : इस में उ़-लमा के मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं। "फ़तावा ह़ज व उ़म्रह" में जुदा जुदा अक़्वाल नक़्ल करते हुए लिखा है : कानों तक हाथ उठाना मर्द के लिये है क्यूं कि वोह नमाज़ के लिये भी कानों तक हाथ उठाता है और औ़रत कन्धों तक हाथ उठाएगी

इस लिये कि वोह नमाज़ के लिये यहीं तक हाथ उठाती है। (फ़तावा ह़ज व उ़म्रह, ह़िस्सए अव्वल, स. 127)

सुवाल : नमाज़ की त़रह़ हाथ बांध कर त़वाफ़ करना कैसा ?

जवाब : मुस्तह़ब नहीं है, बचना मुनासिब है।

त़वाफ़ में फेरों की गिनती याद न रही तो ?

सुवाल : अगर दौराने त़वाफ़ फेरों की गिनती भूल गए या ता'दाद के बारे में शक वाक़ेअ़ हुवा इस परेशानी का क्या ह़ल है ?

जवाब : अगर येह त़वाफ़ फ़र्ज़ (म-सलन उ़म्रे का त़वाफ़ या त़वाफ़े ज़ियारत) या वाजिब (म-सलन त़वाफ़े वदाअ़) है तो नए सिरे से शुरूअ़ कीजिये, अगर किसी एक आ़दिल शख़्स ने बता दिया कि इतने फेरे हुए तो उस के क़ौल पर अ़मल कर लेना बेहतर है और दो[2] आ़दिल ने बताया तो उन के कहे पर ज़रूर अ़मल करे। और अगर येह त़वाफ़े फ़र्ज़ या वाजिब नहीं म-सलन त़वाफ़े क़ुदूम (कि येह क़ारिन व मुफ़्रिद के लिये सुन्नते मुअक्कदा है) या कोई नफ़्ली त़वाफ़ है तो ऐसे मौक़अ़ पर गुमाने ग़ालिब पर अ़मल कीजिये। (رَدُّالْمُحتار ج ۳ ص ۵۸۲)

दौराने त़वाफ़ वुज़ू टूट जाए तो क्या करे ?

सुवाल : अगर तीसरे फेरे में वुज़ू टूट गया और नया वुज़ू करने चले गए तो अब वापस आ कर किस त़रह़ त़वाफ़ शुरूअ़ करें ?

जवाब : चाहें तो सातों फेरे नए सिरे से शुरूअ़ करें और येह भी इख़्तियार है कि जहां से छोड़ा वहीं से शुरूअ़ करें। **चार** से कम का येही हुक्म है। हां चार या ज़ियादा फेरे कर लिये थे तो अब नए सिरे से नहीं कर सकते जहां से छोड़ा था वहीं से करना होगा। "ह़-जरे अस्वद" से भी शुरूअ़ करने की ज़रूरत नहीं।

(دُرِّمُختار و رَدُّالْمُحتار ج۳ ص۵۸۲)

क़त़रे के मरीज़ के त़वाफ़ का अहम मस्अला

सुवाल : अगर कोई क़त़रे वग़ैरा की बीमारी की वजह से "मा'ज़ूरे शर-ई" हो, त़वाफ़ के लिये उस का वुज़ू कब तक कारआमद रहता है ?

जवाब : जब तक उस नमाज़ का वक़्त बाक़ी रहता है। **सदरुश्शरीअ़ह** رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मा'ज़ूर त़वाफ़ कर रहा है चार फेरों के बा'द वक़्ते नमाज़ जाता रहा तो अब इसे हुक्म है कि वुज़ू कर के त़वाफ़ करे क्यूं कि वक़्ते नमाज़ ख़ारिज होने से मा'ज़ूर का वुज़ू जाता रहता है और बिग़ैर वुज़ू त़वाफ़ ह़राम अब वुज़ू करने के बा'द जो बाक़ी है पूरा करे और चार फेरों से पहले वक़्त ख़त्म हो गया जब भी वुज़ू कर के बाक़ी को पूरा करे और इस सूरत में अफ़्ज़ल येह है कि सिरे से करे। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1101, اَلْمَسْلَکُ الْمُتَقَسِّط ص ۱۶۷)

सिर्फ़ क़त़रे आ जाने से कोई मा'ज़ूरे शर-ई नहीं हो जाता, इस में काफ़ी तफ़्सील है इस की मा'लूमात के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 499 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**नमाज़ के अह़काम**" **सफ़ह़ा** 43 ता 46 का मुत़ा-लआ़ कीजिये ।

औ़रत ने बारी के दिनों में नफ़्ली त़वाफ़ कर लिया तो ?

सुवाल : औ़रत ने बारी के दिनों में नफ़्ली त़वाफ़ कर लिया, क्या हुक्म है ?

जवाब : गुनहगार भी हुई और **दम** भी वाजिब हुवा । चुनान्चे अ़ल्लामा शामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی फ़रमाते हैं : नफ़्ली त़वाफ़ अगर जनाबत की (या'नी बे गुस्ली) ह़ालत में (या औ़रत ने बारी के दिनों में) किया तो **दम** वाजिब है और बे वुज़ू किया तो स-दक़ा । (رَدُّالْمُحتار ج٣ ص٦٦١) अगर बे गुस्ले ने पाकी ह़ासिल करने के और बे वुज़ू ने वुज़ू करने के बा'द त़वाफ़ का इआ़दा कर लिया तो कफ़्फ़ारा साक़ित़ हो जाएगा । मगर क़स्दन ऐसा किया हो तो तौबा करनी होगी क्यूं कि बारी के दिनों में नीज़ बे वुज़ू त़वाफ़ करना गुनाह है ।

सुवाल : **त़वाफ़** में आठवें फेरे को सातवां गुमान किया अब याद आ गया कि येह तो आठवां फेरा है अब क्या करे ?

जवाब : इसी पर त़वाफ़ ख़त्म कर दीजिये। अगर जान बूझ कर आठवां फेरा शुरूअ़ किया तो येह एक जदीद (या'नी नया) त़वाफ़ शुरूअ़ हो गया अब इस के भी सात फेरे पूरे कीजिये। (ایضاً ص۵۸۱)

सुवाल : उ़म्रे के त़वाफ़ का एक फेरा छूट गया तो क्या कफ़्फ़ारा है ?

जवाब : उ़म्रे का त़वाफ़ फ़र्ज़ है। इस का अगर एक फेरा भी छूट गया तो **दम** वाजिब है, अगर बिल्कुल त़वाफ़ न किया या अक्सर (या'नी चार फेरे) तर्क किये तो कफ़्फ़ारा नहीं बल्कि इन का अदा करना लाज़िम है।

(لُبابُ الْمَناسِك ص۳۰۳)

सुवाल : क़ारिन या मुफ़्रिद ने त़वाफ़े क़ुदूम तर्क किया तो क्या सज़ा है ?

जवाब : उस पर कोई कफ़्फ़ारा नहीं लेकिन **सुन्नते मुअक्कदा** का तारिक हुवा और बुरा किया ?

(لُبابُ الْمَناسِك والْمَسْلَكُ الْمُتَقَسِّط ص۳۰۲)

मस्जिदुल ह़राम की पहली या दूसरी मन्ज़िल से त़वाफ़ का मस्अला

सुवाल : मस्जिदुल ह़राम की छतों से त़वाफ़ कर सकते हैं या नहीं ?

जवाब : अगर मस्जिदे ह़राम की छत से का'बए मुक़द्दसा का त़वाफ़ हो तो फ़र्ज़ त़वाफ़ अदा हो जाएगा जब कि दरमियान में दीवार वग़ैरा ह़ाजिब (आड़, पर्दा) न हो। लेकिन अगर नीचे मत़ाफ़ में गुन्जाइश है तो छत से त़वाफ़ मक्रूह है इस लिये कि इस

सूरत में बिला ज़रूरत मस्जिद की छत पर चढ़ना और चलना पाया जाता है जो मक्रूह है। साथ ही इस ह़ालत में त़वाफ़, का'बे से क़रीब तर होने के बजाए बहुत दूर हो रहा है और बिला वजह अपने को सख़्त मशक़्क़त और तकान में डालना भी होता है, जब कि क़रीब तर मक़ाम से त़वाफ़ करना अफ़्ज़ल है और बिला वजह अपने को मशक़्क़त में डालना मन्अ़। हां अगर नीचे गुन्जाइश न हो या गुन्जाइश होने तक इन्तिज़ार से कोई मानेअ़ (या'नी रुकावट) हो तो छत से त़वाफ़ बिला कराहत जाइज़ है। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعلم۔ (माहनामा अशरफ़िय्या, जून 2005 ई. ग्यारहवां फ़िक़्ही सेमीनार, स. 14)

दौराने त़वाफ़ बुलन्द आवाज़ से मुनाजात पढ़ना कैसा ?

सुवाल : दौराने त़वाफ़ बुलन्द आवाज़ से दुआ़, मुनाजात या ना'त शरीफ़ वग़ैरा पढ़ना कैसा ?

जवाब : इतनी ऊंची आवाज़ से पढ़ना जिस से दीगर त़वाफ़ करने वालों या नमाज़ियों को तश्वीश या'नी परेशानी हो मक्रूहे तह़रीमी, ना जाइज़ व गुनाह है। अलबत्ता किसी को ईज़ा न हो इस त़रह़ गुन-गुनाने या'नी धीमी आवाज़ से पढ़ने में ह़रज नहीं। यहां वोह साह़िबान ग़ौर फ़रमाएं जिन के **मोबाइल फ़ोन्ज़** से दौराने त़वाफ़ ट्यून्ज़ बजती रहतीं और इ़बादत गुज़ारों को परेशान करती रहती हैं इन सब को चाहिये कि तौबा करें। याद रखिये ! येह अह़काम सिर्फ़

"मस्जिदुल ह़राम" के लिये ही नहीं **तमाम मसाजिद** बल्कि तमाम मक़ामात के लिये हैं और म्यूज़ीकल ट्यून मस्जिद के इलावा भी **ना जाइज़** है।

इज़्तिबाअ़ और रमल के बारे में सुवाल व जवाब

सुवाल : अगर सअ़्य से क़ब्ल किये जाने वाले त़वाफ़ के पहले फेरे में रमल करना भूल गए तो क्या करना चाहिये ?

जवाब : रमल सिर्फ़ इब्तिदाई तीन फेरों में सुन्नत है, सातों में करना मक्रूह, लिहाज़ा अगर पहले में न किया तो दूसरे और तीसरे में कर लीजिये और अगर इब्तिदाई दो फेरों में रह गया तो सिर्फ़ तीसरे में कर लीजिये और अगर शुरूअ़ के तीनों फेरों में न किया तो अब बक़िय्या चार फेरों में नहीं कर सकते। (دُرِّمُختارو رَدُّالمُحتار ج۳ص۵۸۳)

सुवाल : जिस त़वाफ़ में इज़्तिबाअ़ और रमल करना था उस में न किया तो क्या कफ़्फ़ारा है ?

जवाब : कोई कफ़्फ़ारा नहीं। अलबत्ता अ़ज़ीम सुन्नत से मह़रूमी ज़रूर है।

सुवाल : अगर कोई सातों फेरों में **रमल** कर ले तो ?

जवाब : मक्रूहे तन्ज़ीही है। (رَدُّالمُحتار ج۳ص۵۸٤) मगर कोई जुर्माना वग़ैरा नहीं।

सअ़्य के बारे में सुवाल व जवाब

सुवाल : ह़ाजी ने **सअ़्य** मुत़्लक़न न की और वत़न चला गया अब क्या करे ?

जवाब : ह़ज की **सअ़्य** वाजिब है, तो जिस ने बिल्कुल सअ़्य न की या चार या चार से ज़ियादा फेरे तर्क कर दिये तो दम वाजिब है, चार से कम फेरे अगर तर्क किये तो हर फेरे के बदले में **स-दक़ा** दे।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1177)

सुवाल : जिस की ह़ज की **सअ़्य** रह गई, वत़न चला गया और दम भी न दिया, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे मौक़अ़ दिया और दो साल बा'द ह़ज की सआ़दत मिल गई, बाक़ी रह जाने वाली सअ़्य कर सकता है या नहीं ?

जवाब : कर सकता है और **दम** भी साक़ित़ हो गया। मगर येह सोच कर **सअ़्य** छोड़ कर वत़न न चला जाए कि फिर आ कर कर लूंगा कि ज़िन्दगी का भरोसा नहीं और ज़िन्दा बच भी गए तो ह़ाज़िरी यक़ीनी नहीं।

सुवाल : ह़ज की सअ़्य के चार फेरे कर लिये और एह़राम खोल दिया या'नी ह़ल्क़ वग़ैरा करवा लिया अब क्या करे ?

जवाब : तीन स-दक़े दे, अगर बा'दे ह़ल्क़ वग़ैरा भी बक़िय्या सअ़्य अदा कर ले तो कफ़्फ़ारा साक़ित़ हो जाएगा। याद रहे कि **सअ़्य** के लिये ज़मानए ह़ज या एह़राम शर्त़ नहीं अगर अदा न की हो तो उ़म्र भर में जब भी सअ़्य बजा लाए वाजिब अदा हो जाएगा। (अब कफ़्फ़ारे की ह़ाजत नहीं रहेगी)

सुवाल : अगर त़वाफ़ से पहले ही सअ्य कर ली तो क्या करना चाहिये ?

जवाब : सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : सअ्य के लिये शर्त़ येह है कि पूरे त़वाफ़ या त़वाफ़ के अक्सर ह़िस्से के बा'द हो, लिहाज़ा अगर त़वाफ़ से पहले या त़वाफ़ के तीन फेरे के बा'द सअ्य की तो न हुई और सअ्य के क़ब्ल एह़राम होना भी शर्त़ है, ख़्वाह ह़ज का एह़राम हो या उ़म्रे का, एह़राम से क़ब्ल सअ्य नहीं हो सकती और ह़ज की सअ्य अगर वुक़ूफ़े अ़-रफ़ा के क़ब्ल करे तो वक़्ते सअ्य में भी एह़राम होना शर्त़ है और वुक़ूफ़े अ़-रफ़ा के बा'द हो तो सुन्नत येह है कि एह़राम खोल चुका हो और उ़म्रे की सअ्य में एह़राम वाजिब है या'नी अगर त़वाफ़ के बा'द सर मुंडा लिया फिर सअ्य की तो सअ्य हो गई मगर चूंकि वाजिब तर्क हुवा लिहाज़ा दम वाजिब है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1109)

बोस व कनार के बारे में सुवाल व जवाब

सुवाल : एह़राम की ह़ालत में बीवी को हाथ लगाना कैसा ?

जवाब : बीवी को बिला शह्वत हाथ लगाना जाइज़ है मगर शह्वत के साथ हाथ में हाथ डालना या बदन को छूना **ह़राम** है। अगर शह्वत की ह़ालत में बोसो कनार किया या जिस्म को छुवा तो **दम** वाजिब हो जाएगा। येह अफ़आ़ल औ़रत के साथ हों या

अम्रद के साथ दोनों का एक ही हुक्म है। (دُرِّمُختار و رَدُّالمُحتار ج ۳ ص ٦٦٧) अगर मोह़रिमा को भी मर्द के इन अफ़्आ़ल से लज़्ज़त आए तो उसे भी **दम** देना पड़ेगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1173)

सुवाल : अगर तसव्वुर जम जाए या शर्मगाह पर नज़र पड़ जाए और इन्ज़ाल हो (या'नी मनी निकल) जाए तो क्या कफ़्फ़ारा है ?

जवाब : इस सूरत में कोई कफ़्फ़ारा नहीं। (عالمگیری ج۱ ص ۲٤٤) रहा ह़राम कर्दा औ़रत या अम्रद से बद निगाही करना या क़स्दन उन का "गन्दा" तसव्वुर बांधना येह एह़राम के इ़लावा भी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। नीज़ इस त़रह़ के गन्दे वस्वसे भी आएं तो مَعَاذَاللہ लुत़्फ़ अन्दोज़ होने के बजाए फ़ौरन तवज्जोह हटाए। इसी त़रह़ औ़रतों के लिये भी येही अह़काम हैं।

सुवाल : अगर एह़तिलाम हो जाए तो ?

जवाब : कोई कफ़्फ़ारा नहीं। (عالمگیری ج۱ ص ۲٤٤)

सुवाल : अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता कोई मोह़रिम मुश्त ज़नी (हेंड प्रेक्टिस) का मुर-तकिब हुवा तो क्या कफ़्फ़ारा है ?

जवाब : अगर इन्ज़ाल हो गया (या'नी मनी निकल गई) तो दम वाजिब है वरना मकरूह। (ایضاً) येह फे़'ल, ख़्वाह एह़राम में हो या न हो बहर ह़ाल ना जाइज़ व ह़राम और जहन्नम

में ले जाने वाला काम है। आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : जो मुश्त ज़नी (या'नी हेंड प्रेक्टिस Hand practice) करते हैं अगर वोह बिग़ैर तौबा किये मर गए तो बरोज़े क़ियामत इस ह़ाल में उठेंगे कि उन की हथेलियां गाभन (या'नी ह़ामिला) होंगी जिस से लोगों के मज्मए़ कसीर में उन की रुस्वाई होगी।

(मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 244)

एह़राम में अम्रद से मुसा-फ़ह़ा किया और......?

सुवाल : अगर अम्रद (या'नी ख़ूब सूरत लड़के) से मुसा-फ़ह़ा किया और शह्वत आ गई तो क्या सज़ा है?

जवाब : **दम** वाजिब हो गया। इस में अम्रद[1] और ग़ैरे अम्रद की कोई क़ैद नहीं, अगर दोनों को शह्वत हुई और दूसरा भी **मोह़रिम** है तो वोह भी **दम** दे।

मियां बीवी का हाथ में हाथ डाल कर चलना

सुवाल : एह़राम में मियां बीवी के एक दूसरे का हाथ पकड़ कर त़वाफ़ या सअ़्य करने में अगर शह्वत आ गई तो ?

مـــــــدینــــه

1 : वोह लड़का या मर्द जिस को देखने या छूने से शह्वत आती हो एह़राम हो या न हो उस से दूर रहना लाज़िमी है। अगर मुसा-फ़ह़ा करने या उसे छूने या उस के साथ गुफ़्त-गू करने से शह्वत भड़क्ती हो तो अब उस के साथ येह अफ़्आ़ल करने जाइज़ नहीं। इस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का मत़्बूआ़ रिसाला, "क़ौमे लूत़ की तबाह कारियां" (45 सफ़ह़ात) पढ़िये।

जवाब : जिस को शह्वत आई उस पर **दम** वाजिब है अगर दोनों को आ गई तो दोनों पर है। अगर एह़राम वाले मर्दों ने एक दूसरे का हाथ पकड़ा हो जब भी येही हुक्म है।

हम बिस्तरी के बारे में सुवाल व जवाब

सुवाल : क्या जिमाअ़ (या'नी हम बिस्तरी) से ह़ज फ़ासिद भी हो सकता है ?

जवाब : वुक़ूफ़े अ़-रफ़ात से पहले जिमाअ़ किया (या'नी हम बिस्तरी की) तो ह़ज फ़ासिद हो गया। उसे ह़ज की त़रह़ पूरा कर के **दम** दे और साले आयन्दा ही में इस की क़ज़ा कर ले। (عالمگیری ج۱ص ۲٤٤) औ़रत भी एह़रामे ह़ज में थी तो उस पर भी येही लाज़िम है और अगर इस बला में फिर पड़ जाने का ख़ौफ़ हो तो मुनासिब है कि क़ज़ा के एह़राम से ख़त्म तक दोनों ऐसे जुदा रहें कि एक दूसरे को न देखे। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1173)

सुवाल : अगर मस्अला मा'लूम न हो या भूल से जिमाअ़ (या'नी हम बिस्तरी) कर बैठा फिर ?

जवाब : भूल कर या न जानते हुए हम बिस्तरी की हो या जान बूझ कर, अपनी मरज़ी से की हो या बिलजब्र सब का एक हुक्म है। बल्कि दूसरी मजलिस में दूसरी बार जिमाअ़ कर बैठा तो **दूसरा दम** भी देना होगा, **हां** तर्के ह़ज का इरादा कर लेने के बा'द जिमाअ़ से दम लाज़िम न होगा।

सुवाल : क्या जिमाअ़ से ह़ाजी का "एह़राम" ख़त्म हो जाता है ?

जवाब : जी नहीं, एह़राम ब दस्तूर बाक़ी है जो चीज़ें मोह़रिम के लिये ना जाइज़ हैं वोह अब भी ना जाइज़ हैं और वोही तमाम अह़काम हैं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1175)

सुवाल : अगर ह़ज फ़ासिद हो जाए और उसी वक़्त नया एह़राम उसी साल के ह़ज के लिये बांध ले तो ?

जवाब : इस त़रह़ न कफ़्फ़ारे से ख़लासी होगी न अब इस साल का ह़ज हो सकेगा कि वोह तो फ़ासिद हो चुका, बहर ह़ाल साले आयन्दा की **क़ज़ा** से बच नहीं सकेगा।

(ऐज़न)

सुवाल : **मु-तमत्तेअ़** ने उ़म्रह कर के **एह़राम** खोल दिया है और अभी **मनासिके ह़ज** शुरूअ़ होने में कई रोज़ बाक़ी हैं, बीवी के साथ "मिलाप" हो सकता है या नहीं ?

जवाब : जब तक दोनों ने ह़ज का एह़राम नहीं बांधा, हो सकता है।

सुवाल : अगर उ़म्रे का एह़राम बांधने के बा'द त़वाफ़ वग़ैरा से क़ब्ल हम बिस्तरी कर ली तो क्या कफ़्फ़ारा है ?

जवाब : उ़म्रे में त़वाफ़ के चार फेरे करने से पहले अगर जिमाअ़ किया तो उ़म्रह फ़ासिद हो गया, उ़म्रह फिर से करे और **दम** भी देना होगा, अगर चार फेरे या मुकम्मल त़वाफ़ के बा'द किया तो सिर्फ़ **दम** वाजिब हुवा **उ़म्रह** सह़ीह़ हो गया। **(درمختار ج٣ ص٦٧٦)**

सुवाल : अगर मो'तमिर (या'नी उ़म्रह करने वाला) त़वाफ़ व सअ्य के बा'द मगर सर मुंडाने से पहले जिमाअ़ में मुब्तला हो गया फिर तो कोई सज़ा नहीं ?

जवाब : क्यूं नहीं ! अब भी **दम** वाजिब होगा, ह़ल्क़ या क़स्र करवाने के बा'द ही बीवी ह़लाल होगी।

नाख़ुन तराश्ने के बारे में सुवाल व जवाब

सुवाल : मस्अला मा'लूम नहीं था और दोनों हाथों और दोनों पाउं के नाख़ुन काट लिये अब क्या होगा ? अगर कफ़्फ़ारा हो तो वोह भी बता दीजिये।

जवाब : जानना या न जानना यहां उ़ज़्र नहीं होता, ख़्वाह भूल कर **जुर्म** करें या जान बूझ कर अपनी मरज़ी से करें या कोई ज़बर दस्ती करवाए **कफ़्फ़ारा** हर सूरत में देना होगा। **सदरुश्शरीअ़ह** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक हाथ एक पाउं के पांचों नाख़ुन कतरे या बीसों एक साथ तो एक दम है और अगर किसी हाथ या पाउं के पूरे पांच न कतरे तो हर नाख़ुन पर एक स-दक़ा, यहां तक कि अगर चारों हाथ पाउं के चार चार कतरे तो सोलह स-दक़े दे मगर येह कि स-दक़ों की क़ीमत एक दम के बराबर हो जाए तो कुछ कम कर ले या दम दे और अगर एक हाथ या पाउं के पांचों एक जल्से में और दूसरे के

पांचों दूसरे जल्से में कतरे तो दो दम लाज़िम हैं और चारों हाथ पाउं के चार जल्सों में तो चार दम।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1172, عالمگیری ج۱ص ۲۴۴)

सुवाल : नाखुन अगर दांत से कतर डाले तो क्या सज़ा है ?

जवाब : ख़्वाह ब्लेड से काटें या चाकू से, नाखुन तराश (या'नी नेल **कटर**) से तराशें या **दांतों** से कतरें सब का एक ही हुक्म है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1172)

सुवाल : मोह़रिम किसी दूसरे के नाखुन काट सकता है या नहीं ?

जवाब : नहीं काट सकता, इस के वोही अह़काम हैं जो दूसरों के बाल दूर करने के हैं।

(اَلْمَسْلَکُ الْمُتَقَسِّط لِلقاری ص ۳۳۲)

बाल दूर करने के बारे में सुवाल व जवाब

सुवाल : अगर ! مَعَاذَاللہ किसी मोह़रिम ने अपनी दाढ़ी मुंडवा दी तो क्या सज़ा है ?

जवाब : दाढ़ी मुंडवाना या **ख़शख़शी** करवा देना वैसे भी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है और एह़राम की ह़ालत में सख़्त ह़राम। अलबत्ता एह़राम की ह़ालत में सर के बाल भी नहीं काट सकते। बहर ह़ाल दौराने एह़राम के हुक्म के मु-तअ़ल्लिक़ **सदरुश्शरीअ़ह** رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : सर या दाढ़ी के चहारुम बाल या ज़ियादा किसी त़रह़ दूर किये तो **दम** है और चहारुम से कम में **स-दक़ा** और अगर चंदला

है या दाढ़ी में कम बाल हैं, तो अगर चौथाई (1/4) की मिक़्दार हैं तो कुल में दम वरना स-दक़ा। चन्द जगह से थोड़े थोड़े बाल लिये तो सब का मज्मूआ अगर चहारुम को पहुंचता है तो दम है वरना स-दक़ा।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1170, رَدُّالْمُحتار ج ۳ ص ٦٥٩)

सुवाल : औ़रत अपने बाल ले सकती है या नहीं ?

जवाब : **नहीं।** औ़रत अगर पूरे सर या चौथाई (1/4) सर के बाल एक पोरे के बराबर कतर ले तो **दम** दे और कम में **स-दक़ा।** (لُبابُ الْمَناسِك ص ٣٢٧)

सुवाल : मोह़रिम ने गरदन या बग़ल या मूए ज़ेरे नाफ़ ले लिये तो क्या हुक्म है ?

जवाब : पूरी गरदन या पूरी एक बग़ल में दम है और कम में स-दक़ा अगर्चे निस्फ़ या ज़ियादा हो। येही हुक्म ज़ेरे नाफ़ का है। दोनों बग़लें पूरी मुंडाए जब भी एक ही दम है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1170, دُرِّمُختار و رَدُّالْمُحتار ج۳ ص٦٥٩)

सुवाल : सर, दाढ़ी, बग़लें वग़ैरा सब एक ही मजलिस में मुंडवा दिये तो कितने कफ़्फ़ारे होंगे ?

जवाब : ख़्वाह सर से ले कर पाउं तक सारे बदन के बाल एक ही मजलिस में मुंडवाएं तो एक ही कफ़्फ़ारा है। अगर अलग अलग आ'ज़ा के अलग अलग मजलिस में मुंडवाएंगे तो उतने ही कफ़्फ़ारे होंगे।

(دُرِّمُختار و رَدُّالْمُحتار ج ۳ ص ٦٥٩ ـ ٦٦١)

सुवाल : अगर वुज़ू करने में बाल झड़ते हों तो क्या इस पर भी कफ़्फ़ारा है ?

जवाब : क्यूं नहीं ! वुज़ू करने में, खुजाने में या कंघा करने में अगर दो या तीन बाल गिरे तो हर बाल के बदले में एक एक मुठ्ठी अनाज या एक एक टुकड़ा रोटी या एक छुवारा ख़ैरात करें और तीन से ज़ियादा गिरे तो **स-दक़ा** देना होगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1171)

सुवाल : अगर खाना पकाने में चूल्हे की गरमी से कुछ बाल जल गए तो ?

जवाब : स-दक़ा देना होगा। (ऐज़न)

सुवाल : मूंछ साफ़ करवा दी, क्या कफ़्फ़ारा है ?

जवाब : मूंछ अगर्चे पूरी मुंडवाएं या कतरवाएं **स-दक़ा** है। (ऐज़न)

सुवाल : अगर सीने के बाल मुंडवा दिये तो क्या करे ?

जवाब : सर, दाढ़ी, गरदन, बग़ल और मूए ज़ेरे नाफ़ के इलावा बाक़ी आ'ज़ा के बाल मुंडवाने में सिर्फ़ **स-दक़ा** है। (ऐज़न)

सुवाल : बाल झड़ने की बीमारी हो और ख़ुद बख़ुद बाल झड़ते हों तो इस पर कोई रिआ़यत ?

जवाब : अगर बिग़ैर हाथ लगाए बाल गिर जाएं या बीमारी से तमाम बाल भी झड़ जाएं तो कोई कफ़्फ़ारा नहीं। (ऐज़न)

सुवाल : मोह्‌रिम ने दूसरे मोह्‌रिम का सर मूंडा तो क्या सज़ा है ?

जवाब : अगर एह्‌राम खोलने का वक़्त आ गया है। तो अब दोनों एक दूसरे के बाल मूंड सकते हैं। और अगर वक़्त नहीं आया तो इस पर कफ़्फ़ारे की सूरत मुख़्तलिफ़ है। अगर मोह्‌रिम ने मोह्‌रिम का सर मूंडा तो जिस का सर मूंडा गया उस पर तो कफ़्फ़ारा है ही, मूंडने वाले पर भी स-दक़ा है और अगर मोह्‌रिम ने ग़ैरे मोह्‌रिम का सर मूंडा या मूंछें लीं या नाख़ुन तराशे तो मसाकीन को कुछ ख़ैरात कर दे। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1142, 1171)

सुवाल : ग़ैरे मोह्‌रिम, मोह्‌रिम का सर मूंड सकता है या नहीं ?

जवाब : वक़्त से पहले नहीं मूंड सकता, अगर मूंडेगा तो मोह्‌रिम पर तो कफ़्फ़ारा है ही, ग़ैरे मोह्‌रिम को भी **स-दक़ा** देना होगा। (ऐज़न, 1171)

सुवाल : अगर बाल सफ़ा पाउडर या CREAM से बाल साफ़ किये तो क्या मस्अला है !

जवाब : बहारे शरीअ़त में है : मूंडना, कतरना, मोचने से लेना या किसी चीज़ से बाल उड़ाना, सब का एक हुक्म है। (ऐज़न)

ख़ुश्बू के बारे में सुवाल व जवाब

सुवाल : **एह्‌राम** की ह़ालत में इ़त्र की शीशी हाथ में ली और हाथ में **ख़ुश्बू** लग गई तो क्या कफ़्फ़ारा है ?

जवाब : अगर लोग देख कर कहें कि येह बहुत सी **ख़ुश्बू** लग गई है अगर्चे उ़ज़्व के थोड़े से हिस्से में लगी हो तो **दम** वाजिब है वरना मा'मूली सी खुश्बू भी लग गई तो **स-दक़ा** है ।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1163)

सुवाल : सर में खुश्बूदार तेल डाल लिया तो क्या करे ?

जवाब : अगर कोई बड़ा उ़ज़्व म-सलन रान, मुंह, पिंडली या सर सारे का सारा खुश्बू से आलूदा हो जाए ख़्वाह खुश्बूदार तेल के ज़रीए़ हो या इ़त्र से, **दम** वाजिब हो जाएगा । (ऐज़न)

सुवाल : बिछौने या एह़राम के कपड़े पर खुश्बू लग गई या किसी ने लगा दी तो ?

जवाब : खुश्बू की मिक्दार देखी जाएगी, ज़ियादा है तो दम और कम है तो स-दक़ा ।

सुवाल : जो कमरा (ROOM) रिहाइश के लिये मिला उस में कारपेट, बिछौना, तक्या, चादर वग़ैरा खुश्बूदार हों तो क्या करे ?

जवाब : मोह़रिम इन चीज़ों के इस्ति'माल से बचे । अगर एह़तियात़ न की और इन से खुश्बू छूट कर बदन या एह़राम पर लग गई तो ज़ियादा होने की सूरत में दम और कम में स-दक़ा वाजिब होगा । और अगर न लगे तो कोई कफ़्फ़ारा नहीं मगर इस सूरत

में बचना बेहतर है। मोह़रिम को चाहिये मकान वाले से मु-तबादिल इन्तिज़ाम का कहे, येह भी हो सकता है कि फ़र्श और बिछोने वग़ैरा पर कोई बे ख़ुश्बू चादर बिछा ले, तक्ये का ग़िलाफ़ (cover) तब्दील कर ले या उसे किसी बे ख़ुश्बू चादर में लपेट ले।

सुवाल : जो ख़ुश्बू निय्यते एह़राम से पहले बदन पर लगाई थी क्या निय्यते एह़राम के बा'द उस **ख़ुश्बू** को ज़ाइल (दूर) करना ज़रूरी है ?

जवाब : नहीं, **सदरुश्शरीअ़ह** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं **:** एह़राम से पहले बदन पर ख़ुश्बू लगाई थी, एह़राम के बा'द फैल कर और आ'ज़ा को लगी तो कफ़्फ़ारा नहीं।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1163)

सुवाल : एह़राम की निय्यत से पहले गले में जो बेग था उस में या बेल्ट की जेब में इ़त्र की शीशी थी, निय्यत के बा'द याद आने पर उसे निकालना ज़रूरी है या रहने दें ? अगर इसी शीशी की ख़ुश्बू हाथ में लग गई तब भी कफ़्फ़ारा होगा ?

जवाब : एह़राम की निय्यत के बा'द वोह इ़त्र की शीशी बेग या बेल्ट से निकालना ज़रूरी नहीं और बा'द में उस शीशी की ख़ुश्बू हाथ वग़ैरा पर लग गई तो कफ़्फ़ारा लाज़िम आएगा, क्यूं कि येह वोह ख़ुश्बू नहीं जो एह़राम की निय्यत से पहले कपड़े या बदन पर लगाई गई हो।

सुवाल : गले में निय्यत से पहले जो बेग पहना वोह ख़ुश्बूदार था, नीज़ उस के अन्दर ख़ुश्बूदार रुमाल या ख़ुश्बू वाली त़वाफ़ की तस्बीह़ वग़ैरा भी मौजूद, इन का मोह़रिम इस्ति'माल कर सकता है या नहीं ?

जवाब : इन चीज़ों की ख़ुश्बू क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) सूंघना मक्रूह है और इस एह़तियात़ के साथ इस्ति'माल की इजाज़त है कि अगर उस की तरी बाक़ी है तो उतर कर एह़राम और बदन को न लगे लेकिन ज़ाहिर है कि तस्बीह़ में ऐसी एह़तियात़ करना निहायत मुश्किल है बल्कि रुमाल में भी बचना मुश्किल है। लिहाज़ा इन के इस्ति'माल से बचने में ही आ़फ़िय्यत है।

सुवाल : अगर दो तीन ज़ाइद ख़ुश्बूदार चादरें निय्यत से क़ब्ल गोद में रख ले या ओढ़ ले अब एह़राम की निय्यत करे। निय्यत के बा'द ज़ाइद चादरें हटा दे, उसी एह़राम की ह़ालत में अब उन चादरों का इस्ति'माल करना कैसा ?

जवाब : अगर तरी बाक़ी है तो उन को इस्ति'माल की इजाज़त नहीं और अगर तरी ख़त्म हो चुकी है सिर्फ़ ख़ुश्बू बाक़ी है तो इस्ति'माल की इजाज़त है मगर मक्रूहे (तन्ज़ीही) है। **सदरुश्शरीअ़ह** رَحۡمَۃُاللہِ تعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : अगर एह़राम से पहले बसाया (या'नी ख़ुश्बूदार किया) था और एह़राम में पहना तो मक्रूह है मगर कफ़्फ़ारा नहीं।

(ऐज़न, स. 1165)

सुवाल : एह़्तिलाम हो गया या किसी वजह से एह़राम की एक या दोनों चादरें नापाक हो गईं अब दूसरी चादरें मौजूद तो हैं मगर उन में पहले की ख़ुश्बू लगी हुई है, उन्हें पहन सकते हैं या नहीं ?

जवाब : अगर ख़ुश्बू की तरी या जिर्म (या'नी ऐ़न, जिस्म) अभी तक बाक़ी है तो उन चादरों को पहनने से कफ़्फ़ारा लाज़िम आएगा। और अगर जिर्म ख़त्म हो चुका है सिर्फ़ ख़ुश्बू बाक़ी है तो फिर मोह़रिम वोह चादरें इस्ति'माल कर सकता है। हां बिला उ़ज़्र ऐसी चादरें इस्ति'माल करना मक्रूहे तन्ज़ीही है। फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जिस कपड़े पर ख़ुश्बू का जिर्म (या'नी ऐ़न, जिस्म) बाक़ी हो उसे एह़राम में पहना, ना जाइज़ है। (عالمگیری ج۱ ص۲۴۲) बहारे शरीअ़त में है : "अगर एह़राम से पहले बसाया था और एह़राम में पहना तो मक्रूह है मगर कफ़्फ़ारा नहीं।"

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1165)

सुवाल : एह़राम की ह़ालत में ह़-जरे अस्वद का बोसा लेने या रुक्ने यमानी को छूने या मुल्तज़म से लिपटने में अगर ख़ुश्बू लग गई तो क्या करें ?

जवाब : अगर बहुत सी लग गई तो दम और थोड़ी सी लगी तो स-दक़ा। (ऐज़न, स. 1164) (जहां जहां ख़ुश्बू लग जाने का मस्अला है वहां कम है या ज़ियादा इस का फ़ैसला दूसरों से

करवाना है । चूंकि ज़ियादा ख़ुश्बू लग जाने पर दम है लिहाज़ा हो सकता है अपना नफ़्स ज़ियादा ख़ुश्बू को भी थोड़ी ही कहे)

सुवाल : मोह़रिम जान बूझ कर **ख़ुश्बूदार फूल** सूंघ सकता है या नहीं ?

जवाब : नहीं । मोह़रिम का बिल क़स्द (या'नी जान बूझ कर) ख़ुश्बू या ख़ुश्बूदार चीज़ सूंघना मक्रूहे तन्ज़ीही है, मगर कफ़्फ़ारा नहीं । (ऐज़न, 1163)

सुवाल : बे पकाई इलायची या चांदी के वरक़ वाले इलायची के दाने खाना कैसा ?

जवाब : ह़राम है । अगर ख़ालिस ख़ुश्बू, जैसे मुश्क, ज़ा'फ़रान, लोंग, इलायची, दारचीनी, इतनी खाई कि मुंह के अक्सर ह़िस्से में लग गई तो **दम** वाजिब हो गया और कम में **स-दक़ा ।** (ऐज़न, 1164)

सुवाल : ख़ुश्बूदार ज़र्दा, बिरयानी और क़ोरमा, ख़ुश्बू वाली सौंफ़, छालिया, क्रीम वाले बिस्किट, टॉफ़ियां वग़ैरा खा सकते हैं या नहीं ?

जवाब : जो ख़ुश्बू खाने में पका ली गई हो, चाहे अब भी उस से ख़ुश्बू आ रही हो, उसे खाने में मुज़ा-यक़ा नहीं । इसी त़रह़ ख़ुश्बू पकाते वक़्त तो नहीं डाली थी ऊपर डाल दी थी मगर अब उस की महक उड़ गई उस का खाना भी जाइज़ है, अगर बिग़ैर पकाई हुई ख़ुश्बू खाने या मा'जून वग़ैरा दवा में मिला

दी गई तो अब उस के अज्ज़ा गिज़ा या दवा वग़ैरा बे ख़ुश्बू अश्या के अज्ज़ा से ज़ियादा हैं तो वोह ख़ालिस ख़ुश्बू के हुक्म में है और कफ़्फ़ारा है कि मुंह के अक्सर हिस्से में ख़ुश्बू लग गई तो **दम** और कम में लगी तो **स-दक़ा** और अगर अनाज वग़ैरा की मिक़्दार ज़ियादा है और ख़ालिस ख़ुश्बू कम तो कोई कफ़्फ़ारा नहीं, हां ख़ालिस ख़ुश्बू की महक आती हो तो मक्रूहे तन्ज़ीही है।

सुवाल : ख़ुश्बूदार शरबत, फ़्रूट ज्यूस, ठन्डी बोतलें वग़ैरा पीना कैसा है ?

जवाब : अगर ख़ालिस ख़ुश्बू जैसे सन्दल वग़ैरा का शरबत है तो वोह शरबत तो पका कर ही बनाया जाता है, लिहाज़ा मुत़्लक़न पीने की इजाज़त है और अगर उस के अन्दर ख़ुश्बू पैदा करने के लिये कोई एसेन्स (Essense) डाला जाता है तो मेरी मा'लूमात के मुत़ाबिक़ उस के डालने का त़रीक़ा येह है कि पकाए जाने वाले शरबत में उस के ठन्डा होने के बा'द डाला जाता है और यक़ीनन येह क़लील मिक़्दार में होता है तो इस का हुक्म येह है कि अगर उसे तीन बार या ज़ियादा पिया तो **दम** है वरना **स-दक़ा**। बहारे शरीअ़त में है : "पीने की चीज़ में अगर ख़ुश्बू मिलाई अगर ख़ुश्बू ग़ालिब है (तो दम है) या ख़ुश्बू कम है मगर उसे तीन बार या ज़ियादा पिया तो दम है वरना स-दक़ा।" (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1165)

सुवाल : **मोह़रिम** नारियल का तेल सर वग़ैरा में लगा सकता है या नहीं ?

जवाब : कोई ह़रज नहीं, अलबत्ता **तिल** और **ज़ैतून** का तेल ख़ुश्बू के हुक्म में है। अगर्चे इन में ख़ुश्बू न हो येह जिस्म पर नहीं लगा सकते। हां, इन के खाने, नाक में चढ़ाने, ज़ख़्म पर लगाने और कान में टपकाने में कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं। (ऐज़न, 1166)

सुवाल : **एह़राम** की ह़ालत में आंखों में **ख़ुश्बूदार** सुरमा लगाना कैसा है ?

जवाब : **ह़राम** है। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ख़ुश्बूदार सुरमा एक या दो बार लगाया तो **स-दक़ा** दे, इस से ज़ियादा में **दम** और जिस सुरमे में ख़ुश्बू न हो उस के इस्ति'माल में ह़रज नहीं, जब कि ब ज़रूरत हो और बिला ज़रूरत मक्रूह (व ख़िलाफ़े औला)। (ऐज़न, 1164)

सुवाल : ख़ुश्बू लगा ली और **कफ़्फ़ारा** भी दे दिया तो अब लगी रहने दें या क्या करें ?

जवाब : ख़ुश्बू लगाना जब जुर्म क़रार पाया तो बदन या कपड़े से दूर करना **वाजिब** है और **कफ़्फ़ारा** देने के बा'द अगर ज़ाइल (या'नी दूर) न किया तो फिर दम वग़ैरा **वाजिब** होगा। (ऐज़न, 1166)

एह़राम में ख़ुश्बूदार साबुन का इस्ति'माल

सुवाल : हि़जाज़े मुक़द्दस के होटलों में ख़ुश्बूदार साबुन, मुअ़त्तर

शेम्पू और ख़ुश्बू वाले पाउडर हाथ धोने के लिये रखे जाते हैं और एह्राम वाले बिला तकल्लुफ़ इन को इस्ति'माल करते हैं, त़य्यारे में और एरपोर्ट पर भी एह्राम वालों को येही मिलता है, कपड़े और बरतन धोने का पाउडर भी हि़जाज़े मुक़द्दस में ख़ुश्बूदार ही होता है। इन चीज़ों के बारे में हुक्मे शर-ई क्या है ?

जवाब : एह्राम वाले इन चीज़ों को इस्ति'माल करें तो कोई कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं आएगा। (अलबत्ता ख़ुश्बू की निय्यत से इन चीज़ों का इस्ति'माल मक्रूह है।)

(माख़ूज़ अज़ : एह्राम और ख़ुश्बूदार साबुन)[1]

मोह्रिम और गुलाब के फूलों के गजरे

सुवाल : **एह्राम** की निय्यत कर लेने के बा'द एरपोर्ट वग़ैरा पर गुलाब के फूलों का गजरा पहना जा सकता है या नहीं ?

जवाब : एह्राम की निय्यत के बा'द गुलाब का हार न पहना जाए, क्यूं कि गुलाब का फूल ख़ुद ऐन (ख़ालिस) ख़ुश्बू है और इस की महक बदन और लिबास में बस भी जाती है। चुनान्चे अगर इस की महक लिबास में बस गई और कसीर (या'नी ज़ियादा)

1 : दा'वते इस्लामी की मजलिस "तह़क़ीक़ाते शरइय्या" ने उम्मत की रहनुमाई के लिये इत्तिफ़ाक़े राय से येह **फ़तवा** मुरत्तब फ़रमाया, मज़ीद तीन मुक़्तदर उ-लमाए अहले सुन्नत (1) मुफ़्तिये आ'ज़म पाकिस्तान अ़ल्लामा अ़ब्दुल क़य्यूम हज़ारवी (2) श-रफ़े मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद अ़ब्दुल ह़कीम शरफ़ क़ादिरी और (3) फ़ैज़े मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा फ़ैज़ अह़मद उवैसी (رحمهم الله تعالى) की तस्दीक़ ह़ासिल की और मक-त-बतुल मदीना ने बनाम "एह्राम और ख़ुश्बूदार साबुन" येह रिसाला शाएअ़ किया। तफ़्सीलात के शाइक़ीन इसे ह़ासिल करें या दा'वते इस्लामी की वेबसाइट : www.dawateislami.net पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं।

है और चार पहर या'नी बारह घन्टे तक उस कपड़े को पहने रहा तो **दम** है वरना स-दक़ा और अगर ख़ुश्बू थोड़ी है और कपड़े में एक बालिश्त या इस से कम (हिस्से) में लगी है और चार पहर तक इसे पहने रहा तो "**स-दक़ा**" और इस से कम पहना तो एक मुठ्ठी गन्दुम देना **वाजिब** है। और अगर ख़ुश्बू क़लील (या'नी थोड़ी) है, लेकिन बालिश्त से ज़ियादा हिस्से में है, तो कसीर (या'नी ज़ियादा) का ही हुक्म है या'नी चार पहर में "दम" और कम में "स-दक़ा" और अगर येह हार पहनने के बा वुजूद कोई महक कपड़ों में न बसी तो कोई कफ़्फ़ारा नहीं। (एह़राम और ख़ुश्बूदार साबुन, स. 35 ता 36)

सुवाल : किसी से मुसा-फ़ह़ा किया और उस के हाथ से मोह़रिम के हाथ में ख़ुश्बू लग गई तो ?

जवाब : अगर ख़ुश्बू का ऐन लगा तो "कफ़्फ़ारा" होगा और अगर ऐन न लगा बल्कि हाथ में सिर्फ़ महक आई, तो कोई कफ़्फ़ारा नहीं कि इस मोह़रिम ने ख़ुश्बू के ऐन से नफ़्अ़ न उठाया, हां इस को चाहिये कि हाथ को धो कर उस महक को ज़ाइल कर दे। (ऐज़न, स. 35)

सुवाल : ख़ुश्बूदार शेम्पू से सर या दाढ़ी धो सकते हैं या नहीं ?

जवाब : रिसाला "एह़राम और ख़ुश्बूदार साबुन" **सफ़ह़ा** 25 ता 28 से बा'ज़ इक़्तिबासात मुला-ह़ज़ा हों : **शेम्पू** अगर सर या दाढ़ी में इस्ति'माल किया जाए, तो ख़ुश्बू की मुमा-न-अ़त

की इ़ल्लत (या'नी वजह) पर ग़ौर के नतीजे में इस की मुमा-न-अ़त का हुक्म ही समझ में आता है, बल्कि कफ़्फ़ारा भी होना चाहिये, जैसा कि **ख़ि़त्मी** (खुश्बूदार बूटी) से सर और दाढ़ी धोने का हुक्म है कि येह बालों को नर्म करता है और जूएं मारता है और मोह़रिम के लिये येह ना जाइज़ है। "दुर्रे मुख़्तार" में है : सर और दाढ़ी को ख़ि़त्मी से धोना (ह़राम है) क्यूं कि येह खुश्बू है या जूओं को मारता है। (دُرِّ مختار ج ۳ ص ۵۷۰) साह़िबैन (या'नी इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुह़म्मद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا) के नज़्दीक चूंकि येह खुश्बू नहीं, लिहाज़ा यहां "जिनायते क़ासिरा" (ना मुकम्मल जुर्म) का सुबूत होगा और इस का मूजब "स-दक़ा" है। **शेम्पू** से सर धोने की सूरत में भी ब ज़ाहिर "जिनायते क़ासिरा" (या'नी ना मुकम्मल जुर्म) का वुजूद ही समझ में आता है कि इस में भी आग का अ़मल होता है। लिहाज़ा खुश्बू का हुक्म तो साक़ित़ हो गया लेकिन बालों को नर्म करने और जूएं मारने की इ़ल्लत (या'नी सबब) मौजूद है, लिहाज़ा "स-दक़ा" वाजिब होना चाहिये। येह अम्र भी क़ाबिले तवज्जोह है कि अगर किसी के सर पर बाल और चेहरे पर दाढ़ी न हो, तो क्या अब भी हुक्म साबिक़ ही लगाया जाएगा......? ब ज़ाहिर इस सूरत में कफ़्फ़ारे का हुक्म नहीं होना चाहिये, क्यूं कि हुक्मे मुमा-न-अ़त की इ़ल्लत (सबब) बालों का नर्म और जूओं का हलाक होना था, और मज़्कूरा सूरत में येह

इ़ल्लत मफ़्क़ूद (या'नी सबब ग़ैर मौजूद) है और इन्तिफ़ाए इ़ल्लत (या'नी सबब का न होना) इन्तिफ़ाए मा'लूल को **मुस्तल्ज़िम** (लाज़िम करने वाली) है लेकिन इस से अगर मैल छूटे तो येह मक्रूह है कि मोह़रिम को मैल छुड़ाना मक्रूह है। और हाथ धोने में इस की ह़ैसिय्यत साबुन की सी है क्यूं कि येह माएअ़ (या'नी लिक्विड, liquid) ह़ालत में साबुन ही है और इस में भी आग का अ़मल किया जाता है।

सुवाल : मस्जिदे करीमैन के फ़र्श की धुलाई में जो ख़ुश्बूदार मह़लूल (SOLUTION) इस्ति'माल किया जाता है, उस में लाखों मुह़रिमीन के पाउं सनते (या'नी आलूदा) होते रहते हैं क्या हुक्म है ?

जवाब : कोई कफ़्फ़ारा नहीं कि येह ख़ुश्बू नहीं। और बिलफ़र्ज़ येह मह़लूल ख़ालिस ख़ुश्बू भी होता, तो भी कफ़्फ़ारा वाजिब न होता, क्यूं कि ज़ाहिर येह है कि येह मह़लूल पहले पानी में मिलाया जाता है और पानी इस मह़लूल से ज़ाइद और येह मह़लूल मग़्लूब (कम) होता है और अगर माएअ़ (या'नी लिक्विड, liquid) ख़ुश्बू को किसी माएअ़ में मिलाया जाए और माएअ़ ग़ालिब हो, तो कोई जज़ा नहीं होती। कुतुबे फ़िक़्ह में जो मश्रूबात का हुक्म उ़मूमन तह़रीर है इस से मुराद ठोस ख़ुश्बू का माएअ़ में मिलाया जाना है। अ़ल्लामा हुसैन बिन मुह़म्मद अ़ब्दुल ग़नी मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى "इर्शादुस्सारी"

सफ़हा 316 में फ़रमाते हैं : और इसी से मा'लूम होता है कि गीली शकर (या'नी मीठा शरबत) और इस की मिस्ल, गुलाब के पानी के साथ मिलाया जाए, तो अगर अ़–रक़े गुलाब मग़्लूब हो, जैसा कि आ़दतन ऐसा ही आ़म तौ़र पर होता है, तो इस में कोई कफ़्फ़ारा नहीं, और ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने इसी की मिस्ल ''त़राबुलुसी'' से नक़्ल किया और इसे बर क़रार रखा और इस की ताईद की और इस की अस्ल ''मुह़ीत़'' में है। (एह़राम और खु़श्बूदार साबुन, स. 28 ता 29)

सुवाल : मोह़रिम ने अगर टूथ पेस्ट इस्ति'माल कर ली तो क्या कफ़्फ़ारा है ?

जवाब : टूथ पेस्ट में अगर आग का अ़मल होता है, जैसा कि येही मु–तबादिर (या'नी ज़ाहिर) है, जब तो हुक्मे कफ़्फ़ारा नहीं, जैसा कि मा क़ब्ल तफ़्सील से गुज़र चुका। (ऐज़न, स. 33) अलबत्ता अगर मुंह की बदबू दूर करने और खु़श्बू ह़ासिल करने की निय्यत हो तो मक्रूह है। **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ''तम्बाकू के क़िवाम में खु़श्बू डाल कर पकाई गई हो, जब तो इस का खाना मुत़्लक़न जाइज़ है अगर्चे खु़श्बू देती हो, हां खु़श्बू ही के क़स्द से इसे इख़्तियार करना कराहत से ख़ाली नहीं।'' (फ़तावा र–ज़विय्या, जि. 10, स. 716)

सिले हुए कपड़े वग़ैरा के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल व जवाब

सुवाल : **मोह़रिम** ने अगर भूल कर सिला हुवा लिबास पहन लिया और दस मिनट के बा'द याद आते ही उतार दिया तो कोई **कफ़्फ़ारा** वग़ैरा है या नहीं ?

जवाब : है, अगर्चे एक लम्ह़े के लिये पहना हो। जान बूझ कर पहना हो या भूले से, "**स-दक़ा**" वाजिब हो गया और अगर चार पहर[1] या इस से ज़ियादा चाहे लगातार कई दिन तक पहने रहा "**दम**" वाजिब होगा।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 757)

सुवाल : अगर टोपी या इ़मामा पहना या **एह़राम** ही की चादर मोह़रिम ने सर या मुंह पर ओढ़ ली या एह़राम की निय्यत करते वक़्त मर्द सिले हुए कपड़े या टोपी उतारना भूल गया या भीड़ में दूसरे की चादर से मोह़रिम का सर या मुंह ढक गया तो क्या सज़ा है ?

जवाब : जान बूझ कर हो या भूल कर या किसी दूसरे की कोताही की बिना पर हुवा हो कफ़्फ़ारे देने होंगे हां जान बूझ कर जुर्म करने में गुनाह भी है लिहाज़ा तौबा भी वाजिब होगी। अब कफ़्फ़ारा समझ लीजिये : मर्द सारा सर या सर का चौथाई (1/4) ह़िस्सा या मर्द ख़्वाह औ़रत मुंह की टिक्ली सारी या'नी पूरा चेहरा या चौथाई ह़िस्सा चार पहर

1 : चार पहर या'नी एक दिन या एक रात की मिक़्दार म-सलन तुलूए़ आफ़्ताब से ग़ुरूबे आफ़्ताब या ग़ुरूबे आफ़्ताब से तुलूए़ आफ़्ताब या दो पहर से आधी रात या आधी रात से दो पहर तक। (ह़ाशिया अन्वारुल बिशारह मअ़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 757)

या ज़ियादा लगातार छुपाएं "दम" है और चौथाई से कम चार पहर तक या चार पहर से कम अगर्चे सारा मुंह या सर तो "स-दक़ा" है और चहारुम (या'नी चौथाई) से कम को चार पहर से कम तक छुपाएं तो कफ़्फ़ारा नहीं मगर **गुनाह** है। (ऐज़न, स. 758)

सुवाल : नज़्ले में कपड़े से नाक पोंछ सकते हैं या नहीं ?

जवाब : कपड़े से नहीं पोंछ सकते, कपड़ा या तोलिया दूर रख कर उस में नाक सिनक (या'नी झाड़) लीजिये। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : कान और गुद्दी के छुपाने में ह़रज नहीं। यूंही नाक पर ख़ाली हाथ रखने में और अगर हाथ में कपड़ा है और कपड़े समेत नाक पर हाथ रखा तो कफ़्फ़ारा नहीं मगर मक्रूह व गुनाह है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1169)

एह़राम में टिशू पेपर का इस्ति'माल

सुवाल : टिशू पेपर से मुंह का पसीना या वुज़ू का पानी या नज़्ले में नाक पोंछ सकते हैं या नहीं ?

जवाब : नहीं पोंछ सकते।

सुवाल : तो मुंह पर कपड़े या टिशू पेपर का मास्क लगाना कैसा ?

जवाब : ना जाइज़ व गुनाह है। शराइत़ पाए जाने की सूरत में कफ़्फ़ारा भी लाज़िम होगा।

सुवाल : मोह़रिम ने ख़ुश्बूदार टिशू पेपर इस्ति'माल कर लिया तो ?

जवाब : ख़ुश्बूदार टिशू पेपर में अगर ख़ुश्बू का ऐन मौजूद है या'नी वोह पेपर ख़ुश्बू से भीगा हुवा है, तो उस तरी के बदन पर लगने की सूरत में जो हुक्म ख़ुश्बू का होता है, वोही इस का भी होगा। या'नी अगर क़लील (या'नी कम) है और उ़ज़्वे कामिल (या'नी पूरे उ़ज़्व) को न लगे, तो **स-दक़ा**, वरना अगर कसीर (या'नी ज़ियादा) हो या कामिल (पूरे) उ़ज़्व को लग जाए, तो **दम** है। और अगर ऐन मौजूद न हो बल्कि सिर्फ़ महक आती हो तो अगर इस से चेहरा वग़ैरा पोंछा और चेहरे या हाथ में ख़ुश्बू का असर आ गया, तो कोई "कफ़्फ़ारा" नहीं कि यहां ख़ुश्बू का ऐन न पाया गया और टिशू पेपर का मक़्सूदे अस्ली ख़ुश्बू से नफ़्अ़ लेना नहीं। (एह़राम और ख़ुश्बूदार साबुन, स. 31) अगर कोई ऐसे कमरे में दाख़िल हुवा जिस को धूनी दी गई और उस के कपड़े में महक बस गई, तो कोई कफ़्फ़ारा नहीं, क्यूं कि उस ने ख़ुश्बू के ऐन से नफ़्अ़ नहीं उठाया।

(عالمگیری ج۱ص۲٤۱)

सुवाल : सोते वक़्त सिली हुई चादर ओढ़ सकते हैं या नहीं ?

जवाब : चेहरा बचा कर एक बल्कि इस से ज़ियादा चादरें भी ओढ़ सकते हैं, ख़्वाह पाउं पूरे ढक जाएं।

सुवाल : त़य्यारे या बस वग़ैरा की अगली निशस्त के पीछे या तक्ये पर मुंह रख कर मोह़रिम सो गया क्या हुक्म है ?

जवाब : तक्ये में मुंह रख कर सोने पर कोई कफ़्फ़ारा नहीं लेकिन येह मक्रूहे तह़रीमी है। जब कि बस वग़ैरा की अगली सीट के पीछे मुंह रख कर सोना जाइज़ है क्यूं कि उ़मूमी त़ौर पर सीट तख़्ती, दरवाज़े की त़रह़ सख़्त होती है न कि तक्ये की त़रह़ नर्म।

सुवाल : घुटनों में मुंह रख कर सोना कैसा ? तक्ये पर मुंह रख कर सोने में कफ़्फ़ारा नहीं मगर मक्रूह है, क्यूं ?

जवाब : अगर तो सिर्फ़ घुटनों पर मुंह हो या'नी घुटने की सख़्ती पर तो जाइज़ है, क्यूं कि कपड़े के अन्दर अगर सख़्त चीज़ हो तो उस सख़्त चीज़ का हुक्म लगता है न कि कपड़े का, जैसा कि उ़-लमा ने बोरी और गठड़ी (कपड़े के इ़लावा) का हुक्म लिखा है। लेकिन घुटने पर मुंह रख कर सोने में येह कैफ़िय्यत बहुत मुश्किल है बल्कि नींद के दौरान घुटने की सख़्ती पर और सिर्फ़ कपड़े पर चेहरा आता रहेगा लिहाज़ा इस से एह़्तिराज़ किया (या'नी बचा) जाए वरना कफ़्फ़ारे की सूरतें पैदा हो सकती हैं और जहां तक तक्ये का तअ़ल्लुक़ है तो वोह नरमी में कपड़े के मुशाबेह है (इस लिये मन्अ़ किया गया) मगर مِنْ كُلِّ الْوُجُوه (या'नी हर त़रह़ से) कपड़ा नहीं (इस लिये कफ़्फ़ारा नहीं)।

सुवाल : मोह़रिम सर्दी से बचने के लिये ज़िप (zip) वाले बिस्तरे में चेहरा और सर छोड़ कर बाक़ी बदन बन्द कर के सो सकता है या नहीं ?

जवाब : सो सकता है। क्यूं कि आ़दतन इसे लिबास पहनना नहीं कहते।

सुवाल : मोह़रिम को क़त़रे आते हों तो क्या करे ?

जवाब : बे सिला लंगोट बांध ले कि एह़राम में लंगोट बांधना मुत़्लक़न जाइज़ है जब कि सिलाई वाला न हो।

(मुलख़्ख़स़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 10, स. 664)

सुवाल : क्या बीमारी वग़ैरा की मजबूरी से सिला हुवा लिबास पहनने में भी कफ़्फ़ारे हैं ?

जवाब : जी हां। बीमारी वग़ैरा के सबब अगर सर से पाउं तक सब कपड़े पहनने की ज़रूरत पेश आई तो एक ही **जुर्मे ग़ैर इख़्तियारी**[1] है। अगर चार पहर पहने या ज़ियादा तो **दम** और कम में "स-दक़ा" और अगर उस बीमारी में उस जगह ज़रूरत एक कपड़े की थी और दो[2] पहन लिये म-सलन ज़रूरत कुरते की थी और सिलाई वाला बनियान भी पहन लिया तो इस सूरत में कफ़्फ़ारा तो एक ही होगा मगर गुनहगार होगा और अगर दूसरा कपड़ा दूसरी जगह पहन लिया म-सलन ज़रूरत पाजामे की थी और कुरता भी पहन लिया तो एक जुर्मे ग़ैर इख़्तियारी हुवा और एक जुर्मे इख़्तियारी।

(मुलख़्ख़स़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1168, عالمگیری ج۱ص۲٤۲)

सुवाल : अगर बिग़ैर ज़रूरत सारे कपड़े पहन लिये तो कितने कफ़्फ़ारे देना होंगे ?

1 : जुर्मे ग़ैर इख़्तियारी का मस्अला सफ़ह़ा 260 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

जवाब : अगर बिग़ैर ज़रूरत सब कपड़े एक साथ पहन लिये तो एक ही जुर्म है। दो जुर्म उस वक़्त हैं कि एक ज़रूरत से हो और दूसरा बिला ज़रूरत। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1168)

सुवाल : अगर मुंह दोनों हाथों से छुपा लिया या सर या चेहरे पर किसी ने हाथ रख दिया ?

जवाब : सर या नाक पर अपना या दूसरे का हाथ रखना जाइज़ है चुनान्चे ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡبَارِی फ़रमाते हैं : अपना या दूसरे का हाथ अपने सर या नाक पर रखना बिल इत्तिफ़ाक़ मुबाह़ (या'नी जाइज़) है क्यूं कि ऐसा करने वाले को ढकने या छुपाने वाला नहीं कहा जाता। **(لُبابُ الۡمَناسِك والۡمَسۡلَكُ الۡمُتَقَسِّط ص١٢٣)**

सुवाल : तो क्या मोह़रिम दुआ़ मांगने के बा'द अपने हाथ मुंह पर नहीं फेर सकता ?

जवाब : फेर सकता है, मुंह पर हाथ रखने की मुत़्लक़न इजाज़त है, दाढ़ी वाला इस्लामी भाई मुंह पर बा'दे दुआ़ बल्कि वुज़ू में भी इस अन्दाज़ में हाथ मलने से बचे जिस से बाल गिरने का अन्देशा हो।

सुवाल : अगर कन्धे पर सिले हुए कपड़े डाल लिये तो क्या कफ़्फ़ारा है ?

जवाब : कोई **कफ़्फ़ारा** नहीं। **सदरुश्शरीअ़ह** رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه फ़रमाते हैं : पहनने का मत़लब येह है कि वोह कपड़ा इस त़रह़ पहने जैसे आ़दतन पहना जाता है, वरना

अगर कुरते का तहबन्द बांध लिया या पाजामे को तहबन्द की त़रह़ लपेटा पाउं पाइंचे में न डाले तो कुछ नहीं। यूंही अंग-रखा फैला कर दोनों शानों पर रख लिया, आस्तीनों में हाथ न डाले तो कफ़्फ़ारा नहीं मगर मक्रूह है और मोंढों (या'नी कन्धों) पर सिले कपड़े डाल लिये तो कुछ नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1169)

वुक़ूफ़े अ़-रफ़ात के बारे में सुवाल व जवाब

सुवाल : क्या दसवीं रात को भी वुक़ूफ़े अ़-रफ़ात हो सकता है ?

जवाब : **जी हां,** क्यूं कि वुक़ूफ़ का वक़्त **9 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम** के इब्तिदाए वक़्ते ज़ोहर से ले कर दसवीं की तुलूए फ़ज्र तक है। (عالمگیری ج۱ص۲۲۹)

मुज़्दलिफ़ा के बारे में अहम सुवाल

सुवाल : जिसे कोई मजबूरी न हो उसे मुज़्दलिफ़ा से मिना के लिये कब निकलना चाहिये ?

जवाब : तुलूए आफ़्ताब में सिर्फ़ इतना वक़्त बाक़ी रह जाए जिस में (मस्नून क़िराअत के साथ) दो रक्अ़त अदा की जा सकें उस वक़्त चल पड़े। अगर तुलूए आफ़्ताब तक ठहरा रहा तो **सुन्नते मुअक्कदा** तर्क हुई, ऐसा करना "बुरा" है मगर दम वग़ैरा वाजिब नहीं। हां मिना शरीफ़ की जानिब चल तो पडा मगर भीड़ वग़ैरा की वजह से मुज़्दलिफ़ा ही में सूरज तुलूअ़ हो गया तो तारिके सुन्नत नहीं कहलाएगा।

(येह जवाब फ़तावा ह़ज व उ़म्रह, ह़िस्सए दुवुम सफ़ह़ा 83 ता 87 से माख़ूज़ है)

रम्य के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल व जवाब

सुवाल : अगर किसी दिन आधी से ज़ियादा मारीं म-सलन ग्यारहवीं को तीन शैत़ानों को 21 कंकरियां मारनी थीं मगर 11 मारीं तो क्या सज़ा है ?

जवाब : फ़ी कंकरी एक एक स-दक़ा देना होगा। **सदरुश्शरीअ़ह** رَحْمَةُاللهِ تَعالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : किसी दिन भी रम्य नहीं की या एक दिन की बिल्कुल या अक्सर तर्क कर दी म-सलन दसवीं को तीन कंकरियां तक मारीं या ग्यारहवीं वग़ैरा को **10** कंकरियां तक या किसी दिन की बिल्कुल या अक्सर रम्य दूसरे दिन की तो इन सब सूरतों में दम है और अगर किसी दिन की निस्फ़ से कम छोड़ी म-सलन दसवीं को चार कंकरियां मारीं, तीन छोड़ दीं या और दिनों की ग्यारह मारीं दस छोड़ दीं या दूसरे दिन की तो हर कंकरी पर एक स-दक़ा दे और अगर स-दक़ों की क़ीमत दम के बराबर हो जाए तो कुछ कम कर दे।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1178)

क़ुरबानी से मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल व जवाब

सुवाल : दसवीं की रम्य के बा'द अगर जद्दा शरीफ़ में जा कर **तमत्तोअ़** की क़ुरबानी और ह़ल्क़ करना चाहें तो कर सकते हैं या नहीं ?

जवाब : नहीं कर सकते, क्यूं कि जद्दा शरीफ़ ह़ुदूदे ह़रम से बाहर है। करेंगे तो एक क़ुरबानी का और दूसरा ह़ल्क़ का यूं **दो दम** वाजिब हो जाएंगे।

सुवाल : **मु-तमत्तेअ़** और क़ारिन ने अगर रम्य से पहले क़ुरबानी कर दी या क़ुरबानी से पहले ह़ल्क़ कर दिया तो क्या कफ़्फ़ारा है ?

जवाब : इन दोनों सूरतों में **दम** देना होगा।

सुवाल : अगर ह़ज्जे इफ़राद वाले ने क़ुरबानी से पहले ही ह़ल्क़ कर दिया तो क्या कोई सज़ा है ?

जवाब : नहीं, क्यूं कि मुफ़्रिद पर क़ुरबानी वाजिब नहीं उस के लिये मुस्तह़ब है। (ऐज़न, स. 1140) अगर क़ुरबानी करना चाहे तो उस के लिये अफ़्ज़ल येह है कि पहले ह़ल्क़ करे फिर क़ुरबानी।

ह़ल्क़ व तक़्सीर के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल व जवाब

सुवाल : अगर ह़ाजी ने बारहवीं के बा'द **ह़रम** से बाहर सर मुंडवाया तो क्या सज़ा होगी ?

जवाब : **दो दम**, एक ह़रम से बाहर ह़ल्क़ करवाने का, दूसरा बारहवीं के बा'द होने का। (رَدُّ الْمُحتار ج۳ص٦٦٦)

सुवाल : अगर उ़म्रे का ह़ल्क़ ह़रम से बाहर करवाना चाहे तो करवा सकता है या नहीं ?

जवाब : नहीं करवा सकता, करवाएगा तो **दम** वाजिब होगा, हां इस के लिये वक़्त की कोई क़ैद नहीं। (دُرِّمُختارو رَدُّالْمُحتار ج۳ص٦٦٦)

सुवाल : क्या **जद्दा शरीफ़** वग़ैरा में काम करने वालों को भी हर बार **उ़म्रे** में ह़ल्क़ या तक़्सीर करना वाजिब है ?

जवाब : जी हां । वरना एह़राम की पाबन्दियां ख़त्म न होंगी ।

सुवाल : जिस औ़रत के बाल छोटे हों (जैसा कि आज कल फ़ेशन है) उ़म्रों का भी जज़्बा है मगर बार बार क़स्र करने में सर के बाल ही ख़त्म हो जाएंगे, क्या करे ? अगर सर के सारे बाल ख़त्म हो गए या'नी एक पोरे से कम रह गए तो अब उ़म्रे करेगी तो क़स्र मुम्किन न रहा, मुआ़फ़ी मिलेगी या क्या ?

जवाब : जब तक सर पर बाल मौजूद हों औ़रत के लिये हर बार क़स्र वाजिब है । **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "औ़रतों पर ह़ल्क़ नहीं बल्कि इन पर सिर्फ़ तक़्सीर (वाजिब) है ।" (ابوداؤد ج ۲ ص ۲۹۵ حدیث ۱۹۸٤)

ऐसी औ़रत जिस के बाल एक पोरे से कम रह गए हों, उस के लिये अब क़स्र की मुआ़फ़ी है क्यूं कि क़स्र मुम्किन न रहा और ह़ल्क़ कराना इस के लिये मन्अ़ है । ऐसी सूरत में अगर ह़ज का मुआ़-मला है तो अफ़्ज़ल येह है कि अय्यामे नह़्र के आख़िर में (या'नी 12 **ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम** के ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द) एह़राम से बाहर आए, अगर अय्यामे नह़्र के आख़िर तक इन्तिज़ार न भी किया तो कोई चीज़ लाज़िम न होगी ।

मु-तफ़र्रिक़ सुवाल व जवाब

सुवाल : सर या मुंह ज़ख़्मी हो जाने की सूरत में पट्टी बांधना गुनाह तो नहीं ?

जवाब : मजबूरी की सूरत में गुनाह नहीं होगा, अलबत्ता "जुर्मे ग़ैर इख़्तियारी" का कफ़्फ़ारा देना आएगा। लिहाज़ा अगर दिन या रात या इस से ज़ियादा देर तक इतनी चौड़ी पट्टी बांधी कि चौथाई (1/4) या इस से ज़ियादा सर या मुंह छुप गया तो **दम** और कम में **स-दक़ा** वाजिब होगा (जुर्मे ग़ैर इख़्तियारी की तफ़्सील सफ़्हा 260 पर मुला-हज़ा फ़रमाइये) इस के इलावा जिस्म के दूसरे आ'ज़ा पर नीज़ औरत के सर पर भी मजबूरन पट्टी बांधने में कोई मुज़ा-यक़ा नहीं।

सुवाल : **मु-तमत्तेअ़** और क़ारिन हज के इन्तिज़ार में हैं, इस दौरान **उ़म्रह** कर सकते हैं या नहीं ?

जवाब : **क़ारिन** का एहराम तो अभी बाक़ी है, येह तो कर ही नहीं सकता, रहा **मु-तमत्तेअ़** तो इस बारे में उ़-लमा का इख़्तिलाफ़ है, बेहतर येही है कि सिर्फ़ **नफ़्ली त़वाफ़** जितने करना चाहे करता रहे अगर उ़म्रह कर भी ले तो बा'ज़ उ़-लमा के नज़्दीक कोई मुज़ा-यक़ा नहीं। हां ! मनासिके हज से फ़राग़त के बा'द **मु-तमत्तेअ़**, क़ारिन, मुफ़्रिद सभी **उ़म्रह** कर सकते हैं।

सुवाल : अ़रब शरीफ़ के मुख़्तलिफ़ मक़ामात म-सलन दमाम और रियाज़ वग़ैरा वाले जो कि मीक़ात से बाहर रहते हैं उन्हें

गवर्नमेन्ट की त़रफ़ से इजाज़त नहीं होती, वोह पोलीस को धोका देने के लिये बिग़ैर एह़राम मीक़ात से गुज़र कर एह़राम बांधते और **ह़ज** करते हैं, इन के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : ﴾1﴿ क़ानून की ख़िलाफ़ वर्ज़ी कर के अपने आप को ज़िल्लत पर पेश करना **ना जाइज़** है ﴾2﴿ बिग़ैर एह़राम मीक़ात से आगे गुज़रने की वजह से **औ़द** (या'नी मीक़ात तक दोबारा लौट कर एह़राम बांधना) या **दम** वाजिब होगा या'नी अगर इसी त़रह़ ह़ज या उ़म्रह अदा कर लिया तो दम वाजिब होगा और गुनहगार भी होगा । और अगर अभी ह़ज या उ़म्रह के अफ़्आ़ल शुरूअ़ किये बिग़ैर इसी साल **मीक़ात** तक वापस लौट कर किसी भी क़िस्म का एह़राम बांधे तो **दम** साक़ित़ हो जाएगा, वरना नहीं ।

सुवाल : ह़ज या उ़म्रे की सअ़्य के क़ब्ल ह़ल्क़ करवा लिया कई रोज़ गुज़र गए क्या करे ?

जवाब : **ह़ज** में ह़ल्क़ का मस्नून वक़्त **सअ़्य** से क़ब्ल ही होता है या'नी ह़ल्क़ से पहले सअ़्य करना ख़िलाफ़े सुन्नत है । लिहाज़ा अगर किसी ने सअ़्य से क़ब्ल ह़ल्क़ करवाया तो कोई ह़रज नहीं । और कई दिन गुज़रने से भी मज़ीद कुछ लाज़िम नहीं आएगा क्यूं कि सअ़्य के लिये कोई वक़्ते इन्तिहा (END TIME) मुक़र्रर नहीं है । हां अगर वोह सअ़्य के बिग़ैर "वत़न" चला गया तो अब तर्के वाजिब की वजह से **दम** लाज़िम आएगा, फिर

अगर वोह लौट कर सअ्य कर ले तो दम साक़ित़ हो जाएगा अलबत्ता बेहतर येह है कि अब वोह **दम** ही दे कि इस में नफ़्ए फु-क़रा है। येह हुक्म उसी वक़्त है कि जब ह़ल्क़ अपने वक़्त या'नी अय्यामे नह़्र में दसवीं की **रम्य** के बा'द करवाया हो, अगर रम्य से क़ब्ल या अय्यामे नह़्र के बा'द ह़ल्क़ करवाया तो **दम** वाजिब होगा। **उ़म्रे** में अगर किसी ने सअ्य से क़ब्ल ह़ल्क़ करवाया तो उस पर **दम** लाज़िम आएगा। फिर अगर पूरा या त़वाफ़ का अक्सर ह़िस्सा या'नी चार फेरे कर चुका था तो एह़राम से निकल जाएगा वरना नहीं। कई दिन गुज़र जाने की वजह से भी **सअ्य** साक़ित़ नहीं होगी क्यूं कि येह वाजिब है लिहाज़ा इसे सअ्य करनी होगी।

सुवाल : जिस ने ह़ज्जे इफ़राद की निय्यत की मगर उ़म्रह कर के एह़राम खोल दिया ! क्या कफ़्फ़ारा होगा और अब क्या करे ?

जवाब : ह़ज का एह़राम उ़म्रह कर के खोल देना जाइज़ नहीं है और ऐसा करने से वोह शख़्स एह़राम से बाहर नहीं होगा बल्कि ब दस्तूर वोह मोह़रिम ही रहेगा, उस पर लाज़िम है कि वोह ह़ज के अफ़्आ़ल बजा लाने के बा'द एह़राम खोले। बिग़ैर अफ़्आ़ले ह़ज अदा किये एह़राम उतारने की निय्यत कर लेना काफ़ी नहीं। लिहाज़ा जब इस का एह़राम बाक़ी है तो मम्नूआ़त का इरतिकाब करने पर कफ़्फ़ारा भी लाज़िम होगा, हां कफ़्फ़ारा सिर्फ़ एक ही लाज़िम आएगा अगर्चे सारे के सारे मम्नूआ़ते एह़राम

का इरतिकाब कर ले जैसे सिले कपड़े पहन ले, ख़ुश्बू लगा ले, बाल मुंडवा ले वग़ैरहा, इन तमाम के बदले में सिर्फ़ एक ही **दम** लाज़िम होगा। और अब इस पर लाज़िम है कि सिले हुए कपड़े उतार कर दोबारा एह़राम के बे सिले कपड़े पहने, तौबा करे और उसी साबिक़ा ह़ज वाले एह़राम की निय्यत के साथ ह़ज के मनासिक पूरे करे।

सुवाल : जो ब-क़रह ईद की क़ुरबानी करना चाहता है वोह अगर **ज़ुल ह़िज्जह** के चांद के बा'द एह़राम बांधे तो नाख़ुन और ग़ैर ज़रूरी बाल वग़ैरा काटे या नहीं ? क्यूं कि इन दिनों उस के लिये नाख़ुन वग़ैरा न काटना मुस्तह़ब है। उस के लिये अफ़्ज़ल कौन सा अ़मल है ?

जवाब : ह़ाजी को अगर ह़ाजत हो तो उस के लिये नाख़ुन और बाल काटना **मुस्तह़ब** व अफ़्ज़ल है, याद रहे ! अगर इतने दिन हो चुके हैं कि अब नाख़ुन और बाल काटे बिग़ैर एह़राम बांध लेगा तो 40 दिन हो जाएंगे तो अब काटना ज़रूरी है क्यूं कि 40 दिन से ज़ियादा ताख़ीर गुनाह है।

सुवाल : तो क्या 13 **ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम** से उ़म्रे शुरूअ़ कर दिये जाएं ?

जवाब : जी नहीं। अय्यामे तशरीक़ या'नी 9, 10, 11, 12, और 13 **ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम** इन पांच दिनों में **उ़म्रे** का एह़राम बांधना **मक्रूहे तह़रीमी** (ना जाइज़ व गुनाह)

है। अगर बांधा तो **दम** लाज़िम आएगा।

(دُرِّ مُختار ج ٣ ص ٥٤٧)

13 को ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द एह़राम बांध सकते हैं

सुवाल : क्या मक़ामी ह़ज़रात जिन्हों ने इस साल ह़ज नहीं किया वोह भी इन दिनों या'नी नवीं ता तेरहवीं पांच दिन उ़म्रह नहीं कर सकते ?

जवाब : इन के लिये भी इन दिनों उ़म्रे का एह़राम बांध कर उ़म्रह करना मक्रूहे तह़रीमी है। आफ़ाक़ी, ह़िल्ली और मीक़ाती सभी के लिये अस्ल मुमा-न-अ़त इन दिनों में उ़म्रे का एह़राम बांधने की है। उ़म्रे का वक़्त पूरा साल है, मगर पांच दिन उ़म्रे का एह़राम बांधना मक्रूहे तह़रीमी है, और अगर नवीं से क़ब्ल बांधे हुए एह़राम के साथ इन (पांच) दिनों में उ़म्रह किया तो कोई ह़रज नहीं और इस सूरत में भी **मुस्तह़ब** येह है कि इन दिनों को गुज़ार कर उ़म्रह करे।

(لُبابُ الْمَناسِك ص٤٦٦)

सुवाल : **अश्हुरे** ह़ज में अगर कोई ह़िल्ली या ह़-रमी उ़म्रह भी करे और ह़ज भी करे तो उस के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : ऐसा करने वाले पर **दम** वाजिब हो जाएगा क्यूं कि इस को सिर्फ़ ह़ज्जे इफ़राद की इजाज़त है जिस में उ़म्रह शामिल नहीं। अलबत्ता वोह सिर्फ़ उ़म्रह कर सकता है।

सुवाल : एह़राम में खाने से क़ब्ल और बा'द हाथ धोना कैसा ? न धोने से मैल कुचैल पेट में जाएगा और बा'द में नहीं धोएंगे तो हाथ चिकने और बदबूदार रहेंगे, क्या करें ?

जवाब : दोनों बार बिग़ैर साबुन वग़ैरा के हाथ धो लीजिये अगर कोई ख़ारिजी कालक या चिक्नाहट हाथों में लगी हो तो ज़रूरतन कपड़े से पोंछ लीजिये। मगर बाल न टूटें इस की एह़तियात़ कीजिये।

सुवाल : वुज़ू के बा'द मोह़रिम का रुमाल से हाथ मुंह पोंछना कैसा है ?

जवाब : मुंह पर (और मर्द सर पर भी) कपड़ा नहीं लगा सकते, जिस्म का बाक़ी ह़िस्सा म-सलन हाथ वग़ैरा इतनी एह़तियात़ के साथ पोंछ सकते हैं कि मैल भी न छूटे और बाल भी न टूटे।

सुवाल : मोह़रिमा चेहरा बचा कर पी केप वाला या कमानी दार निक़ाब डाल सकती है या नहीं ?

जवाब : डाल सकती है मगर हवा चली या ग़-लत़ी ही से अपना हाथ निक़ाब पर रख लिया जिस के सबब चाहे थोड़ी सी देर के लिये भी चेहरे पर निक़ाब लग गया तो कफ़्फ़ारे की सूरत बन सकती है।

सुवाल : ह़ल्क़ करवाते वक़्त मोह़रिम सर पर साबुन लगाए या नहीं ?

जवाब : साबुन न लगाए क्यूं कि मैल छूटेगा और मैल छुड़ाना एह़राम में मक्रूहे (तन्ज़ीही) है।

सुवाल : माहवारी की ह़ालत में औ़रत एह़राम की निय्यत कर सकती है या नहीं ?

जवाब : कर सकती है मगर एह़राम के नफ़्ल अदा नहीं कर सकती, नीज़ त़वाफ़ पाक होने के बा'द करे ।

सुवाल : सिलाई वाले चप्पल पहनना कैसा है ?

जवाब : वस्त़े क़दम या'नी क़दम का उभरा हुवा ह़िस्सा अगर न छुपाएं तो ह़रज नहीं ।

सुवाल : एह़राम में गिरह या बक्सुवा (सेफ़्टी पिन) या बटन लगाना कैसा ?

जवाब : ख़िलाफ़े सुन्नत है । लगाने वाले ने बुरा किया, अलबत्ता **दम** वग़ैरा नहीं ।

सुवाल : उ़मूमन हुज्जाज एह़तियात़न एक "दम" देते हैं येह कैसा ? अगर बा'द को मा'लूम हुवा कि वाक़ेई एक दम वाजिब हुवा था तो वोह "दमे एह़तियात़ी" काफ़ी होगा या नहीं ?

जवाब : वाजिब होने के बा'द दिया था तो काफ़ी हो जाएगा मगर देने के बा'द वाजिब हुवा तो काफ़ी न होगा ।

सुवाल : मोह़रिम नाक या कान का मैल निकाल सकता है या नहीं ?

जवाब : वुज़ू में नाक के नर्म बांसे तक रूएं रूएं पर पानी बहाना **सुन्नते मुअक्कदा** है और ग़ुस्ल में फ़र्ज़ । लिहाज़ा

अगर नाक में रेंठ सूख गई तो छुड़ाना होगा, और पलकों वग़ैरा में अगर आंख की चीपड़ सूख गई है तो उसे भी वुज़ू और गुस्ल के लिये छुड़ाना **फ़र्ज़** है मगर येह एह़तियात़ ज़रूरी है कि बाल न टूटे। **रहा कान** का मैल निकालना तो इसे छुड़ाने की इजाज़त की सराह़त किसी ने नहीं की लिहाज़ा इस का हुक्म वोही होगा जो बदन के मैल का है या'नी इस का छुड़ाना मक्रूहे तन्ज़ीही है। मगर येह एह़तियात़ ज़रूरी है कि बाल न टूटे।

सुवाल : क्या ज़िन्दा वालिदैन के नाम पर **उ़म्रह** कर सकते हैं ?

जवाब : कर सकते हैं। फ़र्ज़ नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात नीज़ हर क़िस्म के नेक काम का सवाब ज़िन्दा, मुर्दा सब को ईसाल कर सकते हैं।

सुवाल : **एह़राम** की ह़ालत में **जूं** मारने के कफ़्फ़ारे बता दीजिये।

जवाब : अपनी **जूं** अपने बदन या कपड़े में मारी या फेंक दी तो एक **जूं** हो तो रोटी का एक टुकड़ा और दो या तीन हों तो एक मुठ्ठी अनाज और इस (या'नी तीन) से ज़ियादा में **स–दक़ा**। जूएं मारने के लिये सर या कपड़ा धोया या धूप में डाला जब भी वोही कफ़्फ़ारे हैं जो मारने में हैं। दूसरे ने इस के कहने पर इस की **जूं** मारी जब भी इस (या'नी मोह़रिम) पर कफ़्फ़ारा है

अगर्चे मारने वाला एह़राम में न हो। ज़मीन वग़ैरा पर गिरी हुई **जूं** या दूसरे के बदन या कपड़ों की जूएं मारने में मारने वाले पर कुछ नहीं अगर्चे वोह दूसरा भी मोह़रिम हो।

ह़ज्जे अक्बर (अक्बरी ह़ज)

सुवाल : जुमुआ़ को जो ह़ज हो उसे **ह़ज्जे अक्बर** कहना कैसा है ?

जवाब : कोई ह़रज नहीं। चुनान्चे पारह 10 **सू-रतुत्तौबह** आयत नम्बर 3 में इर्शादे रब्बुल इ़बाद है :

وَ اَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖۤ اِلَى النَّاسِ یَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ

(پ ۱۰، التوبة:۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और मुनादी पुकार देना है अल्लाह और उस के रसूल की त़रफ़ से सब लोगों में बड़े ह़ज के दिन।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی इस आयते करीमा के तह़त फ़रमाते हैं : ह़ज को **ह़ज्जे अक्बर** फ़रमाया, इस लिये कि उस ज़माने में **उ़म्रे को ह़ज्जे अस्ग़र** कहा जाता था और एक क़ौल येह है कि उस ह़ज को **ह़ज्जे अक्बर** इस लिये कहा गया कि उस साल रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज फ़रमाया था और चूंकि येह **जुमुआ़** को वाक़ेअ़ हुवा था

इस लिये मुसल्मान उस ह़ज को जो रोजे़ जुमुआ़ हो ह़ज्जे वदाअ़ का **मुज़क्किर** (या'नी याद दिलाने वाला) जान कर **ह़ज्जे अक्बर** कहते हैं। (तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 354) **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **है :** अय्याम में बेहतरीन वोह यौमे अ़-रफ़ा है जो जुमुआ़ के मुवाफ़िक़ हो जाए और उस रोज़ का ह़ज उन **सत्तर ह़ज्जों** से अफ़्ज़ल है जो जुमुआ़ के दिन न हों।

(فتح الباری ج۹،ص ۲۳۱ تحت الحدیث٤٦٠٦)

अ़रब शरीफ़ में काम करने वालों के लिये

सुवाल : अगर **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में काम करने वाले म-सलन ड्राइवर या वहां के बाशिन्दे वग़ैरा रोज़ाना बार बार "**त़ाइफ़ शरीफ़**" जाएं तो क्या हर बार वापसी में उन्हें रोज़ाना उ़म्रे वग़ैरा का **एह़राम** बांधना ज़रूरी है ?

जवाब : येह क़ाइदा ज़ेह्न नशीन कर लीजिये कि अहले मक्का अगर किसी काम से "हुदूदे ह़रम" से बाहर मगर मीक़ात के अन्दर (म-सलन जद्दा शरीफ़) जाएं तो उन्हें वापसी के लिये एह़राम की ह़ाजत नहीं और अगर "मीक़ात" से बाहर (म-सलन मदीनए पाक, त़ाइफ़ शरीफ़, रियाज़ वग़ैरा) जाएं तो अब बिग़ैर **एह़राम** के "हुदूदे ह़रम" में वापस आना जाइज़ नहीं। ड्राइवर चाहे दिन में कई बार आना जाना करे हर बार उस पर ह़ज या उ़म्रह वाजिब होता रहेगा। बिग़ैर एह़राम के **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا

आएगा तो **दम** वाजिब होगा अगर इसी साल मीक़ात से बाहर जा कर एह़राम बांध ले तो दम साक़ित़ हो जाएगा।

एह़राम न बांधना हो तो ह़ीला

सुवाल : अगर कोई शख़्स **जद्दा शरीफ़** में काम करता हो तो अपने वत़न म-सलन पाकिस्तान से काम के लिये जद्दा शरीफ़ आया तो क्या **एह़राम** लाज़िमी है ?

जवाब : अगर निय्यत ही जद्दा शरीफ़ जाने की है तो अब **एह़राम** की ह़ाजत नहीं बल्कि अब जद्दा शरीफ़ से **मक्कतुल मुअ़ज़्ज़मा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا भी जाना हो जाए तो एह़राम के बिग़ैर जा सकता है। लिहाज़ा जो शख़्स **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में बिग़ैर एह़राम जाना चाहता हो वोह ह़ीला कर सकता है बशर्ते़ कि वाक़ेई उस का इरादा पहले म-सलन जद्दा शरीफ़ जाने का हो और **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا ह़ज व उ़म्रे के इरादे से न जाता हो। म-सलन तिजारत के लिये जद्दा शरीफ़ जाता है और वहां से फ़ारिग़ हो कर **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا का इरादा किया। अगर पहले ही से **मक्कए पाक** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا का इरादा है तो बिग़ैर एह़राम नहीं जा सकता। जो शख़्स दूसरे की त़रफ़ से **ह़ज्जे बदल** को जाता है उसे येह ह़ीला जाइज़ नहीं।

उ़म्रह या ह़ज के लिये सुवाल करना कैसा ?

सुवाल : बा'ज़ ग़रीब उ़श्शाक़ उ़म्रह या सफ़रे ह़ज के लिये लोगों से माली इमदाद का सुवाल करते हैं, क्या ऐसा करना **जाइज़** है ?

जवाब : ह़राम है । सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना **नई़मुद्दीन** मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى नक़्ल करते हैं : "बा'ज़ **य-मनी** ह़ज के लिये बे सरो सामानी के साथ रवाना होते थे और अपने आप को मु-तवक्किल (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा रखने वाला) कहते थे और **मक्कए मुकर्रमा** पहुंच कर **सुवाल** शुरूअ़ कर देते और कभी ग़स्ब व ख़ियानत के भी मुर-तकिब होते, उन के बारे में येह आयते मुक़द्दसा नाज़िल हुई और हुक्म हुवा कि तोशा (या'नी सफ़र के अख़्राजात) ले कर चलो औरों पर बार न डालो, **सुवाल** न करो कि बेहतर तोशा (या'नी ज़ादे राह) परहेज़ गारी है ।"

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 67, मक-त-बतुल मदीना)

चुनान्चे पारह 2 **सू-रतुल ब-क़रह** आयत नम्बर 197 में इर्शादे रब्बुल इ़बाद होता है :

وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ز (پ ۲، البقرہ ۱۹۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तोशा साथ लो कि सब से बेहतर तोशा परहेज़ गारी है ।

सुल्त़ाने मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

का फ़रमाने बा क़रीना है : “जो शख़्स लोगों से **सुवाल** करे ह़ालां कि न उसे फ़ाक़ा पहुंचा न इतने बाल बच्चे हैं जिन की त़ाक़त नहीं रखता तो क़ियामत के दिन इस त़रह़ आएगा कि उस के मुंह पर गोश्त न होगा।”

(شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۲۷٤حدیث۳٥۲٦)

मदीने के दीवानो ! बस सब्र कीजिये, सुवाल की मुमा-न-अ़त में इस क़दर एहतिमाम है कि फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام फ़रमाते हैं : ग़ुस्ल के बा'द एह़राम बांधने से पहले अपने बदन पर ख़ुश्बू लगाइये बशर्ते कि अपने पास मौजूद हो, अगर अपने पास न हो तो किसी से त़लब न कीजिये कि येह भी **सुवाल** है।

(رَدُّالمُحتار ج۳ص٥٥۹)

जब बुलाया आक़ा ने   ख़ुद ही इन्तिज़ाम हो गए

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب !   صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

उ़म्रे के वीज़े पर ह़ज के लिये रुकना कैसा ?

सुवाल : बा'ज़ लोग अपने वत़न से **र-मज़ानुल मुबारक** में उ़म्रे का वीज़ा ले कर **ह़-रमैने त़य्यिबैन** زادھما اللّٰہُ شرفاً وّ تعظیماً जाते हैं, वीज़ा की मुद्दत ख़त्म हो जाने के बा वुजूद वहीं रहते हैं या **ह़ज** कर के **वत़न** वापस जाते हैं उन का येह फ़े'ल शरअ़न दुरुस्त है या नहीं ?

जवाब : दुन्या के हर मुल्क का येह क़ानून है कि बिग़ैर वीज़ा के किसी ग़ैर मुल्की को रुकने नहीं दिया

जाता । **ह़-रमैने त़य्यिबैन** زَادَهُمَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में भी येही क़ाइदा है । मुद्दते वीज़ा ख़त्म होने के बा'द रुकने वाला अगर पोलीस के हाथ लग जाए, तो अब चाहे वोह एह़राम की ह़ालत में ही क्यूं न हो उसे क़ैद कर लेते हैं, न उसे **उ़म्रह** करने देते हैं न ही **ह़ज**, सज़ा देने के बा'द "**ख़ुरूज**" लगा कर उसे उस के वत़न रवाना कर देते हैं । **याद रहे ! जिस क़ानून की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करने पर ज़िल्लत, रिश्वत और झूट वग़ैरा आफ़ात में पड़ने का अन्देशा हो उस क़ानून की ख़िलाफ़ वर्ज़ी जाइज़ नहीं ।** चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "मुबाह़ (या'नी जाइज़) सूरतों में से बा'ज़ (सूरतें) क़ानूनी त़ौर पर जुर्म होती हैं उन में मुलव्वस होना (या'नी ऐसे क़ानून की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करना) अपनी ज़ात को अज़िय्यत व ज़िल्लत के लिये पेश करना है और वोह ना जाइज़ है ।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 17, स. 370) लिहाज़ा बिग़ैर visa के दुन्या के किसी मुल्क में रहना या "ह़ज" के लिये रुकना जाइज़ नहीं । **ग़ैर क़ानूनी ज़राएअ़ से "ह़ज" के लिये रुकने में काम्याबी ह़ासिल करने को** مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **का करम कहना सख़्त बेबाकी है ।**

ग़ैर क़ानूनी रुकने वाले की नमाज़ का अहम मस्अला

सुवाल : हज के लिये बिग़ैर visa रुकने वाला नमाज़ पूरी पढ़े या क़स्र करे ?

जवाब : **उ़म्रे** के वीज़े पर जा कर ग़ैर क़ानूनी तौ़र पर **ह़ज** के लिये रुकने या दुन्या के किसी भी मुल्क में visa की मुद्दत पूरी होने के बा'द ग़ैर क़ानूनी रहने की जिन की निय्यत हो वोह वीज़ा की मुद्दत ख़त्म होते वक़्त जिस शह्र या गाउं में मुक़ीम हों वहां जब तक रहेंगे उन के लिये मुक़ीम ही के अह़काम होंगे अगर्चे बरसों पड़े रहें। अलबत्ता एक बार भी अगर 92 किलो मीटर या इस से ज़ियादा फ़ासिले के सफ़र के इरादे से उस शह्र या गाउं से चले तो अपनी आबादी से बाहर निकलते ही मुसाफ़िर हो गए और अब उन की इक़ामत की निय्यत बेकार है। म-सलन कोई शख़्स पाकिस्तान से उ़म्रे के VISA पर **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا गया, VISA की मुद्दत ख़त्म होते वक़्त भी मक्का शरीफ़ ही में मुक़ीम है तो उस पर मुक़ीम के अह़काम हैं। अब अगर म-सलन वहां से **मदीनतुल मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا **आ गया तो चाहे बरसों ग़ैर क़ानूनी पड़ा रहे, मुसाफ़िर ही है, यहां तक कि अगर दोबारा मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا **आ जाए फिर भी मुसाफ़िर रहेगा,**

इस को "नमाज़ क़स्र" ही अदा करनी होगी । हां दोबारा VISA मिल जाने की सूरत में इक़ामत की निय्यत की जा सकती है ।

ह़रम में कबूतरों, टिड्डियों को उड़ाना, सताना

सुवाल : ह़रम के कबूतरों और टिड्डियों को ख़्वाह म ख़्वाह उड़ाना कैसा ?

जवाब : आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं ह़रम के कबूतर उड़ाना मन्अ़ है । (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 208)

सुवाल : ह़रम के कबूतरों और टिड्डियों (तिरिड्डी) को सताना कैसा ?

जवाब : ह़राम है । **सदरुश्शरीअ़ह** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ह़रम के जानवर को शिकार करना या उसे किसी त़रह़ ईज़ा देना सब को **ह़राम** है । मोह़रिम और ग़ैर मोह़रिम दोनों इस हुक्म में यक्सां हैं ।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1186)

सुवाल : मोह़रिम कबूतर ज़ब्ह़ कर के खा सकते हैं ?

जवाब : बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल **सफ़ह़ा** 1180 पर है : मोह़रिम ने जंगल के जानवर को ज़ब्ह़ किया तो ह़लाल न हुवा बल्कि मुर्दार है, ज़ब्ह़ करने के बा'द उसे खा भी लिया तो अगर कफ़्फ़ारा देने के बा'द खाया तो अब फिर खाने का कफ़्फ़ारा दे और अगर नहीं दिया था तो एक ही कफ़्फ़ारा काफ़ी है ।

सुवाल : ह़रम की टिड्डी पकड़ कर खा सकते हैं या नहीं ?

जवाब : ह़राम है। (वैसे टिड्डी ह़लाल है, मछली की त़रह़ मरी हुई भी खा सकते हैं इस को ज़ब्ह़ करने की ज़रूरत नहीं होती)

सुवाल : मस्जिदुल ह़राम के बाहर लोगों के क़दमों से कुचल कर ज़ख़्मी और मरी हुई बे शुमार टिड्डियां पड़ी होती हैं अगर येह टिड्डियां खा लीं तो ?

जवाब : अगर किसी ने टिड्डियां खा लीं तो उस पर कोई कफ़्फ़ारा नहीं क्यूं कि ह़रम में शिकार होने वाले उस जानवर का खाना ह़राम है जो शर-ई त़रीक़े से ज़ब्ह़ करने से ह़लाल होता हो जैसे हिरन वग़ैरा। और ऐसे शिकार के ह़राम होने की वजह येह है कि ह़रम में शिकार करने से वोह जानवर मुर्दार क़रार पाता है और मुर्दार का खाना ह़राम है। टिड्डी का खाना इस लिये ह़लाल है कि इस में शर-ई त़रीक़े से ज़ब्ह़ करने की शर्त़ नहीं, येह जिस त़रह़ भी ज़ब्ह़ हो जाए ह़लाल है, जैसे पाउं तले रौंदने से या गला दबाने से मारी जाए तब भी ह़लाल ही रहती है। अलबत्ता येह याद रहे कि बिलक़स्द (इरादतन) टिड्डियां शिकार करने की बहर ह़ाल ह़ुदूदे ह़रम में इजाज़त नहीं।

सुवाल : ह़रम के ख़ुश्की के जंगली जानवर को ज़ब्ह़ करने का कफ़्फ़ारा भी बता दीजिये।

जवाब : इस का कफ़्फ़ारा इस की क़ीमत स-दक़ा करना है।[1]

सुवाल : ह़रम की मुर्ग़ी ज़ब्ह़ करना, खाना कैसा ?

जवाब : ह़लाल है। घरेलू जानवर म-सलन मुर्ग़ी, बकरी, गाय, भेंस, ऊंट वग़ैरा ज़ब्ह़ करने, और इन का गोश्त खाने में कोई ह़रज नहीं। मुमा-न-अ़त ख़ुश्की के वह़्शी या'नी जंगली जानवर के शिकार की है।

सुवाल : मस्जिदुल ह़राम के बाहर बहुत सारी टिड्डियां होती हैं अगर कोई टिड्डी पाउं या गाड़ी में कुचल कर ज़ख़्मी हो गई या मर गई तो ?

जवाब : कफ़्फ़ारा देना होगा, बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल **सफ़ह़ा** 1184 पर है टिड्डी भी ख़ुश्की का जानवर है, उसे मारे तो कफ़्फ़ारा दे और एक खजूर काफ़ी है। **सफ़ह़ा** 1181 पर है : कफ़्फ़ारा लाज़िम आने के लिये क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) क़त्ल करना शर्त़ नहीं भूल चूक से क़त्ल हुवा जब भी **कफ़्फ़ारा** है।

सुवाल : मस्जिदुल ह़राम में ब कसरत टिड्डियां होती हैं, ख़ुद्दाम सफ़ाई करते हुए वाइपर वग़ैरा से बे दर्दी के साथ घसीटते हैं जिस से ज़ख़्मी होतीं, मरती हैं। अगर न

---

1 : कफ़्फ़ारे के तफ़्सीली अह़काम मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द 1 सफ़ह़ा 1179 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये बल्कि सफ़ह़ा 1191 तक मुत़ा-लआ़ कर लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह ज़रूरी मसाइल जानने को मिलेंगे कि आप ह़ैरान रह जाएंगे।

करें तो सफ़ाई की सूरत क्या होगी ? इसी त़रह़ सुना है कबूतरों की ता'दाद में कमी के लिये इन को पकड़ कर कहीं दूर छोड़ आते या खा जाते हैं।

जवाब : टिड्डियां अगर इतनी कसीर हैं कि इन की वजह से ह़रज वाक़ेअ़ होता है तो इन के मारने में कोई ह़रज नहीं, इस के इलावा मारने पर तावान लाज़िम होगा, चाहे जान बूझ कर मारें या ग़-लत़ी से मारी जाएं। ह़रम का कबूतर पकड़ कर ज़ब्ह़ कर दिया तो तावान लाज़िम है यूंही ह़रम से बाहर भी छोड़ आने पर तावान लाज़िम होगा, जब तक कि इन के अम्न के साथ ह़रम में वापस आ जाने का इ़ल्म न हो जाए। दोनों सूरतों में तावान उस कबूतर की क़ीमत है और इस से मुराद वोह क़ीमत जो वहां पर इस त़रह़ के मुआ़-मलात की मा'रिफ़त व बसारत (या'नी जान पहचान व मा'लूमात) रखने वाले दो शख़्स बयान करें और अगर दो शख़्स न मिलते हों तो एक की भी बात का ए'तिबार किया जाएगा।

सुवाल : ह़रम की मछली खाना कैसा ?

जवाब : मछली ख़ुश्की का जानवर नहीं, इसे खा सकते हैं और ज़रूरतन शिकार भी कर सकते हैं।

सुवाल : ह़रम के चूहे को मार दिया तो क्या कफ़्फ़ारा है ?

जवाब : कोई कफ़्फ़ारा नहीं इस को मारना जाइज़ है। बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल **सफ़ह़ा** 1183 पर है कव्वा,

चील, भेड़िया, बिच्छू, सांप, चूहा, घूंस, **छछूंदर**, कटखन्ना कुत्ता (या'नी काट खाने वाला कुत्ता), पिस्सू, मच्छर, किल्ली, कछवा, केकड़ा, पतंगा, काटने वाली च्यूंटी, मख्खी, छुपकली, बुर और तमाम ह़शरातुल अर्ज़ (या'नी कीड़े मकोड़े), बिज्जू, लोमड़ी, गीदड़ जब कि येह दरिन्दे ह़म्ला करें या जो दरिन्दे ऐसे हों जिन की आ़दत अक्सर इब्तिदाअन ह़म्ला करने की होती है जैसे शेर, चीता, तेंदवा (चीते की त़रह़ का एक जानवर) इन सब के मारने में कुछ नहीं। यूंही पानी के तमाम जानवरों के क़त्ल में कफ़्फ़ारा नहीं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़रम के पेड़ वग़ैरा काटना

सुवाल : ह़रम के पेड़ वग़ैरा काटने के **मु-तअ़ल्लिक़** भी कुछ हिदायात दे दीजिये।

जवाब : **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल" सफ़ह़ा** 1189 ता 1190 से चन्द मसाइल मुला-ह़ज़ा हों : ह़रम के दरख़्त चार क़िस्म हैं : ﴾1﴿ किसी ने उसे बोया है और वोह ऐसा दरख़्त है जिसे लोग बोया करते हैं ﴾2﴿ बोया है मगर इस क़िस्म का नहीं जिसे लोग बोया करते हैं ﴾3﴿ किसी ने उसे बोया

नहीं मगर इस क़िस्म से है जिसे लोग बोया करते हैं ﴾4﴿ बोया नहीं, न उस क़िस्म से है जिसे लोग बोते हैं। पहली तीन क़िस्मों के काटने वग़ैरा में कुछ नहीं या'नी इस पर जुर्माना नहीं। रहा येह कि वोह अगर किसी की मिल्क है तो मालिक तावान लेगा। **चौथी** क़िस्म में जुर्माना देना पड़ेगा और किसी की मिल्क है तो मालिक तावान भी लेगा और जुर्माना उसी वक़्त है कि तर हो और टूटा या उखड़ा हुवा न हो। जुर्माना येह है कि उस की क़ीमत का ग़ल्ला ले कर मसाकीन पर तसद्दुक़ करे, हर मिस्कीन को एक स-दक़ा और अगर क़ीमत का ग़ल्ला पूरे स-दक़े से कम है तो एक ही मिस्कीन को दे और इस के लिये ह़रम के मसाकीन होना ज़रूर नहीं और येह भी हो सकता है कि क़ीमत ही तसद्दुक़ कर दे और येह भी हो सकता है कि उस क़ीमत का जानवर ख़रीद कर ह़रम में ज़ब्ह़ कर दे रोज़ा रखना काफ़ी नहीं। **मस्अला 3 :** जो दरख़्त सूख गया उसे उखाड़ सकता है और उस से नफ़्अ़ भी उठा सकता है **मस्अला 5 :** दरख़्त के पत्ते तोड़े अगर उस से दरख़्त को नुक़्सान न पहुंचा तो कुछ नहीं। यूंही जो दरख़्त फलता है उसे भी काटने में तावान नहीं जब कि मालिक से इजाज़त ले ली हो उसे क़ीमत दे दे **मस्अला 6 :** चन्द शख़्सों ने मिल कर दरख़्त काटा तो एक ही

तावान है जो सब पर तक़्सीम हो जाएगा, ख़्वाह सब मोह़रिम हों या ग़ैर मोह़रिम या बा'ज़ मोह़रिम बा'ज़ ग़ैर मोह़रिम । **मस्अला 7 :** ह़रम के पीलू या किसी दरख़्त की मिस्वाक बनाना जाइज़ नहीं । **मस्अला 9 :** अपने या जानवर के चलने में या ख़ैमा नस्ब करने में कुछ दरख़्त जाते रहे तो कुछ नहीं । **मस्अला 10 :** ज़रूरत की वजह से फ़तवा इस पर है कि वहां की घास जानवरों को चराना जाइज़ है । बाक़ी काटना, उखाड़ना, इस का वोही हुक्म है जो दरख़्त का है । सिवा इज़्ख़र और सूखी घास के कि इन से हर त़रह़ इन्तिफ़ाअ़ जाइज़ है । खुम्बी के तोड़ने, उखाड़ने में कुछ मुज़ा-यक़ा नहीं ।

मीक़ात से बिग़ैर एह़राम गुज़रने के बारे में सुवाल जवाब

सुवाल : अगर किसी आफ़ाक़ी ने मीक़ात से एह़राम नहीं बांधा, मस्जिदे आ़इशा से एह़राम बांध कर उ़म्रह कर लिया तो क्या हुक्म है ?

जवाब : अगर **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا के इरादे से कोई आफ़ाक़ी चला और मीक़ात में बिग़ैर एह़राम दाख़िल हो गया तो उस पर दम वाजिब हो गया । अब मस्जिदे आ़इशा से एह़राम बांधना काफ़ी नहीं या तो दम दे या फिर मीक़ात से बाहर जाए और वहां से उ़म्रे वग़ैरा का एह़राम बांध कर आए तब दम साक़ित़ होगा ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

बच्चों का ह़ज (सुवालन जवाबन)

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, मह़बूबे रब्बे क़दीर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल पज़ीर है : **ज़िक्रे** इलाही की कसरत करना और मुझ पर **दुरूदे** पाक पढ़ना फ़क्र (या'नी तंगदस्ती) को दूर करता है । (اَلْقَوْلُ الْبَدِيع ص۲۷۳)

आ़लमे वज्द में रक़्सां मेरा पर पर होता
काश ! मैं गुम्बदे ख़ज़रा का कबूतर होता

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सुवाल : क्या बच्चे भी ह़ज कर सकते हैं ?

जवाब : जी हां । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मक़ामे **रौह़ा** में एक क़ाफ़िले से मिले तो फ़रमाया कि येह कौन लोग हैं ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि हम मुसल्मान हैं, फिर उन्हों ने अ़र्ज़ किया : आप कौन हैं ? फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रसूल हूं ।

उन में से एक ख़ातून ने बच्चे को ऊपर उठा कर पूछा : क्या इस का भी **ह़ज** हो जाएगा ? फ़रमाया : हां और तुझे भी इस का सवाब मिलेगा। (مسلم ص ۶۹۷ حدیث ۱۳۳۶) **मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : या'नी बच्चे को भी **ह़ज** का सवाब मिलेगा ह़ज करने का और तुझे भी इस के ह़ज का सवाब मिलेगा **ह़ज** कराने का। मज़ीद फ़रमाते हैं : इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि बच्चों की नेकियों का सवाब (बच्चे को तो मिलता है उस के) मां बाप को भी मिलता है लिहाज़ा उन्हें नमाज़ रोज़े का पाबन्द बनाओ। (मिरआत, जि. 4, स. 88)

सुवाल : तो क्या **ह़ज** करने से बच्चे का **फ़र्ज़** अदा हो जाएगा ?

जवाब : जी नहीं। **ह़ज** फ़र्ज़ होने के शराइत़ में से एक शर्त़ "बालिग़ होना" भी है चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : बच्चे पर (ह़ज) फ़र्ज़ नहीं, (अगर) करेगा तो नफ़्ल होगा और सवाब उसी (या'नी बच्चे ही) के लिये है, बाप वग़ैरा **मुरब्बी** ता'लीम व तरबिय्यत का अज्र पाएंगे। फिर (जब) बा'दे बुलूग़ शर्तें जम्अ़ होंगी इस पर **ह़ज** फ़र्ज़ हो जाएगा, बचपन का **ह़ज** किफ़ायत न करेगा।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 775)

सुवाल : मनासिके **ह़ज** की अदाएगी के ए'तिबार से बच्चों की कितनी अक़्साम हैं ?

जवाब : इस ए'तिबार से बच्चों की दो क़िस्में हैं : ﴾1﴿ **समझदार :** जो पाक और नापाक, मीठे और कड़वे में तमीज़ कर सकता हो मा'रिफ़त (या'नी पहचान) रखता हो कि इस्लाम नजात का सबब है (ارشاد الساری حاشیہ مناسک ص ۳۷) ﴾2﴿ **ना समझ :** जो मज़्कूरा (या'नी बयान कर्दा) समझ न रखता हो ।

सुवाल : क्या समझदार बच्चे को ख़ुद **मनासिके ह़ज** अदा करने होंगे ?

जवाब : जी हां। समझवाल (या'नी समझदार) बच्चा ख़ुद अफ़्आ़ले **ह़ज** करे, रम्य वग़ैरा बा'ज़ बातें (उस बच्चे ने) छोड़ (भी) दीं तो उन (के छोड़ने) पर कफ़्फ़ारा वग़ैरा लाज़िम नहीं । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1075)

सुवाल : अगर समझदार बच्चा बा'ज़ अफ़्आ़ले ह़ज ख़ुद बजा ला सकता हो और बा'ज़ न कर सकता हो तो क्या करे ? क्या किसी को नाइब कर सकता है ?

जवाब : ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : जो अफ़्आ़ल **समझदार बच्चा** ख़ुद कर सकता हो उस में किसी को नाइब बनाना दुरुस्त नहीं है और जो ख़ुद नहीं कर सकता उन में नाइब बनाना दुरुस्त है मगर त़वाफ़ के बा'द की दो रक्अ़तें अगर बच्चा ख़ुद न पढ़ सके तो कोई दूसरा उस की त़रफ़ से अदा नहीं कर सकता । (اَلْمَسْلَكُ الْمُتَقَسِّط لِلقاری ص ۱۱۳)

ना समझ बच्चे के ह़ज का त़रीक़ा

सुवाल : ना समझ बच्चा मनासिके **ह़ज** कैसे अदा करेगा ?

जवाब : जिन अफ़्आ़ल में निय्यत शर्त़ है वोह वली (या'नी सर परस्त) उस की त़रफ़ से बजा लाएगा और जिन में निय्यत शर्त़ नहीं वोह ख़ुद कर सकता है चुनान्चे फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "**ना समझ बच्चे** ने ख़ुद एह़राम बांधा या अफ़्आ़ले ह़ज अदा किये तो **ह़ज** न हुवा बल्कि उस का वली (या'नी सर परस्त) उस की त़रफ़ से बजा लाए मगर त़वाफ़ के बा'द की दो रक्अ़तें कि बच्चे की त़रफ़ से वली (या'नी सर परस्त) न पढ़ेगा । उस के साथ बाप और भाई दोनों हों तो बाप अरकान अदा करे ।" (عالمگیری ج۱ ص۲۳۶, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1075) **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : येह (ना समझ बच्चा या मजनून या'नी पागल) ख़ुद वोह अफ़्आ़ल नहीं कर सकते जिन में निय्यत की ज़रूरत है, म-सलन एह़राम या त़वाफ़, बल्कि इन की त़रफ़ से कोई और करे और जिस फ़े'ल में निय्यत शर्त़ नहीं, जैसे वुक़ूफ़े अ़-रफ़ा वोह येह ख़ुद कर सकते हैं । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1046)

सुवाल : क्या एह़राम से पहले बच्चों को भी ग़ुस्ल करवाया जाए ?

जवाब : जी हां । "फ़तावा शामी" जिल्द 3 **सफ़ह़ा** 557 पर लिखे हुए जुज़्इये का ख़ुलासा है कि समझदार और ना समझ दोनों बच्चे ही ग़ुस्ल करेंगे । अलबत्ता येह फ़र्क़ है कि आ़क़िल के लिये तो ख़ुद ग़ुस्ल करना **मुस्तह़ब** है और वली के लिये ग़ुस्ल का हुक्म देना **मुस्तह़ब** है जब कि ना समझ बच्चे को वली का ख़ुद ग़ुस्ल करवाना या बच्चे की वालिदा वग़ैरा के ज़रीए़ करवाना **मुस्तह़ब** होगा ।

सुवाल : क्या ना समझ बच्चे को एह़राम भी पहनाना होगा ?

जवाब : जी हां । यूं करना चाहिये कि **ना समझ बच्चे** के सिले हुए कपड़े उतार कर चादर और तहबन्द वली ग़ैरे वली (या'नी सर परस्त या ग़ैर सर परस्त) कोई भी पहना दे मगर उस त़रफ़ से बाप, बाप न हो तो भाई और भाई न हो तो जो भी नसब (या'नी ख़ूनी रिश्ते) के ए'तिबार से क़रीबी रिश्तेदार हो वोह उस की त़रफ़ से **एह़राम की निय्यत** करे और उन बातों से बचाए जो मोह़रिम के लिये ना जाइज़ हैं। चुनान्चे **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : बच्चे की त़रफ़ से एह़राम बांधा तो उस के सिले हुए कपड़े उतार लेने चाहिएं, चादर और तहबन्द पहनाएं और उन तमाम बातों से बचाएं जो मोह़रिम के लिये ना जाइज़ हैं । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 6, स. 1075) **समझदार बच्चा** एह़राम की निय्यत

खु़द करेगा, वली (या'नी सर परस्त) उस की त़रफ़ से एह़राम नहीं बांध सकता। जैसा कि "**शामी**" में है : "अगर बच्चा समझदार हो तो उसे खु़द एह़राम बांधना होगा, वली (या'नी सर परस्त) उस की त़रफ़ से न बांधे कि जाइज़ नहीं।" (رَدُّالْمُحتار ج۳ ص۵۳۰) अगर समझदार बच्चा खु़द एह़राम बांधने की क़ुदरत रखता हो तो उसे खु़द एह़राम बांधना होगा वली (या'नी सर परस्त) उस की त़रफ़ से एह़राम नहीं बांध सकता और न वली के बांधने से समझदार बच्चा मोह़रिम होगा और अगर समझदार बच्चा खु़द एह़राम बांधने की क़ुदरत न रखता हो तो वली उस की त़रफ़ से एह़राम बांधेगा।

सुवाल : ना समझ बच्चे की त़रफ़ से क्या वली को एह़राम के नफ़्ल पढ़ने होंगे ?

जवाब : जी नहीं, ना समझ बच्चे की त़रफ़ से उस का वली एह़राम के नफ़्ल नहीं पढ़ सकता।

ना समझ बच्चे की त़रफ़ से निय्यत और लब्बैक का त़रीक़ा

सुवाल : ना समझ बच्चे की त़रफ़ से एह़राम की निय्यत और **लब्बैक** का त़रीक़ा बता दीजिये।

जवाब : ना समझ बच्चे की त़रफ़ से एह़राम की निय्यत उस का वली करे और इस त़रह़ कहे : اَحْرَمْتُ عَنْ فُلَانٍ या'नी मैं फ़ुलां की त़रफ़ से एह़राम बांधता हूं (फ़ुलां की जगह उस बच्चे का नाम ले), इसी त़रह़ **लब्बैक** भी बच्चे की त़रफ़ से इस त़रह़ कहे : لَبَّيْكَ عَنْ فُلَانٍ (फ़ुलां की जगह उस का नाम ले

और आख़िर तक **लब्बैक** मुकम्मल करे) अ़-रबी में निय्यत उसी वक़्त कारआमद होगी जब कि मा'ना मा'लूम हों, अपनी मा-दरी ज़बान या उर्दू में भी निय्यत कर सकते हैं म-सलन बच्चे का नाम **हिलाल रज़ा** है तो यूं निय्यत कीजिये : "मैं हिलाल रज़ा की त़रफ़ से एह़राम बांधता हूं।" येह भी ज़ेह्न में रहे कि दिल में निय्यत होना शर्त़ है जब कि ज़बान से निय्यत करना मुस्तह़ब है। अगर ज़बान से निय्यत न भी की तो कोई ह़रज नहीं। **लब्बैक** ज़बान से कहना ज़रूरी है और वोह भी कम अज़ कम इतनी आवाज़ से कि अगर सुनने में कोई रुकावट न हो तो ख़ुद सुन ले और यहां इस त़रह़ कहना है : म-सलन

لَبَّیْکَ عَنْ ھِلال رضا اَللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ ط لَبَّیْکَ لَا شَرِیْکَ لَکَ لَبَّیْکَ ط اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَۃَ لَکَ وَالْمُلْکَ ط لَاشَرِیْکَ لَکَ ط

ना समझ की त़रफ़ से त़वाफ़ की निय्यत और इस्तिलाम का त़रीक़ा

सुवाल : ना समझ बच्चे की त़रफ़ से त़वाफ़ की निय्यत और ह़-जरे अस्वद के इस्तिलाम का त़रीक़ा इर्शाद हो।

जवाब : दिल में निय्यत काफ़ी है और बेहतर है ज़बान से भी इस त़रह़ कह ले : म-सलन "मैं हिलाल रज़ा की त़रफ़ से त़वाफ़ के सात फेरों की निय्यत करता हूं" और इस के बा'द जो इस्तिलाम होंगे वोह भी बच्चे की त़रफ़ से होंगे।

सुवाल : गोद में उठा कर त़वाफ़ करवाए या उंगली पकड़ कर ?

जवाब : जिस त़रह़ सहूलत हो।

सुवाल : क्या साथ में वली अपने त़वाफ़ की भी निय्यत कर सकता है ?

जवाब : जी हां, बल्कि कर लेनी चाहिये कि इस त़रह़ एक साथ दोनों का त़वाफ़ हो जाएगा। मगर येह ज़ेह्न में रहे कि हर फेरे में दो बार इस्तिलाम करना होगा एक बार अपनी त़रफ़ से और एक बार बच्चे की त़रफ़ से।

सुवाल : बच्चा त़वाफ़ कैसे करेगा ?

जवाब : **समझदार बच्चा** ख़ुद त़वाफ़ कर के त़वाफ़ के नवाफ़िल अदा करे जब कि **ना समझ बच्चे** को उस का वली (सर परस्त) त़वाफ़ कराए, मगर त़वाफ़ की दो रक्अ़तें बच्चे की त़रफ़ से वली (सर परस्त) न पढ़े।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1075)

सुवाल : बच्चे को **रम्य** किस त़रह़ करवाएं ?

जवाब : **समझदार** ख़ुद रम्य करे और **ना समझ** की त़रफ़ से उस के साथ वाले रम्य कर दें और बेहतर येह है कि उन के हाथ पर कंकरी रख कर **रम्य** कराएं।

(منسک متوسط ص ۲٤۷, फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 667, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1148)

सुवाल : बच्चे के **मनासिके ह़ज** से कुछ रह गया या उस ने कोई ऐसा फ़े'ल किया जिस से कफ़्फ़ारा या **दम** लाज़िम आता है तो क्या हुक्म है ?

जवाब : बच्चा किसी अ़मल को छोड़ दे या मम्नूअ़ काम करे तो

उस पर न क़ज़ा वाजिब है और न कफ़्फ़ारा। यूंही ना समझ बच्चे की त़रफ़ से उस के वली (सर परस्त) ने एह़राम बांधा और बच्चे ने कोई मम्नूअ़ काम किया तो बाप पर भी कुछ लाज़िम नहीं।

(عالمگیری ج۱ ص۲۳۶, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1075)

सुवाल : बच्चा अगर **ह़ज फ़ासिद** कर दे तो क्या करना होगा ?

जवाब : बच्चे ने **ह़ज** को फ़ासिद कर दिया तो न **दम** वाजिब है न **क़ज़ा**। अगर्चे वोह समझदार बच्चा हो।

(عالمگیری ج۱ ص۲۳۶، رَدُّالْمُحتار ج۳ ص۶۷۳)

सुवाल : बच्चे के लिये **ह़ज** की कुरबानी का क्या हुक्म है ?

जवाब : बच्चा चाहे समझदार हो या ना समझ इस पर (ह़ज्जे तमत्तोअ़ या क़िरान की) कुरबानी वाजिब नहीं। (اَلْمَسْلَکُ الْمُتَقَسِّط لِلقاری ص ۲۶۳) और ह़ज्जे इफ़राद की तो बड़ों पर भी वाजिब नहीं।

सुवाल : अगर वली (सर परस्त) बच्चे की त़रफ़ से **ह़ज की कुरबानी** करना चाहे तो कर सकता है या नहीं ?

जवाब : कर सकता है मगर अपनी जेब से करे। बच्चे की रक़म से करेगा तो **तावान** देना पड़ेगा या'नी उतनी रक़म पल्ले से बच्चे को लौटानी होगी।

बच्चे के उ़म्रे का त़रीक़ा

सुवाल : क्या बच्चे को **उ़म्रह** करवा सकते हैं ? अगर हां तो त़रीक़ा क्या होगा ?

जवाब : करवा सकते हैं। मसाइल में यहां भी वोही समझदार

और ना समझ बच्चे वाली तफ़्सील है। अलबत्ता इस में मज़ीद तफ़्सील येह है कि बहुत छोटे बच्चे को मस्जिद में दाख़िल करने के अह़काम पर ग़ौर कर लें। हुक्म येह है कि अगर बच्चे से नजासत का ग़ालिब गुमान है तो उसे मस्जिद में ले जाना मक्रूहे तह़रीमी वरना मक्रूहे तन्ज़ीही।

सुवाल : क्या बच्चे को भी ह़ल्क़ या क़स्र करवाया जाए?

जवाब : जी हां। अलबत्ता बच्ची को क़स्र करवाएंगे। अगर दूध पीती या बहुत छोटी बच्ची हो तो ह़ल्क़ करवाने में भी ह़रज नहीं।

बच्चा और नफ़्ली त़वाफ़

सुवाल : नफ़्ली त़वाफ़ में बच्चे के क्या अह़काम हैं?

जवाब : समझदार बच्चा ख़ुद अपनी निय्यत करे और त़वाफ़ के बा'द वाले नफ़्ल भी अदा करे जब कि ना समझ बच्चे की त़रफ़ से उस का वली (सर परस्त) निय्यत करे। **त़वाफ़** के नफ़्लों की ह़ाजत नहीं।

सुवाल : बच्चा बिग़ैर एह़राम अगर मीक़ात के अन्दर दाख़िल हुवा और अब बालिग़ हो गया तो क्या उस पर **दम** वाजिब हो जाएगा?

जवाब : नहीं। बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल **सफ़ह़ा** 1192 पर है : ना बालिग़ बिग़ैर एह़राम मीक़ात से गुज़रा फिर बालिग़ हो गया और वहीं से एह़राम बांध लिया तो **दम** लाज़िम नहीं। यूंही अगर वोह ह़िल या'नी बैरूने ह़रम और हुदूदे

मीक़ात के अन्दर में बालिग़ हुवा, तो ह़िल्ली के अह़काम उस पर लगेंगे या'नी ह़ज या उ़म्रह के लिये ह़रम जाना है तो ह़िल से एह़राम बांध ले और अगर वैसे ही ह़रम जाना है तो बिग़ैर एह़राम के भी जा सकता है और ह़रम में बालिग़ हुवा तो ह़-रमी के अह़काम उस पर लगेंगे या'नी ह़ज का एह़राम ह़रम में बांधेगा और उ़म्रह का एह़राम ह़रम के बाहर से और अगर कुछ नहीं करना तो एह़राम की ह़ाजत नहीं।

सुवाल : म-दनी मुन्ने या म-दनी मुन्नी को **मस्जिदुन्-बविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में ले जा सकते हैं या नहीं ?

जवाब : सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : मस्जिदों को **बच्चों और पागलों** और ख़रीदो फ़रोख़्त और झगड़े और **आवाज़ बुलन्द करने** और हुदूद क़ाइम करने और तलवार खींचने से बचाओ।

(اِبن ماجه ج ا ص ٤١٥،حديث ٧٥٠)

ऐसा बच्चा जिस से नजासत (या'नी पेशाब वग़ैरा कर देने) **का ख़त़रा हो और पागल को मस्जिद के अन्दर ले जाना ह़राम है अगर नजासत का ख़त़रा न हो तो मक्रूहे (तन्ज़ीही)**। जो लोग जूतियां मस्जिद के अन्दर ले जाते हैं उन को इस का ख़याल रखना चाहिये कि अगर नजासत लगी हो तो उन्हें अच्छी त़रह़ पाक और साफ़ करें कि न नजासत रहे और न उस की बदबू, अलबत्ता अगर पाक

नहीं किया लेकिन इस त़रह़ साफ़ कर लिया है कि न तो मस्जिद की आलू-दगी का अन्देशा है और न ही नजासत की बू बाक़ी हो तो फिर ना जाइज़ नहीं है। अलबत्ता येह याद रहे कि जूते पाक हों तब भी मस्जिद में पहन कर जाना बे अ-दबी है।

ना समझ **बच्चे, बच्ची या पागल** (या बेहोश या जिस पर जिन्न आया हुवा हो उस) को दम करवाने के लिये चाहे "**पम्पर**" (PAMPER) लगा हो तब भी मस्जिद में ले जाना ऊपर बयान की हुई तफ़्सील के मुत़ाबिक़ मन्अ़ है, और अगर आप ऐसों को मस्जिद में लाने की भूल कर चुके हैं और सूरत ना जाइज़ वाली है तो बराए करम ! फ़ौरन तौबा कर के आयन्दा न लाने का अ़ह्द कीजिये। हां फ़िनाए मस्जिद म-सलन इमाम साह़िब के हुजरे में ले जा सकते हैं जब कि मस्जिद के अन्दर से ले कर न गुज़रना पड़े। जब आ़म मस्जिदों के येह आदाब हैं तो **मस्जिदुन्न-बविय्यिशशरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ के कितने आदाब होंगे ! येह हर आ़शिके़ रसूल बख़ूबी समझ सकता है। मस्जिदैने करीमैन को बच्चों से बचाने की बहुत सख़्त ह़ाजत है, आज कल बच्चे वहां चीख़ते चिल्लाते दन्दनाते फिरते हैं और बा'ज़ अवक़ात مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ गन्दगियां भी कर देते हैं, मगर अफ़्सोस ! ले जाने वालों को अक्सर इस की कोई परवाह नहीं होती ! बेशक येह बच्चे ना समझ हैं, इन पर कोई इल्ज़ाम नहीं मगर

इस का वबाल ले जाने वाले पर है। अगर समझदार बच्चे को भी ले जाएं तो उस पर भी कड़ी नज़र रखिये कि कूद फांद कर के लोगों की इ़बादत में रख़्ना अन्दाज़ न हो।

बच्चा और रौज़ए अन्वर की ह़ाज़िरी

सुवाल : तो ना समझ बच्चों को सुनह्‌री जालियों के रू बरू ह़ाज़िरी दिलाने की क्या सूरत होगी ?

जवाब : इस के लिये मस्जिद शरीफ़ में लाना पड़ेगा। इस के अह़काम अभी गुज़रे। लिहाज़ा मस्जिद शरीफ़ के बाहर सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के रू बरू ह़ाज़िरी दिलवा दीजिये।

सुवाल : क्या बयान कर्दा ह़ज व उ़म्रह वग़ैरा के तअ़ल्लुक़ से बच्ची के भी येही अह़काम हैं ?

जवाब : जी हां।

एक चुप सो 100 सुख

ता़लिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा का पड़ोस

6 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1433 सि.हि.
27-6-2012

मनासिके ह़ज सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की चार ऑडियो केसिटों का सेट ह़ासिल कीजिये। नीज़ विडियो सीडीज़ (1) ह़ज का त़रीक़ा (2) उ़म्रह का त़रीक़ा (3) मदीने की ह़ाज़िरी भी मुला-ह़ज़ा कीजिये। नीज़ रिसाला, "**एह़राम और ख़ुश्बूदार साबुन**" पढ़िये और अपनी उल्झनें दूर कीजिये।

مآخذ ومراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآنِ پاک	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	البحر الرائق	کوئٹہ پاکستان
تفسیر خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	فتاوی عالمگیری	دار الفکر بیروت
تفسیر نعیمی	مکتبہ اسلامیہ	المسلک المتقسط	باب المدینہ کراچی
بخاری	دار الکتب العلمیہ بیروت	لباب المناسک	باب المدینہ کراچی
مسلم	دار ابن حزم بیروت	الایضاح فی مناسک الحج	المکتبۃ الامدادیہ مکۃ المکرّمہ
ابوداود	دار احیاء التراث العربی بیروت	البحر العمیق فی المناسک	موئسسۃ الریان بیروت
ترمذی	دار الفکر بیروت	ارشاد الساری	باب المدینہ کراچی
ابن ماجہ	دار المعرفہ بیروت	فتاوی رضویہ	رضا فاونڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
موطا امام مالک	دار المعرفہ بیروت	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
مسند امام احمد	دار الفکر بیروت	کتاب الحج	مکتبہ نعمانیہ ضیاء کوٹ
معجم کبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت	احرام اور خوشبودار صابن	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
معجم اوسط	دار الکتب العلمیہ بیروت	شفاء	مرکز اہل السنۃ برکات رضا ہند
مسند بزار	مکتبۃ العلوم والحکم المدینۃ المنورۃ	المواہب اللدنیۃ	دار الکتب العلمیہ بیروت
دار قطنی	مدینۃ الاولیاء ملتان شریف	بستان المحدثین	کراچی پاکستان
شعب الایمان	دار الکتب العلمیہ بیروت	اخبار الاخیار	فاروقی اکیڈمی گمبٹ پاکستان
مسند امام شافعی	دار الکتب العلمیہ بیروت	جذب القلوب	النوریۃ الرضویہ پبلشنگ کمپنی لاہور
مسند ابوداود طیالسی	دار المعرفہ بیروت	وفاء الوفاء	دار احیاء التراث العربی بیروت
مجمع الزوائد	دار الفکر بیروت	القول البدیع	موئسسۃ الریان بیروت
الترغیب والترہیب	دار الکتب العلمیہ بیروت	قوت القلوب	دار الکتب العلمیہ بیروت
المنامات	المکتبۃ العصریہ بیروت	احیاء العلوم	دار صادر بیروت
جامع العلوم والحکم	الفیصلیۃ مکۃ المکرّمہ	اتحاف السادۃ	دار الکتب العلمیہ بیروت
فتح الباری	دار الکتب العلمیہ بیروت	کشف المحجوب	نوائے وقت پرنٹرز مرکز الاولیاء لاہور
مراٰۃ المناجیح	ضیاء القرآن مرکز الاولیاء لاہور	مثنوی مولانا روم	النوریہ الرضویہ پبلشنگ کمپنی مرکز الاولیاء لاہور
طبقات الکبریٰ	دار الکتب العلمیہ بیروت	روض الریاحین	دار الکتب العلمیہ بیروت
تاریخ بغداد	دار الکتب العلمیہ بیروت	حصن حصین	المکتبۃ العصریہ بیروت
ابن عساکر	دار الفکر بیروت	تنبیہ المغترین	دار المعرفہ بیروت
مبسوط	دار الکتب العلمیہ بیروت	درۃ الناصحین	دار الفکر بیروت
ہدایہ	دار احیاء التراث العربی بیروت	بلد الامین	مکتبہ فریدیہ ساہیوال
ردالمحتار	دار المعرفہ بیروت	ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
درمختار	دار المعرفہ بیروت	وسائلِ بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

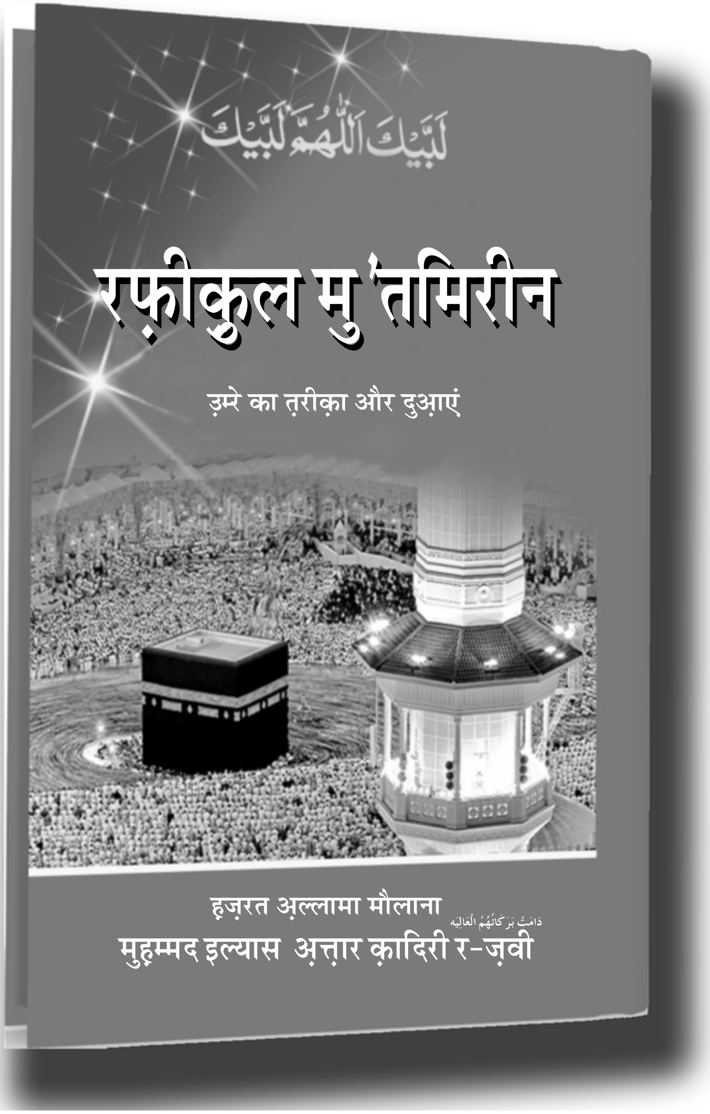
لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ
रफ़ीकुल मु'तमिरीन
उ़म्रे का त़रीक़ा और दुआ़एं
ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना
دامت برکاتہم العالیہ
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

हवाई जहाज़ के गिरने और जलने से अम्न में रहने की दुआ

हवाई जहाज़ में सुवार हो कर अव्वल आखिर दुरूद शरीफ़ के साथ येह दुआए मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़िये :

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْهَدْمِ وَاَعُوْذُ بِكَ
مِنَ التَّرَدِّيْ ۖ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْغَرَقِ وَالْحَرَقِ
وَالْهَرَمِ ۖ وَاَعُوْذُ بِكَ اَنْ يَّتَخَبَّطَنِيَ الشَّيْطٰنُ
عِنْدَ الْمَوْتِ ۖ وَاَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَمُوْتَ فِيْ سَبِيْلِكَ
مُدْبِرًا ۖ وَاَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَمُوْتَ لَدِيْغًا ۖ

म-दनी फूल बुलन्द मक़ाम से गिरने को तरद्दी और जलने को हरक़ कहते हैं । हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह दुआ मांगा करते थे ।[1] येह दुआ तय्यारे के लिये मख़्सूस नहीं, चूंकि इस दुआ में "बुलन्दी से गिरने" और "जलने" से भी पनाह मांगी गई है और हवाई सफ़र में येह दोनों ख़त्रात मौजूद होते हैं लिहाज़ा उम्मीद है कि इसे पढ़ने की ब-र-कत से **हवाई जहाज़** हादिसे से महफ़ूज़ रहे

[1] ابو داؤد ج۲ ص۱۳۲ حدیث ۱۵۵۲